सत कबीर की दया

# भक्ति और भगवान

## (भाग-1 एवम् 2)

[परमेश्वर को प्राप्त करना अर्थात् पूर्ण मोक्ष प्राप्त करना कठिन कार्य नहीं हैं। पूर्ण सन्त से उपदेश प्राप्त करके आजीवन मर्यादा में रहते हुए सच्चे भाव से भक्ति करने से पूर्ण मोक्ष अवश्य प्राप्त हो जाता है। पूर्ण सन्त अर्थात् तत्वदर्शी सन्त की क्या पहचान है? परमात्मा प्राप्ति अर्थात् पूर्ण मोक्ष मार्ग में कुछ बाधाऐं हैं जिन से सावधान रहना आवश्यक है। फिर मोक्ष निश्चित है। वे बाधाऐं क्या हैं उनसे कैसे बचा जा सकता है? परमेश्वर प्राप्ति कैसे सम्भव है? तथा अध्यात्मिक शंका समाधान के विषय में इन पुस्तकों में विस्तत विवरण दिया गया है। ]

**(दोनों का धर्मार्थ मूल्य मात्र-10 रूपये)**

*** जगत गुरु तत्वदर्शी ***
**संत रामपाल जी महाराज**

सत कबीर की दया

# भक्ति और भगवान

(भाग-1)

* जगत गुरु तत्वदर्शी *
संत रामपाल जी महाराज

(धर्मार्थ मूल्य मात्र - 5 रूपये)

## संत रामपाल दास महाराज

### सतलोक आश्रम


बन्दी छोड़ भक्ति मुक्ति ट्रस्ट (रजि. 3955),
रोहतक झज्जर रोड़, करौंथा, जि. रोहतक (हरि०) भारत।

सतलोक आश्रम, दौलतपुर रोड़, बरवाला, जि. हिसार (हरि०)भारत।

☎ +91-9992600801, +91-9992600802, +91-9992600803,
☎+91-9812166044, +91-9812151088, +91-9812026821,+91-9812142324

**e-mail : jagatgururampalji@yahoo.com**
**visit us at - www.jagatgururampalji.org**

# सतगुरू रामपाल जी साहेब का संक्षिप्त जीवन परिचय

*सतगुरु रामपाल जी महाराज का जन्म 8 सितम्बर सन् 1951 में - गाँव-धनाना, तहसील गोहाना, जिला सोनीपत(हरियाणा) के एक किसान परिवार में हुआ। इनके पिता जी का नाम भक्त नन्दराम व माता जी का नाम भक्तमति ईन्द्रादेवी है। महाराज जी जूनियर इन्जीनियरिंग का डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद हरियाणा सरकार के सिंचाई विभाग में जे.ई. के पद पर नियुक्त हो गए। आप जी बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति के हैं। 25 वर्षो तक लगातार हनुमान जी की साधना की। प्रतिदिन सात बार हनुमान चालीसा का पाठ किया और लगातार अठारह वर्षो तक राजस्थान में चुरू जिले के गांव सालाहसर में हनुमान जी के प्रसिद्ध मन्दिर में पूजा के लिए गए। इसके साथ-साथ श्री कृष्ण जी को भी अपना ईष्ट मानते थे। इनसे बड़ा किसी को नहीं मानते थे तथा घरेलू उपासना खाटू श्याम जी की भी करते थे। घण्टों ध्यान लगाते थे। इतनी उपासना करने के बाद भी न तो परमात्मा का साक्षात्कार हुआ और न ही शारीरिक सुख व मानसिक शांति मिली। परमात्मा को पाने की तड़प से आप साधु महात्माओं से मिलते रहते थे।*

*एक दिन आपकी मुलाकात कबीर पंथी महान संत 107 वर्षीय स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज से हुई। आपने स्वामी जी से पूछा कि परमात्मा की प्राप्ति कैसे हो व मानसिक शांति कैसे मिले? स्वामी जी ने पूछा कि आप क्या उपासना करते हो? आपने बताया कि मैं व्रत उपवास रखता हूँ, मन्दिरों में जाता हूँ, हनुमान-श्री कृष्ण व श्याम जी की उपासना करता हूँ। सभी त्यौहार मनाता हूँ और श्राद्ध आदि भी निकालता हूँ। तब स्वामी जी ने आप जी से कहा कि आप जो साधना करते हो यह न तो परमात्मा को पाने की है और न ही मानसिक शांति दे सकती है। कबीर साहेब जी ने अपनी वाणी में कहा है कि -*

कबीर, माई मसानी सेढ शीतला, भैरो भूत हनुमंत।
साहेब से न्यारा रहे, जो इनको पूजंत।।
कबीर, पत्थर पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहार।
तातैं चक्की भली, पीस खाए संसार।

*स्वामी जी ने बताया कि इन साधनाओं के करने से न तो कर्म की मार समाप्त होती है, न ही मन को शांति मिलती है और न ही पूर्ण मुक्ति प्राप्त होती है। चूंकि ये साधनाएँ पूर्ण परमात्मा की न हो कर काल निरंजन(ब्रह्म) का फैलाया हुआ मिथ्या जाल है। 21 ब्रह्माण्ड का मालिक काल निरंजन भगवान है जिसको वेदों में ज्योति निरंजन निराकार परमात्मा (ब्रह्म) कहते हैं। इसकी पत्नी का नाम अष्टंगी (प्रकृति-शेराँवाली) माया है तथा इसके तीन पुत्र ब्रह्मा, विष्णु व महेश हैं। इन पाँचों ने मिल कर अपनी योग माया से जीवों को भ्रमित कर रखा है और दयालु परमात्मा सतपुरुष की भक्ति पर पर्दा डाला हुआ है। जिसके परिणाम स्वरूप ये अपनी भक्ति करवाते हैं। इनकी भक्ति करने से जीव के कर्म की मार समाप्त नहीं हो सकती।*

*कर्मो का फल भोगना पड़ता है। अच्छे कर्म स्वर्ग में और बुरे नरक में और फिर लख चौरासी में जाते हैं। सतगुरु गरीबदास जी महाराज अपनी वाणी में कहते हैं कि -*

गरीब, ब्रह्मा विष्णु महेश्वर, माया और धर्मराय कहिये।
इन पाँचों मिल प्रपंच बनाया, वाणी हमरी लहिये।।

*स्वामी जी ने आपजी को बताया कि इस ब्रह्म(क्षर पुरुष) से ऊपर परब्रह्म(अक्षर पुरुष) व इससे ऊपर पूर्णब्रह्म(परम अक्षर पुरुष) परमात्मा सतपुरुष है। सतपुरुष की भक्ति करने से कर्मो की मार समाप्त हो कर मानसिक शांति व पूर्ण मोक्ष मिलता है। जब आपजी ने ये बातें सुनी तो मन में उथल-पुथल सी मच गई। चूंकि ये बातें पहले कभी नहीं सुनी थी। आप ने स्वामी जी की बात को सत्य मान कर 17 फरवरी 1988 को उनसे नाम उपदेश लिया।*

*एक दिन आपजी का स्वामी जी के साथ उनके पैतृक गाँव बड़ा पैंतावास, तहसील चरखी दादरी, जिला भिवानी(हरियाणा) में जाना हुआ। स्वामी जी 16 वर्ष की आयु में गाँव से बाहर जंगल में पशु चरा रहे थे। उनकी मुलाकात एक कबीर पंथी महात्मा जी से हुई। महात्मा जी ने स्वामी जी को भक्ति करने की प्रेरणा दी। स्वामी जी महात्मा की प्रेरणा से अति उत्तेजित हो कर और यह समझते हुए कि मनुष्य जन्म बार-२ नहीं मिलता उसी समय स्वामी जी ने अपने कपड़े उतार कर वहीं जंगल में फेंक दिए और अन्य वस्त्र पहन कर उस महात्मा जी के साथ चले गए। उस दिन के पश्चात स्वामी जी आज से पहले तक कभी घर पर वापिस नहीं आए थे। घर वालों ने स्वामी जी के कपड़े जंगल में पड़े देख कर यह मान लिया कि उनको तो कोई जंगली जानवर खा गया है। उस दिन से उनको मृत जान कर उनके श्राद्ध निकालने शुरु कर दिए। स्वामी जी की भाभी ने आपको बताया कि मैं स्वामी जी के अपने हाथ से 70 श्राद्ध निकाल चुकी हूँ। इस घटना को देख कर आपके जीवन में बदलाव आ गया। आपजी ने सोचा कि ये श्राद्ध निकालना, पत्थर पूजा करना सब व्यर्थ की बातें हैं।*

*एक बार आपजी अपनी रिश्तेदारी में गए हुए थे। वहाँ आपने खाना खाते समय वहीं पर खड़े हुए कुत्ते को रोटी डाल दी। वह कुत्ता उस रोटी को तुरंत न खा कर उठा कर ले गया और पास में पड़े हुए कूड़े के ढेर में दबा दिया है। आपने ये सब बड़े ध्यान से देखा। अगले दिन सुबह वही कुत्ता उस कूड़े के ढेर में दबी हुई वही रोटी निकाल कर, जो सूख चुकी थी, खाने लगा। आपजी उस समय चाय पी रहे थे। आपजी ने बड़े ध्यान से उस कुत्ते को देखा और अपने रिश्तेदार को यह बात बताई। उस रिश्तेदार ने बताया कि यह कुत्ता मंगलवार के दिन कभी रोटी नहीं खाता। कल मंगलवार था इसलिए इसने इस रोटी को न खा कर कूड़े के ढेर में दबा दिया था जिसे अब खा रहा है। आपजी ने सोचा कि यह कुत्ता मनुष्य जन्म में कितना उपवास रखता होगा जिसके कारण इसको अब भी व्रत याद हैं परंतु इस व्रत ने इसको लख चौरासी में डाल दिया और कुत्ता बना दिया। आपने सत्य को जानने के लिए स्वामी जी के दिए हुए नाम का स्मरण किया तथा साथ में सभी शास्त्रों का अध्ययन किया।*

*आपने श्री मद्भगवद्गीता, कबीर सागर, संत गरीबदास जी महाराज कृत*

*'सत ग्रन्थ साहेब', सभी पुराणों व अन्य सभी संतों की वाणी का अध्ययन किया और पाया कि जो बातें स्वामी जी ने आपको बताई थी उनका प्रमाण पुराणों व गीता जी में भी मिला। गीता के अध्याय नं. 14 के श्लोक नं. 3 से 5 में काल निरंजन कहता है कि ये प्रकृति तो मेरी पत्नी है और सभी जीवों की माता है अर्थात् जगत् जननी है और मैं इसके पेट में बीज स्थापन करने वाला पिता हूँ। प्रकृति से उत्पन्न तीनों गुण(रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) जीव आत्मा को शरीर से बाँधे रखते हैं। अध्याय नं. 3 के श्लोक नं. 14-15 में भी पूर्णब्रह्म के बारे में भी लिखा है कि सभी प्राणियों की उत्पत्ति अन्न से होती है, अन्न की उत्पत्ति वर्षा से होती है, वर्षा यज्ञ से, यज्ञ शुभ कर्मो से, कर्म ब्रह्म ने लगाए हैं और ब्रह्म की उत्पत्ति अविनाशी परमात्मा से हुई है तथा यज्ञों का फल भी परम अक्षर परमात्मा से ही प्राप्त होता है। इसी प्रकार देवी-भागवद् महापुराण तीसरे स्कन्द में भी लिखा है कि अष्टंगी आदि माया (प्रकृति) तीनों देवताओं(ब्रह्मा, विष्णु, शिव) की माता है और ज्योति निरंजन इनका पिता है। इन्हीं से यहाँ की सृष्टी चली हुई है। शिव पुराण के छठे अध्याय में लिखा है कि महाशिव व शिवा के रमण करने से तीनों देवों की उत्पत्ति हुई। यहाँ महाशिव ज्योति निरंजन ब्रह्म(काल) व शिवा प्रकृति(दुर्गा) अर्थात् आदि माया है। विष्णु पुराण में लिखा है कि विष्णु का परम रूप काल है। गीता जी के अध्याय नं. 11 के श्लोक नं. 32 में स्वयं ब्रह्म(ज्योति निरंजन) कह रहा है कि मैं काल हूँ। आपने स्वामी जी से नाम ले कर सतनाम व सारनाम का घोर जाप किया। जिसके परिणाम स्वरूप आपको पूर्णब्रह्म कबीर साहेब का साक्षात्कार हुआ व सत्य का ज्ञान हुआ। इसके बाद मन को शांति व परम सुख की अनुभूति हर पल रहने लगी। सन् 1994 में स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज ने आपको नाम-दान देने की आज्ञा दी। नाम-दान की जिम्मेदारी को अपना परम कर्त्तव्य समझते हुए व उसे पूर्ण करने के लिए आपने शहर-शहर, गाँव-गाँव में घर-घर जा कर व्यक्तियों को समझाना शुरु किया। आप इतने अधिक व्यस्त हो गए कि आपको अठारह वर्ष नौकरी करने के बाद त्याग देनी पड़ी ताकि लोगों को सतमार्ग का ज्ञान करवाया जा सके। आपसे नाम-दान लेने से भक्तों को सांसारिक सुख व अध्यात्मिक अनुभव होने लगे। जिनको देख कर दुःखी लोग आपजी से मिलने आने लगे और दुःख निवारण करने की प्रार्थना करने लगे। आपने उनको समझाया कि मैं कोई जन्त्र-मन्त्र व झाड़ा आदि नहीं लगाता हूँ। मैं तो केवल कबीर साहेब के सतनाम का उपदेश देता हूँ। आपको उपदेश लेना पड़ेगा। इस पर कुछ लोग कहते हैं कि हमने नाम-दान तो बहुत बड़े संत से लिया हुआ है। जिसके लाखों अनुयायी हैं तथा हम पूर्ण विश्वास के साथ कई-कई घंटों तक ध्यान में भी बैठते हैं। परन्तु हमारे को कोई सांसारिक सुख व अध्यात्मिक अनुभूति नहीं हुई। इस पर महाराज जी उन फरियादी लोगों को समझाते हैं कि जिसके पास सतनाम उपदेश है और श्रद्धा-भाव से जपते हैं उनके सभी दुःख दूर हो कर मन में शांति मिलती है। कबीर साहेब कहते हैं कि -*

कबीर, जब ही सतनाम हृदय धरो, भयो पाप का नाश।
जैसे चिनगी अग्नि की, परी पुराने घास।।

गरीब, नाम रटे निर्गुण कला, मानुष नहीं मुरार।
ज्यों पारस संग लोहा लगे, कटि हैं कर्म लगार।।
नानक दुखिया सब संसार, सुखिया सोई नाम आधार।।
नानक नाम चढदी कला, तेरे भाणे सबदा भला।।

*आपजी ने जब उनसे नाम उपदेश पूछा तो पाया कि नाम ही गलत दिया हुआ है जो कि किसी भी संत की वाणी व ग्रन्थ में प्रमाणित नहीं है। जो सतनाम कहलाता है उसका प्रमाण कबीर साहेब, धर्मदास साहेब, गरीबदास साहेब, घीसा संत, नानक साहेब, दादू साहेब आदि संतों की वाणी में मिलता है। जिसको सुरति निरति मन और पवन के साथ किया जाता है जिसे अजपा जाप भी कहते हैं। इसके जपने से परमात्मा का साक्षात्कार होता है व सांसारिक दुःख भी दूर होते हैं। आप बतातें हैं कि सबका मालिक एक है और मुक्ति का मार्ग भी एक है। उस मार्ग को न अपनाने से सुर नर मुनिजन सब इस काल निरंजन के लोक में कर्मों के फल भोगते रहते हैं तथा पूर्ण मोक्ष प्राप्ति नहीं होती है। यदि इस लोक का भी मोक्ष प्राप्त करना है तो उसको प्राप्त करने का भी सबके लिए एक ही रास्ता है जो कि बिना जानकारी के बहुत कठिन है।*

गरीब, बंका पुर गढ बंकी पोर, संख जन्म जुग भरमी गौर।
अठोतर जन्म शिव संग साथ, जीव जुनी की कहां बात।।

*भगवान शंकर की पत्नी माता पार्वती 108 जन्मों तक शिवजी के साथ रहने पर भी जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त नहीं हुई। एक दिन उनको नारद मुनि मिले और कहा कि माता तुम बार-बार गर्भ में जाती हो व घोर कष्ट उठाती हो। भगवान शिव को गुरु बना कर उनसे मुक्त होने का मार्ग क्यों नहीं पूछ लेती? नारद जी के कहने पर पार्वती को भक्ति करने की प्रेरणा हुई। उसने शिव भगवान को गुरु बना कर मुक्त होने का मार्ग पूछा तो शिव भगवान ने समझाया कि मानव शरीर परमात्मा ने केवल भक्ति करने के लिए ही दिया है। चूंकि इसके अन्दर परमात्मा से साक्षात्कार करने की व्यवस्था है, जो कि अन्य प्राणियों में नहीं है। भगवान शिव ने एकांत में ले जाकर जहां कोई भी ज्ञान को न सुन सके पार्वती को बताया कि आसन पदम लगा कर व मेरुदंड सीधा रखते हुए भंवर को सुन्न में स्थापित करो। मूल कमल, स्वाद कमल, नाभि कमल, हृदय कमल, कंठ कमल, त्रिकुटी कमल व सहस्रांर कमल में जाने का रास्ता बतलाया। तब जा कर पार्वती को केवल सामिप्य मुक्ति प्राप्त हुई और जब तक शिव रहेंगे तब तक पार्वती रहेगी। जब काल निरंजन(ब्रह्म) महाप्रलय करेगा उस समय ये सभी नष्ट होंगे, न लोक रहेंगे, न भगवान रहेंगे। क्योंकि ये सभी पूर्ण मुक्त नहीं हुए हैं।*

*आपजी के हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, पंजाब व पश्चिमी बंगाल आदि राज्यों में लाखों शिष्य हैं जो आपसे सतनाम का उपदेश लेकर शराब, अफीम, धूम्रपान, मांस, अंडा आदि व सामाजिक बुराईयों - मूर्ति पूजा, श्राद्ध निकालना, व्रत रखना आदि ओछी उपासनाएँ छोड़ कर कबीर साहेब द्वारा बताए हुए सतनाम का जाप करके सांसारिक सुख व अध्यात्मिक अनुभूति प्राप्त कर रहे हैं। आपकी शरण में आने से हजारों व्यक्तियों के दीर्घ रोग दूर हुए हैं और उजड़े*

*हुए परिवार फिर से आबाद हुए हैं। हरियाणा राज्य के जींद शहर के अर्बनएस्टेट कॉलोनी में एक नव रत्न दीक्षित का परिवार जो कि मूल रूप से राजस्थान के पुष्कर कस्बे जिला अजमेर के रहने वाले हैं। उनकी पत्नी का नाम श्यामा दीक्षित है जो माता शेराँ वाली की कट्टर उपासक थी। उनके दो लड़के हैं। एक दिन श्यामा बहन पड़ोस में हो रहे माता जी के जागरण में चली गई। वहाँ पर एक औरत के अन्दर माता जी प्रकट हो कर श्यामा का नाम ले कर पुकारने लगी तथा कहा कि आप मेरी परम भक्त हो। आप मेरी 14 मास तक अखण्ड ज्योति जगा दो। मैं तेरे ऊपर कोई कष्ट नहीं आने दूंगी। उस बहन ने तभी से अखण्ड ज्योति जगा दी। तब उस बहन के घर में तीन गाड़ियाँ थी। बाजार में हौजरी(गॉरमैन्टस) की दुकान थी और हैचरी का व्यापार था। माता जी के कहे अनुसार अखण्ड ज्योति जगाने के बाद उसको हानि होनी शुरु हो गई। 14 मास के अन्दर उसके घर का सर्वनाश हो गया। सब कुछ बिक गया और कई लाख रूपए का कर्जा हो गया। घर में खाने को अन्न भी नहीं रहा। तब पड़ोसियों ने कुछ आटा इकट्ठा करके उनके घर पहुँचाया। उसके छोटे लड़के को जेल हो गई और बड़े लड़के व बहन श्यामा की नौकरी छूट गई। इसे कहते हैं सर्वनाश।*

*एक दिन स्वप्न में स्वयं माता ने उस बहन से कहा कि श्यामा तेरा दुःख निवारण करना मेरे वश की बात नहीं है तथा आपका नाम लेकर कहा है कि ''उस परम संत रामपाल जी महाराज की शरण में जा। वे ही आपके दुःख का निवारण कर सकते हैं।'' तब वह बहन आपकी शरण में आई और नाम लिया। नाम लेने के कुछ ही दिन बाद उसका लड़का जेल से बरी हो गया। उसके परिवार के चारों सदस्यों की नौकरी लग गई तथा अति सुख प्राप्त होने लगा और सतभक्ति मार्ग मिल गया।*

## "दूसरों की दिखावटी घटिया साधना से अपनी शास्त्र विधि अनुसार साधना अच्छी"

गीता अध्याय नं. 3 का श्लोक नं. 35

श्रेयान्, स्वधर्मः, विगुणः, परधर्मात्, स्वनुष्ठितात्,
स्वधर्मे निधनम्, श्रेयः, परधर्मः, भयावहः ।।

अनुवाद : (विगुणः) गुणरहित (स्वनुष्ठितात्) स्वयं मनमाना अच्छी प्रकार आचरणमें लाये हुए (परधर्मात्) दूसरों की पूजासे (स्वधर्मः) अपनी पूजा (श्रेयान्) अति उत्तम है जो शास्त्रानुकूल है (स्वधर्मे) अपनी पूजा में तो (निधनम्) मरना भी (श्रेयः) कल्याण कारक है और (परधर्मः) दूसरे की पूजा (भयावहः) भय को देने वाली है।

**अनुवाद : गुणरहित स्वयं मनमाना अच्छी प्रकार आचरण में लाये हुए दूसरों की पूजा से अपनी पूजा अति उत्तम है जो शास्त्रानुकूल है अपनी पूजा में तो मरना भी कल्याण कारक है और दूसरे की पूजा भय को देने वाली है।**

**विचार करें :-- अध्याय नं. 3 का श्लोक नं. 35 में कहा है कि दूसरों की गलत साधना(गुण रहित) जो शास्त्रानुकूल नहीं है, चाहे वह कितनी ही अच्छी नजर आवे या वह नादान चाहे आपको कितना ही डराये उनकी साधना भयवश होकर स्वीकार नहीं करनी चाहिए। अपनी शास्त्रानुकूल गुरु जी द्वारा दिया गया उपदेश पर दृढ़ विश्वास**

के साथ लगे रहना चाहिए। विचलित नहीं होना चाहिए। अपनी सत्य पूजा अंतिम स्वांस तक करनी चाहिए तथा अपनी सत्य साधना में मरना भी बेहतर है।

## "एक दुःखी परिवार की कहानी"

*उदाहरण :-- भक्त रमेश जैन पुत्र श्री ओमप्रकाश जैन, 509/3, शांति नगर, पटियाला चौंक, जीन्द(हरियाणा) में रहता है। जिसका टेलिफोन नं. 01681-25903 है। इसकी पत्नी का नाम भक्तमती कमलेश है तथा चार संतान हैं - दो लड़की तथा छोटे दो जुड़वा लड़के(सुनील व अनिल) हैं। इस परिवार पर कर्मदण्ड की मार इतनी थी कि सुनकर भी कलेजा कांप उठता है। भक्त रमेश जैन की पटियाला चौंक, जीन्द(हरियाणा) में रंग रोगन की दुकान है। इसकी पत्नी कमलेश को दमा बहुत वर्षों से था। छोटी लड़की, जो उस समय 8 वर्ष की थी को बचपन से दौरे पड़ते थे। सब जगह डॉ. व हस्पतालों से ईलाज करवा लिया था। लेकिन आराम नहीं मिला। अपनी परम्परागत पूजा जैन धर्म की भी करते थे। इसके साथ-साथ अन्य संतों, सेवड़ों व झाड़ा आदि लगाने वालों से भी राहत चाही। देवी-देवताओं की पूजा, पित्रों की पूजा, गुगा पीर की पूजा, हनुमान की पूजा, राम-कृष्ण की पूजा, मन्दिर में मूर्ति पूजा, श्राद्ध निकालना आदि सब करते थे। दोनों लड़के(सुनील-अनिल) जन्म से बीमार रहते थे। उस समय(जब यह परिवार जनवरी 1995 में नाम लेकर कबीर साहिब की शरण में इस दास के माध्यम से आया) जुड़वाँ बच्चों की आयु 5 वर्ष की थी। भक्त रमेश व बहन कमलेश ने बताया कि इन लड़कों पर दवाई खर्च लगभग तीन लाख रूपए हो चुका है और कमलेश व लड़की की बीमारी का खर्च अलग था। एक साधारण दुकानदार भला इतने खर्च को किस प्रकार सहन करे? जो पैसा बचता सब बीमारी पर लग जाता था। कर्ज भी काफी हो गया था। फिर उन्होंने आप जी का सतसंग सुना कि दुःखी जीव जो परमात्मा कबीर साहिब की शरण में आकर ठीक हो गए और पूर्ण परमात्मा(सतपुरुष कबीर साहिब) की सत भक्ति कर रहे हैं। अन्य सर्व पूजा जो काल तक की करते थे त्याग कर सुखी हो गए हैं। उनकी जुबानी सुन कर विश्वास हो गया कि अब हमें सही ठिकाना(सतमार्ग) मिल गया है और जनवरी 1995 में उन्होंने आपजी से उपदेश (नाम) ले लिया। अपने पूर्ण ब्रह्म कबीर साहिब के चरणों में सच्चे दिल से भक्ति करने लग गए और गुरु जी के बताए अनुसार शास्त्रानुकूल साधना शुरु कर दी।*

*कुछ दिनों बाद बहन कमलेश को दमा नहीं रहा, न ही लड़की को दौरे तथा दोनों लड़के भी पूर्णरूप से स्वस्थ हो गए। उन्होंने सुख की सांस ली। फिर लगभग नौ महीने के बाद गुगापीर की पूजा का दिन आ गया। उस दिन कमलेश की पड़ोसन ने आकर कहा 'क्या कमलेश गुगा पीर की पूजा नहीं करनी?' बहन कमलेश ने कहा 'हमने कबीर साहिब की शरण(नाम मन्त्र) ले रखी है और हमारे गुरु जी ने सर्व देवी-देवताओं की पूजा तथा व्रत आदि मना कर रखे हैं।' यह सुन कर पड़ोसन ने कहा 'नादान अपनी पुरानी साधना नहीं छोड़ा करते। मैंने भी अमुक संत से नाम ले रखा है। मैं तो सारी पूजा करती हूँ। एक हमारे रिश्तेदार ने गुगा की पूजा नहीं की थी। उसका एक ही लड़का था वही मर गया। अब तू देख ले।' इस बात से भयभीत हो कर भक्तमति कमलेश ने*

*गुगा की पूजा कर ली। अगले ही दिन लड़की को दौरा आ गया, दोनों लड़के सिविल हस्पताल(जीन्द) में दाखिल हो गए और कमलेश को दमा फिर शुरु हो गया। कबीर साहिब कहते हैं :--*

कबीर, सौ वर्ष तो गुरु की पूजा, एक दिन आन उपासी। वो अपराधी आत्मा, पड़े काल की फांसी।।

*भक्त रमेश का सारा परिवार फिर आपजी के (संत रामपाल दास के) पास आया। अपनी गलती की क्षमा याचना की। फिर दोबारा उपदेश(नाम) लिया। उसके बाद वह पूरा परिवार बिल्कुल स्वस्थ है। कोई आन उपासना नहीं करते हैं। पुराना मकान बेच कर नई कोठी बना ली है और कर्ज मुक्त भी हो गए हैं। आज (अक्तूबर 2006) ग्यारह वर्ष से ज्यादा हो चुके हैं। सबको कहते हैं कि हमारे जैसा दुःखी कोई नहीं था। जैसी कबीर साहिब ने हमारी प्रार्थना सुनी ऐसी सब जीवों की सुनें और गुरुदेव जी(रामपाल दास महाराज) से नाम लेकर अपना जीवन धन्य बनाएँ तथा काल-जाल से निकलें।*

*इसी तरह रोहतक शहर(हरियाणा) में दस वर्ष के विक्की नामक लड़के की दोनों किडनी(गुर्दे) खराब हो गई थी। उन्होंने सभी जगह उपचार करवाया। डॉक्टरों ने ऑपरेशन के लिए कह दिया था। उस लड़के का मामा ऑल इन्डिया हॉस्पिटल दिल्ली में डॉक्टर है। उसने उस लड़के को वहाँ ले जाने की तैयारी कर ली थी। तब लड़के की माता बहन सरोज देवी और विक्की ने जुलाई सन् 1999 में आपजी से नाम उपदेश ले लिया। तब वह लड़का आपकी कृपा से बिना ऑपरेशन के ठीक हो गया। जो आज सन् 2006 तक बिल्कुल स्वस्थ है। आपजी सतगुरु कबीर साहेब द्वारा बताया सतनाम देते हैं और अन्य सभी आन उपासनाएँ छुटवाते हैं। ऐसे हजारों परिवार हैं जो शराब व अन्य नशीली वस्तुओं का सेवन करके अपने जीवन को बर्बाद कर रहे थे। आपके सत्यज्ञान से उन्होंने वे सभी विकार छोड़ दिए व आपकी दया से अब वे सतगुरु कबीर साहेब की भक्ति करते हैं।*

*एक दिन एक व्यक्ति ने प्रश्न किया कि आपके महाराज जी गन मैन (बन्दूक वाले) क्यों रखते हैं। संत को क्या आवश्यकता है ? वह व्यक्ति श्री हनुमान जी का उपासक था तथा श्री राम, श्री कृष्ण आदि को पूजता था। मैंने उससे पूछा कि श्री हनुमान जी ने गदा किस लिए रखी है ? क्या हवा करने को ? जब श्री हनुमान जी जैसे महाबली को तथा श्री राम, श्री कृष्ण जैसे भगवानों को भी शैतानों के लिए हथियार रखने आवश्यक थे तो संत रामपाल जी महाराज के विषय में शंका किस लिए। उसने कहा कि बात तो आपकी सत्य है। दूसरे ने प्रश्न किया कि अन्य संत तो गन मैन नहीं रखते। उसको बताया कि हमारे महाराज जी वह ज्ञान बता रहे हैं जो अपने सद्ग्रन्थों में विद्यमान है। परंतु अन्य संत शास्त्र विरूद्ध ज्ञान व भक्ति बता कर सम्मानित हैं। अब उनकी पोल खुल रही है। वे कुछ भी घिनौनी हरकत करवा सकते हैं। इसलिए बचाव करना अति आवश्यक है। दूसरा कारण है कि बैंक में गन मैन होता है क्योंकि वहाँ पर धन है। किसी अन्य साधारण मकान पर गन मैन नहीं होता है क्योंकि वहाँ पर खजाना नहीं है। इसी प्रकार संत रामपाल जी महाराज के पास भक्ति व तत्व ज्ञान रूपी खजाना है।*

**VIII**

*कुछेक श्रद्धालु, ईर्ष्यालु व्यक्तियों के द्वारा भ्रमित किए गए हैं कि संत रामपाल जी महाराज जे.ई.(कनिष्ठ अभियन्ता) की नौकरी से निलम्बित या बर्खास्त किए गए हैं। उनसे प्रार्थना है कि ऐसे भक्ति द्रोही व्यक्तियों की बातों में न आ करके वास्तविकता से परिचित हों। जब-जब परम संत आए हैं, तब उनके विरोधियों की कमी नहीं रही। इस भ्रमणा के निवारण के लिए कृप्या देखें संत जी का नौकरी से त्याग पत्र जो सरकार द्वारा स्वीकृत है।*

P.W. IRRIGATION DEPARTMENT, HARYANA, CHANDIGARH.

ORDER

No. 3492/SNGE-II/2000: The resignation of Shri Ramp al Singh, Jatin Junior Engineer Irrigation Department, Haryana is hereby accepted with effect from 21.5.1995.

The acceptance of resignation is subject to the recovery/settlement of Govt. dues, outstanding against this official and further in view of the under-taking furnished by Shri Ramp al Singh Jatin Junior Engineer.

Usual events may be reported

Dated Chandigarh
the 16th May, 2000

J.L. Gambhir
General Manager,
Irrigation Department,
Haryana, Chandigarh.

No. 3493-3500 SNGE-II/2000 Dated 16-5-2000

A copy of above is forwarded to the following for information and necessary action:-

1. Superintending Engineer, YWS Circle, Rohtak.
2. Superintending Engineer, WJC Command Lining Circle, CADA, Rohtak.
3. PA to EIC & PA to G.M.
4. Steno to E.O. & Supdt./NGE-II & Supdt./Disciplinary Cell IDHO, Haryana, Chandigarh.
5. S & 7 NGE-II.

Shri Ramp al Singh Jatin S/o Sh. Nand Lal
House No. 4475, Defence Colony, Jind.

16-5-2000
Establishment Officer
for General Manager, Irrigation Deptt.
Haryana, Chandigarh

*भक्त महेन्द्र दास (धनाना)*
*सतलोक आश्रम करौंथा,*
*जिला रोहतक(हरि.)-124001*
***Mob. 9812026821,9812166044,9812004821***

# विषय सूची

## शंका समाधान

### (गुरू द्रोही की गति)


1. भक्त संजय उर्फ कृष्ण दास गुरू द्रोही का पोल खाता 1
2. भक्त समुन्द्र दास उर्फ लीलू गुरूद्रोही का पोल खाता- 22
3. भक्त गंगा दास गुरू द्रोही का पोल खाता--------------- 23
4. मुझ दास (संत रामपाल दास) का तत्व भेद प्राप्ति----- 27
5. संत धर्मदास जी के वंशों के विषय में ------------------- 30
6. पवित्र कबीर सागर में अद्धभुत रहस्य ----------------- 33
7. प्रभु प्रेमी पाठकों की शंकाओं का समाधान - रामपाल दास --------------------------------------------- 41
8. तीनों गुण क्या हैं ? प्रमाण सहित ---------------------- 49
9. तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी)अर्थात् त्रिगुण माया की पूजा व्यर्थ -- 50
10. शंका समाधान प्रश्नोत्तरी ----------------------------------- 53
11. पूर्ण परमात्मा साधक को भयंकर रोग से मुक्त करके - आयु बढ़ा देता है -------------------------------------------- 68
    (i). भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा(S.M.O) का प्रमाण ---------
12. भक्तमति सुशीला की आंख ठीक करना ------------- 70
13. तीन ताप को पूर्ण परमात्मा ही समाप्त कर सकता है-- 70
    (i). भक्त रामकुमार ढाका (Ex.Headmaster M.A.B.ED.) का प्रमाण---------------------------------------------------


### (भटकों को मार्ग)


1. भक्त समाज प्रभु की वास्तविक भक्ति से कोसों दूर---- 76
2. प्रभु प्यासे भक्त बसंत सिंह सैनी को मार्ग मिलना ----- 76
3. अद्धभुत करिश्मा---------------------------------------------- 81
4. अनहोनी की परमेश्वर ने ---------------------------------- 82
5. प्रभु ने सुनी गरीबों की ------------------------------------ 84
6. भगवान हो तो ऐसा ----------------------------------------- 85
7. लुटे पिटों को सहारा --------------------------------------- 86

8. संत हो तो ऐसा -------------------------------------------- 87
9. अपने भक्त को धर्मराज के दरबार से छुड़वाना -------- 89


## (सृष्टी रचना)


1. सृष्टी रचना ------------------------------------------------ 92
2. आत्माऐं काल के जाल में कैसे फंसी ?------------------ 94
3. श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी की उत्पत्ति-- 98
4. तीनों गुण क्या हैं, प्रमाण सहित -------------------------- 100
5. ब्रह्म(काल) की अव्यक्त रहने की प्रतिज्ञा ---------------- 101
6. ब्रह्मा का अपने पिता(काल) की प्राप्ति के लिए प्रयत्न-- 102
7. माता दुर्गा द्वारा ब्रह्मा को श्राप देना --------------------- 103
8. विष्णु का अपने पिता(काल) की प्राप्ति के लिए - प्रस्थान व माता का आर्शीवाद पाना --------------------- 104
9. परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों की स्थापना ------------- 110
10. पवित्र अथर्ववेद में सृष्टी रचना का प्रमाण ------------ 112
11. पवित्र ऋग्वेद में सृष्टी रचना का प्रमाण ---------------- 115
12. पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में सृष्टी रचना का प्रमाण-- 120
13. पवित्र शिव महापुराण में सृष्टी रचना का प्रमाण ------- 121
14. पवित्र श्रीमद्भगवदगीताजी में सृष्टी रचना का प्रमाण-- 122
15. पवित्र बाईबल व पवित्र कुर्आन शरीफ में सृष्टी - रचना का प्रमाण ----------------------------------------- 125
16. पूज्य कबीर परमेश्वर(कविर्देव) जी की अमृत वाणी- में सृष्टी रचना का प्रमाण -------------------------------- 126
17. आदरणीय गरीबदास साहेब जी की अमृत वाणी में - सृष्टी रचना का प्रमाण ----------------------------------- 128
18. आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में सृष्टी - रचना का संकेत ----------------------------------------- 134
19. अन्य संतों द्वारा सृष्टी रचना की दंत कथा ------------- 137

# भक्ति और भगवान

## शंका समाधान

### "भक्त संजय उर्फ कृष्ण दास गुरु द्रोही का पोल खाता"

*प्रश्न - एक कृष्ण दास नाम का लगभग 30 वर्ष का व्यक्ति अम्बाला के पास कलाल्टी गाँव में किसी पुराने गरीबदास मन्दिर आश्रम में रहता है। भगवां वस्त्र धारण किए है। वह भी आप वाले नाम मंत्र दान करता है। आप तो कहते हो कि वर्तमान में इन मंत्रों का किसी को ज्ञान नहीं। नाम देने का किसी को अधिकार नहीं। क्या उस व्यक्ति से जो स्वयंभु गुरु बना है, आत्म कल्याण संभव है ?*

*उत्तर -* गरीब संगत मांही कुसंगत ऊपजै, जैसे बन में बांस।
आपा घिस–२ अग्नि लगावे, करै बनखण्ड का भी नास।।

*आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने अपनी अमृत वाणी में कहा है कि पूर्ण संत की संगत में कुसंगत(गुरु द्रोही) उत्पन्न होते हैं। वे सारी संगत को ऐसे नष्ट कर देते हैं जैसे वन में बांस ऊपजते हैं। फिर आपस में हवा के झोंको से घिस-२ कर अग्नि लगा कर सारे वन को नष्ट कर देते हैं। ऐसा ही उदाहरण उस संजय(कृष्ण दास) पुत्र श्री बलवान मिस्त्री, गाँव करौंथा वाले ने पेश किया है।*

*उस व्यक्ति का पहला नाम सुरेन्द्र, दूसरा संजय तथा तीसरा आप बता रहे हो कृष्ण दास। वह पहले मुझ दास का शिष्य था। वह इसी गाँव करौंथा का वासी है। कुछ वर्ष तक मर्यादा में रहकर सेवा तथा स्मरण करता रहा। जो ज्ञान यह दास प्रचार करता है उसे भी याद हो गया तथा बोलने की शैली सुधार कर तड़क-भड़क कर बोलने लगा तथा चटक-मटक कर चलना उसका स्वभाव है। आँखें बंद करके अकड़ कर बैठ कर दिखावटी बुगला भजन करके ढोंग(दम्भ) करके प्रभुता व प्रशंसा का पात्र बनना उसके विनाश का कारण बना। क्योंकि ऐसे हठ करके एक स्थान पर बैठना पवित्र गीता जी तथा पवित्र अमृत वाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी तथा गरीबदास जी महाराज के अनुसार शास्त्र विरुद्ध है। उस व्यक्ति ने मुझ दास से तीनों मंत्र प्राप्त किए। चापलुसी करना तथा कपट युक्त बातें करना उसकी आम बात है। वह चातुर प्राणी है तथा महिमा का भूखा है। मुझ दास के साथ-साथ रहते हुए भी मुझसे छुपा कर अपने आप को महाराज कहलवाता था तथा आशीर्वाद देता था तथा कहता था कि मैंने तुम्हारे घर पर भोग लगाया था, इसलिए तुम्हें लाभ हुआ है।*

*एक सेवक ने मुझे बताया कि यह संजय कहता है कि मैं जिसके भोग लगाता हूँ उसी को लाभ होता है। इस दास ने उस सेवक की बात पर विश्वास नहीं हुआ। सोचा इनकी आपस में अनबन हो गई होगी, इसलिए ऐसे अच्छे भक्त की निंदा कर रहा है। ऐसी-ऐसी कई सेवकों की शिकायतें सुनी तो भी विशेष ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उस व्यक्ति में चतुरता तथा चापलुसी आवश्यकता से अधिक है।*

मुझ दास को फिर भी शक नहीं हुआ कि सचमुच यह इतना गिर चुका है। एक दिन यह दास गाँव कसरेंटी में पाठ करने गया हुआ था, वहाँ पर एक बहन आई। उसका एक पाँच वर्षीय लड़का था। उसने आते ही पूछा कि संजय महाराज कहां है ? मेरे पास बैठे सेवक ने पूछा क्या काम है ? महाराज जी तो यहां बैठे हैं। उस बहन ने कहा यह नहीं है, वह तो कम आयु का है। उस बहन ने बताया मैं मालचा की लड़की हूँ। वह महाराज वहाँ मिला था। मेरे लड़के को बोलने में अटक लगती है, संजय महाराज से दो बार तो हाथ रखवा लिया। वह कह रहा था कि ठीक न होवै तो फिर ले आना। बच्चे पर आशीर्वाद का हाथ रखवाना है। मैं मालचा गई थी, वहाँ से पता चला कि कसरेंटी में पाठ है वहाँ मिलेगा।

उसके पश्चात् मुझ दास को विश्वास हुआ कि सेवक ठीक ही कहा करते थे। फिर भी सोचा कि मेरे सामने कोई दृष्टांत हो तब बात बनें। एक दिन यह दास गाँव बामड़ौला में एक पाठ पर गया हुआ था। वहाँ एक लड़की को दौरे पड़ते थे। मुझ दास से उपदेश लेने के पश्चात् उस लड़की के दौरे कविर्देव की शक्ति से ठीक हो गए। वह स्वयंभू महाराज संजय भी वहाँ अधिक जाता था, क्योंकि जिस फैक्टरी में यह नौकरी करता था उसी फैक्टरी में इसका साथी भी नौकरी करता था। उस साथी की रिश्तेदारी गाँव बामड़ौला में थी, जिस कारण से यह वहाँ अधिक जाता था।

उस लड़की ने मुझे नहीं देखा था। शीघ्रता से उस नकली को डण्डवत् प्रणाम किया। यह दास देखता ही रह गया। जब नकली महाराज संजय ने उसको मेरे सामने ही आशीर्वाद का हाथ किया।

मेरे पुज्य गुरूदेव जी के सत्लोक गमन के पश्चात् इस कृष्ण दास (संजय) को पंजाब में कस्बा तलवंडी भाई जि० फिरोजपुर में बने आश्रम में देख भाल व सेवा के लिए छोड़ था। वहाँ भी स्वयंभू महाराज बन बैठा। मुझ दास द्वारा भरी कैसटों को सुन कर स्वयं प्रचारक बन गया। वहाँ कि सारी संगत इसे महाराज जी कह कर पुकारती थी तथा दण्डवत् प्रणाम करती थी और यह उन्हें आशीर्वाद देता था। यह दास (रामपाल दास) वहाँ पर केवल एक या दो रोज जा पाता था क्योंकि हरियाणा में पाठों कि भर-मार चल रही थी। दो वर्ष के बाद मुझे पता चला कि यह नादान अपने आप को महाराज कहलवाता है तथा आशीर्वाद भी देता है। तब सर्व संगत को समझाया, तब इसे भक्त जी कहने लगे। कुछ दिनों बाद जो इसे महाराज कहते थे। इस नकली महाराज की वास्तविकता का ज्ञान हुआ कि यह तो चुगलखोर है तथा इसमें कपट का अन्त नहीं है और पूजा के रूपयों में भी हेरा फेरी करता है। अपने छोटे भाई की तलवण्डी में फर्निचर की दुकान भी खुलवादी है तब वहाँ की संगत ने एक अन्य पुजारी लाकर छोड़ा। यह दास सत्संग करने गया तो देखा संगत दो फाड़ हो चुकी है। आपस में लड़ने को तैयार है। उनके साथ इसी के सामने बातचीत की तब उन्होंने इसकी ढेर सारी त्रुटियाँ बताई। कुछ संगत इसकी समर्थक भी थी परंतु ज्यादातर इसके विरूद्ध थी।

*उसी समय एक संगत के व्यक्ति ने बताया कि यह तो ऐसा चालाक है कि एक बार यहाँ (तलवंडी भाई) में म्यूनिसीपल कमेटी के चुनाव हुए। दो कंडिडेट चुनाव लड़ रहे थे। दोनों ही इस नकली महाराज संजय (कृष्ण दास) से विजय का आशीर्वाद लेकर गए। एक की विजय होनी ही थी। विजेता कंडिडेट बैंड बजाता हुआ आश्रम में आया इसके माला डाली तथा इसने कहा कि मेरा आशीर्वाद कभी खाली नहीं जाता है। तब वहीं खड़े एक व्यक्ति ने कहा कि जो पराजित हुआ है वह भी तो आप से ही आशीर्वाद प्राप्त करके गया था। उस नकली महाराज(कृष्ण दास) संजय ने कहा कि जो पहले आता है उसी की विजय होती है। उस व्यक्ति ने कहा कि पहले भी वही आया था जो हारा है। अपना सा मुंह बना कर नकली महाराज नीचे को देखने लगा। उपरोक्त वार्ता को सुन कर मुझ दास को बहुत आश्चर्य हुआ। जो कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि यह आस्तीन का सांप है। उस दिन वहाँ एक फिरोजपुर के सेवक के पाठ का आश्रम में भोग इस दास ने लगाया। भोग के पश्चात उपस्थित संगत को रक्षा सुत्र बाँधने के लिए इस नकली महाराज संजय (कृष्ण दास) को कहा। यह रक्षा सुत्र बाँध रहा था। एक बहन अपने रिश्तेदार को कह रही थी कि जिसने यह पाठ करवाया है यह मेरे फूफा जी हैं। इनकी पैंसठ लाख रूपये की उधार नहीं मिली क्योंकि उस समय पंजाब में उग्रवाद का जोर था। जिस कारण से यह पागल हो गया था। पाँच-पाँच गोलियाँ नशे की खाता था तब भी उसे नींद नहीं आती थी। डॉ. ने कहा था कि इसकी सम्भाल रखना। यह आत्महत्या भी कर सकता है। संत रामपाल जी महाराज से उपदेश लिया। उसके बाद बिना किसी दवाई के दस-२ घण्टे सोने लगा, दो महीने में पैंतालिस लाख की उधार प्राप्त हो गई। इनके लड़के की शादी को कई वर्ष हो चुके थे। संत रामपाल जी महाराज से नाम प्राप्ति के पश्चात दसवें महिने लड़के की प्राप्ति हुई। क्या-२ गुण सुनाऐ सन्त रामपाल दास जी महाराज के। उन बहनों को यह संजय (कृष्ण दास) रक्षा सुत्र बाँध रहा था और मेरी ओर पीठ थी। इन्हीं के बिल्कुल समीप यह दास खड़ा यह सब वार्ता सुन रहा था। उस समय यह संजय (कृष्ण दास) उस बहन से बोला कि तेरे फूफा जी के घर पर आदि अन्त का भोग तो मैं ही लगा कर आया था, इसलिए लड़का हुआ है। उस बहन ने कहा कि भक्त जी जिस समय आप भोग लगाने गए तब तक उन्होंने टैस्ट करवा लिया था तथा पता लग चुका था कि लड़का है, तभी तो उन्होंने भोग लगवाया था। वह भी गुरू जी से आज्ञा लेकर लगवाया था। यह सर्व वृतांत अपने कानो सुन कर यह दास कुछ नहीं बोला तथा इसकी कृतघ्नत्ता पर घण्टों सोचता रहा।*

*उसी कस्बा तलवंडी भाई के एक व्यक्ति को पता नहीं था कि यह नकली महाराज स्वयंभू बना है। गुरूदेव की ओर से इसे कोई आदेश भोग लगाने या आशीर्वाद देने का नहीं है। उसने मेरे सामने ही कहा कि हमारे घर पर संजय महाराज ने भोग लगाया। पहले हमने इनके पैर धोए चरणामृत लिया। बहुत अच्छा सत्संग किया। यह बात वह नकली सुनकर वहाँ से उठकर चला गया। इस दास*

ने सर्व संगत को समझाया कि इस तरह आप नाम रहित हो जाओगे। यह तो एक आम सेवक है। परन्तु उसका वहाँ हर समय रहना था इसने अपना रंग चढाए रखा। मैंने इस नकली को भी समझाया। इसने दोबारा नाम भी लिया और आगे से गलती न करने का आश्वासन दिया। दूसरी बार गया तो वह व्यक्ति जिसने इससे भोग लगवाया था तथा पैर धोए चरणामृत लिया था उसकी पच्चीस लाख रूपये की हानि हो गई। मेरे सामने बुरी तरह रो रहा था। उसको इस दास ने बताया कि आप नाम रहित हो गए हो। आपने नकली महाराज संजय (कृष्ण दास) में आस्था बना ली है। इसलिए आप को हानि हुई है परन्तु वह नादान फिर भी उसी का पिट्ठू बना रहा। इस तरह के न जाने कितने छल युक्त चरित्र इस नकली महाराज संजय (कृष्ण दास) कपटी के देखें। यदि सारा विवरण करूँ तो एक अलग से पुस्तक तैयार हो जाए, समझदार को संकेत ही बहुत होता है। उसके भाई ने जो फर्निचर की दुकान खोली थी। उस संजय के हरियाणा आते ही वह भी दुकान बंद करके हरियाणा आ गया। वहाँ पर उनकी दाल नहीं गली।

मुझ दास द्वारा उपदेश प्राप्त सेवक यदि किसी अन्य भक्त या व्यक्ति में श्रद्धा कर लेता है तो वह मर्यादाहीन हो जाता है। उसका नाम खण्डित हो जाता है। यह प्रभु का नियम है। कबीर परमेश्वर कहते हैं - गुरु को तजै, भजै जो आना। ता पशुआ को , फोकट ज्ञाना।।

भावार्थ है कि जो साधक अपने गुरु को त्याग कर अन्य में श्रद्धा करता है तो उस मूर्ख को कोई ज्ञान नहीं है। क्योंकि यही दण्ड हम वर्तमान में काल लोक में भोग रहे हैं। हम सर्व आत्माऐं जो काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड में बंद हैं। पहले सतलोक में आनन्द से अपने स्वामी कविर्देव के पास रह रहे थे। इस काल(ज्योति निरंजन) प्रभु ने तीन बार तप किया। जिस कारण हमने अपने पति(स्वामी) से आस्था हटा कर ब्रह्म(काल प्रभु) में श्रद्धा कर ली। जैसे पतिभ्रता पत्नी अपने पति के साथ-२ अन्य व्यक्ति को भी चाहती है तो पति के हृदय से उतर जाती है। इसी प्रकार हम सतलोक से निष्काशित हुए। जो पूर्ण गुरु का शिष्य किसी अन्य भक्त की किसी भी क्रिया से (प्रवचन शैली से प्रभावित होकर, उसके द्वारा दिए दान की अधिकता को देख कर, उसके द्वारा भक्ति करने का दम्भ अर्थात् पाखण्ड करने को देख कर प्रशंसक होता है) प्रभावित हो कर उसमें श्रद्धा करता है वह गुरुभ्रता पद से गिर जाता है तथा नाम रहित हो जाता है। इस कारण से वह संजय(कृष्ण दास) संगत को खोखला करता था। प्रभु फुलवाड़ी में दीमक था।

जैसे कोई सैनिक अन्य सैनिकों में अपने आपको सेना प्रमुख(जरनल) सिद्ध करके उनमें प्रभुता करता है तो वह धोखेबाज है। क्योंकि जरनल(सेना प्रमुख) वाला लाभ सैनिक दूसरे सैनिक को नहीं दे सकता। जब सरकार को पता चलता है तो उस नकली जरनल को यह सोच कर नौकरी से निकाल दिया जाता है कि यह धोखेबाज आगे भी देश द्रोह कर सकता है। यही भूमिका संजय उर्फ कृष्ण दास नकली महाराज कर रहा था।

*बाद में पता चला कि यह तो अपने आप को छोटा महाराज कहलवाता था। उस समय संगत को यह ज्ञान नहीं था कि यह सचमुच ढोंगी है। अब उस नकली गुरु से अधिक ज्ञान तो यहां की संगत के दस वर्ष के बच्चे को भी है। उसके बाद उस नादान को न जाने कितने बार समझाया कि यह मनुष्य जीवन बार-बार नही मिलता, यह वास्तविक भक्ति विधि तथा तत्वज्ञान बहुत ही असम्भव है। यदि मनुष्य जन्म मिल भी जाएगा तो वास्तविक विधि नहीं मिलती। उस नकली महाराज ने क्षमा याचना की। दोबारा उपदेश लिया। फिर ऐसी ही गलती की। ऐसे छः बार इसने नाम खण्ड किया तथा दोबारा क्षमा याचना करके भविष्य में गलती न करने का आश्वासन दिया। फिर गलती की तथा आश्रम त्याग कर जाने लगा। इस दास ने बहुत समझाया, आप मत जाओ, मार खाओगे, कहीं ठिकाना नहीं है।*

*कबीर साहेब की वाणी सुनाई -*

गुरु सेवा में फल सर्वस आवै, गुरु विमुख नर पार न पावै।
गुरु वचन निश्चय कर माने, पूरे गुरु की सेवा ठाने।।
गुरु चरणन में ध्यान लगावे, अंत कपट गुरु से न लावै।
गुरु से शिष्य करै चतुराई, सेवा हीन नरक में जाई।
सतगुरु की गति हृदय धारे, और सकल बकवाद निवारै।
शिष्य होय सरबस नहीं वारै, हिये कपट मुख प्रीत उचारै।
गुरु से कपट करे चतुराई, सो हंसा भव भ्रमें आई।
गुरु से कपट शिष्य जो राखै, यम राजा के मुगदर चाखै।
जो शिष्य गुरु की निंदा करही, परिवार सहित नरक में परही।
गुरु को तजै भजै जो आना, ता पशुवा को फोकट ज्ञाना।
गुरु से बैर करै शिष्य जोई, भजन नाश और बहुत बिगोई।
संमुख गुरु की आज्ञा धारै, और पीछे तै सकल निवारै।
सो शिष्य घोर नरक में परही, रूधिर राध पीवै नहीं तरहीं।
वेद पुराण कहै सब साखी, साखी शब्द सबै यों भाखी।
मानुष जन्म पाय कर खोवे, सतगुरु विमुखा युग–युग रोवै।

*सब बात सुनकर भी गलती करने तथा कपट करने से बाज नहीं आया। इस दास ने उससे पूछा कि क्या यह भक्ति विधि वर्तमान में किसी संत के पास है ? उस नकली महाराज संजय ने कहा कि आपके अतिरिक्त वर्तमान किसी संत व पंथ के पास वास्तविक ज्ञान नहीं है। इस दास ने कहा कि जान बुझ कर क्यों अपने नाम को बार-बार खण्ड कर रहे हो। उस नकली गुरु ने कहा कि आज के बाद सही चलूंगा। मैं अपने घर पर रहूँगा, मेरी माता जी बीमार रहती है। घर पर काम करूंगा तथा आपके दर्शन करने भी आता रहूँगा। इस दास ने कहा कि और विचार कर ले, जब निकल आया है तो क्यों वापिस फंस रहा है। कुछ दिन और देखले, फिर तेरा मन नहीं मानता तो तेरी इच्छा जैसा कर लेना। आश्रम में एक सेवक इसी करौंथा गाँव का भक्त कृष्ण कांत भी स्वईच्छा से रह रहा है। उस नकली महाराज ने भक्त कृष्णकांत से कहा  कि यहाँ कुछ नहीं है। अपने घर चला जा। मेरे*

*रहते-रहते निकल जा। भक्त कृष्ण कांत ने कहा कि तुझे जाना है तो जा। महाराज जी के प्रति ऐसी बातें मत कह। पहले तू सब को कहता फिरता था कि संत रामपाल जी स्वयं परमेश्वर आए हैं। कबीर साहेब ही पुनः अपना ज्ञान कराने आए हैं। अब अपने मुख से क्या बोल रहा है। भक्त संजय दास तुझे शर्म आनी चाहिए। आज पृथ्वी पर ऐसा संत नहीं है। संजय उर्फ कृष्ण दास ने अगले दिन मुझ दास से कहा कि मैं जा रहा हूँ और चला गया। फिर पता चला वह अपने घर न जाकर एक पाठ पर पहूँचा। वहाँ पर सेवकों ने पूछा कि क्या आप महाराज जी से आज्ञा लेकर पाठ पर आए हो। उसने कहा हां-हां। आज्ञा लेकर पाठ पर आया हूँ। एक भक्त बाद में पाठ पर गया। उसने नकली संत को पाठ पर गया देखा तो पूछा - आप तो महाराज जी से घर जाने की कह रहे थे, यहां कैसे आ गए ? उस नकली गुरु संजय उर्फ कृष्ण दास ने कहा कि यदि महाराज जी मुझे दो लाख रूपए दें तथा एक पिस्टल दें तब मैं आश्रम में रह सकता हूँ। क्योंकि आश्रम पर गुण्डों द्वारा आक्रमण होने वाला है। वहाँ कोई सुरक्षा तो है ही नहीं। कौन रहे वहाँ पर। यह सब जानकारी सर्व सेवकों ने तथा जिनके पाठ हो रहा था उस भक्त ने भी मुझ दास को दी। उसके बाद उसका आश्रम में आना मना कर दिया क्योंकि झूठ तथा कपट की हद होती है।*

*पिता को बच्चा (लड़का-लड़की) बहुत प्यारा लगता है। माता को पिता से भी सौ गुणा प्यार बच्चों में होता है। माता से भी सौ गुणा प्यार गुरुदेव का अपने शिष्यों में होता है। इसलिए मुझ दास का प्रयत्न रहा कि यह नादान काल के हाथों लगेगा, यह प्रभुता की हवस इसे खा जाएगी। उसने फिर उसी फैक्टरी में नौकरी की जिसे छोड़ कर आया था। बीच-बीच में भी संगत के घरों में जाकर विष घोलता रहा। जिस कारण बहुतों को हानि हुई। फिर भी उस पर रहम आया। एक सेवक जो उसी फैक्टरी में नौकरी करता है उससे इस दास ने कहा कि उसे समझा दो, अपना जीवन नष्ट न करें तथा फिर से उपदेश प्राप्त कर ले। उस सेवक ने जा कर संजय उर्फ कृष्ण दास से कहा कि महाराज जी ने कहा है कि आप दोबारा उपदेश ले लो, अपना जीवन सुधार ले। उस सेवक के कहने से वह सोनीपत में तीसरे रविवार के सत्संग में उसी सेवक के साथ आया। उससे पूर्व कुछ अन्य गाँव-गाँव के भक्तों ने उस गुरु द्रोही के विषय में गुरु निंदा की बातें करने का संकेत किया तथा मर्यादाहीनता की सीमा को पार कर जाने का ज्ञान कराया। जिस कारण से उसे फिर उपदेश नहीं दिया।*

*उसके कुछ दिनों पश्चात् वह सुरेन्द्र (संजय) रूपी गुरु द्रोही नया नाम कृष्ण दास बदल कर स्वयं गुरु बन कर नामदान करने लग गया है।*

*इस विषय में परमेश्वर कबीर साहेब (कविर्देव) जी ने कहा -*

कबीर, जान बुझ साची तजे, करै झूठ से नेह। ताकी संगति हे प्रभु, स्वपन में भी न देह।।
कबीर, राज तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह। मान बड़ाई ईर्ष्या दुर्लभ तजना येह।।

***भावार्थ है कि मान बड़ाई वश सत मार्ग को जान बुझ कर त्याग कर झूठ-कपट के द्वारा असत को ग्रहण जो व्यक्ति करता है उसके दर्शन तो स्वपन में भी***

*परमात्मा न होने दे। ऐसे व्यक्ति से भक्त को बहुत सावधान रहना चाहिए। आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने कहा है -*

गरीब, गुरुद्रोही की पैड पर, जै पग आवै बीर। चौरासी निश्चय पड़ै, सतगुरु कहै कबीर।।

*भावार्थ है कि संत गरीबदास जी ने कहा है कि जो साधक गुरु द्रोही हो जाता है उसका संग नहीं करना चाहिए। पैड़ पर पैर आना का भाव है कि उस जैसी चाल चलना अर्थात् उस व्यक्ति की बातों में आकर अपना भाव बिगाड़ना ठीक नहीं। उसके निकट भी नहीं जाना चाहिए। गुरु द्रोही को पागल कुत्ता जानना चाहिए। स्वस्थ कुत्ते को तो रोटी डालनी चाहिए, परन्तु पागल को तो आहार कराना भी खतरे से खाली नहीं है।*

*यदि उस गुरु द्रोही व्यक्ति के पास गुरु भक्त जाता है तो वह अवश्य नाम रहित हो कर नरक तथा चौरासी लाख प्राणियों की योनियों में नाना प्रकार के कष्ट भोगता है। संत गरीबदास जी महाराज अपने परमेश्वर कबीर साहेब जी को भी साक्षी रख कर कह रहे हैं कि गुरु द्रोही इतना भयंकर प्राणी हो जाता है उससे कभी सम्पर्क नहीं करना चाहिए। यह मेरे प्रभु कबीर साहेब जी भी कहते हैं।*

गरीब, कोटि वर्ष करे संगत संत की, पत्थर का जल में के भीजै।
चन्दन बन में रंग लगादे, पर बांस विटम्बी ना सीझै।।

*आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने ऐसे ही महीमा के भूखों के विषय में कहा है कि जैसे पत्थर को चाहे कितने समय तक जल में डाले रखो उसमें जल का शीतल गुण नहीं आता है। बाहर निकाल कर एक दूसरे से रगड़ने से वैसे ही अग्नि निकलती है। ऐसे ही पत्थर जैसे प्राणी को कितना ही समय तक संत का साथ मिले उसका स्वभाव नहीं बदल सकता है। दूसरा उदाहरण दिया है कि वन में चन्दन का वृक्ष अपनी महक से कड़वे वृक्ष नीम को भी अपनी महक से सुगंधित कर देता है। परंतु बांस पर चन्दन का भी प्रभाव नहीं पड़ता। इसी प्रकार उस संजय उर्फ कृष्ण दास को जानें। जो तीन-चार वर्ष मुझ दास के साथ रह कर भी अपना पाखण्ड करने का स्वभाव नहीं बदल सका।*

*एक बहन ने बताया कि मेरा पति भी उस संजय में ज्यादा आस्था रखता था। उसको आश्रम से निकालने के बाद वह संजय (कृष्ण दास) हमारे घर आया। भगवां कपड़े पहन रखे थे। गले में माला डाल रखी थी तथा रात्री में वह हमारे घर पर रूका था। अपनी मन पसंद सब्जियाँ कह कर बनवाई। फिर कहा कि हलवा बनाओ भोग लगाऊँगा। उस बहन ने अपने पति से कहा कि हलवा बनाने को कह रहा है। हमारी स्थिति तो दाल रोटी की है। फिर भी उधार कर के हलवा बनाया। जी खोल कर निंदा की तथा मेरे पति का भाव खराब कर दिया। उसने हमारा भी आप से मिलना बन्द करा दिया तथा स्वयं भी नाम खण्ड कर लिया। जिस दुकान से परिवार पोषण हो रहा था वह कुछ दिनों में ठप्प हो गई। भूखे रहने लगे। एक दिन एक बहन ने बताया कि सतगुरू रामपाल जी महाराज कह रहे थे कि जिन-२ के घर वह संजय सुन-सुनियां घूम गया है उन्हीं को भारी नुकसान उठाना पड़ा है।*

*तब मुझे होश आया कि हमारे घर भी गया था। उसी दिन के बाद हमारे बुरे दिन लगे हैं। अपने पति से छुप कर उस बहन ने दोबारा नाम दान मुझ दास (रामपाल दास)से लिया। फिर अपने पति को समझाया परंतु वह मानने को तैयार नहीं था। कुछ दिनों के पश्चात उस बहन ने अपने पति से कह दिया कि मैंने उपदेश ले लिया है। आप ने जो करना है कर लो। कुछ महीनों के बाद उस के पति ने भी नाम दान दोबारा लिया तथा अपनी गलती की क्षमा याचना की। आज उसी सेवक की दुकान मुख्य बाजार में धूम-धड़ाके से चल रही है।*

*वह संजय (कृष्ण दास) मुझ दास के एक सेवक के घर साँपला में रूका। उन्होंने इसकी बहुत सेवा की। कुछ दिन बाद उस भक्त की पत्नी के पेट में पानी की रसौली हो कर फूट गई। असहनीय पीड़ा होने लगी। साँपला के डॉ. ने जवाब दे दिया। फिर रोहतक मैडिकल में आप्रेशन हुआ। डॉ. हैरान रह गये कि आप बच कैसे गए ? तब उस बहन ने कहा कि हमारे सिर पर पूर्ण परमात्मा का पंजा है। यह भी हमारी ही गलती का परिणाम होगा। आज तक 8 वर्ष नाम लिये हो गए थे। कभी बुखार भी नहीं चढा था। हस्पताल से छुट्टी के बाद सीधे आश्रम करौंथा में आए। सर्व वृतांत बताया। तब इस दास ने उन्हें बताया कि यह सब हानि केवल उस संजय के कारण हुई है। इस बात से वे दोनों कहने लगे कि महाराज जी आप ही कहते हो कि द्वार पर आए कुत्ते को भी रोटी डालनी चाहिए। इस दास ने कहा कि पागल कुत्ते को आहार कराना हानिकारक होता है। गुरू द्रोही पागल कुत्ता हो जाता है। श्रद्धालुओं ने इस दास की बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया, चले गए। कुछ ही महीनों पश्चात उनके दोनों लड़कों की भयंकर दुर्घटना हो गई। छोटे बच्चे के सब दाँत बाहर निकल गये, इलाज करवाया। परंतु लड़के की पीड़ा बढ़ती ही जा रही थी। लड़का उस समय 12 वर्ष की आयु का था। लड़के ने कहा कि मुझे गुरू जी के पास आश्रम करौंथा में ले चलो। मैं वहीं ठीक होऊँगा। डॉ. ने सफर करने, हिलने-डुलने आदि से सख्त मना कर रखा था। लड़के का आग्रह देखकर लड़के को लेकर मुझ दास के पास आए। आते ही लड़के ने दण्डवत् प्रणाम किया। उस बच्चे की दशा देख कर मुझ दास को बहुत तरस आया तथा उनसे कहा कि आप दोबारा उपदेश लो और आगे से उस गुरू द्रोही को दूर से भी प्रणाम मत करना। उसके पश्चात उसी दिन उस बच्चे का दर्द समाप्त हो गया। दाँत जो हिल रहे थे जाम हो गए। उससे तीसरे दिन दिल्ली में पंजाब खोड़ गाँव में रविवार का सत्संग था। वहाँ वह लड़का तथा उसका पिता जी दोनों सत्संग सुनने पहुँचे तथा सारी कहानी बताई। उसके बाद सुख से रह रहे हैं।*

*एक बार दिल्ली में नजफगढ़ में पाँच दिवसीय सत्संग हुआ था। उसके पोस्टर लगाने यह नकली महाराज संजय (जो कृष्ण दास बना हुआ है) अन्य सेवकों के साथ सेवा करने गया हुआ था। नजफगढ़ के आस-पास के भक्तों ने इसको गुरूजी के तुल्य आदर सत्कार दिया। इसको सारा प्रसाद (चाय के साथ बिस्कुट, बर्फी आदि) देते थे और वह पहले उठाता फिर अन्य को वितरित किया जाता था। अनजान संगत को पता नहीं था कि वे गुरूभ्रता पद पर से गिर रहे हैं। जिसका*

*भयंकर परिणाम होता है। कुछ दिनों के पश्चात एक सेवक का लड़का मर गया, एक की इतनी भयंकर दुर्घटना हुई कि बाल-२ बचा लेकिन टांग टूट गई, एक के पेट में दर्द हुआ तथा एक ही रात्री में बारह हजार रूपये लग कर बाल-बाल बचा। एक की टी.वी. आदि की दुकान नजफगढ़ में भी पूरी तरह जल कर भस्म हो गई, लगभग पचास लाख का नुकसान हुआ था।*

*एक भक्त की भैंस ने बिजली की तार को मुख से काट दिया। वह भैंस मर गई। भैंस के कारण अर्थ (Earth) अधिक होने से घर की बिजली अधिक हो गई जिस कारण रंगीन टी.वी., वांशिग मशीन, घर की सब फिटिंग जल गई। भारी नुकसान हुआ। जबकि पहले उस भक्त की पत्नी मृत्यु शैय्या पर थी। मुझ दास (रामपाल दास) से उपदेश प्राप्त करते ही स्वस्थ हो गई। उसे ग्यारह वर्ष तक कोई सन्तान नहीं हुई थी। दसवें महिने पुत्र हुआ। फिर उस गुरू द्रोही में आस्था होने से प्रभु ने अपना पंजा उठा लिया। दोबारा उपदेश लिया उसके बाद पूरा परिवार सुखपूर्वक रह रहा है।*

*एक बहन को सोनीपत में नाक से खून बहना शुरू हो गया और इतना खून बहा कि तसला(एक बड़ा लोहे का बर्तन) भर गया। डॉ. के पास दो दिन दाखिल रही, कोई आराम नहीं हुआ। वह उस संजय रूपी सर्प को बहुत अच्छा भक्त जानकर भाई की तरह प्यार करती थी। आश्रम से जाने के बाद उससे मिलती रही। वह भी फोन करता था। जिस कारण परमेश्वर ने पंजा उठा लिया। अचानक नाक से रक्त बहने लगा। सर्व इलाज व्यर्थ सिद्ध हुए। तब वह बहन आश्रम करौंथा में आई और दोबार उपदेश लिया। उसके बाद आज चार वर्ष तक उसे कोई कष्ट नहीं हुआ है।*

कबीर गुरु को तजै भजै जो आना, ता पशुवा को फोकट ज्ञाना।।

*यह दास (रामपाल दास) बहुत चिन्तित हुआ कि हे प्रभु ! आपकी संगत में क्या घुस गया ? मुझ दास की श्रद्धा में या कोई सेवा में त्रुटि हुई हो जिस कारण आप के बसाए परिवार उजड़ रहे हैं। लेकिन बाद में पता चला तब सब ने दोबारा उपदेश लिया। अब चार वर्ष से सब परिवार पूर्ण सुखी हैं।*

*एक परिवार की लड़की की शादी हुई। लड़की को एक पुत्र प्राप्त हुआ। उसी समय यह आस्तीन का साँप हरियाणा में आया ही था। उसकी मिठ्ठी-२ बातों से प्रभावित हो कर उस परिवार की आस्था भी उसमें पूर्ण रूप से हो गई। कुछ ही महीनों के पश्चात उस लड़की का पति दुर्घटना में मारा गया। इस संजय (नकली नाम कृष्ण दास) की चतुरता का आभास हो जाने के पश्चात इसका पाठों पर जाना बन्द कर दिया गया था। मुझसे झूठ बोल कर उस लड़की को सात्वंना देने गया। लड़की की माता ने मुझ दास को बताया कि लड़की अपने पति के वियोग में चार दिन से बेहाल थी। कुछ भी खा-पी नहीं रही थी। संजय गया तो लड़की उठी और कुछ खाया-पीया तथा होंसला हुआ। इससे स्पष्ट है कि उस बनावटी बातें बनाने वाले में कितनी श्रद्धा थी जिसका कितना भयंकर परिणाम भोगना पड़ा। इस दास*

*(रामपाल दास) ने अपना पूरा जीवन लगा दिया। दिन-रात सत्संग सेवा करके मार्ग दर्शन किया। उस पाखण्डी को केवल मीठी बातें बनाने के कारण ही पसंद कर लिया। इसी गलती के कारण सतलोक से निकले थे। जो परमात्मा सर्व सुख दे रहा था उसको व्यर्थ समझा और जो अपने स्वार्थवश ड्रामा करके तप कर रहा था उसे पसंद किया। कबीर परमेश्वर कहते थे कि :-*

निरंजन धन तेरा दरबार, पाखण्डी की पूजा जग में, संत को कहै लबार।।

*उसके बाद उस संजय (कृष्ण दास) को फिर समझाया कि तूं बाज आ जा। गुरुदेव के सामने झूठ बोलना महापाप होता है। कबीर साहेब कहते हैं कि :-*

गुरु सम्मुख झूठ संजोई, निश्चय नरक पड़ै शिष्य सोई।।
गुरु से बैर करै शिष्य जोई, भजन नाश और बहुत बिगोई।
पीढ़ी सहति नरक में परि है। गुरु आज्ञा शिष्य लोप जो करि है।
गुरु से शिष्य करै चतुराई, सोवा हीन नरक में जाई।।

*उसके बाद उसे कह दिया गया कि अब के तेरी कोई भी गलती मिली तो तुझे आश्रम से निकाल दिया जाएगा। उसकी चाल थी कि संगत को अपना बना कर आश्रम करौंथा को प्राप्त करके महंत बनूं। जब संगत को पता लगता गया तो उसे धिक्कारने लगे। उपरोक्त वाणी परमेश्वर की है जो उस गुरु द्रोही पर पूर्ण रूप से खरी उतरती है। इसका दण्ड इसे प्रभु अवश्य देगा।*

*जिस कारण से उसकी सब चाल असफल हो गई तो वह आश्रम छोड़ कर मना करते-२ चला गया।*

*उस लड़की की माता जी आश्रम में आई तो उसने पूछा कि संजय भक्त जी कहाँ हैं ? इस दास ने कहा कि वह तो आश्रम छोड़ कर जा चुका है। उस नादान की अनजान संगत पर इतनी छाप थी कि उस बहन ने कहा कि महाराज जी वह आश्रम भले ही छोड़ गया लेकिन वह आपको नहीं छोड़ सकता। उस जैसा तो एक भी भक्त नहीं है। तब उस नादान को समझाया कि आप गुरु जी से अधिक जानने लग गई क्या ? आपको पता नहीं वह क्या था ?*

*लड़की व उसके परिवार ने पुनर् उपदेश प्राप्त किया। उसके पश्चात् लगभग चार वर्ष हो चुके हैं। उनके किसी पशु को भी हानि नहीं हुई है। यह सब दुःख का कारण वही संजय रूपी दीमक था।*

*एक सेवक की बहन की ससुराल गाँव मालचा जिला सोनीपत में है। उस परिवार ने भी इस दास से उपदेश प्राप्त है। आश्रम त्यागने के पश्चात् वह संजय उनके घर रात्री में पहुँचा। आने के बाद कहा कि मैं आरती व सत्संग करूंगा। वह सत्संग कर रहा था। उस परिवार का पड़ौसी से झगड़ा हो गया। दोनों और से लट्ठ उठा लिए, सिर फूट गए। अपनी बहन की कुशल पूछने सेवक बिजेन्द्र दास (पौलंगी वाला) वहाँ गया तो बहन ने बताया कि भक्त संजय आया था। वह सत्संग कर रहा था। उसी समय झगड़ा हो गया। उस सेवक ने कहा कि बहन वह तो गुरु द्रोही हो चुका है। आश्रम त्याग कर चला गया है। यदि वह अब दोबारा कभी आपके*

घर आया तो और ज्यादा हानि होगी। भक्त बिजेन्द्र दास ने उसके (संजय) के चाचा से कहा कि उसको समझा दो कि यदि अब किसी संगत के घर मिल गया तो उसकी पिटाई भी हो सकती है। संगत को पता चल गया है कि वह गुरु द्रोही हो चुका है। तब उसके चाचा जी ने उसे समझाया कि अब की बार यदि किसी संगत वाले के घर मिल गया तो तेरा हूलिया बिगड़ेगा। (उसके चाचा जी का पूरा परिवार भी मुझ दास का सेवक है।) उसके बाद वह दूर स्थान पर चला गया। अब पता लगा है कि उसने अम्बाला के पास कलाल्टी गाँव में पुराने गरीबदासीय आश्रम में हल्दी की गाँठ से पंसारी की दुकान खोल ली है। वह स्वयं गुरु बन कर उपदेश देने लग गया है। उल्ट-पुल्ट ज्ञान करके पुस्तकों की नकल करके अपनी प्रभुता का सिक्का जमाने के लिए पुस्तकें भी लिखने लगा है। ऐसे भक्ति व भगवान के शत्रु को अब सभ्य समाज क्षमा नहीं करेगा। इस तरह यह संजय (कृष्ण दास) परमेश्वर की फुलवाड़ी में कीड़ा(ढीमक) था।

जैसे एक बिना पत्तों की पीले रंग की बेल होती है जिसे हरियाणा में अमर बेल कहते हैं। वह जिस वृक्ष पर लिपट जाती है तो उस वृक्ष को सुखा कर ही मानती है। वह बेल उस वृक्ष को बहुत प्रिय लगती है। उसके गले से लिपट कर प्यार करती दिखाई देती है। परंतु वास्तव में उसका शोषण कर रही होती है।

इसलिए कबीर परमेश्वर कहते हैं कि -

गुरु को तजै भजै जो आना, ता पशुवा को फोकट ज्ञाना।।

शंका - उससे दीक्षा लेने से कुछ एक को लाभ किस लिए हो रहे हैं ?

उत्तर - प्रथम कारण : कोई संत अपनी साधना करके चला जाता है। जहाँ उसकी भक्ति अनुसार जाना होता है। उसके पश्चात् वहाँ पर उसकी यादगार बना कर मन्दिर या आश्रम का रूप दे दिया जाता है। फिर किसी श्रद्धालु को रखा जाता है जो या तो उसी संत का शिष्य होता है या अन्य उसी परम्परा से होता है। फिर वह शिष्य उस आश्रम के प्रबन्ध में लगा रहता है तथा वहाँ आने वाले श्रद्धालुओं को आशीर्वाद देता है और शिष्य भी बना कर दीक्षा देता है। वह मृत्यु उपरांत पितर बन जाता है तथा उसी आश्रम या मन्दिर में भटकता रहता है। उसके बाद कोई अन्य भक्त उस मन्दिर या आश्रम की देख-रेख के लिए रखा जाता है। वह पितर बना पूर्व महंत उस नए प्रबन्धक में प्रवेश करके उसके शिष्यों को उसी में प्रवेश करके आशीर्वाद देता है। जिससे नए प्रबन्धक के अनुयाईयों को उस पितर की कमाई से लाभ होने लग जाते हैं। जिसमें पितर प्रवेश करते हैं। उस व्यक्ति को पता भी नहीं लगने देते कि उसमें कोई अन्य आत्मा भी रहती है। पितर वही बनते हैं जो किसी जन्म में शास्त्रानुकूल साधक रहे होते हैं। फिर किसी जन्म में मनमुखी गुरु बन कर शिष्य बनाकर अपनी अधिक भक्ति कमाई नष्ट कर जाते हैं। फिर पितर बन जाते हैं। पितर बन कर भी प्रभुता की भूख बनी रहती है। जिस कारण वह पूर्व संत पितर बन कर जो बाद में उसके आश्रम या समाध या मन्दिर में रहता है उसमें प्रवेश करके अपनी शेष भक्ति कमाई को नष्ट करके फिर भूत

*बनता है। फिर चौरासी लाख योनियों में कष्ट तथा नरक भोगता है। यदि गुरु द्रोही होता तो उसी नकली गुरु वाले जीवन में ही सर्व कमाई समाप्त करके सीधा नरक जाता। विशेष प्रमाण देखें पुस्तक "परमेश्वर का सार संदेश" के पृष्ठ 137 पर हजरत मुहम्मद जी में तथा हजरत ईशा जी में प्रेत प्रवेश करके चमत्कार करते थे तथा भविष्य के विषय में भी बताते थे। ईशा जी आदि को पता भी नहीं होता था।*

*गाँव कलावड़(खरावर) जिला रोहतक में श्री बनखण्डी दास जी महाराज की समाध पर आश्रम बना है जो संत गरीबदास जी का शिष्य था। उनके बाद उस आश्रम में अन्य संत रखा गया। इस तरह लगभग दौ सौ तीस वर्ष हो चुके हैं जो बाद में मनमुखी संत गुरु बन कर रहे वे पितर बन जाते हैं। एक मेरा परिचित संत श्री वेद प्रकाश जी जो वैष्णव साधु था। वह खरावर(कलावड़) में बाबा बनखण्डी जी के आश्रम में रहता था। एक दिन यह दास उनसे मिलने आश्रम में गया। उसी समय उसी गाँव की एक औरत अपने 15 वर्षीय लड़के को लेकर आई जिसे बहुत तेज बुखार था। दवाईयों से भी राहत नहीं हुई थी। संत वेद प्रकाश जी ने उस लड़के के सिर पर हाथ रखा तथा मन्त्र जाप के लिए दिया। वह लड़का स्वस्थ हो गया। मैं बहुत प्रभावित हुआ कि महाराज तो कमाल की शक्ति युक्त है। (क्योंकि यह बात सन् 1989 की है। इस दास को नाम सन् 1988 में प्राप्त हुआ था)। बाद में पता चला कि ये तो जीवन व्यर्थ करने और करवाने वाले थे। कुछ महीनों के उपरांत वही संत श्री वेद प्रकाश जी जीन्द शहर के पास एक पिण्डारा गाँव में एक आश्रम में सत्संग में गया हुआ था। वहाँ उन्हें बहुत तेज बुखार हो गया। जीन्द से डॉ. बुलवाया, इन्जैक्शन तथा दवाई तीन दिन तक खाई। तब कुछ राहत हुई। अब पता चला कि यह क्या माजरा है ? अंत में दमें का मरीज हो गया। इसी प्रकार काल का भयंकर जाल है। इस नादान संजय(कृष्ण दास) जैसे तो काल के लिए तृण समान है। महर्षियों तथा गोरख नाथ जैसे सिद्धों को भी काल-जाल का भेद नहीं चला।*

*दूसरा प्रमाण :- गुरु द्रोही होकर स्वयं गुरु बनकर नाम देने से भी अवश्य कुछ लाभ अनुयाईयों को होंगे। क्योंकि जो साधना उस नादान संजय(कृष्ण दास) ने तीन वर्ष मर्यादा में रह कर की थी वह कमाई उसके साथ है तथा जो साधक प्रभु भक्ति की इच्छा बचपन से ही करता है वह पूर्व जन्म की भक्ति कमाई का धनी होता है। अब वह संजय उर्फ कृष्ण दास गुरु द्रोही होकर वही नाम मंत्र अनुयाईयों को प्रदान कर रहा है, जो उसको मुझ दास से प्राप्त हुए थे। परन्तु यह दास इतना अनजान नहीं है कि उस नकली को सब भेद बता देता। क्योंकि परमेश्वर कबीर साहेब जी ने पहले ही सर्व धोखों का वर्णन कर रखा है, जैसे तेरह वर्षीय बालक कमाल को मुर्दा जीवित करके अपने बेटे की तरह परमेश्वर कबीर जी ने रखा तथा नाम प्रदान किया, परन्तु सार शब्द नहीं दिया जो चौथा पद है। कुछ दिनों के बाद कमाल भी इसी नकली गुरु संजय(कृष्ण दास) की तरह संगत की प्रशंसा का पात्र*

बन कर गलतियों पर गलतियां करने लगा। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने बहुत समझाया, परन्तु बाज नहीं आया तथा प्रभुता की भूख में सतगुरु को त्याग कर चला गया तथा स्वयं गुरु बन कर उपदेश करने लगा। बहुत से अनुयाईयों को बहुत लाभ हुआ। परन्तु गुरु द्रोही कटी पतंग हो जाता है। जैसे पतंग डोरी से कट जाने के पश्चात् भी उड़ती दिखाई देती है, परन्तु उसका ठिकाना कोई नहीं रहता। वह कहीं गंदे नाले में गिर कर नष्ट होती है। यही दशा गुरु द्रोही की होती है।

जिस समय कबीर परमेश्वर जी ने कमाल को संगत से निष्काशित किया तब भक्तजन अटकलें लगाने लगे कि भक्त कमाल तो महाराज जी का सच्चा सेवक था। उसे संगत में से निष्काशित नहीं करना चाहिए था। किसी ने भक्त की निंदा चुगली की होगी। जिस कारण से सतगुरु जी ने कमाल को निष्काशित किया है। इस तरह की चर्चा सर्वसंगत में हो गई तथा कुछ तो उस गुरु द्रोही के साथ ही चले गए तथा शेष भी नाम रहित हो गए। क्योंकि गुरुदेव के निर्णय को गलत करार दिया कि महाराज जी ने उसे निष्काशित नहीं करना चाहिए था। इतनी ही नादानी से नाम खण्ड हो जाता है। इसीलिए परमेश्वर ने एक लीला की जिससे सर्व नादान संगत से पीछा छुटवाया।

पानीपत शहर(हरियाणा) में कमाल के आज भी अनुयाई हैं। पानीपत में भक्त प्रेम सिंह(पुलिस इन्सपैक्टर) के घर कॉलोनी किशनपुरा, गुरु द्वारा वाली गली में यह दास सत्संग कर रहा था। एक वृद्ध व्यक्ति आया उसने बताया कि हम भी कबीर पंथी हैं। यहाँ एक कमाल साहब का मन्दिर भी बनवा रखा है। हर महीने पूर्णमासी को सत्संग करते हैं। आप भी दर्शन दो। एक बार चलो। इस दास ने उस वृद्ध से पूछा कि भक्त जी, कमाल जी तो कबीर साहेब जी से विमुख हो कर गुरु द्रोही बन गए थे। आप कमाल जी के अनुयाई हो। उस वृद्ध ने भी स्वीकार किया कि हाँ लिखा है कि एक दिन सत्संग में कमाल जी तथा कबीर जी की तकरार हो गई थी। उस दिन से कमाल अलग सत्संग करने लग गया था। इस दास ने उस श्रद्धालु को बहुत समझाया कि आप गुरु द्रोही के अनुयाई हो। आप तो जीवन व्यर्थ कर रहे हो। वह श्रद्धालु बहुत प्रभावित हुआ तथा कहा कि यह भेद तो हमें किसी ने नहीं बताया। उस वृद्ध ने अपनी मण्डली में चर्चा की तो मन्दिर के लालची महंतों ने बात गोल-मोल कर दी तथा उस श्रद्धालु का सत्संग में आना ही बंद कर दिया। यह उस गुरु द्रोही कमाल के घर घाले हुए हैं अर्थात् बर्बाद किए हुए श्रद्धालु आज भी उसी अग्नि में जल रहे हैं। यही भूमिका यह कृष्ण दास(संजय) कर रहा है।

उस संजय उर्फ कृष्ण दास जैसे चतुर प्राणी से अध्यात्मिक लाभ कुछ भी प्राप्त नहीं हो सकता। केवल कुछ भौतिक लाभ प्राप्त हो जाता है। जिस कारण भोली आत्माएँ उसे पूर्ण संत मान कर अनुयाई बन जाते हैं। ऐसे नकली गुरु की मृत्यु के पश्चात् उसकी यादगार बना लेते हैं। फिर उस यादगार की पूजा करने लग जाते हैं। ऐसे नकली गुरु अनुयाईयों की कई पीढ़ी तक विनाश का कारण बनते हैं। अपना मनुष्य जीवन तो नष्ट करते ही हैं साथ में दो-तीन हजार अनुयाईयों को

*ले डूबते हैं। उन्हीं में से एक यह चतुर प्राणी कृष्ण दास(संजय) है। भगवा कपड़े पहनने मात्र से संत नहीं बन जाता। कबीर परमेश्वर कहते हैं कि -*

खर ना होवै केहरी, कबहू शेर की खाल उढाए।

*भावार्थ है कि यदि गधे को शेर की खाल उढा दें तो वह सिंह नहीं हो सकता। यदि ये स्वार्थी, महिमा के भूखे नकली संत व गुरु बाधक न होते तथा श्रद्धालुओं को गुमराह नहीं करें तो पूरे संसार में सत साधना होने लग जाए तथा सर्व सुखी हो जाऐं और सतलोक में स्थाई स्थान प्राप्त करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर लेते। ऐसे महापाप आत्मा परमात्मा कबीर जी के समय भी बाज नहीं आए थे। परंतु अब सर्वभक्त समाज शिक्षित है। कुछ दिन बाद बच्चा-२ इनसे प्रश्न करेगा तथा इन्हें शर्मिन्दा करेगा, फिर ये बाज आऐंगे। इन्हें कहीं छुपने को स्थान नहीं मिलेगा।*

*वह नकली गुरु कृष्ण दास नाम दान करता है, अनुयाईयों को कुछ लाभ भी हो रहे हैं। इसका कारण है कि अब यह नादान आत्मा काल के खेमें में पहुँच गया है। अब काल इसे खूब नचाएगा। इसी की इस जीवन की तीन वर्ष की मर्यादा में रह कर की सत साधना की कमाई बहुत है।*

*एक समय इस संजय(कृष्ण दास) पुत्र श्री बलवान सिंह मिस्त्री, गाँव करौंथा की चारों भैंस(पशु) पागल हो कर दिवारों में टक्कर मारने लगी। सर्व जंतर-मंत्र करवाए परंतु कोई लाभ नहीं हुआ। छुड़ानी से जंत्र-मंत्र करवाया। रोहतक के सर्व डॉक्टरों ने जवाब दे दिया। तब यह संजय(कृष्ण दास) मुझ दास का विधिवत् शिष्य था। उस समय इससे अपनी भैंसों का बचाव नहीं हुआ। मुझ दास के पास आए तब प्रभु कबीर जी की कृपा से वे भैंस(पशु) ठीक हुई। तब इसने अपनी भैंस ठीक क्यों नहीं की ? क्योंकि उस समय इसने नाम लिया ही था। इसके पास भक्ति कमाई नहीं थी। अब यह तीन वर्ष की भक्ति तथा सेवा को संग्रह करके बांट रहा है तथा अपना व अपने अनुयाईयों का जीवन नष्ट कर रहा है। काल के हाथों चढ़ चुका है। कई पितर भी इसमें प्रवेश करके अपने-२ वंशजों को लाभ देते हैं। यह नादान फूला रहेगा। अंत में चौड़े चपट हो जाऐंगे। पहले इस संजय उर्फ कृष्ण दास नकली गुरु का पूरा परिवार खेत में बनी मढी को पूजता था तथा संत गरीबदास जी की पूजा भी करता था और छुड़ानी भी जाता था। परंतु भूत भी काबू नहीं आ रहे थे। इस दास(रामपाल दास) से उपदेश के पश्चात् खेत में बनी भूतों की मढी उखाड़ी। पूरे परिवार ने मुझ दास से उपदेश प्राप्त करके तीन वर्ष तक बड़ी श्रद्धा के साथ भक्ति तथा सेवा की। परंतु इस गुरु द्रोही ने पूरे परिवार को भी विमुख कर दिया। इस परिवार के पास उस तीन वर्ष की भक्ति व सेवा के कारण लाभ चलेगा। परंतु मनुष्य जीवन व्यर्थ हो जाएगा।*

*जैसे आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी में कहा है कि सतनाम (जो दो मंत्र का होता है) पलड़ै रंग होरी हो, चौदह लोक चढावै राम रंग होरी हो। तीन लोक पासंग धरै रंग होरी हो, तो न तुलै तुलाया राम रंग होरी हो।*

*भावार्थ है कि स्वांस के द्वारा विधिवत् किया सतनाम के एक जाप की इतनी*

*अधिक कीमत है कि तीन लोक तथा चौदह भुवन की कीमत भी कम है। जब तक यह कमाई इस नकली गुरु की चलेगी अनुयाईयों को इसी की जेब से लाभ होता रहेगा तथा वह नकली गुरु भी स्वस्थ रहेगा तथा उस गुरु द्रोही की पूर्व जन्मों के संचित शुभ कर्म रूप में रखी भक्ति कमाई भी इसी जन्म में काल खर्च करवा देगा। फिर उस महिमा के भूखे को घोर नरक में डाला जाएगा तथा हजारों युगों तक मनुष्य जन्म प्राप्त नहीं होगा।*

*एक राबी(राबिया) नाम की मुसलमान कन्या थी। जिसे परमेश्वर कबीर जी से वास्तविक नाम प्राप्त हुआ। उस लड़की ने चार वर्ष तक विधिवत् साधना की। परंतु बाद में अपनी परम्परागत साधना करने लगी। जिससे उसको चार मनुष्य जीवन प्राप्त हुए। चौथे मानव जीवन में बारह वर्ष की आयु में ही मृत्यु को प्राप्त हुई। वह कन्या गुरु द्रोही नहीं हुई। इस कारण उसे चार मानव शरीर प्राप्त हुए तथा फिर भी उस भोली आत्मा को प्रभु ने शरण में ले लिया जो शेखतकी पीर की कन्या रूप में चौथे मानव शरीर में मृत्यु पश्चात् कब्र में दबा रखी थी। जो कबीर परमेश्वर ने जीवित की तथा अपनी पुत्री तथा शिष्या रूप में रख कर पुनः भक्ति प्रदान की। यदि भक्तमति राबिया गुरु द्रोही हो कर नाम दान करती तो उसी जन्म में सर्व पूर्व भक्ति कमाई को समाप्त करके घोर नरक में गिरती। चार वर्ष की सत भक्ति कमाई से साढे तीन-चार मनुष्य जीवन प्राप्त हुए। क्योंकि एक मानव जीवन के स्वांस की कीमत बताते हुए कबीर परमेश्वर ने कहा है -*

कबीर, कहता हूँ कही जात हूँ, कहूँ बजा कर ढोल।
स्वांस जो खाली जात है, तीन लोक का मोल।।

*चार वर्ष की सत साधना से भक्तमति राबिया को ऐसे-२ कितने मानव जीवन स्वांस प्राप्त हुए। यदि वह नामदान करती तो उस कमाई से हजारों को स्वस्थ कर सकती थी। कुछ एक संतान भी दे सकती थी। धन वृद्धि करके महिमा की पात्र भी बन सकती थी। परंतु फिर प्रभु कबीर जी की कृपा पात्र नहीं रहती। गुरु द्रोही न बन कर साधना त्याग देना भी हानिकारक है परंतु वह साधक फिर से शरण में लिया जा सकता है। आदरणीय गरीबादस जी महाराज ने अपनी अमृत वाणी में कहा है -*

धर्मराय दरबार में, दी कबीर तलाक। भूले चूके हंस को , पकड़ियो मत कजाक।।
गरीब, शिव मण्डल ब्रह्मा पुरी, चाहे विष्णु लोक में हो। हमरे गुण भूले नहीं, तो आन छुड़ाऊ तोह।।

*परंतु गुरु द्रोही को तो हजारों युगों तक नरक में डाला जाता है तथा मानव शरीर भी हजारों युगों तक प्राप्त नहीं होता।*

*स्वामी रामानन्द जी वैष्णव साधु थे। स्वामी रामानन्द जी के शिष्य होने के कारण कबीर साहेब जी को भी वैष्णव साधु कहा जाता था। कबीर परमेश्वर के मिलने से पहले रामानन्द जी ने चौदह सौ शिष्य ऋषि बना रखे थें फिर वे नाम दान करने लगे। परंतु उनके पास वास्तविक मन्त्र(सतनाम) नहीं था। वे केवल ओ३म् नाम तथा ओ३म् नमो भगवते वासुदेवायः आदि नाम दान करते थे। परमेश्वर*

*कबीर साहेब जी की मर्यादा को भंग करने वाले अर्थात् सतगुरु विमुख प्रभुता के भूखे उनके शिष्य अन्य वैष्णव साधुओं के पास चले गए। क्योंकि वहाँ पर भक्ति तो थी नहीं परंतु स्वतन्त्रता पूर्ण थी। परमेश्वर कबीर साहेब जी से विमुख शिष्यों ने वास्तविक मन्त्र अन्य वैष्णव साधुओं को बता दिए। वे भी वही वास्तविक नाम दान करने लगे। जो प्रभुता के भूखे कबीर परमेश्वर जी के शिष्य विमुख हो कर गए थे वे उन वैष्णव संतों से नाम दान करने की आज्ञा प्राप्त करके नाम दान करने लगे तथा गुरु बन बैठे। जिस कारण से वे अनअधिकारी हुए। क्योंकि जिस संत से नाम दान करने का अधिकार प्राप्त किया वे वास्तविक मंत्र से अपरिचित थे। बाद में कबीर साहेब जी से चुराए नाम दान करते थे। ऐसे नकली गुरुओं से नाम दान करने का आदेश प्राप्त करके स्वयं भी गुरु बन कर नाम दान करने लगे। उनसे भी शिष्यों को बहुत लाभ होने लगे। जो उनके गुरुओं से नहीं होते थे। क्योंकि जो कबीर साहेब के विमुख शिष्य फिर नकली गुरुओं से नाम दान करने की आज्ञा प्राप्त करके स्वयं भी नाम दान करने लगे थे। उनको कुछ वर्षों की सत साधना जो कबीर परमेश्वर के सानिध्य में की थी उससे लाभ होते थे। इस कारण इन संजय उर्फ कृष्ण दास जैसे प्रभुता के भूखे काल के दूतों ने परमात्मा कबीर साहेब जी को भी नाकाम कर दिया था। इसीलिए आज कबीर पंथ में भी गुरुओं की गिनती नहीं है।*

*विशेष : परमेश्वर कबीर साहेब जी चौसठ लाख शिष्यों के अकेले गुरु थे। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने केवल एक संत धर्मदास जी को ही नामदान करने का आदेश दिया था। उन्होंने अन्य नामदान करने के अधिकारी नहीं बनाए। वर्तमान में प्रभु कबीर कबीर साहेब जी के पंथ में गुरुओं की गिनती नहीं। जो प्रभु के विद्यान के विरूद्ध है।*

*नकली गुरु संजय उर्फ कृष्ण दास को सार शब्द नहीं दिया था तथा इसे नाम दान करने का अधिकार भी नहीं है। फिर भी यह मंत्र नाम मुझ दास से चुरा कर दे रहा है। इसके नाम दान करने से मंत्र के कारण उसके अनुयाईयों को कोई लाभ नहीं मिलेगा। लाभ तो उस नकली गुरु की कमाई से मिलेगा। कुछ लाभ पाठक को संतों की अमृतवाणी के नित्य पाठ से भी मिलता है। उसे चाहे अनुपदेशी भी पाठ करले, उसे भी मिलता है, परन्तु मोक्ष तथा पूर्ण लाभ नहीं मिलता। किसी नकली(मनमुखी/ अनअधिकारी) गुरु का शिष्य बन कर उससे नाम दान करने की आज्ञा प्राप्त करके भी नाम दान करने से अनुयाईयों को कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं मिलता है। परंतु हजारों को काल-जाल में फंसा जाता है तथा स्वयं भी नरक का भोगी होता है।*

*उदाहरणार्थ - राधास्वामी पंथ के प्रमुख स्वामी शिवदयाल जी महाराज पूर्व जन्म की कमाई के धनी थे। उनका कोई गुरु भी नहीं था। वे नाम भी नकली दान करते थे। फिर भी उनके जीवन चरित्र में लिखा है कि हजारों अनुयाईयों को अद्धभुत लाभ हुए। परन्तु न तो मोक्ष गुरु जी का हुआ तथा न ही अनुयाईयों का।*

परन्तु संसार में महिमा अवश्य हो गई। अपना तथा लाखों व्यक्तियों का जीवन नष्ट कर गए।

राधा स्वामी पंथ व्यास के संचालक बाबा जयमल सिंह जी, बाबा सावन सिंह आदि वास्तविक नाम भी नहीं देते तो भी अनुयाईयों को अनोखे लाभ मिलें, परन्तु दोनों अनुयाई तथा गुरु जी जीवन व्यर्थ कर गए।

अपने गुरु श्री सावन सिंह जी की आज्ञा विरुद्ध श्री बिलोचिस्तानी शाह मस्ताना जी ने धन-धन सतगुरु(सच्चा सौदा) सिरसा में अलग से पंथ चलाया। स्वयं गुरु बन कर नाम दान करने लगा उस महापुरुष की पूर्व जन्म की कमाई से हजारों को लाभ हुआ, परन्तु अंत में स्वयं इंजेक्शन रिएक्शन से अकाल मृत्यु को प्राप्त हुआ। जिला सिरसा गाँव जगमाल वाली में सच्चा सौदा(सिरसा वाले आश्रम)से नाराज एक मैनेजर जी ने स्वयं ही गुरु बन कर नया आश्रम चालु कर लिया। वहाँ पर भी श्रद्धालुओं को लाभ हुआ तथा लाखों अनुयाई बन गए। परंतु अध्यात्मिक लाभ शुन्य है। दिल्ली में राधास्वामी पंथ कृपाल सिंह जी ने भी श्री सावन सिंह जी महाराज(ब्यास वाले) की आज्ञा की अवहेलना करके मनमुखी गुरु बन कर लाखों अनुयाई बना दिए तथा हजारों को भौतिक लाभ हुआ परंतु अध्यात्मिक लाभ दोनों को ही नहीं है, तथा कृपाल सिहं जी का एक शिष्य मनमुखी गुरु श्री ठाकुर सिंह जी भी नाम दान करने लगा। उनसे भी हजारों को लाभ हुआ तथा लाखों अनुयाई भी बन गए तथा अंत में स्वयं की बाई पास सर्जरी(दिल का ऑप्रेशन) हुई तथा एक वर्ष के बाद मृत्यु को प्राप्त हुआ।

श्री कृपाल सिंह जी महाराज का एक बागी शिष्य "जयगुरुदेव" नाम का मथुरा में पंथ चला रहा है। उससे भी कई हजारों को लाभ होने का प्रमाण है तथा कई लाख शिष्य भी अनुयाई हैं, परंतु मुक्ति लाभ शुन्य है, जीवन नष्ट हो रहा है।

संत निरंकारी मिशन के संत भी शास्त्र विरुद्ध नकली नाम दान करते हैं। उनके अनुयाईयों की कमी नहीं तथा उनसे हुए लाभ बताने वालों की कमी नहीं। निरंकारी बाबा गुरु बचन जी की गोली मार कर हत्या कर दी गई।

जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थकर महावीर जैन के जीवन को देखकर कलेजा मुंह को आता है - राजा ऋषभदेव जी जो जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर जाने जाते हैं, उनसे विधिवत् साधना प्राप्त करने से भी श्री महाबीर जैन जी के जीव को पुण्य आधार से स्वर्ग भी प्राप्त हुआ तथा पाप आधार से करोड़ों बार कुत्ता बना, करोड़ों बार गधा, बिल्ली, घोड़ा तथा गर्भपात के मरण तथा नरक भी भोगना पड़ा।

श्री हंसा देश पंथ के प्रवर्तक श्री हंस जी महाराज तथा उनके दोनों पुत्र (श्री बालयोगेश्वर उर्फ प्रेम रावत तथा श्री सतपाल जी महाराज) भी शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना नामदान करते हैं तथा करोड़ों अनुयाई भी हैं तथा उनसे होने वाले लाभ को प्राप्त करने वालों की भी सूची बहुत बड़ी है। अंत में श्री हंस जी महाराज में भी भूत बड़े(प्रेत प्रवेश हुए) तथा अंतिम समय में दो रात्री व एक दिन तक बुखार के कारण अचेत रह कर मृत्यु को प्राप्त हुए तथा उनकी आत्मा भटक रही है।

*संत श्री आसाराम जी भी शास्त्र विधि विरूद्ध नामदान करते हैं। फिर भी लाखों अनुयाई हैं तथा उनसे होने वाले लाभ बताने वालों की भी कमी नहीं। यह सर्व इस संत आसाराम जी की पूर्व जन्मों की कमाई का करिश्मा है। अनुयाईयों तथा इस संत जी दोनों को अध्यात्मिक लाभ शुन्य है। जीवन नष्ट हो रहा है।*

*संत श्री सुधांशु जी के भी अनुयाईयों की कमी नहीं तथा लाभ प्राप्ति करने वालों की भी लम्बी सूची है। जबकि नाम भी शास्त्र विरूद्ध देते हैं। यही दशा श्री सुंधाशु जी की है। इनकी पूर्व जन्म की शुभ कमाई का ही करिश्मा है। परंतु अध्यात्मिक लाभ गुरु-शिष्य दोनों का शुन्य है, जीवन व्यर्थ है।*

*कारण यह है कि जैसे इनवर्टर की बैट्री पहले चार्ज की हुई होती है, यदि उसे फिर से चार्जर के द्वारा चार्ज नहीं किया जाता तो भी उससे बल्ब जगते हैं, पंखे भी चलते हैं। परन्तु जब बैट्री डिस्चार्ज हो जाती है तो सर्व लाभ बंद हो जाते हैं। इसी प्रकार जो स्वयं गुरु बन कर या नकली गुरुओं से उपदेश प्राप्त करके उनके नाम दान की आज्ञा प्राप्त करके गुरु पद प्राप्त करके दीक्षा देते हैं, वे अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ करते हैं तथा शिष्यों का भार अपने ऊपर रख कर महा दोषी होते हैं तथा उनके अनुयाई भी अस्थाई लाभ प्राप्त करके उन्हीं अज्ञानियों से चिपके रहते हैं तथा मनुष्य जीवन नष्ट कर जाते हैं।*

*ऐसे संजय(कृष्ण दास) जैसे नकली गुरुओं को काल के दूत समझना चाहिए। वर्तमान में वास्तविक भक्ति तथा विधिवत् आज्ञा अनुसार नाम दान करने का आदेश केवल मुझ दास(रामपाल दास) के पास है, अन्य सर्व नकली जानों।*

*यदि मुझ दास को नाम दान करने की आज्ञा मेरे पूज्य गुरुदेव ने नहीं दी होती तो यह दास(रामपाल दास) कभी भी नाम दान नहीं करता। क्योंकि यह भयंकर पाप है। भोले श्रद्धालुओं के जीवन के साथ खिलवाड़ है।*

*परमेश्वर कबीर साहेब जी के चौसठ लाख शिष्य हो गए थे। वे कमाल जैसे प्रभुता के भुखे नकली गुरुओं में अधिक आस्था रखने लगे तथा श्रद्धा से भक्ति व गुरु में आस्था नहीं कर रहे थे तथा एक वैश्या ने परमेश्वर कबीर साहेब जी से उपदेश प्राप्त कर लिया था। वह समय-बे समय अपने परमात्मा के दर्शन करने तथा उनके मुख कमल के कल्याण कारक वचन सुनने के लिए गुरुदेव कबीर साहेब जी के पास आने लगी। जिस कारण नादान शिष्यों के अंतःकरण में अपने गुरुदेव के प्रति अश्रद्धा होने लगी। क्योंकि इंसान अपनी त्रुटि दूसरे में देखता है। इसलिए परमेश्वर कबीर साहेब जी ने शिष्यों की परीक्षा ली थी। उस वैश्या को हाथी पर बैठा कर हाथ में गंगा जल से भरी शीशी लेकर शराबी जैसी गतिविधि करते हुए काशी के बाजार में घुमा दिया। सर्व नकली शिष्य परमेश्वर को त्याग कर चले गए। परमेश्वर कबीर जी ने भी अपने सिर से शिष्यों का भार उतारा तो नकली स्वयंभू गुरुओं तथा उनके अनुयाईयों का क्या होगा ?*

*आदरणीय गरीबदास जी की वाणी -*

भड़वा–भड़वा सब कहें, कोई न जाने खोज।
दास गरीब कबीर करम, बांटत शिर का बोझ।

उपरोक्त विवरण को ध्यान में रखते हुए ऐसे धोखेबाज नकली गुरुओं से सावधान रहें।

इस दास की संगत का कोई भी साधक जिसने तीन वर्ष विधिवत् साधना करते हो चुके हैं, यदि वह नामदान करने लग जाएगा तो उससे भी अनुयाईयों को ऐसे लाभ तुरन्त प्रारम्भ हो जायेंगे। परन्तु वास्तविक उद्देश्य से वंचित रह जायेंगे तथा काल जाल में भयंकर यातनाओं के पात्र बनेंगे।

उस नकली गुरु संजय उर्फ कृष्ण दास के पूरे परिवार ने मुझ दास(रामपाल दास) से नाम उपदेश ले रखा था। उस गुरु द्रोही की मेर-तेर में पूरा परिवार नाम त्याग कर मन मानी पूजा करने लगा जो जीवन व्यर्थ है। इसीलिए परमेश्वर कबीर साहेब ने कहा है - गुरु से शिष्य करै चतुराई, सेवाहीन नरक में जाई। जो शिष्य गुरु की निंदा कर ही, परिवार सहित नरक में पर ही।।

वह संजय उर्फ कृष्ण दास गुरु द्रोही हो कर स्वयं भी नरक में जाएगा तथा परिवार को सत मार्ग से वंचित कर दिया अर्थात् परिवार सहित नरक के मार्ग चल पड़ा।

एक समय राजा परिक्षित को सातवें दिन सर्प ने काटना था। सर्व ऋषियों ने राजा परिक्षित को श्री मद्भागवत् सुधा सागर की कथा सुनाने की राय दी। जिस कारण राजा परिक्षित का कल्याण सम्भव था। उस समय पृथ्वी के किसी भी ऋषि ने राजा परिक्षित को शिष्य बना कर कथा सुनाने का साहस नहीं किया। क्योंकि सातवें दिन परिणाम आना था। उस समय के ऋषिजन परमात्मा के संविधान से परिचित थे। कि अन अधिकारी द्वारा दिया गया नाम तथा किया गया कथा (पाठ) कोई लाभ नहीं देता तथा अनअधिकारी को पाप लगता है। उस समय स्वर्ग से श्री शुकदेव ऋषि जी बुलाए गए। उन्होंने राजा परिक्षित को नाम दान करके कथा सुनाई तथा जितना कल्याण कर सकते थे किया। ऋषि शुकदेव को राजा जनक जी से उपदेश प्राप्त है तथा नाम दिक्षा देना को विधिवत् अधिकार है। अब कलयुग में भी ऋषि शुकदेव जी दिल्ली में एक चरण दास जी महाराज को नाम दान करके तथा आगे नाम दान करने का आदेश कर अन्तर्ध्यान हो गये थे। वर्तमान के सन्तों व महंतों को स्वयं ही ज्ञान नहीं वे कितना दोष सिर पर ले रहे हैं।
इसलिए प्रिय पाठको कृप्या स्वयं भी सम्भलों तथा काल के जाल में फंसे भोले-भाले श्रद्धालुओं को भी समझाओं यह महा कल्याण का कार्य है।

इस गुरु द्रोही संजय उर्फ कृष्ण दास ने एक पुस्तक लिखी है, जिसका नाम है "सत भक्ति संदेश"। इस चतुर प्राणी ने मुझ दास द्वारा लिखी पुस्तक "यथार्थ भक्ति संदेश" की नकल की है। परंतु कहते हैं कि नकल में अकल की आवश्यकता होती है। केवल चतुरता से काम नहीं चलता है। इस नादान ने अपनी पुस्तक के पृष्ठ 3 पर लिखा है कि - "गीता जी में भगवान कृष्ण ने वर्णन किया है कि जिस प्रकार मनुष्य फटे पुराने कपड़ों को छोड़ कर नए कपड़े धारण करता है"।

उपरोक्त विवरण को पढ़ कर एक छोटा सा बच्चा सेवक बोला कि देखो

*इसका ज्ञान कह रहा है कि गीता जी का ज्ञान श्री कृष्ण भगवान ने कहा है। क्योंकि गीता जी का ज्ञान श्री कृष्ण में प्रेतवत् प्रवेश करके ब्रह्म(क्षर) पुरुष ने बोला था। जो मुझ दास के सेवक दस वर्ष के बच्चे को भी ज्ञान है। उस गुरु द्रोही संजय उर्फ कृष्ण दास को ज्ञान नहीं है।*

गरीब, बीजक की बातां कहें, बीजक नाही हाथ।
पृथ्वी डोबन उतरे, कह–कह मीठी बात।।
बीजक की बातां कहें बीजक नांही पास, औरों को प्रमोदहीं आपे जावें निराश।।

*पृष्ठ 11 पर ईश, ईश्वर, परमेश्वर की व्याख्या भी नकल में अकल की कमी का प्रमाण है। ''सृष्टी रचना'' के विवरण में इस चतुर प्राणी ने कहीं की ईट कहीं का रोड़ा लगाया है। नकल करने में भी अकल की कमी प्रेमी पाठकों को स्पष्ट दिखाई देवेगी जब आप मुझ दास द्वारा लिखी ''सृष्टी रचना'' इसी पुस्तक के पृष्ठ. 1 पर पढ़ेगें। इस कृष्ण दास (संजय) द्वारा लिखी पुस्तक जैसे ज्ञान ने आज तक समाज को सत्य तक नहीं पहुँचने दिया। वास्तविक लाभ से ऐसे वंचित रखा जैसे कच्ची सरसों पीड़ने से न तो खल बनती है न ही तेल अर्थात व्यर्थ प्रयत्न होता है।*

*इस ज्ञान चोर गुरु द्रोही संजय उर्फ कृष्ण दास ने मुझ दास से ज्ञान व नाम चुरा कर अपनी प्रभुता बनाने की चेष्टा की है। परंतु अब सफल नहीं हो पावेगी। क्योंकि इसकी इस पुस्तक को पढ़ कर मुझ दास द्वारा लिखी पुस्तक को पढ़ने वाले बुद्धि जीवी को स्वयं ही निर्णय हो जाएगा कि यह तो सचमुच चतुर प्राणी तथा ज्ञान चोर है। उस नादान से दूर हट जाएगा तथा मुझ दास के पास आकर अपना तथा अपने परिवार का कल्याण कराएगा। जो अनजान उपरोक्त ढेर सारे प्रमाणों को देख कर भी उस भक्त समाज के दुश्मन से पीछा नहीं छुटवाएगा वह तो ठोठ अर्थात् मूर्ख ही है। वे तो उसी चातुर-चोर के पास ही रहने योग्य हैं।*

*आदरणीय गरीबदास साहेब जी ने अपनी वाणी में कहा है :*

चातुर प्राणी चोर हैं, मूढ मुग्ध हैं ठोठ।
संतों के नहीं काम के, इनकूं दे गल जोठ।।

*अपनी पुस्तक के पृष्ठ 2 पर लिखा है कि इस पुस्तक के पढ़ने से आपको ज्ञान होगा तथा उस समझे हुए ज्ञान पर अमल करो तभी हमारा उद्धार संभव है।*

*विचार करें यह गुरु द्रोही उर्फ कृष्ण दास स्वयं तो अमल करता नहीं, औरों(अन्य) को ज्ञान करा रहा है। स्वयं तो सत भक्ति को त्याग कर नरक के रास्ते चल चुका है तथा अन्य दूसरों को भी संग ले चला है।*

कबीर, पंडित और मसालची, दोनों सुझे नांह।
औरन को करे चांदना, रहें आप अंधेरे मांह।।

*प्रभु प्रेमी पाठकों से प्रार्थना है कि ऐसे गुरु द्रोही चतुर प्राणियों से सावधान रहना है तथा अन्य को सावधान करना है। वर्तमान में केवल मुझ दास को परमेश्वर कबीर साहेब जी ने आप पुण्यात्माओं को काल के जाल से निकालने के लिए भेजा*

*है। यदि अन्य कोई यह ज्ञान या नाम देता है तो वह गुरु द्रोही है उसे काल का दूत समझें।*

*यह संजय उर्फ कृष्ण दास मुझ दास को बताता था कि मैं पहले छुड़ानी धाम में दोनों आश्रम में रहता था तथा उनके साथ पाठ व सत्संग में भी जाता था। उन दोनों डेरों के महंतों में ढेर सारी त्रुटियाँ बताता था। संजय उर्फ कृष्ण दास का भाव व ज्ञान बचपन से ही बिगड़ा हुआ है। अपने आपको तथा अपने खिचड़ी ज्ञान को सर्वोत्तम मानता है। मुझ दास के साथ रह कर भी इसकी महिमा की हवस समाप्त नहीं हुई जो इसके विनाश का कारण बनी है।*

*संजय उर्फ कृष्ण दास को इस दास ने मेरे पूज्य गुरुदेव के सतलोक सिधारने के पश्चात् तलवंडी भाई नामक कस्बा(पंजाब) में जहाँ पर मेरे पूज्य गुरु जी की समाधी व आश्रम है उसमें छोड़ा था। एक दिन छुड़ानी का महंत वहाँ पर गया हुआ था। इस संजय उर्फ कृष्ण दास को देख कर उसने कहा कि संजय तूं चुगल खोर आदमी है। तूने हमारा भाई-भाईयों का मन पड़वा दिया था। यहाँ की संगत के बारा-बाट मत कर देना। दो वर्ष के अन्दर ही इस संजय उर्फ कृष्ण दास ने गुल खिला दिए। संगत को दो फाड़ कर दिया। उनका आपस में झगड़ा होने वाला था। यह दास वहाँ पर गया तो संगत का आपस में मन मुटाव देखा तो इसको वहाँ से हरियाणा ले आया। एक भक्त ने संजय उर्फ कृष्ण दास से पूछा कि क्या आपको परमात्मा मिला है ? तब उसने उत्तर दिया कि नहीं। भक्त ने कहा कि आप गुरु द्रोही होकर स्वयंभु गुरु बन कर पाठ व सत्संग करते हो तथा अनअधिकारी होकर नामदान करके आप तो डुबेगा, क्यों भोले श्रद्धालुओं को भी डुबो रहा है ? तब उस संजय उर्फ कृष्ण दास ने कहा कि मैं तो डुबूंगा लेकिन साथ में हजार-दो हजारों को ले कर डुबूंगा। यह संजय उर्फ कृष्ण दास तो सुन-सुनिया है, दूध के नीचे से भी निकल गया तो उसे भी खराब कर देता है। ऐसे व्यक्तियों ने आदरणीय गरीबदास साहेब जी को भी नाकाम कर दिया था, जिस विषय में वे अपनी अमृतवाणी में लिखते हैं कि :*

अनन्त कोटि बाजी जहाँ, रचे सकल ब्रह्मण्ड।
गरीबदास मैं क्या करूँ, काल करे जीव खण्ड।।

*भावार्थ है कि संत गरीबदास जी महाराज कह रहे हैं कि परमात्मा कबीर साहेब जी इतने समर्थ हैं कि इन्होंने सारे संसार को रचा है। परंतु काल के दूत नकली संत भोली आत्माओं का नाम खण्ड करवा कर मेरे से अलग कर देते हैं। जिस कारण वे मुक्त न हो कर काल-जाल में ही रह जाते हैं। मैं क्या करूँ, क्योंकि जीव नकली संतों पर शिघ्र विश्वास करता है।*

*कृप्या ऐसे-२ लक्षणों युक्त जो भी व्यक्ति कहीं पर ढोंग रचे बैठा हो उनसे सावधान रहें।*

*प्रभु प्रेमियों से प्रार्थना है कि मुझ दासों के भी दास(रामपाल दास) के द्वारा परमेश्वर कबीर साहेब जी की शक्ति से मेरे पूज्य गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द की*

*कृपा से उपदेशी(नाम लेने वाले) को सभी भौतिक सुख तथा अध्यात्मिक पूर्ण मोक्ष लाभ निःसंदेह प्राप्त होते हैं। कृप्या नामदान ले कर लाभ उठाऐं।*

*विश्वसनीय सुत्रों से पता चला है कि अब मुझ दास द्वारा पुस्तक "परिभाषा प्रभु की" लिखी गई है तथा "श्रीमद् भगवद्गीता जी" का किया हुआ अनुवाद "गहरी नजर गीता में" नामक पुस्तक इस नकलची संजय उर्फ कृष्ण दास के हाथ लग चुकी है। जिसमें सर्व ब्रह्मण्डों व लोकों का आँखों देखा वर्णन चित्रों में दर्शाया गया है। अब यह नकली भी गीता जी का अनुवाद करने की कोशिश कर रहा है तथा अपनी विद्ववता का सिक्का जमाना इसकी पुरानी आदत है।*

*यह संजय उर्फ कृष्ण दास पूर्ण रूप से काल का भेजा हुआ दूत है। इसके जाल को फैलने से रोकने के लिए जन-२ को तत्व ज्ञान करवाना अति आवश्यक है। फिर ये नकली संत, महंत तथा पंथ बाज आऐंगे। सर्व बुद्धि जीवी प्रभु प्रेमियों से मुझ दास(रामपाल दास) की कर बद्ध प्रार्थना है कि इस विश्व कल्याण कार्य में सहयोग दें। यदि उस भक्ति द्रोही व गुरु द्रोही या किसी अन्य द्वारा लिखी कोई पुस्तक मुझ दास द्वारा लिखी तत्व ज्ञान युक्त पुस्तकों से मिलती है और यदि किसी को मिले तो उसे तुरंत सतलोक आश्रम करौंथा में भेजने का कष्ट करें। उस लेखक के विरूद्ध न्यायालय में कार्यवाही करके उसे दण्डित कराया जाएगा। क्योंकि वह अनअधिकारी तथा ज्ञान हीन(नीम-हकीम) भक्ति का शत्रु है। ऐसे स्वार्थी तत्व द्वारा बिगाड़े भक्ति मार्ग की हानि अभी तक भोले-भाले श्रद्धालु उठा रहे हैं। वह कृष्ण दास(संजय) नाम देने का अधिकारी नहीं है। फिर भी नामदान कर रहा है। इस पर धोखा-धड़ी का मुकदमा किया जाएगा। यह तो ऐसा दोषी है जैसे कोई अनअधिकारी व्यक्ति नकली पासपोर्ट या चालक प्रमाण पत्र(ड्राईविंग लाईसैंस) बनाता है। वह दोषी होता है। यदि कोई क्लीनिक खोल लेता है और उसके पास प्रमाण पत्र नहीं है तो उसे दण्ड मिलता है। इस प्रकार जो ज्ञान तथा मंत्र साधना यह दास(रामपाल दास) दे रहा है यह अभी तक पूरे विश्व में नहीं था। अब कोई भी इसकी नकल करेगा तो उसे दण्डित कराया जाएगा।*

## "भक्त समुन्द्र दास उर्फ लीलु गुरु द्रोही का पोल खाता"

*ऐसा ही एक गुरु द्रोही समुंद्र दास उर्फ लीलू, गाँव-बिचपड़ी, त. गोहाना, जिला सोनीपत में स्वयम्भु गुरु बन कर नामदान करता है। वह भी मुझ दास का शिष्य था। गाँव में किरयाने की दुकान है। उसमें तम्बाखु, बीड़ी, सिगरेट आदि नशीली वस्तुऐं बेचता है। उसको उपरोक्त वस्तुऐं न बेचने के लिए कहा। पहले तो स्वीकार किया परंतु बाद में बेचना बंद करने से मना कर दिया तथा गुरु द्रोही हो कर स्वयं नामदान करने लगा। यह ऐसा ड्रामे बाज है। एक बार स्वयं ही बता रहा था कि मैं एक गाँव में सत्संग करने गया हुआ था। (मीठी आवाज होने के कारण भोले श्रद्धालुओं के आकर्षण का केन्द्र बना है)। कुछ समय बाद श्रोतागण उठ कर चलने लगे। फिर रागनी गानी प्रारम्भ कर दी। उनको दो घंटे और बैठाए रखा।*

विचार करें ऐसे व्यक्ति भक्त समाज का क्या उद्धार कर सकते हैं ? हजार दो हजार व्यक्तियों को गुमराह कर सकते हैं। वह भी कहता है कि मेरे से नाम लेने वाले के ठाट(सुख) हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति भक्त समाज तथा परमेश्वर कबीर साहेब जी के दुश्मन हैं। कृप्या सावधान रहें।

मेरे पूज्य दादा गुरु जी ने मेरे पूज्य गुरु जी स्वामी रामदेवानन्द जी को ही यह वास्तविक नाम जाप दिया तथा नाम दान का अधिकार दिया था। अन्य किसी को नहीं। मेरे गुरुदेव ने मुझ दास को यह वास्तविक मंत्र दिया था अन्य किसी को नहीं।

## "भक्त गंगा दास गुरु द्रोही का पोलखाता"

प्रश्न : गंगा दास नाम का संत भी अपने आपको स्वामी रामदेवानन्द जी का शिष्य बताता है। वह भी नामदान करता है। मौन रखता है। क्या उसे भी स्वामी जी ने नामदान करने का आदेश दे रखा है ?

उत्तर : वह गंगा दास नाम का भक्त पहले स्वामी रामदेवानन्द जी का शिष्य था परंतु बाद में गुरु द्रोही हो कर स्वयं गुरु बन कर नाम दीक्षा देने लगा है। उसने गाँव छावला तथा देहरादून में आश्रम बनाए हैं। अब गोहाना से लगभग चार कि. मी. की दूरी पर गाँव बड़ौता, जिला सोनीपत में आश्रम बना कर जाल बिछाए बैठा है। मौन साधना करके श्रद्धालुओं को प्रभावित करके धन ऐंठता है तथा हजारों श्रद्धालुओं को गुमराह कर रहा है।

एक बार वह गंगा दास गुरु द्रोही नजफगढ़ में स्वामी जी से क्षमा याचना करने आया तो स्वामी जी ने बाहर निकाल दिया तथा सांकल बंद करवाली। उसे दोबारा आश्रम में नहीं आने दिया। एक दिन स्वामी जी के सेवक द्वारा झूठ-कपट करके छावला में स्वामी जी को बुला लिया। स्वामी जी उस सेवक पर बहुत विश्वास करते थे। वह सेवक गंगा दास का चमचा हो चुका था। स्वामी जी को पता नहीं था कि मुझे गंगा दास के पास ले जा रहे हैं। 112 वर्षीय वृद्ध अवस्था में स्वामी जी को वहाँ छावला गाँव वाले आश्रम में ले गए। जहाँ पर मौन खोलने का ड्रामा रच कर भोले श्रद्धालुओं को इक्कट्ठा किया था। वहाँ विडियो फिल्म बना ली तथा फोटो उतार कर प्रमाण कर लिया कि स्वामी जी गुरु द्रोही गंगा दास से प्रसन्न हैं। ऐसे चाल बाज शिष्यों के लिए घोर नरक तैयार है।

एक दिन इस दास ने पूज्य गुरुदेव जी से पूछा कि स्वामी जी आपसे विमुख गंगा दास भी गुरु बनकर नामदान करता है। स्वामी जी ने बहुत दुःखी होकर कहा कि वह महा कपटी व्यक्ति है। जिस समय मेरी सेवा करने का समय था। मैं वृद्ध हो चला था। मेरी सेवा से दुःखी हो कर मुझे समाप्त करना चाहा। क्योंकि उसकी दोषयुक्त गति विधि देखी कि मुझे मारना चाहता था तो मैंने शोर मचाया। अन्य सेवक आए। तब उसे आश्रम से निकाला। वह गुरु द्रोही है, प्रभुता का भूखा है।

अब वह गंगा दास नकली गुरु बन कर भोली आत्माओं के जीवन के साथ

*खिलवाड़ कर रहा है। ढोंग करने में विशेषज्ञ है। आश्रम में गुफा बनवा कर या एकांत में कमरा बनवा कर उसमें महीनों मौन धारण करके दम्भ करता है। फिर मौंन खोलने का बहाना करके भोले श्रद्धालुओं को ठगता है। ऐसी साधना करने वाले मौनी दम्बियों(पाखण्डियों) के विषय में आदरणीय गरीबदास साहेब जी ने कहा है :-*

मौन रहा तो क्या हुआ, बोलै सेनों भेव।
मौनी वक्ता एक है, ना परसा दिल देव।।
मौन रहे मग ना लह, मार्ग बंका नीर।
चौबीसों पहुचें नहीं, जहाँ आसन अटल कबीर।।

*मौनी मौन रखता है। दुध पीने की आवश्यकता होती है तो लिख कर देता है, पानी पीना है तो संकेत करता है। पेट में दर्द हो जाता है तो दवाई को लिख कर देता है। संत गरीबदास जी कहते हैं कि उस नादान को कोई पूछे कि हाथ से लिखते समय भी तो ध्यान भंग हुआ। जिससे भजन तथा मौन खण्ड हुआ। यह केवल ड्रामा है। ऐसे हठ करके शरीर को पीड़ा देने वाले स्वार्थियों के विषय में पवित्र गीता अध्याय 3 श्लोक 6 से 9 में कहा है कि जो मूर्ख साधक समस्त इन्द्रियों को हठ पूर्वक रोक कर मन से चिन्तन करता है। वह मिथ्याचारी अर्थात् ढोंगी(दम्भी) कहा जाता है। जो अपनी इन्द्रियों को वश में करके कर्म योग द्वारा अर्थात् कार्य करता-२ साधना करता है। वही श्रेष्ठ है। यदि तू काम छोड़ कर एक स्थान पर बैठ कर हठ पूर्वक शास्त्रविधि त्याग कर पूजा-साधना करेगा तो तेरा निर्वाह कैसे चलेगा। तूं भूखा मरेगा। गीता अध्याय 17 श्लोक 5-6 में कहा है कि जो मनुष्य शास्त्रविधि से रहित केवल मन कल्पित घोर तप को तपते हैं तथा पाखण्ड(दम्भ) और अहंकार से युक्त हैं। वे मुझे तथा पूर्ण परमात्मा को भी कष्ट देते हैं। उन अज्ञानियों को तूं असुर(राक्षस) स्वभाव के जान। गीता अध्याय 16 श्लोक 17, 19, 20 में कहा है कि वे शास्त्र विधि त्याग कर पाखण्ड(दम्भ) वश अपनी साधना को श्रेष्ठ मानने वाले घमण्डी मनमाना पूजन(साधना) करते हैं। उन पापाचारी, क्रूरकर्मी नराधमों को मैं संसार में बार-२ आसुरी योनियों में ही डालता हूँ। हे अर्जुन ! वे मूढ मुझको न प्राप्त हो कर जन्म-जन्म में आसुरी योनियों को प्राप्त होते हैं।*

*गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि जो व्यक्ति शास्त्र विधि को त्याग कर मनमाना आचरण(पूजा/साधना) करता है वह न सिद्धि को प्राप्त होता है, न परम गति को और न सुख को ही। इसलिए गीता अध्याय 8 श्लोक 7 में कहा है कि तू युद्ध भी कर तथा स्मरण भी कर। इसी प्रकार आदरणीय गरीबदास जी महाराज भी यही प्रमाण देते हैं कि -*

नाम उठत नाम बैठत, नाम सोवत जाग वे।
नाम खाते नाम पीते, नाम सेती लाग वे।।

*श्री गंगा दास वाली साधना गुफा में बैठ कर मौन रह कर किसी भी पूर्ण संत*

*ने नहीं की। अपितु विरोध किया है। जैसे संत रविदास जी जूते भी बनाते थे, नाम भी स्मरण करते थे। परमात्मा कबीर साहेब जी कपड़ा भी बुनते थे और नाम स्मरण की लीला भी करते थे। संत गरीबदास जी खेतों में काम भी करते थे, स्मरण भी करते हुए कहा है कि -*

जैसे हाली बीज धुन, पंथी से बतलावै।
वा में खण्ड परे नहीं, ऐसे ध्यान लगावै।।

*भावार्थ है कि जैसे हाली खेत में बीज बो रहा होता है। यदि कोई यात्री उससे पंथ पूछता है तो किसान हल चलाते-२ उससे बातें भी करता है तथा बीज भी बो रहा है। ऐसे प्रभु भक्ति का मार्ग बताया है।*

*संत नानक जी भी नौकरी करते थे। फिर खेती भी करते थे तथा भजन भी करते थे।*

*एक समय संत श्री धन्ना जाट एक मुसलमान संत श्री वाजीद जी के पास उनके आश्रम में गए। संत वाजीद जी गुफा में बैठ कर साधना करते थे। दिन में दिखावा करने के लिए मौन धारण करके आँखे बंद करके भजन करते थे। रात्री में भी बैठ कर साधना दिखावा करते थे। परंतु संत धन्ना जी ऐसा नहीं करते थे। दो दिन श्री धन्ना जी श्री वाजीद जी के आश्रम में रूके। श्री वाजीद जी ने कहा कि आप भजन नहीं करते। आप अपना जीवन व्यर्थ कर रहो हो। ऐसा कह कर अपने शिष्यों में धाक जमाई। संत धन्ना जी ने कहा :--*

दिन में भजै सो ढोंगी कहिए, रात्रि में भजै सो चोर।
गुफा में भजै सो कहिए मूसटा, भजन की गति ओर।।

*यदि श्री गंगा दास की तरह परमात्मा प्राप्ति होनी है तो उसके दर्शक अनुयाई तो यह साधना कर नहीं कर सकते। क्योंकि वे तो गृहस्थी हैं तथा मजदूरी- मेहनत करके गुजारा करते है। यह श्री गंगा दास नकली गुरु अपने गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द जी को त्याग कर एक श्री अखण्डानन्द वैष्णव साधु का शिष्य बन कर ऋषि गंगानन्द कहलाने लगा। एक बार यह नकली ऋषि गंगानन्द रोहतक शहर में शिला बाईपास के पास एक सेवक के यहाँ ठहरा हुआ था। मुझ दास को भी उससे वार्ता करने का कुअवसर प्राप्त हुआ। उस समय इसने ऋषि गंगानन्द का बोर्ड लगा रखा था। इस दास ने पूछा आपने स्वामी जी को तथा कबीर पंथ को क्यों और किस लिए त्याग दिया ? कथित ऋषि गंगानन्द ने कहा कि वे सर्व रूढवादी तथा अज्ञानी हैं। मुझे स्वपन में ऋषि अखण्डानन्द जी दिखाई दिए। उन्होंने कहा कि मेरे पास आजा और कहीं पर सत साधना नहीं है। श्री गंगा दास ने कहा कि मैं अगले दिन उनके पास गया। उनसे दीक्षा प्राप्त की है। अब मुझे पूर्ण शांति है। यह बात सन् 1993 मार्च की है। यह(गंगादास) स्वामी रामदेवानन्द जी को सन् 1986 में छोड़ कर गुरु द्रोही बन कर चला गया था। अब यह कहता है कि मेरे गुरु जी भी स्वामी रामदेवानन्द जी हैं तथा फिर से ऋषि गंगानन्द से गंगादास बन गया। इस नकली गुरु गंगादास ने जो साधना स्वामी जी के संग में*

*रह कर की थी उसी की कमाई से यह भोले श्रद्धालुओं के श्रद्धा का केन्द्र बना है। अंत में अनुयाई भी तथा यह गंगादास भी जीवन व्यर्थ करके जाऐंगे।*

*आरणीय गरीबदास जी महाराज ने गुरु द्रोही के विषय में अपनी अमृत वाणी में कहा है कि :--*

गरीब, गुरु द्रोही की पैड़ पर, जै पग आवै बीर।
चौरासी निश्चय पड़ै, सतगुरु कहें कबीर।।

*भावार्थ है कि संत गरीबदास जी ने कहा है कि जो भक्त गुरु द्रोही हो जाता है। उसके पास जाने वाले उसके शिष्य बनने वाले अर्थात् उसका अनुसरण करने वाले श्रद्धालु चौरासी लाख प्राणियों की कष्ट दायक योनियों को प्राप्त होते हैं। इस कथन के साक्षी मेरे प्रभु कबीर भी है।*

*इसलिए सर्व भक्त समाज से प्रार्थना है कि ऐसे बुगले भक्तों से सावधना हो कर सत साधना करके अपना जीवन सफल करें।*

*शंका : एक व्यक्ति पहले आपका सेवक था। आप उसके घर प्रत्येक महीने का सत्संग भी करते थे। वह कहता है कि हमने संत रामपाल का नाम छोड़ दिया है। अन्य गुरु धारण कर लिया है। हमें तो कोई हानि नहीं होती है। उसका मकान रोहतक जेल के पास है।*

*उत्तर : वह व्यक्ति पहले बीड़ी का सेवन करता था। उसकी पत्नी ने किसी अन्य नकली संत से नाम उपदेश ले रखा था। फिर मुझ दास से पूरे परिवार ने उपदेश प्राप्त किया। पूरा परिवार मुझ दास की बहुत सेवा करता था। अधिकतर यह दास उन्हीं के मकान पर विश्राम करता था। उनके घर पर भक्तों का तांता लगा रहता था। पूरा परिवार सेवा में दिन-रात लगा रहता था। उस व्यक्ति ने धुम्रपान भी त्याग दिया था। उसकी पत्नी का पहला गुरु चार वर्ष तक किसी स्वार्थ उद्देश्य से पंजाब में पूज्य गुरुदेव की सेवा में रहा था। वहाँ पर स्वामी रामदेवानन्द जी से गाली गलोच करके गुरु द्रोही हो कर वापिस लौट आया। उसका उद्देश्य था कि स्वामी जी की सेवा करके उस स्थान पर मैं गुरु रूप में रहूँ। वह मुझ दास से यही कह कर सेवा में गया था कि महाराज रामदेवानन्द जी एक या दो वर्ष ही जीवित रहेंगे। उनका अंत समय समीप है, कुछ मुझे भी प्रदान कर जाऐंगे। यह बात सन् 1991 की है। सन् 1994 में स्वामी जी ने मुझ दास को नामदान करने का आदेश दे दिया। स्वामी जी स्वस्थ चल रहे थे। एक दिन उस नकली गुरु ने मुझ दास से कहा कि चार वर्ष हो गए स्वामी जी एक दिन तो लगते हैं कि आज शरीर छोड़ देंगे, अगले दिन स्वस्थ हो जाते हैं। यह तो मुझे मार कर मरेगा। सन् 1994 में ही स्वामी जी की सेवा छोड़ कर हरियाणा वापिस आ गया। हरियाणा आने के बाद स्वामी जी के विषय में ऐसी अभद्र बातें करने लगा जो यहाँ लिखी भी नहीं जा सकती हैं तथा कहने लगा कि यह मेरा गुरु ही नहीं है। मैंने तो किसी और से उपदेश ले रखा है।*

*उसका आना-जाना उस परिवार में अधिक हो गया। पूरे परिवार की आस्था*

उस गुरु द्रोही में हो गई। उनका भाव बिगड़ता चला गया। इस दास ने उनकी अश्रद्धा देख कर वहाँ पर जाना छोड़ दिया। जो उन्होंने तीन वर्ष तक इस दास की तथा अन्य भक्तों की सेवा की थी वह कमाई उनके साथ है। परंतु भविष्य की भक्ति कमाई शुन्य है। पूर्ण संत से विमुख होने के बाद आध्यात्मिक लाभ समाप्त हो जाता है। जिस समय उसके मन में मैल (कपट) आया उस व्यक्ति की भयंकर दुर्घटना हुई। उसका हाथ टूट गया। बहुत समय में ठीक हुआ। वह उसके लिए संकेत था। यदि वह क्षमा याचना करता और दोबारा उपदेश ले लेता तो उसकी भक्ति कमाई बनी रहती। अब वह गुरु द्रोही हो गया है। उसको तीन वर्ष की कमाई के कारण लाभ मिलता रहेगा परंतु अंत में शुन्य हो जाएगा।

हानि इसलिए भी नहीं होती : जैसे विद्यार्थी किसी विद्यालय में पढ़ता है। यदि वह गलती करता है तो शिक्षक उसके भविष्य को मध्य नजर रखते हुए उसे सजा देता है। यदि वह विद्यार्थी विद्यालय त्याग देता है फिर वह बच्चा चाहे गधे पर बैठ कर घूमता रहे। शिक्षक उसे सजा नहीं देता है। क्योंकि अब वह उनका शिष्य नहीं रहा, इसलिए अब वह अपना जीवन व्यर्थ कर रहा है। इसी प्रकार जब तक सेवक संत से जुड़ा रहता है तब तक यदि वह गलती करता है तो उसे शाम-दाम-दण्ड भेद विधि से सुधारा जाता है। उसे कुछ दण्डित भी किया जाता है। यदि वह गुरु से विमुख हो जाता है तो फिर प्रभु उसे दण्डित नहीं करता है। वह तो अपना जीवन व्यर्थ कर रहा है तथा प्रभु से लाभ प्राप्त करने वाले विद्यालय से उसका नाम कट चुका है।

## "मुझ दास (रामपाल दास) को तत्व भेद प्राप्ति"

एक दिन इस दास(रामपाल दास) ने अपने पूज्य गुरुदेव स्वामी राम देवानन्द जी से पूछा कि हे गुरुवर ! यह सारनाम क्या है ? जिसके विषय में बार-२ सतग्रन्थ साहेब तथा परमेश्वर कबीर साहेब जी की वाणी में आता है। तब उन्होंने कहा कि आज तक किसी ने मेरे से इस विषय में नहीं पूछा। लाखों का समूह है। परंतु ये प्रभु नहीं चाहते ये तो माया चाहते हैं या प्रभुत्ता। गुरु जी ने कहा कि आपके दादा गुरु जी ने मुझे कहा था कि आपसे कोई ऐसी बात पूछे तो उसे यह वास्तविक मन्त्र तथा सारशब्द का भेद देना। वह पूर्ण संत होगा तथा कबीर परमेश्वर का वास्तविक भक्ति मार्ग प्रारम्भ होगा। ऐसा कह कर पूज्य गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द जी महाराज ने उनके पास उपस्थित संगत को अपनी कुटिया से बाहर कर दिया तथा सर्व भेद समझाया और कहा कि रामपाल तेरे समान संत इस पृथ्वी पर नहीं होगा। मुझे तेरा ही इंतजार था। सतलोक प्रस्थान करने से पूर्व सर्व आश्रम त्याग कर मुझ दास के पास जीन्द(हरियाणा) कुटिया में स्वामी जी चालीस दिन रहे तथा कहा कि किसी को नहीं बताना कि मैंने तेरे को सारनाम तथा सारशब्द दिया है। क्योंकि तेरे दादा गुरु जी की आज्ञा थी कि जो शिष्य सारशब्द के विषय में पूछे केवल उसी को बताना। वह एक ही होगा। अन्य को सारशब्द नहीं देना। इसलिए अन्य जो

*शिष्य हैं वे अधिकारी नहीं हैं। उन्हें पता चलेगा तो वे द्वेष करेंगे तथा पाप के भागी हो जाएंगे। ये सर्व अगले जन्मों में आपके (रामपाल दास) शिष्य होंगे।*

*मुझ दास के पास चालीस दिन जीन्द कुटिया में ठहर कर स्वामी जी 24 जनवरी 1997 को पंजाब में बने आश्रम कस्बा तलवण्डी भाई में गए। वहाँ पर 26 जनवरी 1997 को सुबह 10 बजे सतलोक प्रस्थान किया। सन् 1994 को मुझ दास को नाम दान करने का आदेश दिया तथा अपने सर्व शिष्यों से कह दिया कि आज के बाद यह रामपाल ही तुम्हारा गुरु है। आज के बाद मैं तुम्हारा गुरु नहीं हूँ। जिसने कल्याण करवाना हो, इस रामपाल से उपदेश प्राप्त करो। इन शब्दों द्वारा पूज्य गुरुदेव ने भी नकली शिष्यों का भार अपने सिर से डाल दिया। यह सारशब्द अभी तक पूर्ण रूप से गुप्त रखना था।*

*पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब पूज्य गुरुदेव के सतलोक सिधारने के पश्चात् यह दास(रामपाल दास) बहुत अकेलापन महसूस करने लगा। बहुत चिंतित रहने लगा। अब मेरे साथ कौन रहेगा ? मैं क्या करूँ ? इतनी बड़ी जिम्मेवारी को यह अकेला दास कैसे निभा पाएगा ? परमेश्वर कबीर साहेब जी ने सारनाम व शब्द देना मना किया हुआ है। मेरी यह चिंता गहन होने लगी। मार्च 1997 में फाल्गुन शुक्ल एकम को दिन के दस बजे परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने वास्तविक रूप में मुझे मिले तथा कहा कि चिंता मत कर, मैं तेरे साथ हूँ। अब सारनाम तथा सारशब्द प्रदान करने का समय आ गया है तथा कहा कि संत गरीबदास से भी मैंने ही कहा था कि आप की परम्परा में केवल एक संत को सारनाम व शब्द बताना है। उसे कसम दिलाना है कि केवल एक ही शिष्य को वह भी सारनाम व शब्द बताए जो ऐसे प्रश्न पूछे। यह परम्परा संत गरीबदास जी से संत शीतल दास जी को तथा अब केवल तेरे(रामपाल दास) तक पहूँची है। यह रहस्य जान बूझ कर रखा था। अब पुत्र निश्चिंत हो कर मेरा गुनगान कर। अब सारी पृथ्वी पर तत्व ज्ञान फैलेगा। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा कि अभी किसी से मत कहना कि मुझे कबीर प्रभु मिले थे। आप पर कोई विश्वास नहीं करेगा। तुझे कुछ समय उपरांत फिर मिलूँगा। परमेश्वर कबीर साहेब जी दास को समय-२ पर दर्शन देकर कृत्यार्थ करते रहते हैं। अब परमेश्वर का स्पष्ट संकेत हो गया है। इसलिए दास वर्णन कर रहा है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आदरणीय गरीबदास जी की वाणी "सुमरण का अंग" में लिखा है कि 'सोहं ऊपर और है, सत सुकृत एक नाम'। जो अभी तक संत गरीबदास पंथ में उस सारनाम का ज्ञान नहीं था। अब इस दास (रामपाल दास) से विमुख हुए गुरु द्रोही ही उन्हें बताने लगे हैं। लेकिन अब सभ्य समाज इनकी दाल नहीं गलने देगा। कुछे बातें ऐसी होती हैं जो गुप्त रखनी होती है। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने स्वामी रामानन्द जी को भी यही कसम दिलाई थी कि मेरा भेद मत देना। आप मेरे गुरु बने रहो तथा संत धर्मदास जी को भी यही कहा था कि*

- "गुप्त कल्प तुम राखो मोरी, देऊं मकरतार की डोरी"

*भावार्थ है कि अन्य किसी को मेरे विषय में मत बताना। क्योंकि कोई आप*

*पर विश्वास नहीं करेगा और जो भक्ति मार्ग मैं तुझे बता रहा हूँ यह किसी को मत बताना। मैं तुझे सतलोक जाने की वह(मकरतार) विशेष विधि बताता हूँ जिसके द्वारा आप सतलोक पहुँच जाओगे। परमेश्वर कबीर साहेब जी ने अपने प्रिय शिष्य धर्मदास जी साहेब से कहा था कि यह सारशब्द मैं तुझे प्रदान करता हूँ। परंतु आप यह सारशब्द अन्य किसी को नहीं देना। तुझे लाख दुहाई है अर्थात् सख्त मना है। यदि यह सारशब्द किसी अन्य के हाथ में पड़ गया तो आने वाले समय में जो बिचली(मध्य वाली) पीढी पार नहीं हो पावेगी। धर्मदास जी ने कसम खाई है कि प्रभु आपके आदेश की अवहेलना कभी नहीं होगी। इसलिए धर्मदास जी ने अपने किसी भी वंशज को यह वास्तविक नाम जाप तथा सारशब्द नहीं बताया। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि संत धर्मदास जी ने पुरी(जगन्नाथ पुरी) में शरीर त्यागा। जहाँ कबीर परमशेवर ने एक पत्थर चौरा(चबुतरा) जिस पर बैठ कर समुंद्र को रोक कर श्री जगन्नाथ जी के मन्दिर की रक्षा की थी। संत धर्मदास जी तथा धर्मपत्नी भक्तमति आमिनी देवी दोनों की यादगार वहाँ पुरी में बनी है। यह दास कई सेवकों सहित इस तथ्य को आँखों देख कर आया है। बाद में श्री चुड़ामणी जी को (जो संत धर्मदास जी को कबीर परमेश्वर की कृपया से नेक संतान प्राप्त हुई थी) अन्य श्रद्धालुओं ने महंत बना दिया। वह नाम दान करने लगा। धर्मदास जी ने भी चूड़ामणी जी को केवल प्रथम मन्त्र जो सात नाम का है प्रदान किया। वह प्रथम वास्तविक नाम भी धर्मदास की सातवीं पीढ़ी में काल का दूत महंत बना उसने प्रथम नाम छोड़ कर मनमुखी नामदान करने प्रारम्भ कर दिये। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि श्री चूड़ामणी जी की चली महंत परम्परा में यह वास्तविक मंत्र नहीं दिया जाता केवल मनमुखी नाम दिए जाते हैं जो अजर नाम, अमर नाम, पाताले सप्त सिंधु नाम, आदि... हैं। इससे सिद्ध हुआ कि यह भी मनमुखी साधना तथा स्वयंभु गुरु बन कर गद्दी परम्परा चला रहे हैं।*

*सतलोक आश्रम करौंथा में मुझ दास(रामपाल दास) से उपदेश लेने से सर्व सुख व लाभ भी प्राप्त होंगे तथा पूर्ण मोक्ष भी प्राप्त होगा। कहते हैं - आम के आम, गुठलियों के दाम। कृप्या निःशुल्क प्राप्त करें।*

गरीब, समझा है तो शिर धर पाव। बहुर नहीं है ऐसा दाव।।

*मुझ दास की प्रार्थना है कि मानव जीवन दुर्लभ है, इसे नादान संतों, महंतों व आचार्यों, महर्षियों तथा पंथों के पीछे लग कर नष्ट नहीं करना चाहिए। पूर्ण संत की खोज करके उपदेश प्राप्त करके आत्म कल्याण करवाना ही श्रेयकर है। सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के अनुसार अर्थात् शास्त्र अनुकूल यथार्थ भक्ति मार्ग मुझ दास(रामपाल दास) के पास उपलब्ध है। कृपया निःशुल्क प्राप्त करें।*

*सर्व पवित्र धर्मों की पवित्र आत्माऐं तत्वज्ञान से अपरिचित हैं। जिस कारण नकली गुरुओं, संतों, महंतों तथा ऋषियों तथा पंथों का दाव लगा हुआ है। जिस समय पवित्र भक्त समाज आध्यात्मिक तत्वज्ञान से परिचित हो जाएगा उस समय इन नकली संतों, गुरुओं व आचार्यों को छुपने का स्थान नहीं मिलेगा। सर्व प्रभु*

*प्रेमियों का शुभ चिन्तक तथा दासों का भी दास। "सत् साहेब"*

*संत रामपाल दास*
*सतलोक आश्रम करौंथा, जिला रोहतक(हरियाणा)।*
*दूरभाष : 9812026821, 9812166044, 9812142324*

## ''संत धर्मदास जी के वंशों के विषय में''

*प्रश्न : संत धर्मदास जी की गद्दी दामा खेड़ा वाले कहते हैं कि इस गद्दी से नाम प्राप्त करने से मोक्ष संभव है ?*

*उत्तर : संत धर्मदास जी का ज्येष्ठ पुत्र श्री नारायण दास काल का भेजा हुआ दूत था। उसने बार-बार समझाने से भी परमेश्वर कबीर साहेब जी से उपदेश नहीं लिया। पुत्र प्रेम में व्याकुल संत धर्मदास जी को परमेश्वर कबीर साहेब जी ने नारायण दास जी का वास्तविक स्वरूप दर्शाया। संत धर्मदास जी ने कहा कि हे प्रभु ! मेरा वंश तो काल का वंश होगा। यह कह कर संत धर्मदास जी बेहोंश(अचेत) हो गए। काफी देर बाद होश में आए। फिर भी अतिचिंतित रहने लगे। उस प्रिय भक्त का दुःख निवारण करने के लिए परमेश्वर कबीर साहेब जी ने कहा कि धर्मदास वंश की चिंता मत कर। यह काल का दूत है। उसका वंश पूरा नष्ट हो जाएगा तथा तेरा बियालीस पीढी तक वंश चलेगा। तब संत धर्मदास जी ने पूछा कि हे दीन दयाल ! मेरा तो इकलौता पुत्र नारायण दास ही है। तब परमेश्वर ने कहा कि आपको एक शुभ संतान पुत्र रूप में मेरे आदेश से प्राप्त होगी। उससे केवल तेरा वंश चलेगा। तब धर्मदास जी ने कहा था कि हे प्रभु ! आप का दास वृद्ध हो चुका है। अब संतान का होना असंभव है। आपकी शिष्या भक्तमति आमिनी देवी का मासिक धर्म भी बंद है। परमेश्वर कबीर साहेब ने कहा कि मेरी आज्ञा से आपको पुत्र प्राप्त होगा। उसका नाम चुड़ामणी रखना। यह कह कर परमेश्वर कबीर साहेब ने उस भावी पुत्र को धर्मदास के आंगन खेलते दिखाया। फिर अन्तर्ध्यान कर दिया। संत धर्मदास जी शांत हुए। कुछ समय पश्चात् भक्तमति आमिनी देवी को संतान रूप में पुत्र प्राप्त हुआ उसका नाम श्री चुड़ामणी जी रखा। बड़ा पुत्र नारायण दास अपने छोटे भाई चुड़ामणी जी से द्वेष करने लगा। जिस कारण से श्री चुड़ामणी जी बांधवगढ़ त्याग कर कुदरमाल नामक शहर(मध्य प्रदेश) में रहने लगा। कबीर परमेश्वर जी ने संत धर्मदास जी से कहा था कि धार्मिकता बनाए रखने के लिए अपने पुत्र चुड़ामणी को केवल प्रथम मन्त्र(जो यह दास/रामपाल दास प्रदान करता है) देना जिससे इनमें धार्मिकता बनी रहेगी तथा तेरा वंश चलता रहेगा। परंतु आपकी सातवीं पीढ़ी में काल का दूत आएगा। वह इस वास्तविक प्रथम मन्त्र को भी समाप्त करके मनमुखी अन्य नाम चलाएगा। शेष धार्मिकता का अंत ग्यारहवां, तेरहवां तथा सतरहवां गद्दी वाले महंत कर देंगे। इस प्रकार तेरे*

*वंश से भक्ति तो समाप्त हो जाएगी। परंतु तेरा वंश फिर भी बियालीस(42) पीढ़ी तक चलेगा। फिर तेरा वंश नष्ट हो जाएगा।*

*प्रमाण पुस्तक "सुमिरण शरण गह बयालिश वंश" लेखक : महंत श्री हरिसिंह राठौर, पृष्ठ 52 पर -*

वाणी : सुन धर्मनि जो वंश नशाई, जिनकी कथा कहूँ समझाई।।93।।
काल चपेटा देवै आई, मम सिर नहीं दोष कछु भाई।।94।।
सप्त, एकादश, त्रयोदस अंशा, अरु सत्रह ये चारों वंशा।।95।।
इनको काल छलेगा भाई, मिथ्या वचन हमारा न जाई।।96।।
जब–२ वंश हानि होई जाई, शाखा वंश करै गुरुवाई।।97।।
दस हजार शाखा होई है, पुरुष अंश वो ही कहलाही है।।98।।
वंश भेद यही है सारा, मूढ जीव पावै नहीं पारा।।99।।
भटकत फिरि हैं दोरहि दौरा, वंश बिलाय गये केही ठौरा।।100।।
सब अपनी बुद्धि कहै भाई, अंश वंश सब गए नसाई।।101।।

*उपरोक्त ऊपरोक्त वाणी में कबीर परमेश्वर ने अपने निजी सेवक संत धर्मदास साहेब जी से कहा कि धर्मदास तेरे वंश से भक्ति नष्ट हो जाएगी वह कथा सुनाता हूँ। सातवीं पीढ़ी में काल का दूत उत्पन्न होगा। वह तेरे वंश से भक्ति समाप्त कर देगा। जो प्रथम मन्त्र आप दान करोगे उसके स्थान पर अन्य मनमुखी नाम प्रारम्भ करेगा। धार्मिकता का शेष विनाश ग्यारहवां, तेरहवां तथा सतरहवां महंत करेगा। मेरा वचन खाली नहीं जाएगा भाई। सर्व अंश वंश भक्ति हीन हो जाएंगे। अपनी-२ मन मुखी साधना किया करेंगे। "चौदहवीं महंत गद्दी का परिचय" पुस्तक "धनी धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय" पृष्ठ 49 पर तेरहवें महंत दयानाम के बाद कबीर पंथ में उथल-पुथल मची। काल का चक्र चलने लगा। क्योंकि इस परम्परा में कोई पुत्र नहीं था। तब तक व्यवस्था बनाए रखने के लिए महंत काशीदास जी को चादर दिया गया। कुछ समय पश्चात् काशी दास ने स्वयं को कबीर पंथ का आचार्य घोषित कर दिया तथा खरसीया में अलग गद्दी की स्थापना कर दी। यह देख तीनों माताऐं रोने लगी कि काल का चक्र चलने लगा। बाद में कबीर पंथ के हित में ढाई वर्ष के बालक चतुर्भुज साहेब को बड़ी माता साहिब ने गद्दी सौंप दी जो "गृन्धमुनि नाम साहेब" के नाम से प्रसिद्ध हुआ।*

*विचार करें : एक ढाई वर्ष का बालक क्या नाम व ज्ञान देगा ?*

*माता जी ने गद्दी पर बैठा दिया। बेटा महंत बन गया। जिसे भक्ति का क-ख का भी ज्ञान नहीं। इस प्रकार भोले श्रद्धालुओं को दंत कथाओं(लोकवेद) के आधार से भ्रमित करके गुमराह कर रहे हैं।*

*महंत काशी दास जी ने खरसिया शहर में नकली कबीर पंथी गद्दी प्रारम्भ कर दी। उसी खरसिया से एक उदीतनाम साहेब ने मनमुखी गद्दी लहर तारा तालाब पर काशी(बनारस) में चालु कर रखी है। कबीर चौरा काशी में एक गंगाशरण शास्त्री जी भी महंत पद पर विराजमान है। परंतु भक्ति का क-ख भी ज्ञान नहीं है।*

*उपरोक्त विवरण से प्रभु प्रेमी पाठक स्वयं निर्णय करें कि दामा खेड़ा वाले महंतों के पास वास्तविक भक्ति है या ड्रामाबाजी ?*

*श्री चुड़ामणी जी के कुदरमाल चले जाने के पश्चात् बांधवगढ़ पूरा नष्ट हो गया। आज भी प्रमाण है।*

*प्रश्न : दामा खेड़ा गद्दी वाले तो कहते हैं कि कबीर जी ने कहा था कि जब तक तेरी बियालीस वंश की गद्दी चलेगी तब तक मैं पृथ्वी पर नहीं आऊँगा अर्थात् अन्य को यह नाम दान आदेश नहीं दूंगा ?*

*उत्तर : यह उनकी मनघड़ंत कहानी है। कबीर सागर में कबीर बानी नामक अध्याय में पृष्ठ 136-137 पर बारह पंथों का विवरण देते हुए वाणी लिखी हैं जो निम्न हैं :-*

सम्वत् सत्रासै पचहत्तर होई, तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई।
साखी हमारी ले जीव समझावै, असंख्य जन्म ठौर नहीं पावै।
बारवें पंथ प्रगट है बानी, शब्द हमारे की निर्णय ठानी।
अस्थिर घर का मरम न पावैं, ये बारा पंथ हमही को ध्यावैं।
बारवें पंथ हम ही चलि आवैं, सब पंथ मेटि एक ही पंथ चलावें।

*उपरोक्त वाणी में ''बारह पंथों'' का विवरण किया है तथा लिखा है कि संवत् 1775 में प्रभु का प्रेम प्रकट होगा तथा हमरी बानी प्रकट होवेगी। (संत गरीबदास जी महाराज छुड़ानी व हरियाणा वाले का जन्म 1774 में हुआ है उनको प्रभु कबीर 1784 में मिले थे। यहाँ पर इसी का वर्णन है तथा सम्वत् 1775 के स्थान पर 1774 होना चाहिए, गलती से 1775 लिखा है)। भावार्थ है कि बारहवां पंथ जो गरीबदास जी का चलेगा यह पंथ हमारी साखी लेकर जीव को समझाएगें। परन्तु वास्तविक मन्त्र के अपरिचित होने के कारण साधक असंख्य जन्म सतलोक नहीं जा सकते। उपरोक्त बारह पंथ हमको ही प्रमाण करके भक्ति करेगें परन्तु स्थाई स्थान (सतलोक) प्राप्त नहीं कर सकते। बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ) में आगे चलकर हम (कबीर जी) स्वयं ही आऐगें तथा सब बारह पंथों को मिटा एक ही पंथ चलाऐगें। उस समय तक सारशब्द छुपा कर रखना है। यही प्रमाण सन्त गरीबदास जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकंन्दन रमैणी'' में किया है कि ''सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरती सूम जगायसी'' पुराना रोहतक तहसील दिल्ली मण्डल कहलाता है। जो पहले अग्रेंजों के शासन काल में केन्द्र के आधीन था। बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) पृष्ठ नं. 1870 पर भी है जिसमें बारहवां पंथ गरीबदास लिखा है।*

*कबीर साहेब के पंथ में काल द्वार प्रचलित बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (कबीर सागर) पृष्ठ नं. 1870 से :- (1) नारायण दास जी का पंथ (2) यागौदास (जागू) पंथ (3) सूरत गोपाल पंथ (4) मूल निरंजन पंथ (5) टकसार पंथ (6) भगवान दास (ब्रह्म) पंथ (7) सत्यनामी पंथ (8) कमाली (कमाल का) पंथ (9)*

*राम कबीर पंथ (10) प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ (11) जीवा पंथ (12) गरीबदास पंथ।*

*यदि कबीर परमश्वेर जी ऐसा वचन कहते तो सन् 1518 में सतलोक प्रस्थान के 33 वर्ष पश्चात् सन् 1551 में सात वर्षीय संत दादू साहेब जी को नहीं मिलते, 209 वर्ष पश्चात् सन् 1727 में दस वर्षीय संत गरीबदास जी को गाँव छुड़ानी, जिला झज्जर(हरियाणा प्रदेश, भारत) में नहीं मिलते तथा नामदान देने की आज्ञा और आगे नामदान करने का आदेश नहीं देते। इसके बाद फिर 292 वर्ष पश्चात् सात वर्षीय संत घीसा दास जी को गाँव खेखड़ा, जिला मेरठ(उतर प्रदेश) में नहीं मिलते। जो आज भी यादगार साक्षी हैं तथा उपरोक्त संतों द्वारा लिखी अमृत वाणी साक्षी रूप हलफिया ब्यान(एफिडेविट) है कि परमेश्वर कबीर जी काशी वाले जुलाहा धाणक ने स्वयं साक्षात दर्शन दिए तथा अपने सतलोक के भी दर्शन करा करके अपनी समर्थता का प्रमाण दिया।*

*मुझ दास(रामपाल दास) को परमेश्वर कबीर साहेब जी फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष एकम(मार्च) 1997 को दिन के दस बजे मिले तथा सारशब्द की वास्तविकता तथा संगत को दान करने का सही समय का संकेत दे कर अर्न्तध्यान हो गए तथा इसको अगले आदेश तक रहस्य युक्त रखने का आदेश दिया।*

## ''पवित्र कबीर सागर में अद्धभुत रहस्य''

*''अनुराग सागर'' :- यह अध्याय कबीर सागर का ही अंग है।*

*वर्तमान कबीर सागर के संशोधन कर्ता श्री युगलानन्द बिहारी (प्रकाशक एवं मुद्रक-खेमराज श्री कृष्ण दास, श्री वेंकेटेश्वर प्रैस मुंबई) द्वारा अपने प्रस्तावना में लिखा है कि मेरे पास अनुराग सागर की 46 (छियालिस) प्रतियाँ हैं। जिनमें हस्त लिखित तथा प्रिन्टिड हैं। सभी की व्याख्या एक दूसरे से भिन्न हैं। अब मैंने (श्री युगलानन्द जी ने) शुद्ध करके सत्य विवरण लिखा है।*

*विवेचनः- श्री युगलानन्द जी ने अनुराग सागर पृष्ठ 110 पर लिखा है कि धर्मदास साहेब जी नीरू का अवतार अर्थात् नीरू वाली आत्मा ही धर्मदास रूप में जन्मी थी तथा नीमा वाली आत्मा ही आमनी रूप में जन्मी थी। वाणी बना कर लिखी है, कबीर वचन :-*

चलेहु हम तब सीस नवाई, धर्मदास अब तुम लग आई।
धर्मदास तुम नीरू अवतारा, आमिनि नीमा प्रगट बिचारा।।

*तथा ''ज्ञान सागर'' पृष्ठ नं. 72 पर धर्मदास को नीरू अवतार नहीं लिखा है तथा नीरू के स्थान पर नूरी लिखा है।*

*विशेषः- पुस्तक ''धनी धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय'' दामाखेड़ा से प्रकाशित पृष्ठ नं. 9 पर लिखा है। धर्मदास जी का जन्म संवत् 1452(सन् 1395)*

*तथा कबीर सागर ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ-1790 पर लिखा है कि संवत् 1455 (सन् 1398) ज्येष्ठ शुद्धि पूर्णिमा सोमवार के दिन सतपुरूष का तेज कांशी के लहरतारा तालाब पर उतरा।*

*पृष्ठ नं. 1791, 1792 (कबीर चरित्र बोध) पर लिखा है कि नीरू जुलाहा तथा उसकी पत्नी नीमा चले आ रहे थे। उन्हें एक बालक देखा उसे उठा लिया।*

*पृष्ठ नं. 1794 से 1818 तक आदरणीय गरीबदास जी महाराज (छुड़ानी-हरियाणा वाले) की वाणी के द्वारा महिमा समझाई है। सन्त गरीबदास जी महाराज की वाणी लिखी है (यह भी कबीर सागर में प्रक्षेप अर्थात् मिलावट का प्रत्यक्ष प्रमाण है)*

*उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि :-*

*(1.) संत धर्मदास साहेब का जन्म सन् 1395 में तथा परमेश्वर कबीर जी का अवतरण सन् 1398 में तथा नीरू व नीमा को मिलन सन् 1398 में तो धर्मदास जी व परमेश्वर कबीर जी तथा नीरू व नीमा समकालीन हुए। यह वाणी की धर्मदास जी नीरू वाली आत्मा थी, गलत सिद्ध हुई। इससे सिद्ध हुआ कि कबीर सागर में मिलावट (प्रक्षेप) है जो दामाखेड़ा वालो द्वारा जान बूझ कर किया गया। सन्त गरीबदास जी (छुडानी-हरियाणा वाले) का जन्म सन् 1717 (सम्वत् 1774) में हुआ। जो कबीर जी के अन्तर्ध्यान के 199 वर्ष बाद की गरीबदास जी की वाणी भी कबीर सागर में कबीर चरित्र बोध में लिखी है। जो प्रत्यक्ष प्रमाण करती है कि कबीर सागर में मिलावट है।*

*स्वसम वेद बोध (बोध सागर) पृष्ठ नं. 137 पर साखी लिखी है की कांशी में भण्डारे के समय कबीर जी तो घर छोड़ कर चले गए तथा विष्णु ने भण्डारा किया:-*

भीर भई साधुन की भारी, गृह तजि सत्य कबीर सिधारी।
आये विष्णु भये भण्डारी, साधुन को आदर करि भारी।।

*इससे सिद्ध है कि मिलावट कर्ता श्री कृष्ण का पुजारी है तथा सत् कबीर जी की महिमा से अपरिचित है।*

*विशेष विवरण:- कबीर सागर ''कबीर चरित्र बोध'' पृष्ठ नं. 1862 से 1865 तक लिखा है कि कलयुग में कबीर साहेब ने चार गुरू नियत किये हैं।*

*(1.) धर्मदास जी जिस के बयालिश वंश है तथा उत्तर में गुरूवाई सौंपी है।*

*(2.) दूसरे चतुर्भुज दक्षिण में गुरूवाई करेगें।*

*(3.) बंक जी पूर्व में गुरूवाई करेगें।*

*(4.) चौथे सहती जी पश्चिम में गुरूवाई करेगें।*

*जिस समय कबीर सागर लिखा गया (सम्वत् 1562) उस समय तक केवल एक धर्मदास जी ही प्रकट हुए हैं। जब ये चारों गुरू प्रकट हो जाऐगें तब पूरी पृथ्वी पर केवल कबीर साहेब जी का ही ज्ञान चलेगा।*

*यही प्रमाण ''अनुराग सागर'' पृष्ठ नं. 104-105 पर है। उपरोक्त विवरण से*

*स्पष्ट हुआ कि कलयुग में धर्मदास जी के अतिरिक्त तीन गुरू और पृथ्वी पर प्रकट होगें, उनके द्वारा भी जीव उद्धार होगा। दामा खेड़ा वालों द्वारा बनाई दन्त कथा गलत सिद्ध हुई कि कलयुग में केवल धर्मदास जी के वंशजो द्वारा ही जीव उद्धार सम्भव है अन्य द्वारा नहीं। यह उल्लेख कबीर सागर में कबीर वाणी पृष्ठ १६० पर लिखा है जो स्पष्ट मिलावट दिखाई देती है।*

*मुझ दास को एक 450 वर्ष पुराना कबीर सागर प्राप्त हुआ है। जो बहुत ही जीरण-सीरण है। उसके आधार पर कबीर सागर का संशोधन किया जाएगा। ''वर्तमान कबीर सागर'' के संशोधन कर्ता श्री युगलानन्द जी ने ज्ञान प्रकाश-बोध सागर पृष्ठ नं. 37 के नीचे टिप्पणी की है कि इस ज्ञान प्रकाश की कई लीपी मेरे पास हैं परन्तु कोई भी एक दूसरे से मेल नहीं खाती। लेखक महात्माओं की कृपा से पक्षपात और अविद्यावश कबीर पंथ के ग्रन्थों की दुर्दशा हुई है।*

*विशेष :- भक्त जन विचार करें कि काल ने कैसा जाल फैलाया है। अपने दूतों द्वारा परमेश्वर के सत् ग्रन्थों को ही बदलवा डाला। फिर भी सत्य को छुपा नहीं सके।*

कबीर :– चोर चुराई तूम्बड़ी, गाढै पानी मांही।
वो गाढे वह उपर आवै, सच्चाई छयानी नाहिं।।

*इसकी पूर्ति परमेश्वर ने संत गरीबदास जी (छुड़ानी-हरियाणा वाले) द्वारा करवाई है।*

*कबीर वाणी पृष्ठ 134 :-*

"बारहवें वंश प्रकट होय उजियारा, तेरहवें वंश मिटे सकल अंधियारा"

*भावार्थ :- कबीर परमेश्वर ने अपनी वाणी में काल से कहा था कि तेरे बारह पंथ चल चुके होगें तब मैं अपना नाद (वचन-शिष्य परम्परा वाला) वंश अथार्त् अंस भेजेगें उसी आधार पर यह विवरण लिखा है। बारहवां वंश (अंश) सन्त गरीबदास जी से कबीर वाणी तथा परमेश्वर कबीर जी की महिमा का कुछ-कुछ संस्य युक्त विस्तार होगा। जैसे सन्त गरीबदास जी की परम्परा में परमेश्वर कबीर जी को विष्णु अवतार मान कर साधना तथा प्रचार करते हैं। इसलिए लिखा है कि तेरहवां वंश (अंस) पूर्ण रूप से अज्ञान अंधेरा समाप्त करके परमेश्वर कबीर जी की वास्तविक महिमा तथा नाम का ज्ञान करा कर सभी पंथों को समाप्त करके एक ही पंथ चलाएगा, वह तेरहवां वंश हम ही होंगे।*

*कबीर वाणी (कबीर सागर) पृष्ठ 136 :-*

*बारह पंथों का विवरण दिया है। यहाँ पर केवल बारहवें का ज्ञान करवाएगें।।*

"द्वादश पंथ काल फरमाना, भूले जीव न जाय ठिकाना"

*बारहवें पंथ (गरीबदास पंथ बारहवां पंथ लिखा है कबीर सागर, कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1870 पर) के विषय में कबीर सागर कबीर वाणी पृष्ठ नं. 136-137 पर वाणी लिखी है कि :-*

सम्वत् सत्रासै पचहत्तर होई, तादिन प्रेम प्रकटें जग सोई।
साखी हमारी ले जीव समझावै, असंख्य जन्म ठौर नहीं पावै।
बारवें पंथ प्रगट है बानी, शब्द हमारे की निर्णय ठानी।
अस्थिर घर का मरम न पावैं, ये बारा पंथ हमही को ध्यावैं।
बारवें पंथ हम ही चलि आवैं, सब पंथ मेटि एक ही पंथ चलावें।
धर्मदास मोरी लाख दोहाई, सार शब्द बाहर नहीं जाई।
सार शब्द बाहर जो परही, बिचली पीढी हंस नहीं तरहीं।
तेतिस अर्ब ज्ञान हम भाखा, सार शब्द गुप्त हम राखा।
मूल ज्ञान तब तक छुपाई, जब लग द्वादश पंथ मिट जाई।

***कबीर सागर ''कबीर बानी'' नामक अध्याय (बोध सागर) पृष्ठ नं. 134 से 138 पर लिखे विवरण का भावार्थ है :-***

***पृष्ठ नं. 134 पर बारह वंशों (अंसों) के बाद तेरहवें वंश (अंस) में सब अज्ञान अंधेरा मिट जाएगा। बारह वंश काल के वश अपनी-२ चतुरता दिखाएगें। पृष्ठ नं. 136-137 पर ''बारह पंथों'' का विवरण किया है तथा लिखा है कि संवत् 1775 में प्रभु का प्रेम प्रकट होगा तथा हमरी बानी प्रकट होवेगी। (संत गरीबदास जी महाराज छुड़ानी व हरियाणा वाले का जन्म 1774 में हुआ है उनको प्रभु कबीर 1784 में मिले थे। यहाँ पर इसी का वर्णन है तथा सम्वत् 1775 के स्थान पर 1774 होना चाहिए, गलती से 1775 लिखा है)। भावार्थ है कि बारहवां पंथ जो गरीबदास जी का चलेगा यह पंथ हमारी साखी लेकर जीव को समझाएगें। परन्तु वास्तविक मन्त्र के अपरिचित होने के कारण साधक असंख्य जन्म सतलोक नहीं जा सकते। उपरोक्त बारह पंथ हमको ही प्रमाण करके भक्ति करेगें परन्तु स्थाई स्थान (सतलोक) प्राप्त नहीं कर सकते। बारहवें पंथ (गरीबदास वाले पंथ) में आगे चलकर हम (कबीर जी) स्वयं ही आऐगें तथा सब बारह पंथों को मिटा एक ही पंथ चलाऐगें। उस समय तक सारशब्द छुपा कर रखना है। यही प्रमाण सन्त गरीबदास जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी ''असुर निकंन्दन रमैणी'' में किया है कि ''सतगुरू दिल्ली मण्डल आयसी, सूती धरती सूम जगायसी'' पुराना रोहतक तहसील दिल्ली मण्डल कहलाता है। जो पहले अग्रेंजों के शासन काल में केन्द्र के आधीन था। बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) पृष्ठ नं. 1870 पर भी है जिसमें बारहवां पंथ गरीबदास लिखा है।***

***कबीर साहेब के पंथ में काल द्वारा प्रचलित बारह पंथों का विवरण कबीर चरित्र बोध (कबीर सागर) पृष्ठ नं. 1870 से :- (1) नारायण दास जी का पंथ (2) यागौदास (जागू) पंथ (3) सूरत गोपाल पंथ (4) मूल निरंजन पंथ (5) टकसार पंथ (6) भगवान दास (ब्रह्म) पंथ (7) सत्यनामी पंथ (8) कमाली (कमाल का) पंथ (9) राम कबीर पंथ (10) प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ (11) जीवा पंथ (12) गरीबदास पंथ।***

*विशेष :- यहाँ पर प्रथम पंथ का संचालक नारायण दास लिखा है जबकी कबीर वाणी (कबीर सागर) पृष्ठ 136 पर प्रथम पंथ का संचालक चूरामणी लिखा है, शेष प्रकरण ठीक है। इसमें भी दामाखेड़ा वाले अनुयाइयों ने चुड़ामणी को हटाने का प्रयत्न किया है। उसके स्थान पर नारायण दास लिख दिया। जबकि नारायण दास तो बिल्कुल विपरित था। उसका तो विनाश हो गया था। इसलिए प्रथम पंथ चुड़ामणी जी का ही मानना चाहिए। दूसरी बात है कि कबीर वाणी (कबीर सागर) पृष्ठ नं. 136 पर लिखी वाणी में चूड़ामणी को मिला कर ही बारह पंथ बनते हैं।*

*विचार करें:- अब वही एक पंथ मुझ दास द्वारा परमेश्वर कबीर जी की आज्ञा व शक्ति से चलाया जा रहा है जो सभी पंथों को एक करेगा।*

*वर्तमान कबीर सागर का संशोधन कर्ता भी दामा खेड़ा वालों का अनुयायी है। कबीर सागर में कबीर चरित्र बोध (बोध सागर) में लेखक ने लिखा है कि धर्मदास जी के बयालीस वंश का नियम है कि प्रत्येक वंश पच्चीस वर्ष बीस दिन तक गद्दी पर बैठा करे तथा स्वःइच्छा से शरीर छोड़े। इस से अधिक तथा कम समय कोई गद्दी पर न रहे। यह भी लिखा है कि वर्तमान में यही क्रिया चल रही है।*

*''धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय'' पुस्तक पृष्ठ नं. 32 से 49 तक विवरण दिया है :-*

*पहला चुरामणी जी सम्वत् 1570 से 1630 तक 60 वर्ष कुदुरमाल नामक स्थान की गद्दी पर रहे।*

*दूसरा सुदर्शन नाम जी सम्वत् 1630 से 1690 तक 60 वर्ष रतनपुर नामक स्थान की गद्दी पर रहे।*

*तीसरा कुलपत नाम जी सम्वत् 1690 से 1750 तक 60 वर्ष कुदुरमाल नामक स्थान की गद्दी पर रहे।*

*चौथा प्रमोद गुरू बाला पीर जी सम्वत् 1750 से 1804 तक 54 वर्ष मंढला नामक स्थान की गद्दी पर रहे।*

*पाँचवां केवल नाम जी सम्वत् 1804 से 1824 तक 20 वर्ष धमधा गद्दी पर रहे।*

*छठवां अमोल नाम जी सम्वत् 1824 से 1846 तक 22 वर्ष मंडला नामक स्थान की गद्दी पर रहे।*

*सातवां सूरत सनेही जी सम्वत् 1846 से 1871 तक 25 वर्ष सिंघाड़ी नामक स्थान की गद्दी पर रहे।*

*आठवां 1872 से 1890 तक 18 वर्ष कवर्धा नामक स्थान की गद्दी पर रहा।*

*नौवां 1890 से 1912 तक 22 वर्ष कवर्धा नामक स्थान की गद्दी पर रहा।*

*दसवां 1912 से 1939 तक 27 वर्ष कवर्धा नामक स्थान की गद्दी पर रहा।*

*ग्यारहवें को गद्दी ही नहीं हुई। क्योंकि दो वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई।*

*बारहवां उग्र नाम साहब जी सम्वत् 1953 में गद्दी पर बैठा तथा सम्वत् 1971*

*में मृत्यु हुई, 18 वर्ष तक दामा खेड़ा में स्वयं गद्दी बना कर रहा तथा सम्वत् 1939 से 1953 तक 14 वर्ष तक दामाखेड़ा नामक स्थान की गद्दी के पंथ वंश बिना पंथ रहा।*

*तेरहवां वंश दयानाम साहेब सम्वत् 1971 से 1984 तक 13 वर्ष दामाखेड़ा नामक स्थान की गद्दी पर रहा।*

*उपरोक्त विवरण से सिद्ध है कि दामाखेड़ा वालों की मनघड़न्त कहानी है कि वंश गद्दी से ही कलयुग में मुक्ति सम्भव है तथा प्रत्येक गद्दी वाला महंत 25 वर्ष 20 दिन तक गद्दी पर रहता है। फिर दूसरे को उत्तराधिकारी बना कर शरीर त्याग जाता है। न अधिक समय, न कम समय अपितु पूरे 25 वर्ष 20 दिन ही रहता है, यह गलत सिद्ध हुआ।*

*शंकाः- अनुराग सागर पृष्ठ नं. 120 से 123 तक बारह दूतों का वर्णन किया है। जिसमें लिखा है कि आठवां दूत जो पंथ चलाएगा वह कुछ कुरान तथा कुछ वेद चुरा कर कुछ कबीर जी का केवल निर्गुण ज्ञान लेकर अपना ज्ञान प्रचार करेगा तथा एक तारतम्य पुस्तक लिखेगा। आप भी वेद व कुरान आदि का वर्णन करके पुस्तक लिख रहे हो। आपका मार्ग कबीर मार्ग ही है क्या प्रमाण है?*

*समाधानः- यहाँ पर बारह काल पंथों का विवरण है जो दामा खेड़ा वालों के द्वारा मिलावट करके लिखा गया है।*

*(1.) क्योंकि कबीर बानी (बोध सागर) पृष्ठ नं. 134 से 138 तथा कबीर चरित्र बोध पृष्ठ नं. 1870 पर लिखे बारह पंथों के विवरण से नहीं मिलती।*

*(2.) यह विवरण आठवें पंथ के प्रवर्तक का है। उसके बाद राम कबीर पंथ, सतनामी पंथ आदि सर्व बारह पंथ चल चुके हैं।*

*अब इस दास (रामपाल दास) द्वारा तेरहवां वास्तविक मार्ग चलाया जा रहा है। जिससे सर्व पंथ मिट कर एक पंथ ही रह जाएगा। जिसका प्रमाण आप पूर्व लिखे विवरण में पढ़ चुके हैं। जो स्वयं कबीर परमेश्वर जी की आज्ञा व कृपा से चल रहा है। यह दास (रामपाल दास) वेदों तथा कुरान व कबीर वाणी आदि को चुरा कर पुस्तक नहीं लिख रहा है अपितु परमेश्वर कबीर साहेब जी की वाणी के आधार से प्रचार किया जा रहा है तथा परमेश्वर की कर्विवाणी (कबीर वाणी) की सत्यता के लिए वेदों तथा कुरान आदि का समर्थन लिया जा रहा है। वाणी चुराने का अर्थ होता है कि वास्तविक ज्ञान को छुपाने के लिए सतग्रन्थों के ज्ञान को मरोड़-तरोड़ कर अपने लोक वेद (दंत कथा) को उजागर करना परन्तु यह दास तो परमेश्वर कबीर जी की वाणी को ही आधार मान कर यथार्थ ज्ञान के आधार से मार्ग दर्शन कर रहा है।*

*इसलिए हमारा मार्ग कबीर मार्ग (पंथ) है। शेष पंथों की साधना शास्त्र विरूद्ध है मनमाना आचरण (पूजा) है जो मोक्षदायक नहीं है। कबीर सागर- ''अमर मूल''*

***पृष्ठ 196 पर साखी लिखी है :***

**साखीः-** नाम भेद जो जान ही, सोई वंश हमार।
नातर दुनियाँ बहुत ही, बूड़ मुआ संसार।।

***पृष्ठ 205 पर लिखा हैः-*** नाम जाने सो वंश तुम्हारा, बिना नाम बुड़ा संसारा।

***पृष्ठ 207 पर लिखा हैः-*** सोई वंश सत शब्द समाना, शब्द हि हेत कथा निज ज्ञाना।

***पृष्ठ 217 पर लिखा हैः-*** बिना नाम मिटे नहीं संशा, नाम जाने सो हमारे वंशा।
नाम जाने सो वंश कहावै, नाम बिना मुक्ति न पावै।
नाम जाने सो वंश हमारा, बिना नाम बुड़ा संसारा।

***पृष्ठ 244 पर लिखा हैः-*** बिन्द के बालक रहें उरझाई, मान गुमान और प्रभुताई।
साखीः— हमरे बालक नाम के, और सकल सब झूठ।
सत्य शब्द कह जानही, काल गह नहीं खूंठ।।
वंश हमारा शब्द निज जाना, बिना नाम नहिं वंशहि माना।।
धर्मदास निर्मोहि हिय गहेहू। वंश की चिन्ता छाड़ तुम देहू।

***अनुराग सागर पृष्ठ 138 से 141 तक का भावार्थ है किः- तेरे वंश में बिन्द (सन्तान) तो अभिमानी होगें तथा साथ ही अहंकार वश झगड़ा करेगें तथा कहेगें कि हम तो धर्मदास के वंश (सन्तान) से हैं। हम श्रेष्ठ है।***

***कबीर साहेब ने कहा कि यदि तेरे वंश वाले मेरे वचन अनुसार चलेगें तो उन्हे भी पार कर दूंगा अन्यथा नहीं।***

***पृष्ठ नं. 139 से :-***वचन गहे सो वंश हमारा, बिना वचन (नाम) नहीं उतरे पारा।
धर्मदास तब बंस तुम्हारा, वचन बंस रोके बटपारा।।
शब्द की चास नाद कह होई, बिन्द तुम्हारा जाय बिगोई।
बिन्द ते होय ना नाद उजागर। परखि के देखहु धर्मनिनागर।।
चारहु युग देखहु समवादा, पन्थ उजागर किन्हों नादा।
और वंस जो नाद सम्हारै, आप तरें और जीवहीं तारे।
कहां नाद और बिन्द रै भाई। नाम भक्ति बिनु लोक ना जाई।।

***उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा तेरे बिन्द वाले अर्थात् शरीर से उत्पन्न सन्तान महंत परम्परा तो अभिमानी हो जाऐगें। वे तो सीधे नरक के भागी होगें। केवल नाद (शिष्य परम्परा) से ही तेरा पंथ चल सकेगा यदि वास्तविक नाम चलता रहेगा तो अन्यथा तेरे दोनों ही नाद (शिष्य) बिन्द (शरीर की संतान) भक्तिहीन हो जाएगें। केवल तेरा वंश फिर भी चलेगा।***

***धर्मदास आप की दोनों परम्परा (नाद व बिन्द) से अन्य कोई मेरे वचन अर्थात् नाद (शिष्य परम्परा) के अनुयायी होगें उनसे वास्तविक नाम से मेरा पंथ उजागर (प्रसिद्ध) होगा। कबीर साहेब कह रहे हैं कि धर्मदास किसी युग में देख ले केवल नाद (वचन) अर्थात् शिष्य परम्परा से ही जीव कल्याण हुआ है तथा बिन्द (शरीर)***

*की सन्तान अर्थात् महंत परम्परा से कोई सत्य मार्ग नहीं चलता, वे तो अभिमानी होते हैं।*

*उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि दामाखेड़ा वाली गद्दी वाले महंत जी मनघड़ंत कहानी बना कर श्रद्धालुओं को गुमराह कर रहे हैं। जो वास्तविक सतनाम(जो दो मंत्र का है जिससे एक ओ३म् तथा दूसरा सांकेतिक तत् मन्त्र है) यह दास दान करता है। उसका प्रमाण आदरणीय धर्मदास साहेब जी की वाणी जो कबीर सागर तथा कबीर पंथी शब्दावली में तथा आदरणीय गरीबदास साहेब जी की वाणी में तथा आदरणीय दादू साहेब जी की वाणी में तथा आदरणीय घीसा दास साहेब की वाणी में तथा परमेश्वर कबीर साहेब जी की वाणी में प्रमाण है। परंतु वर्तमान के सर्व कबीर पंथी तथा उपरोक्त अन्य संतों के पंथी सतनाम से अपरीचित हैं तथा मनमाने नाम जाप दान कर रहे हैं।*

*प्रश्न : एक भक्त कह रहा था कि सातवीं पीढ़ी के बाद सुधार कर लिया था?*

*उत्तर : यदि सुधार कर लिया होता तो उनके पास सतनाम मंत्र होता। यह भी किसी काल के दूत की ही सोच है। यदि अब कोई मुझ दास से नाम प्राप्त करके ढोंग रचे कि मेरे पास भी वही मंत्र हैं तो वह अनअधिकारी होने के कारण व्यर्थ है।*

*प्रश्न : आप तीन बार नाम देते हो तथा फिर सारशब्द भी प्रदान करके चौथा पद प्राप्त कराते हो। परंतु दामा खेड़ा वाले तथा अन्य कबीर पंथी महंत, संत तो नाम एक ही बार देते हैं। कौन सा सत है ? इसकी परख कैसे हो ?*

*उत्तर : कबीर सागर में अमर मूल बोध सागर पृष्ठ 265 -*

तब कबीर अस कहेवे लीन्हा, ज्ञानभेद सकल कह दीन्हा।।
धर्मदास मैं कहो बिचारी, जिहिते निबहै सब संसारी।।
प्रथमहि शिष्य होय जो आई, ता कहैं पान देहु तुम भाई।।1।।
जब देखहु तुम दृढ़ता ज्ञाना, ता कहैं कहु शब्द प्रवाना।।2।।
शब्द मांहि जब निश्चय आवै, ता कहैं ज्ञान अगाध सुनावै।।3।।

*दोबारा फिर समझाया है -*

बालक सम जाकर है ज्ञाना। तासों कहहू वचन प्रवाना।।1।।
जा कहैं सूक्ष्म ज्ञान है भाई। ता कहें स्मरन देहु लखाई।।2।।
ज्ञान गम्य जा कहैं पुनि होई। सार शब्द जा कहैं कह सोई।।3।।
जा कहैं दिव्य ज्ञान परवेशा, ताकहैं तत्व ज्ञान उपदेशा।।4।।

*उपरोक्त वाणी से स्पष्ट है कि कड़िहार गुरु तीन स्थिति में सार नाम तक प्रदान करता है तथा चौथी स्थिति में सार शब्द प्रदान करना होता है। धर्मदास जी के माध्यम से इस दास को संकेत है। क्योंकि कबीर सागर में तो प्रमाण बाद में देखा था परंतु उपदेश विधि पहले ही पूज्य गुरुदेव तथा परमेश्वर कबीर साहेब जी ने मुझ दास को प्रदान कर दी थी।*

*धर्मदास जी को तो परमश्वेर कबीर साहेब जी ने सार शब्द देने से मना कर दिया था तथा कहा था कि यदि सार शब्द किसी काल के दूत के हाथ पड़ गया*

*तो बिचली पीढ़ी वाले हंस पार नहीं हो पाऐंगे। जैसे कलयुग के प्रारम्भ में प्रथम पीढ़ी वाले भक्त अशिक्षित थे तथा कलयुग के अंत में अंतिम पीढ़ी वाले भक्त कृतघनी हो जाऐंगे तथा अब वर्तमान में सन् 1947 से भारत स्वतंत्र होने के पश्चात् बिचली पीढ़ी प्रारम्भ हुई है। सन् 1951 में मुझ दास को भेजा है। अब सर्व भक्तजन शिक्षित हैं। शास्त्र अपने पास विद्यमान हैं। अब यह सत मार्ग सत साधना पूरे संसार में फैलेगा तथा नकली गुरु तथा संत, महंत छुपते फिरेंगे।*

*इसलिए कबीर सागर, जीव धर्म बोध, बोध सागर, पृष्ठ 1937 पर :-*

धर्मदास तोहि लाख दुहाई, सार शब्द कहीं बाहर नहीं जाई।
सार शब्द बाहर जो परि है, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तरि है।

*पुस्तक "धनी धर्मदास जीवन दर्शन एवं वंश परिचय" के पृष्ठ 46 पर लिखा है कि ग्यारहवीं पीढ़ी को गद्दी नहीं मिली। जिस महंत जी का नाम "धीरज नाम साहब" कवर्धा में रहता था। उसके बाद बारहवां महंत उग्र नाम साहेब ने दामाखेड़ा में गद्दी की स्थापना की तथा स्वयं ही महंत बन बैठा। इससे पहले दामाखेड़ा में गद्दी नहीं थी।*

*इससे स्पष्ट है कि पूरे विश्व में मुझ दास के अतिरिक्त वास्तविक भक्ति मार्ग नहीं है। सर्व प्रभु प्रेमी श्रद्धालुओं से प्रार्थना है कि प्रभु का भेजा हुआ दास जान कर अपना कल्याण करवाऐं।*

यह संसार समझदा नाहीं, कहन्दा श्याम दोपहरे नूं।
गरीबदास यह वक्त जात है, रोवोगे इस पहरे नूं।।

*संत रामपाल दास*
*सतलोक आश्रम करौंथा,*
*जिला रोहतक(हरियाणा)।*

## "प्रभु प्रेमी पाठकों की शंकाओं का समाधान - रामपाल दास"

*परमेश्वर के तत्वज्ञान सम्बन्धित लेखों को विज्ञापन के माध्यम से समाचार पत्रों में पढ़कर 99.99 प्रतिशत पाठक श्रद्धालुओं के प्रशंसा युक्त पत्र सतलोक आश्रम करौंथा में प्राप्त हुए। जिन्होंने लगभग सर्व लेख पढ़े हैं। एक आध श्रद्धालु ने केवल एक ही विज्ञापन पढ़ा, उसी के आधार पर नाराज होकर बिना पते का पत्र डाल दिया तथा एक पाठक ने 9 जुलाई 2005 के दैनिक भास्कर पृष्ठ 6 पर एक कोने में शंका व्यक्त की है। उन श्रद्धालुओं से प्रार्थना है कि पूर्ण जानकारी के लिए वे दो पुस्तकें (1. गहरी नजर गीता में 2. परमेश्वर का सार संदेश) सतलोक आश्रम करौंथा से मुफ्त प्राप्त करें। दूरभाष (9812026821, 9812142324) द्वारा अपना पता लिखवायें, पुस्तकें आपके पास पहुँच जाएंगी। केवल डाकखर्च आपको देना होगा।*

*शंका - (क) किसी की निंदा नहीं करनी चाहिए। जो संत जैसा मार्ग दर्शन करता है करता रहे।*

*उत्तर - मुझ दास का उद्देश्य है कि सर्व भक्त समाज को तत्वज्ञान कराऊँ। जिस भी शास्त्र पर जो भक्त वृंदआधारित है उसी की वास्तविकता आप के समक्ष रखूं, तभी उन अधूरे शास्त्रों को त्यागने तथा सत भक्ति करने की तड़फ जाग्रत होगी। जैसे पेंटर (रंग करने वाला) जंग हटाने के लिए रेगमार लगाता है, फिर पेंट सही पकड़ करता है। इसी प्रकार शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) करने वाले श्रद्धालुओं पर जंग लगा है, जिसे छुड़ाने के लिए शास्त्रों का तत्वज्ञान रूपी रेगमार लगाना अति आवश्यक है, यह निंदा नहीं है।*

*असली वस्तु का बोध कराने के लिए नकली वस्तु को साथ दिखाना आवश्यक होता है। जैसे सरकार ने 500 रूपये के नकली नोट पकड़े थे। जनता को धोखे से बचाने के लिए नकली तथा असली दोनों नोट समाचार पत्रों तथा टी.वी. के माध्यम से दिखाए थे। सरकार ने निंदा नहीं, परोपकार किया था, जो अति आवश्यक था। सरकार के उपरोक्त प्रयत्न को तीन प्रकार के व्यक्ति निंदा कह सकते हैं, एक तो जिसने नशा कर रखा हो, दूसरा अबोध बालक तथा तीसरा उसी गिरोह का व्यक्ति जो नकली नोट छापते थे।*

*सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र शास्त्र वास्तविक (असली) नोट हैं। परन्तु उन्हीं की आड़ में वर्तमान के मार्गदर्शकों ने जो साधना की विधि बताई है, दास ने तो उसकी तुलना असली शास्त्रों से की है। जैसे किसी अध्यापक ने गणित का प्रश्न ठीक हल नहीं किया है उसी पर सर्व कक्षा के विद्यार्थी आश्रित हैं। दूसरा अध्यापक उसे ठीक कराए और विद्यार्थी कहें की अध्यापक जी तो पूर्व अध्यापक की निंदा कर रहा है, तो वह उन विद्यार्थियों की बाल बुद्धि ही है। मूल व्याख्या फिर पढ़ें। किसी अन्य अध्यापक से भी जानकारी लें। पूर्ण निश्चय करके परीक्षा की तैयारी करना ही उचित है।*

*अपने शास्त्र (सद्ग्रन्थ) सत हैं, जिनमें मूल व्याख्या है। उन्हें पुनर् पढ़कर निर्णय लेना ही हितकर है। मूल शास्त्र हैं - 1. पवित्र चारों वेद, 2. पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी, अठारह पुराण, श्रीमद्भागवत सुधासागर जो पवित्र हिन्दु समाज के शास्त्र माने जाते हैं। वास्तव में उपरोक्त शास्त्र महर्षि व्यास जी द्वारा उस समय लिपिबद्ध किए गए थे जब कोई अन्य धर्म(हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि) नहीं था। केवल वेदों के अनुसार साधना सर्व भक्त समाज किया करता था, ऋषिजन एक ही प्रकार की साधना श्रद्धालुओं को बताते थे। परन्तु वर्तमान के मार्गदर्शक शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) कर तथा करवा रहे हैं जो हानिकारक है। प्रमाण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि अर्जुन ! जो साधक शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) करता है उसे न तो कोई सुख होता है, न परमगति, न ही कोई कार्य ही सिद्ध होता है। इसलिए भगवत भक्ति के करने तथा न करने योग्य कर्मों (साधनाओं) के निर्णय के लिए शास्त्र ही प्रमाण हैं(श्रीमद्भगवत गीता जी का ज्ञान बोला जा रहा था, अतः चारों वेदों की तरफ संकेत है)।*

*पवित्र गीता जी चारों पवित्र वेदों का ही सारांश है, जो भक्ति के लिए प्रभु का संविधान है। संविधान की अवहेलना करने वाला दोषी होता है। पवित्र गीता जी तथा पवित्र चारों वेदों का ज्ञान ब्रह्म (ज्योति निरंजन-काल) द्वारा ही दिया गया है। जिसमें ब्रह्म(क्षर पुरुष), परब्रह्म(अक्षर पुरुष) तथा पूर्णब्रह्म(परम अक्षर पुरुष) के विषय में विवरण है। प्रमाण : पवित्र श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में, पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 17, पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 90 मंत्र 1 से 5 आदि-आदि।*

*उपरोक्त शास्त्रों में पूजा की विधि केवल ब्रह्म तक की ही वर्णित है। पूर्णब्रह्म की पूजा की विधि के विषय में पवित्र गीता तथा पवित्र वेदों का ज्ञान दाता ब्रह्म(ज्योति निरंजन-काल) ने कहा है कि उस पूर्ण परमात्मा के विषय में मुझे ज्ञान नहीं है। उसके लिए किसी तत्वज्ञान युक्त तत्वदर्शी संतों की खोज कर, फिर जैसे वे तत्वदर्शी संत बताऐं वैसे साधना उस परमात्मा की करना। प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 4 श्लोक 34, यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 10 ।*

*अपनी साधना के विषय में पवित्र श्रीमद्भगवत गीता के ज्ञान दाता ब्रह्म ने अध्याय 8 मंत्र 13 में कहा है -*

*ओम् इति एकाक्षरम्, ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन्, यः प्रयाति त्यजन् देहम्, सः याति परमाम् गतिम्।।13।।*

*इसका शब्दार्थ है कि गीता बोलने वाला ब्रह्म अर्थात् काल कह रहा है कि (माम् ब्रह्म) मुझ ब्रह्म का तो (इति) यह (ओम् एकाक्षरम्) ओम् एक अक्षर है (व्याहरन्) उच्चारण करके (अनुस्मरन्) स्मरण करने का (यः) जो साधक (त्यजन् देहम्) शरीर त्यागने तक अर्थात् अन्तिम स्वांस तक (प्रयाति) स्मरण साधना करता है (सः) वह साधक ही मेरे वाली (परमाम् गतिम्) परमगति को (याति) प्राप्त होता है। भावार्थ है कि श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके ब्रह्म अर्थात् हजार भुजा वाला ज्योति निरंजन काल कह रहा है कि मुझ ब्रह्म की साधना केवल एक ओम् (ॐ) नाम से मृत्यु पर्यन्त करने वाले साधक को मुझसे मिलने वाला लाभ प्राप्त होता है। अन्य कोई मंत्र मेरी भक्ति का नहीं है तथा अपनी गति को भी गीता अध्याय 7 मंत्र 18 में अनुत्तमाम् अर्थात् अति घटिया बताया है। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि अर्जुन सर्व भाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, तब तू पूर्ण मुक्त होकर परम शान्ति को तथा सतलोक अर्थात् सनातन धाम को प्राप्त होगा। यदि मेरी शरण में रहेगा तो युद्ध भी कर तथा मेरा स्मरण भी कर (गीता अध्याय 8 श्लोक 7)। परन्तु तू तथा मैं (गीता ज्ञान दाता प्रभु) दोनों ही नाशवान हैं अर्थात् तेरे तथा मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, आगे भी होते रहेंगे (गीता अध्याय 4 श्लोक 5 तथा गीता अध्याय 2 श्लोक 12 व 17)। उस परमेश्वर के ज्ञान व भक्ति विधि के लिए किसी तत्वदर्शी संत की खोज करने को कहा है(गीता अध्याय 4 श्लोक 34)। अब सर्व से प्रार्थना है कि उस परमेश्वर पूर्णब्रह्म का ज्ञान मुझ दास के पास है, निःशुल्क प्राप्त करें।*

*यही प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 15 व 17 में भी है। उपरोक्त सद्ग्रन्थों अर्थात् प्रभु भक्ति के संविधान ने सिद्ध कर दिया कि एक ओ३म् नाम को छोड़ कर अन्य जो भी नाम हैं वे शास्त्र विधि (प्रभु भक्ति के संविधान) के विरूद्ध मनमाना आचरण (पूजा) हैं जो हानिकारक है। इसलिए ओम नमो शिवाय, ओम नमो भगवते वासुदेवाय, हरिओम आदि भी मंत्र शास्त्र विधि अनुसार नहीं हैं। जैसे मोटर साईकिल के पिस्टन से कोई अन्य नट आदि वैल्ड कर देना हानिकारक है, ऐसे ही ओम नाम के साथ अन्य कोई वाक्य या अक्षर लगाना शास्त्र विधि रहित है। इसलिए ब्रह्म तक की साधना केवल एक 'ओ३म्' नाम के जाप से ही सफल होती है।*

*शंका - (ख) महर्षि बाल्मीक जी मरा-मरा जाप करके तिर गए।*

*उत्तर - यदि मरा-मरा नाम जाप करने से ही साधक पार हो जाए तो उपरोक्त पवित्र शास्त्रों का ज्ञान प्रभु नहीं देता। महर्षि वाल्मिक जी के उद्धार के विषय में आप ने दंत कथा सुनी है, जिस कारण ऐसी शंका उत्पन्न हुई है। इसीलिए तत्वज्ञान की आवश्यकता भक्त समाज को है, जिसके लिए मुझ दास द्वारा लिखी उपरोक्त पुस्तकें निःशुल्क केवल डाकखर्च पर प्राप्त करके पढ़ें।*

*महर्षि वाल्मिक जी को सप्त ऋषि मिले थे। ऋषि लोग केवल वेदों अनुसार एक 'ओम' मंत्र ही उच्चारण करके जाप का साधक को बताते थे। जिसे महर्षि वाल्मिक जी ने सर्व विकार त्याग कर संसार से उल्ट कर अनन्य मन से जाप किया। यह ओम नाम उच्चारण (बोल-बोल) के करने से ही ब्रह्म साधना की सफलता कही है। इसलिए श्री वाल्मिक जी ने ओम-ओम का उच्चारण करके जाप किया। जो अन्य श्रोता को ओम-ओम-ओम के स्थान पर मओ-मओ-मओ सुनता है। परन्तु साधक उसे हृदय से विधिवत् 'ओम' ही उच्चारण करता है।*

*महर्षि वाल्मिक जी के विषय में -* 'उलटा नाम जपा जग जाना, वाल्मिक भए ब्रह्म समाना'

*भावार्थ - महर्षि वाल्मिक जी ने संसार को असार जान कर संसार से विरक्त (उलट कर) होकर केवल नाम जाप किया, जिससे ईश्वरीय गुणों से युक्त हो गए। दंत कथाओं के आधार पर मरा-मरा शब्द राम का उलटा कहा है, परन्तु 'राम' नाम के जाप का किसी शास्त्र में प्रमाण नहीं है। शंका उत्पन्न होती है कि फिर यह प्रचलित कैसे हुआ ? इस विषय में वास्तविकता है कि ऋषिजन 'ओम' नाम अपने शिष्य को जाप के लिए कहते हैं। केवल अधिकारी व्यक्ति (संत-गुरु) ही नाम दान कर सकता है, अन्य नहीं। गुरु जी सर्व अनुयाईयों को कहता है कि मंत्र का जाप काम करते-करते करो अर्थात् सांसारिक कार्यों के कारण भूल न पड़े। इसलिए सर्व साधकों को आदेश ऋषि करता था कि एक-दूसरे को नाम साधना की याद दिलाते रहना, कहीं भूल न पड़ जाए। परन्तु यह नहीं कहना कि 'ओम' नाम जाप करो। क्योंकि ऐसा कहने से आप का आदेश हो जाएगा। आप अधिकारी नहीं हो इसलिए दोषी हो जाओगे, आपका नाम खण्ड हो जायेगा। गुरु जी (ऋषि जी) कहते थे कि आप एक दूसरे से कहना राम-राम, जिससे सामने वाला उपदेशी सावधान हो जाएगा। वह यदि सांसारिक उलझन में नाम जाप नहीं कर रहा होगा तो करने लग जाएगा या कर रहा होगा तो*

*अच्छी बात है। इसलिए एक साधक जब रास्ते में या कहीं और साधक से मिलता है तो कहता है कि राम-राम, जिसका भावार्थ है कि प्रभु (राम) की याद न भूलना, राम ही सब कुछ है। राम (प्रभु) की ही भक्ति सत है, शेष असत है। इसके उत्तर में दूसरा साधक कहता है वास्तव में यही है। इसलिए कहता है राम-राम अर्थात् कोई संशय नहीं है कि प्रभु भक्ति ही सर्व सुखदायक है। यदि सामने वाला 'ओम' मंत्र का जाप कर रहा होता है तो भी मन-मन में कहता है राम-राम अर्थात् साधना कर रहा हूँ, भूल नहीं पड़ी है। यदि विचारों में उलझ कर नाम जाप भूल रहा होता है तो भी कहता है राम-राम अर्थात् भूल पड़ गई थी, अब फिर शुरु करता हूँ। इस प्रकार यह राम-राम शब्द प्रचलित हो गया। रामनाम के जाप को जपने के लिए वर्तमान के गुरु भी कहते हैं। उस विषय में वास्तविकता है कि कुछ एक पुण्यकर्मी प्राणी में पूर्व शास्त्र विधि अनुसार साधना की कमाई के कारण कुछ सिद्धि शेष रह जाती है, जिस कारण से कुछ चमत्कार हो जाते हैं। फिर बहुत से उसके अनुयाई बन जाते हैं। फिर उससे प्रभु भक्ति की विधि भी श्रद्धालु जानना चाहते हैं। वह पूर्व सिद्धि युक्त कथित ऋषि सुने-सुनाए ज्ञान (दंत कथा) के आधार से कह देता है राम-राम जाप करो। जिसे अनुयाई भक्ति मार्ग जान कर करते रहते हैं, परन्तु शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण होने से हानिकारक है, प्रमाण गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24 ।*

*इसी प्रकार जो पुण्यकर्मी प्राणी शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) करते-करते शरीर त्याग जाते हैं वे पितर बन जाते हैं। फिर उसके अनुयाई ध्यान लगाते हैं, तो वही भूत(प्रेत) अंदर से आवाज देने लगता है, राम-राम रा......म। जिसे परमात्मा की आकाशवाणी जानकर श्रद्धालु उसी 'राम' नाम पर दृढ़ता से लग जाते थे तथा अनुयाईयों को भी 'राम' नाम दान करने लगे तथा कहते थे कि यह प्रभु का दिया मंत्र है।*

*विचारणीय विषय है कि 'राम' नाम के जाप करने वाला गुरु जी चमत्कार दिखाता था। परन्तु शिष्य बीस वर्ष की साधना के पश्चात् भी कुछ नहीं दिखा पाया। इससे सिद्ध हुआ कि जो पूर्व भक्ति संस्कार से सिद्धि युक्त प्राणी की बैट्री पहले जन्म के चार्जर अर्थात् शास्त्र अनुकूल साधना से चार्ज थी। परन्तु इस जन्म में शास्त्र विधि रहित साधना करके स्वयं भी खाली हो कर गया तथा अनेकों अनुयाईयों को भी गलत मार्ग दर्शन करके दोषी हो गया। श्री रामचन्द्र जी ने भक्तमति शबरी(भिलनी) को नवधा भक्ति के विषय में बताते हुए कहा - (श्री तुलसीदास कृत रामायण)*

'मंत्र जप मम दृढ़ विश्वासा, पंचम भजन जो वेद प्रकाशा' ।

*भावार्थ है कि श्री रामचन्द्र जी गुरु रूप से अपनी शिष्या भक्तमति शबरी को पाँचवी विधि में कह रहे हैं कि मैं जो ज्ञान बता रहा हूँ इस मेरे ज्ञान पर दृढ़ विश्वास कर तथा मंत्र जाप (भजन) भी उसी मंत्र का करो जो वेद में वर्णित है अर्थात् ओ३म् नाम। इसी विषय में कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने कहा है -*

*कबीर, राम नाम जो जाप करत हैं, जान मुक्ति को काम। श्री राम ने वशिष्ठ गुरु किया, जिन्ह दीन्हा ओम् नाम।।*

*भावार्थ - जो साधक राम-राम नाम जाप मुक्ति का जान कर जाप करते हैं वे कृपया विचार करें, जब श्री राम ने वशिष्ठ मुनि से आत्मकल्याण के लिए दीक्षा ली तब श्री वशिष्ठ ऋषि ने श्रीराम को भी 'ओ३म्' नाम ही जपने को कहा था। इसी आधार से श्री रामचन्द्र जी ने अपनी शिष्या भक्तमति शबरी को भी कहा है कि वेद ज्ञान अनुसार नाम जाप का मंत्र (ओम्) ही जाप (भजन) के लिए उत्तम है, क्योंकि यह मंत्र वेद में वर्णित है, अन्य कोई नाम ब्रह्म साधना का नहीं है।*

*इसलिए दास की प्रार्थना है कि आज सर्व समाज शिक्षित है, अपने-अपने सद्ग्रन्थों को कृपया पुनर् पढ़ें।*

*जैसे मुझ दास के अनुयाई 'सत साहेब' कहते हैं, जिसका भावार्थ है कि साहेब=प्रभु, सत= अविनाशी अर्थात् परमात्मा ही सत है, अन्य कोई वस्तु अपनी नहीं है। इसलिए गुरु मंत्र (जो अन्य जाप मंत्र होता है) जाप करते रहो। इसी को एक-दूसरा भक्त आपस में उच्चारण करता है, जिससे वास्तविक मंत्र जाप की भूल न पड़ जाए। अब वर्तमान में कई नकली गुरु जी 'सत साहेब' नाम जाप करने को ही बताने लग गए हैं। कई 'सतनाम' जाप करने को कहते हैं। जबकि सतनाम तो सच्चे मंत्र की तरफ संकेत है। जैसे कोई कहे 'दवाई खाले', उस दवाई का नाम कुछ और होता है। इसी प्रकार दास की प्रार्थना है कि तत्वज्ञान को समझें।*

*शंका - (ग) किसी की भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचानी चाहिए।*

*उत्तर - यदि कोई अबोध बच्चा बिजली के नंगे तार को पकड़ने जा रहा हो, जिसमें से प्रकाश की आतिशबाजी सी चल रही हो (स्पार्किंग के कारण चमक निकल रही हो)। बच्चा उसे अच्छी वस्तु जानकर भावनावश पकड़ना चाहता है। यदि बड़ा व्यक्ति देख ले तो दौड़ कर बच्चे को उठाएगा या उस बिजली की तार को उस बच्चे की पहुंच से दूर कर देगा। भले ही बच्चे की भावना को ठेस लगने के कारण बच्चा रोता रहे, परन्तु उस समय उसकी भावना को ठेस लगाना अति आवश्यक है।*

*ठीक यही प्रयत्न मुझ दास का है कि अपने सर्व शास्त्र आज भी साक्षी हैं। परन्तु शास्त्र विधि त्यागकर मनमाना आचरण (पूजा) करके साधक अनमोल मनुष्य जीवन को नष्ट कर रहा है। शास्त्र अनुकूल साधना का ज्ञान कराना अति आवश्यक है। भले ही प्रथम बार किसी को कष्ट भी हो, परन्तु उद्देश्य गलत नहीं है।*

*शंका - (घ) किसी रेखा को काटने की बजाए नई लगाना ही ठीक है।*

*उत्तर - पुरानी रेखा के साथ ही तो नई रेखा लगाई जाती है। ठीक इसी प्रकार वर्तमान संतों की साधना को लिख कर फिर शास्त्र अनुकूल साधना से ही तुलना की जा रही है।*

*शंका - (ड़) समाज सुधारकों के विरुद्ध मोर्चा खोल देना कहाँ तक न्याय संगत है ?*

*उत्तर - जिन समाज सुधारकों ने अपने विचारों से रची पुस्तकों में समाज बिगाड़ का विवरण लिखा है, उसे पढ़कर या लिख कर दिखाना न्याय संगत ही है। जैसे एक समाज सुधारक महर्षि दयानन्द जी द्वारा रची 'सतार्थ प्रकाश' नामक पुस्तक*

*समुल्लास 4 में लिखा है कि -*

*1. जिस कुल में किसी के बवासीर, मिर्गी, अक्षय, दमा, खांसी आदि रोग हैं, तथा किसी के शरीर पर बड़े-बड़े बाल हैं उस पूरे कुल की लड़की व लड़के से विवाह नहीं करना चाहिए।*

*2. पिता का एक गोत्र तथा माता की छः पीढ़ियों के गोत्र छोड़ कर विवाह करना उत्तम है।*

*3. जिस लड़की का नाम गंगा, जमुना, सरस्वती आदि नदियों पर है तथा काली नाम तथा भूरे नेत्र वाली हों उससे विवाह न करना चाहिए।*

*4. तथा 24 वर्ष की स्त्री से 48 वर्ष के पुरुष का विवाह उत्तम है। महर्षि दयानन्द जी का भावार्थ है कि 24 वर्ष की स्त्री तथा 48 वर्ष के पुरुष का विवाह होना चाहिए। यदि उपरोक्त नियमों के अनुसार विवाह नहीं किया जाता वह देश खुशहाल नहीं हो सकता। (पृष्ठ 70-71)*

*5. शुद्र के अतिरिक्त अन्य तीन वर्णों में जिसकी पत्नी की मृत्यु हो जाए उस पुरुष तथा विधवा का पुनर् विवाह नहीं होना चाहिए। वे केवल नियोग कर सकते हैं। उनके लिए कहा कि वंश चलाने के लिए किसी अपने कुल का लड़का गोद लेकर वंश चलाऐं या नियोग करें।*

*पुनर्विवाह तथा नियोग की भिन्नता बताते हुए सतार्थ प्रकाश समुल्लास 4 में लिखा है कि विवाह में तो पति-पत्नी सदा इकट्ठे रहते हैं तथा दोनों मिल कर बच्चों का पालन करते हैं। आपस में झगड़ा भी करते रहते हैं।*

*परन्तु नियोग में स्त्री पुरुष केवल मिलन समय मिलते हैं, फिर अपने-अपने घर में अलग-अलग रहते हैं। जो संतान उत्पन्न होती है वह न तो वीर्यदाता का पुत्र कहलाता है तथा गोत्र भी वीर्यदाता वाला नहीं होता, मृत पति वाला ही माना जायेगा। बच्चों की परवरिश अकेली स्त्री ही करती है। महर्षि दयानन्द जी का कहने का भावार्थ है कि विधवा का पुनर् विवाह ठीक नहीं, नियोग (पशु तुल्य कर्म) ग्यारह व्यक्तियों तक करना दोष नहीं है। (पृष्ठ 96-97)*

*<u>विचार करें</u> - यह नियोग तो पशुओं तुल्य हुआ जैसे नर पशु मादा पशु से नियोग करके चला जाता है, फिर कुतियां बच्चों के समूह को लिए फिरती है।*

*एक विधवा स्त्री ग्यारह व्यक्तियों तक नियोग (पशु तुल्य घिनौंना कर्म) कर सकती है। इसी प्रकार पुरुष भी ग्यारह स्त्री तक नियोग कर सकता है। यह भी लिखा दिखाया कि पुनर्विवाह करने से तो स्त्री का पतिव्रत्य अर्थात् पतिव्रता धर्म नष्ट हो जाता है, परन्तु नियोग जैसे पशु तुल्य कर्म से चाहे ग्यारह पुरुष संभोग करलें उनसे पतिव्रता धर्म नष्ट नहीं होता, (यह महर्षि द्वारा सतार्थ प्रकाश समुल्लास 4 पृष्ठ 96 से 102 तक लिखा है।)*

*सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास 4 पृष्ठ 102 पर यह भी लिखा है कि जिस स्त्री का पति जीवित है वह दूर देश में रोजगार के लिए गया हो तो उसकी स्त्री तीन वर्ष तक बाट देखकर किसी अन्य पुरुष से संतान उत्पत्ति नियोग कुकर्म से करले,*

*जब पति घर आवे तो नियोग किए पति को त्याग दे। जो गैर पुरुष से संतान उत्पन्न की है, वह विवाहित पति की ही मानी जायेगी।*

*सत्यार्थ प्रकाश में समाज सुधार की कलम तोड़ व्याख्या एक और देखने को मिली कि जिस पुरुष की पत्नी अप्रिय बोलने वाली हो तो उस पुरुष को चाहिए कि किसी अन्य स्त्री से केवल नियोग करके संतान उत्पत्ति करले तथा रहे अपनी पत्नी के साथ ही। इसी प्रकार जो पुरुष अत्यन्त दुःखदायक हो तो उसकी स्त्री भी दूसरे पुरुष से नियोग से संतान उत्पत्ति करके उसी विवाहित पति के दायभागी संतान कर लेवे।*

*भावार्थ है कि स्त्री किसी परपुरुष के पास जाकर कुकर्म करके संतान उत्पन्न करके अपने पति के घर में ही रहे तथा जो गैर संतान उत्पन्न हो वह विवाहित पति की सम्पति की हिस्सेदार (वारिस) होगी। यह लिखा है कि नियोगी पुरुष का गोत्र नहीं माना जाएगा, उस गैर संतान का गोत्र भी विवाहित पति वाला ही माना जाएगा। महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि इस प्रकार पूर्वोक्त विवाह नियमों तथा नियोग से अपने-अपने कुल की उन्नति करें। उपरोक्त विचार महर्षि दयानन्द जी के समाज सुधार के विषय में हैं। {विचारणीय बात है कि जिस पति की पत्नी उसकी आँखों के सामने अन्य पुरुष के पास जाए तो क्या वह परिवार उन्नति कर सकता है ? वह तो कुरुक्षेत्र का मैदान हो जायेगा। 24 वर्ष की स्त्री 48 वर्ष के वृद्ध से विवाह करे जो पिता की आयु के समान होता है, क्या कोई यह उपरोक्त नियम पालन करके सुखी हो सकता है अर्थात् नहीं। ऐसे निराधार शास्त्रों की पोल संत ही खोलते हैं, ताकि समाज सावधान होकर सतमार्ग अपनाए।}*

*भक्ति मार्ग के विषय में महर्षि दयानन्द जी के विचार पूर्ण रूप से वेदज्ञान विरुद्ध हैं।*

*1. महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि प्रभु की भक्ति, स्तुति आदि करने से पाप नाश(क्षमा) नहीं होते, अन्य लाभ होता है जैसे उपासना से परब्रह्म से मेल तथा उसका साक्षात्कार होना। फिर अपने ही करकमल से यजुर्वेद अध्याय 8 मंत्र 13 के अनुवाद में लिखा है कि परमात्मा अधर्म के अधर्म अर्थात् घोर पाप को भी नाश (क्षमा) कर देता है। इससे सिद्ध हुआ कि महर्षि दयानन्द जी को वेदज्ञान शुन्य था। वे प्रभु को निराकार कहते हैं तथा दूसरा प्रभु नहीं मानते। फिर स्वयं कह रहे हैं कि पापी आत्मा (जिसका पाप नाश नहीं हुआ वह पापी हुआ) ब्रह्म से भी दूसरे परब्रह्म से साक्षात्कार कर सकती है। साक्षात्कार तो साकार से होता है, निराकार से नहीं। यदि पापी व्यक्ति भी प्रभु प्राप्ति कर सकता है तो प्रभु भक्ति की रूचि ही समाप्त हो जाती है। जैसे दादा से दूसरा दादा (दादा का पिता) परदादा होता है।*

*यदि कोई रोगी वैद्य के पास रोग मुक्त होने के लिए जाए तथा वैद्य कहे कि औषधी से रोग समाप्त तो होगा नहीं, परन्तु पहलवान हो जाएगा। क्या वह व्यक्ति वैद्य हो सकता है ? यदि कोई साबुन विक्रेता कहे कि साबुन कपड़े का मैल तो छुड़वाता नहीं, परन्तु कपड़े को मजबूत कर देता है, क्या वह व्यक्ति साबुन से*

*परिचित है ? वह तो पत्थर के टुकड़े साबुन रूप में विक्रय करने वाला ठग हो सकता है। ऐसी-ऐसी सैकड़ों त्रुटियां सत्यार्थ प्रकाश में हैं जो स्वामी दयानन्द जी द्वारा अपनी समझ से लिखा है, जो वेद ज्ञान के पूर्ण रूप से विपरीत है।*

*उपरोक्त विवरण सत्यार्थ प्रकाश से निष्कर्ष रूप में समुल्लास 4 पृष्ठ 70-71 तथा 96 से 102 पर से लिया गया है। यदि कोई शंका उठे तो कृपया सतलोक आश्रम करौंथा से ''गहरी नजर गीता में'' तथा ''सत्यार्थ प्रकाश'' दोनों पुस्तक मुफ्त प्राप्त करें। केवल फोन करें, पुस्तक आपके पास पहुंच जायेगी, केवल डाकखर्च आप का होगा। दूरभाष है - 9812026821, 9812142324, 9416077897*

*शंका - (च) भगवान शंकर के उपासक रावण को 'कुत्ते की मौत मरा' कहना तो अर्थ हुआ कि शंकर की उपासना व्यर्थ है।*

*उत्तर - दास अपनी तरफ से कुछ नहीं कहता, केवल अपने सद्ग्रन्थ जो कहते हैं वही सर्व के समक्ष रखता हूँ। पवित्र श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 23 तक कृपया स्वयं पढ़ें।*

## ''तीनों गुण क्या हैं ? प्रमाण सहित''

*''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। इसलिए त्रिगुण माया भी इन्हीं को कहा जाता है। ब्रह्म(काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''*

*प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पृष्ठ सं. 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।*

*दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पौद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पृष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव(मृत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सृष्टी-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।*

*उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाश मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42 :-*

ब्रह्मा – अहम् इश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः, के अन्ये सुराः

शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा(42)।

*हिन्दी अनुवाद :- हे मातः ! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकृति तथा सनातनी देवी हो।(42)*

*पृष्ठ 11-12, तीसरा स्कंद अध्याय 5, श्लोक 8 :-* यदि दयार्द्रमना न सदांबिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

*अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के मृत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?*

*श्लोक 12 :-* रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

*हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।*

*विशेष - उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि रजगुण श्री ब्रह्मा जी, सतगुण श्री विष्णु जी, तमगुण श्री शंकर जी हैं तथा ये तीनों नाशवान हैं।*

## ''तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) अर्थात् त्रिगुण माया की पूजा व्यर्थ''

*गीता अध्याय 7 श्लोक 12 : तीनों गुणों से जो कुछ हो रहा है वह मुझ से ही हुआ जान। जैसे रजगुण(ब्रह्मा) से उत्पत्ति, सतगुण(विष्णु) से पालन-पोषण स्थिति तथा तमगुण(शिव) से प्रलय(संहार) का कारण काल भगवान ही है। फिर कहा है कि मैं इन में नहीं हूँ। क्योंकि काल बहुत दूर(इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में निज लोक में रहता है) है परंतु मन रूप में मौज काल ही मनाता है तथा रिमोट से सर्व प्राणियों तथा ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी को यन्त्र की तरह चलाता है। पवित्र गीता जी के अ. 7 में ब्रह्म (ज्योति निरंजन - काल) कह रहा है कि हे अर्जुन! अब तुझे वह ज्ञान सुनाऊँगा जिसके जानने के बाद और कुछ जानना बाकी नहीं रह जाता। गीता बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि मेरे इक्कीस ब्रह्मण्ड़ों के प्राणियों के लिए मेरी पूजा से ही शास्त्र अनुकूल साधना प्रारम्भ होती है, जो वेदों में वर्णित है। मेरे अन्तर्गत जितने प्राणी हैं उनकी बुद्धि मेरे हाथ में है। मैं केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड़ों में ही मालिक हूँ। इसलिए (गीता अ. 7 श्लोक 12 से 15 तक) जो भी तीनों गुणों से (रजगुण-ब्रह्मा से जीवों की उत्पत्ति, सतगुण-विष्णु जी से स्थिति तथा तमगुण-शिव जी से संहार) जो कुछ भी हो रहा है उसका मुख्य कारण मैं (ब्रह्म-काल) ही हूँ। (क्योंकि काल को शाप लगा है कि एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के शरीर को मार कर मैल को खाने का) जो साधक मेरी (ब्रह्म की) साधना न करके त्रिगुणमयी माया (रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी) की साधना करके क्षणिक लाभ प्राप्त करते हैं, जिससे ज्यादा कष्ट उठाते रहते हैं, साथ में संकेत किया है कि इनसे ज्यादा लाभ मैं (ब्रह्म-काल) दे सकता हूँ, परन्तु ये मूर्ख साधक तत्वज्ञान के अभाव से इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण-ब्रह्मा*

*जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी) तक की साधना करते रहते हैं। इनकी बुद्धि इन्हीं तीनों प्रभुओं तक सीमित है। त्रिगुण माया अर्थात् ब्रह्मा(रजगुण), विष्णु(सतगुण) तथा शिव (तमगुण) से मिलने वाले क्षणिक लाभ के द्वारा जिनका ज्ञान हरा जा चुका है। भावार्थ है कि वे फिर अन्य प्रभु की भक्ति नहीं करते। यदि कोई समझाने का प्रयत्न करता है तो उसी के दुश्मन बन जाते हैं। इसलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में कहा है कि तीनों प्रभुओं (त्रिगुणमाया) के पूजारी राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच, शास्त्र विरूद्ध साधना रूपी दुष्कर्म करनेवाले, मूर्ख मुझे(ब्रह्म को)नहीं भजते। यही प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 4 से 20 व 23, 24 तक अध्याय 17 श्लोक 2 से 14 तथा 19 व 20 में भी है।*

*विचार करें :- रावण ने भगवान शिव जी को मृत्युंजय, अजर-अमर, सर्वेश्वर मान कर भक्ति की, दस बार शीश काट कर समर्पित कर दिया, जिसके बदले में युद्ध के दौरान दस शीश रावण को प्राप्त हुए, परन्तु मुक्ति नहीं हुई, राक्षस कहलाया। यह दोष रावण के गुरुदेव का है जिस नादान (नीम-हकीम) ने वेदों को ठीक से न समझ कर अपनी सोच से तमोगुण युक्त भगवान शिव को ही पूर्ण परमात्मा बताया तथा भोली आत्मा रावण ने झूठे गुरुदेव पर विश्वास करके जीवन व अपने कुल का नाश किया।*

*एक भस्मागिरी नाम का साधक था, जिसने शिव जी (तमोगुण) को ही ईष्ट मान कर शीर्षासन(ऊपर को पैर नीचे को शीश) करके 12 वर्ष तक साधना की, वचन बद्ध करके भस्मकण्डा ले लिया। भगवान शिव जी को ही मारने लगा। उद्देश्य यह था कि भस्मकण्डा प्राप्त करके भगवान शिव जी को मार कर पार्वती जी को पत्नी बनाऊँगा। भगवान श्री शिव जी डर के मारे भाग गए, फिर श्री विष्णु जी ने उस भस्मासुर को गंडहथ नाच नचा कर उसी भस्मकण्डे से भस्म किया। वह शंकर जी (तमोगुण) का साधक राक्षस कहलाया। हरिण्यकशिपु ने भगवान ब्रह्मा जी (रजोगुण) की साधना की तथा राक्षस कहलाया।*

*एक समय आज से लगभग 325 वर्ष पूर्व हरिद्वार में हर की पैड़ियों पर (शास्त्र विधि रहित साधना करने वालों के) कुम्भ पर्व की प्रभी का संयोग हुआ। वहाँ पर सर्व (त्रिगुण उपासक) महात्मा जन स्नानार्थ पहुँचे। गिरी, पुरी, नाथ, नागा आदि भगवान श्री शंकर जी (तमोगुण) के उपासक तथा वैष्णों भगवान श्री विष्णु जी(सतोगुण) के उपासक हैं। प्रथम स्नान करने के कारण नागा तथा वैष्णों साधुओं में घोर युद्ध हो गया। लगभग 25000 (पच्चीस हजार) त्रिगुण उपासक मृत्यु को प्राप्त हुए। जो व्यक्ति जरा-सी बात पर कत्ले आम कर देता है वह साधु है या राक्षस स्वयं विचार करें। आम व्यक्ति भी कहीं स्नान कर रहे हों और कोई व्यक्ति आ कर कहे कि मुझे भी कुछ स्थान स्नान के लिए देने की कृपा करें। शिष्टाचार के नाते कहते हैं कि आओ आप भी स्नान कर लो। इधर-उधर हो कर आने वाले को स्थान दे देते हैं। इसलिए पवित्र गीता जी अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में कहा है कि जिनका मेरी त्रिगुणमई माया (रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी) की पूजा के द्वारा ज्ञान हरा जा चुका है, वे केवल मान बड़ाई के भूखे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए, मनुष्यों में नीच अर्थात्*

*आम व्यक्ति से भी पतित स्वभाव वाले, दुष्कर्म करने वाले मूर्ख मेरी भक्ति भी नहीं करते।*

*यही भूमिका वर्तमान में श्री सुधांशु जी महाराज तथा श्री आसाराम जी महाराज कर रहे हैं जो सर्व नाम जाप के मंत्र शास्त्र विधि के विरुद्ध भक्त समाज को प्रदान कर रहे हैं तथा श्री शंकर जी तथा श्री विष्णु जी आदि की पूजा पर भक्त समाज को आधारित किए हुए हैं। इसलिए गलत मार्ग पर जा रहे हैं। पथिक को सही मार्ग बताना निंदा नहीं हित होता है। फिर भी किसी पर कोई दबाव नहीं, केवल प्रार्थना है कि शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा - साधना) मानव जीवन के लिए अति हानिकारक है। शास्त्र विधि अनुसार साधना मुझ दास के पास उपलब्ध है, निःशुल्क प्राप्त करें।*

*मुझ दास की प्रार्थना है कि मानव जीवन दुर्लभ है, इसे नादान सन्तों, महन्तों व आचार्यों, महर्षियों तथा पंथों के पीछे लग कर नष्ट नहीं करना चाहिये। पूर्ण संत की खोज करके उपदेश प्राप्त करके आत्म कल्याण करवाना ही श्रेयकर है। सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के अनुसार अर्थात् शास्त्र अनुकूल यथार्थ भक्ति मार्ग मुझ दास (रामपाल दास) के पास उपलब्ध है। कृपया निःशुल्क प्राप्त करें। सर्व पवित्र धर्मों की पवित्रात्माऐं तत्वज्ञान से अपरिचित हैं। जिस कारण नकली गुरुओं, संतों, महन्तों तथा ऋषियों तथा पंथों का दाव लगा हुआ है। जिस समय पवित्र भक्त समाज आध्यात्मिक तत्वज्ञान से परिचित हो जाएगा उस समय इन नकली सन्तों, गुरुओं व आचार्यों को छुपने का स्थान नहीं मिलेगा। कुछ श्रद्धालुओं को शंका है कि गुरु जी बदलना पाप है। उनसे प्रार्थना है कि पूरे गुरुदेव की प्राप्ति होने पर अधूरे गुरु को त्याग देना समझदारी होती है। जैसे एक वैद्य से रोग ठीक नहीं होता तो दूसरे डॉक्टर के पास जाना हितकर होता है। इसी प्रकार गुरु बदलना पाप नहीं पुण्य है। इसके बारे में कबीर साहेब कहते हैं कि - 'झूठे गुरु को तजते, तनिक न कीजै वार।' आध्यात्मिक ज्ञान को समझने के लिए कृपया सतलोक आश्रम करौंथा से निम्न सम्पर्क सूत्र से सम्पर्क करें।*

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा। हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।
हिन्दु मुस्लिम सिख ईसाई, आपस में सब भाई–भाई। आर्य जैनी और बिश्नोई, एक प्रभु के बच्चे सोई।।
कबीरा खड़ा बाजार में, सबकी मांगे खैर। ना काहूँ से दोस्ती ना काहूँ से बैर।।

*संत रामपाल दास*

# शंका-समाधान प्र नोत्तरी

*पूज्य संत रामपाल जी महाराज के चरणों में सादर प्रणाम!*

*मैंने आपसे फोन पर भी कई प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किये। कुछ प्रश्नों के उत्तर 'परिभाषा प्रभु की' सुन कर स्वयं ही मिल जाते हैं और कुछ के फोन पर पूछ लिए हैं। कृपया मेरे निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने का कष्ट करें।*

*प्रश्न 1 - पुस्तक 'गहरी नजर गीता में' में मैंने पढा कि हम सारी आत्माएँ काल के जाल में कैसे फंसी और ये भी जाना कि सद्गुरु जी की कृपा से हम सतलोक पुनः फिर जा सकती हैं और सतलोक में जाकर वहाँ पर भक्ति कर उससे भी श्रेष्ठ लोकों में जा सकती हैं और भगवान में लीन भी हो सकती हैं। पहले भगवान अकेले थे और एक से अनेक होना चाहा। तो जब भगवान ने एक से अनेक होना चाहा और फिर जब सभी आत्माएँ अगर फिर भगवान में लीन हो गई बहुत ज्यादा समय बाद भक्ति करके, तो भगवान फिर से एक ही रह जाएंगे। यदि वो फिर अनेक होना चाहे तो फिर अनेक हो सकते हैं। क्या पता ऐसा चक्र कब से चलता आ रहा हो। क्या जो आत्मा भक्ति करके भगवान में लीन हो जाती हैं, क्या वो फिर प्रकट होती हैं या उसे भगवान की एक से अनेक होने की इच्छा पर फिर प्रकट होना पड़ता है? या जो आत्माएँ भक्ति करके भगवान में लीन हो गई फिर कभी प्रकट होती हैं या नहीं? क्या भगवान् नई आत्माओं को प्रकट करता है, जो पहले कभी नहीं थी?*

*प्रिय जिज्ञासु भक्त,*

*आपका पत्र मिला जिससे पता लगा कि आपकी परमात्मा के अन्दर विशेष रूची है। यह नया ज्ञान होने के कारण ढेर सारी शंकाओं का हो जाना स्वाभाविक है। आपके कुछ प्रश्न तो ऐसे हैं कि मैं उत्तर देना चाहूँगा तो भी आप समझ नहीं सकते। क्योंकि ये आध्यात्मिक मार्ग के अन्तिम स्थिति के प्रश्न हैं और आपने अभी आध्यात्मिक मार्ग प्रारम्भ भी नहीं किया है, केवल प्रश्न ही कर रखे हैं। आपके प्रश्नों का भाव ऐसा है जैसे आप ही स्वयं अपने जीवन पर सोचे कि मैं पैदा कहाँ से हुआ? क्यों हुआ? क्या हम युवा होकर वृद्ध होते हैं? क्यों होते हैं और मर कर फिर पैदा तो नहीं होंगे? इन प्रश्नों का उत्तर क्या आपने कभी सोचा? और भगवान ने जो कुछ करना है वह कर रहा है। हमने जो कुछ करना है प्रभु ने उसका मार्ग दर्शन शास्त्रों के अन्दर किया हुआ है।*

*फिर भी प्रश्न नं. 1 का उत्तर- प्रभु कबीर साहेब ने ऊपर के रचे लोकों की सृष्टी की तथा वे लोक अजर तथा अमर अर्थात् अविनाशी रचे हुए हैं तथा उसमें रहने वाली आत्माएँ भी मानव शरीर सदृश अविनाशी रची हुई हैं। उनका मरण कभी नहीं होता है। उनको कोई कष्ट या दुःख वहाँ पर नहीं है। इसलिए कोई भी आत्मा प्रभु में लीन होना नहीं चाहती। जैसे जिसको भी यहाँ पर जरा-सा भी सुख है और दुःख चाहे ढेर सारा भी है फिर भी मरना नहीं चाहता। सतलोक में जाकर*

*ऊपर के दो लोकों में जाने की भक्ति सतलोक से ही प्रारम्भ होती है। परमात्मा ने जो सृष्टी एक बार रच दी है दोबारा नहीं रचेगा। दोबारा तोड़ेगा, रचेगा तो यह अविनाशी नहीं है अर्थात् ऊपर की सृष्टी ज्यों की त्यों सदा रहेगी।*

*प्रश्न 2 - साधारण मनुष्य भी भक्ति या तप, साधना ज्यादा करके ये शक्ति प्राप्त कर लेता है कि सही भविष्य जान लेता है तो पूर्ण ब्रह्म(कबीर जी) तो सर्वशक्तिमान हैं वो तो सब कुछ जानते हैं। जब हम सारी आत्माएँ सतलोक से काल के पास जाना चाहती थी तो कबीर पिता तो जानते ही होंगे कि इन आत्माओं को क्या-क्या कष्ट सहने होंगे तो ये सब जानते हुए भी हमारी हाँ कहने पर भी उन्होंने हमें क्यों भेजा। मृत्युलोक के बुर्जुग लोग भी अपने बच्चों को कष्ट से बचाने की कोशिश करते हैं चाहे बच्चे कितने ही जिद्दी क्यों न हों लेकिन उनको दुःखों से दूर रखते हैं। कबीर पिता ये तो जानते ही होंगे कि नर्क कितना दुखदायी है? दुख कैसा होता है? सर्वशक्तिमान होने पर भी अपने बच्चों को सच्चा ज्ञान नहीं दे सकते थे कि इस काल का स्वरूप दुख देना है।*

*उत्तर - काल के जाल में हम सभी आत्माएँ स्वयं अपनी प्रबल इच्छा से इसके ढोंग जब यह तप कर रहा था इसकी अदा पर हम इतने आसक्त हो गए कि अपने पिता कबीर परमेश्वर की बात भी नहीं मानी। जैसे नादान बच्चे अपने पिता जी की इच्छा के विरूद्ध शादी कर लेते हैं। पिता जी के मना करने पर घर से निकल जाते हैं।*

*उदाहरणतः एक बार यह दास (संत रामपाल दास) जब सर्विस करता था तो एक नहर का निर्माण कार्य हो रहा था। वहाँ पर एक लड़की अपने दो बच्चों के साथ मजदूरी करने आया करती थी। अपने बच्चों को ज्येष्ठ की धूप में वृक्ष के नीचे बैठा कर स्वयं मजदूरी करती थी। एक दिन वह बहुत बुरी तरह रो रही थी। मैंने उससे पूछा कि बहन क्यों रो रही हो? क्या बात हो गई? उसने बताया कि मैं एक बहुत अच्छे घर की लड़की हूँ। मैंने अपने पिता की इच्छा के विरूद्ध शादी की। जो मेरा पति है वह मेरे पिता के यहाँ नौकर था। मैंने उसकी बातों में आकर उससे प्यार कर लिया। मेरे पिता जी ने और माता जी ने बहुत मना किया, बहुत रोए, बहुत हाथ जोड़े, बहुत गिड़गड़ाए, लेकिन मैंने एक नहीं मानी। तब मुझे तथा मेरे पति को वहाँ से निकाल दिया। अब मेरा पति तो शराब पीता है और मैं मजदूरी करती हूँ। मेरा पति मेरी ही मजदूरी से शराब पीता है। मुझे हर रोज दुःखी करता है, पीटता है। आज भी मुझसे शराब पीने के लिए जबरदस्ती पैसे ले लिए और शाम का आटा नहीं है। ऐसी स्थिति हो गई है। यही परिस्थिति हम सभी आत्माओं की है जो काल के जाल में फंसी हैं। क्योंकि साहेब कबीर ने हमें बार-बार कहा था कि यह ज्योति निरंजन तुम्हें बहुत दुःखी करेगा। क्योंकि यह तो मेरा मजदूर है और तुम्हें दुःखी करेगा। तुम इसकी तरफ ध्यान मत दो।*

*गरीबदास जी महाराज की वाणी है कि :-*

काल जो पीसै पीसना, जौरा है पनिहार। ये दो असल मजदूर हैं मेरे सतगुरु के दरबार।।

*प्रश्न 3 - काल के 21 ब्रह्मण्डों में कर्मों का फल भोगना पड़ता है। काल भगवान ने सतलोक में बुरा कर्म किया और हम आत्माओं ने अपने पिता से इजाजत ली तो सतलोक से इस दुख सागर में आए। काल भगवान को अपने कर्म का भोग भोगना पड़ा और हमें भी क्योंकि हमने काल को पसंद किया। कबीर पिता ने काल भगवान को शाप दिया जिसके कारण भोली-भाली आत्माएँ काल का आहार बन रही हैं। हमारे कबीर पिता इतने क्रोधी हैं कि उनको अपने बच्चों पर दया नहीं आती। एक बार कबीर पिता का मन करता है कि अपनी सारी आत्माओं को वापिस सतलोक ले जाऊँ और काल के 21 ब्रह्मण्डों को आग लगा दूँ। लेकिन उनको अपना ही वायदा याद आता है। वो (कबीर पिता) तो भगवान हैं लेकिन इस बात से तो ये लगता है कि उनका मन भी मनुष्य जैसा है जो पहले क्रोध में आ गया और अपनी प्रिय आत्माओं को जाने दिया, फिर इनका (आत्माओं) दुख देखकर दया से भर गया। ये बात, ये दया उनको तब क्यों नहीं आयी जब उन्होंने हमें काल भगवान के साथ भेजा हमारी इच्छा से।(क्या कबीर जी को इस प्रश्न से मैंने नाराज कर दिया?)*

*उत्तर - काल को श्राप कबीर साहेब ने नहीं दिया। सतलोक के अन्दर ऐसा विधान है कि जो ऐसी गलती करेगा उसको यह बिमारी स्वतः लग जाती है। जैसे राजा ने संविधान बना दिया। यदि राजा का लड़का भी संविधान को तोड़ता है तो उसको भी उसकी सजा मिलती है। यदि प्रधानमंत्री का पुत्र किसी की हत्या कर दे तो उसको भी सजा मिलेगी। कबीर साहेब ने जब हमारी इच्छा पूछी कि क्या तुम इस काल के साथ जाना चाहते हो तो हमारी स्वीकृति पर कबीर साहेब ने कहा था कि निरंजन भेज देता हूँ। तू अपने लोक में जा। कबीर साहेब को यह वचन याद आता है।*

*प्रश्न 4 - हम सारी आत्माएँ यहाँ काल भगवान के राज्य में किसी न किसी कारण दुखी रहती हैं और कुछ आत्माएँ न चाहते हुए भी पाप करती हैं और उसका फल भोगती हैं यदि इन आत्माओं को सुख न भी मिलें कम से कम दुख ही दूर हो जाए तो भी ये शान्ति प्राप्त कर सकती हैं। मैं ये जानना चाहता हूँ कि क्या सतलोक का सुख यहाँ (काल भगवान के) सुख से ज्यादा है अर्थात् सतलोक में स्वर्ग, महास्वर्ग या बैकुण्ठ तथा ब्रह्मलोक से भी ज्यादा आनन्द है। यदि हाँ तो हम काल भगवान के कहने पर कि वहाँ मैं सुख दूँगा तो हम सतलोक का सुख आनन्द शान्ति छोड़ कर काल भगवान पर आसक्त हो गए। क्या हम सतलोक में दुखी थे जो अपना दुख थोड़ा कम करने आ गए या फिर हमें नरक अच्छा लगता था या फिर हम बहुत बड़े अज्ञानी थे?*

*उत्तर - यह आपकी अप्रविणता का प्रमाण है और नुकताचीनी ढूंढने का शौक नजर आता है। इसका उत्तर ऊपर प्रश्न नं. 2 के उत्तर में आ चुका है। क्या उस लड़की को अपने पिता के घर पर कोई दुःख था जो उस मजदूर के साथ भाग आई और अब रो रही है?*

*प्रश्न 5 - मरते समय मनुष्य की जैसे मति होती है वैसी ही गति होती है। मान लो कोई सतगुरु सारा जीवन प्रभु भक्ति में गुजारते हैं और किसी भी कारण से मृत्यु के समय उनकी मति प्रभु या गुरु नाम में नहीं रही तो क्या वो भी सतलोक नहीं जाएंगे और यदि कोई सतगुरु जो सतलोक न जा सके तो उनके वो शिष्य जो उनको ही अपना सब कुछ मानते हैं और मृत्यु के समय उनको(सतगुरु) को याद करके या फिर प्रभु या गुरु नाम में मति रखते हुए प्राण त्यागते हैं तो उन शिष्यों की क्या गति होगी? यदि किसी को पता ही न चले कि गुरु जी की मति शरीर का त्याग करते समय किस में थी।*

*उत्तर - सतगुरु वही होता है जो आम जीव से उत्तम होता है। जिसकी वृति दिन-रात प्रभु के चरणों में ही रहती है। तो अंत समय में भी प्रभु के ही चरणों में रहेगी। यदि ऐसा नहीं है तो वह झूठा सतगुरु है।*

*प्रश्न 6 - जिन लोगों के सतगुरु शरीर छोड़कर जा चुके हैं उन लोगों को भक्ति में गुरु जी का ध्यान करना चाहिए या कबीर साहेब का और फिर वही बात यदि स्वयं गुरु जी की ही मति शरीर छोड़ते समय वहाँ न रही हो जो सतलोक जाने के लिए सहायक है तो भी शिष्यों को गुरु नाम सहायता करेगा या उनको भी वही जाना होगा जहाँ उनके गुरु गए न कि सतलोक।*

*उत्तर - पूर्ण सतगुरू सतलोक चला जाता है। शिष्यों को पूर्ण मर्यादा तथा नाम जाप विधी प्रदान कर जाता है। पूर्ण परमात्मा उस सन्त रूप में साधकों के कार्य करता है तथा मर्यादा में रहकर भक्ति करने वाले भक्तों को सतलोक ले जाता है।*

*प्रश्न 7 - कबीर साहेब के साथ जो चार बच्चे रहते थे और गरीबदास जी के छः बच्चे क्या उसी जन्म में सतलोक चले गए थे?*

*उत्तर - यह आपके अधूरे ज्ञान का ही प्रमाण है। कबीर साहेब का कोई बच्चा नहीं था और न ही कोई पत्नी थी। दो बच्चों जिनका नाम कमाल(लड़का) तथा कमाली(लड़की) को मृत को जीवित करके अपने पुत्र व पुत्री के रूप में साथ रखा था।*

*प्रश्न 8 - कबीर साहेब तो पूर्ण ब्रह्म हैं। क्या गरीबदास जी कोई साधारण आत्मा थी। गरीबदास जी को भी कबीर साहेब जितना ही लगभग आदर दिया जाता है। इसका कारण?*

*उत्तर - कबीर साहेब पूर्ण परमात्मा हैं तथा गरीबदास जी भक्ति अधिकारी आत्मा थी और कबीर साहेब से उपदेश प्राप्त करके वह भी परम आत्मा(श्रेष्ठ आत्मा) हो गई थी। जिन्होंने पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब की महिमा का एक ''सतग्रन्थ साहेब'' रचा और जिसके आधार पर अब यह अनमोल सत हमें प्राप्त हुआ। इसलिए गरीबदास जी आदरणीय हैं तथा कबीर साहेब पूजनीय हैं। गरीबदास जी की वाणी है किः-*

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मा भये, अनन्त कोटि भये ईश।
कबीर साहेब तेरी बन्दगी से, जीव हो जावै जगदीश।।

*प्रश्न 9 - काल भगवान के 21 ब्रह्मण्ड़ों का नाश होने पर सारी आत्माएँ परब्रह्म के लोक में रहती हैं। परब्रह्म के लोक में सुख कितना है? कितने समय तक आत्माएँ वहाँ रहती हैं और यदि पुनः काल भगवान का जन्म होने पर भी आत्माएँ परब्रह्म के लोक में ही रहना चाहें? क्या काल भगवान को अपने जन्म याद हैं कि उसके कितने जन्म हो चुके हैं? और वो कितने जन्मों तक 21 ब्रह्मण्डों के मालिक रहेंगे और उसके बाद फिर हमारी तरह ही सतलोक में चले जाएंगे? जब काल भगवान की मृत्यु होती है और इसी प्रकार परब्रह्म की मृत्यु होती है तो क्या वो भी मृत्यु का कष्ट भोगते है। या जैसे मृत्युलोक के प्राणी अपने जीवन में दुख भोगते हैं इसी तरह ब्रह्म और परब्रह्म भी अपने जीवन में दुख भोगते हैं। अक्षर पुरूष कितने जन्मों तक जीएगा? क्या अक्षर पुरूष की सृष्टी में सुख है? इसी प्रकार कबीर पिता के सहज आदि पुत्रों ने यदि किसी सृष्टी की रचना की वहाँ पर सुख है? क्या कबीर पिता के सहज आदि पुत्रों का भी कभी नाश होगा ?*

*उत्तर - जो आत्माएँ काल के 21 ब्रह्मण्डों में रहती हैं वे काल के ही साथ वापिस काल लोक में आ जाएंगी। जैसे राजा और प्रजा में सुख दुःख का अन्तर होता है ऐसे ही ब्रह्म और परब्रह्म अपने-अपने लोकों के राजा हैं और दुःख फिर भी होता है। सहजदास आदि पुत्रों का विनाश नहीं होगा। क्योंकि वे अब सावधान हो गए हैं। क्योंकि उन्होंने काल की दुर्दशा देख ली है। अब वे ऐसी गलती नहीं कर सकते।*

*प्रश्न 10 - शेराँवाली माता काल भगवान के श्राप से द्रोपदी बनी और उनको (द्रोपदी को) नरक भी जाना पड़ा। कुंती पुत्रों को तो नरक इसलिए जाना पड़ा कि युद्ध में हिंसा करने के कारण लेकिन कुंती और द्रोपदी को क्यों जाना पड़ा और युधिष्ठिर जी ने उन सबको अपने हिस्से का स्वर्ग दिया और ये लोग स्वर्ग भोगकर फिर नरक जायेंगे। ये नरक की अवधि क्या एक कल्प या उससे थोड़ी कम या ज्यादा होती है। द्रोपदी जी शेराँवाली माता है। पृथ्वी पर जब लोग माता का जागरण करते हैं तो अक्सर माता लोगों में आती है। जब द्रोपदी जी को पुनः यदि नरक जाना पड़ेगा तो भी शेराँवाली माता जागरण में आयेगी।*

*उत्तर - एक ऐसी सिद्धि होती है जिससे कई रूप बनाए जा सकते हैं। लेकिन उसका विशेष सम्बन्ध मुख्य आत्मा से ही रहता है। जैसे किसी प्राणी के सैकड़ों हाथ-पैर हों और उनके किसी पैर को चोट लगाए तो उसकी भी पीड़ा होती है। ऐसे ही शेराँवाली मुख्य रूप में अपने लोक में रहती है और उसी का अंश सिद्धि से द्रोपदी रूप में प्रकट हुआ था। राज्य के बटवारे के दौरान युद्ध करवाने में द्रोपदी का विशेष रोल (सहयोग) था। वह बार-बार कहती थी कि जब मेरा चीरहरण करने की कोशिश की थी उसका बदला लो। कुंती भी ऐसे ही पुत्रों को प्रेरणा किया करती थी कि अपना हिस्सा अवश्य लिया जाए। जो अनर्थ का कारण बना। बाद में करोड़ों बहनों के विधवा व करोड़ों बच्चों के अनाथ होने की बद्दुवाएँ उस सारे ही परिवार को जिन्होंने बाद में राज्य का सुख भोगा, भोगनी पड़ी। उसका परिणाम इन दोनों*

*(कुंती तथा द्रोपदी) को भी नरक का दुःख भोगने का कारण बना। जागरण के दौरान कोई माता जागरण में नहीं आती क्योंकि वह उनकी अविधिपूर्वक पूजा है और जागरण के दौरान प्रेतात्माएँ किसी के शरीर में प्रवेश करके बोलती हैं कि मैं माता आ गई हूँ।*

*प्रश्न 11 - काली माता की एक तस्वीर में मैंने देखा कि उनकी काफी भुजाएँ हैं और बचपन में एक और तस्वीर देखी थी जिसमें शायद जैसा मुझे याद आता है कि काली माता ने शिव जी भगवान पर पैर रखा हुआ था। काली माता कौन है?*

*उत्तर - यह काली माता भी इसी शेरांवाली का ही अंश है।*

*प्रश्न 12 - लोगों की इच्छाएँ वैष्णु माता पूरी करती है। लेकिन आपने कहा कि वो केवल स्मृति के लिए बनाई गई जगह है।*

*उत्तर - जैसे वैष्णु माता का एक स्मारक बना रखा है। वहाँ पर केवल उनका धड़ पड़ा था। अब जैसे कोई वैद्य शरीर छोड़ जाए और उसके शरीर पर यादगार बना दे और मूर्ति भी रख दे तो वह मूर्ति वैद्य का काम नहीं कर सकती। अब आप स्वयं सोचें।*

*प्रश्न 13 - मेरी मौसी जी का परिवार कबीर साहेब और गरीब दास में काफी श्रद्धा रखता है। वो लोग छुड़ानी साहेब भी जाते हैं। मेरी मौसी जी की छोटी बेटी ने बताया कि गरीबदास जी ने कहा था कि 'जो मेरे शिष्य हैं वो छुड़ानी साहेब अवश्य जाए। जो छुड़ानी साहेब जायेगा उसका सीधा 'स्वर्गों' में वास होगा।' इस प्रकार उन्होंने मुझे बताया था। लेकिन उसके बाद जब मैंने आपके नाम उपदेश लेने के नियम पढ़े तो मुझे शंका हुई।*

*इसका यदि प्रमाण नहीं है तो मुझे ये बताओ कि कहीं गरीबदास जी इसे लिखना भूल गए हों केवल वाणी से ही कह गए हों। कृपया ये शंका दूर करें। कहीं ऐसा न हो कि सही नाम लेकर केवल इसलिए मुक्ति न हो कि छुड़ानी साहेब नहीं गए।*

*उत्तर - यह धारणा अज्ञानी लोगों द्वारा पैदा की जाती है कि किसी स्थान या धाम से ही मुक्ति होती है। ऐसा ही काँशी में उन स्वार्थी संतों-गुरुओं-महन्तों ने गलत धारणा फैला रखी थी कि जो काँशी में मरता है वह स्वर्ग जाता है और जो मगहर में मरता है वह गधा बनता है।*

*काशी के अन्दर पाखण्डियों ने एक भ्रमणा फैला रखी थी कि जो अंत समय में काँशी में प्राण त्यागता है वह स्वर्ग जाता है और जो मगहर में मरता है वह गधा बनता है। क्योंकि मगहर की धरती पवित्र नहीं है। उस पृथ्वी को भगवान शिव ने श्राप दे रखा है। एक आमी नाम की नदी बहा करती थी वह भी भगवान शिव ने अपने श्राप से सूखा रखी है। सभी अपने-अपने बुजूर्ग लोगों को लेकर काँशी में अपने अपने पुरोहितों के घर छोड़ने लगे कि इनका अंत समय आ रहा है। पिता जी को अब कुछ समय हम यहाँ पर रखेंगे। पाखण्डियों ने प्रत्येक व्यक्ति की फीस*

कुछ रूपये प्रति महिना रख दी। वह धन भी पहले जमा कराते। उन पंडों का भी पेट भरते और अपने मात-पिता को भी वहाँ रखते और फिर वे वहाँ पर मर जाते। कुछ समय के बाद वहाँ पर भीड़ होने लगी। इतनी भीड़ होने लगी कि कहीं स्थान नहीं रहा। इतने वृद्धों की व्यवस्था कैसे हो? पहले तो पैसे के लालच में आफत मोल ले ली। अब उन नादानों(पुरोहितों) ने सोचा कि यहाँ पर तो दुनिया ही इक्कट्ठी होने लग गई। इनकी व्यवस्था हो नहीं पाएगी। इनको रख नहीं सकते। उन्होंने क्या स्कीम बनाई? मनुष्य काटने का हत्था बना दिया। उसको करौंत कहा करते थे। वह गंगा के किनारे बनवा दिया। ऊपर से करौंत आए और नीचे गर्दन रख दे और वह करौंत गर्दन काट देता था और फिर वे उसको गंगा में धक्का दे देते थे। ऐसा कसाईयों जैसा कर्म इन हिन्दु धर्म के मार्ग दर्शकों ने किया। वे प्रभु प्रेमी आत्माएँ मुक्ति हेतु गर्दन तक प्रभु के निमित्त देना स्वीकार करके उस साधना पर भी आश्रित हो गये। हिन्दु गुरु ब्राह्मणों ने कहा कि यदि किसी ने जल्दी स्वर्ग में जाना हो तो भगवान की तरफ से करौंत आया है। जो उससे अपनी गर्दन कटवा लेगा वह शीघ्र स्वर्ग चला जाएगा। कुछ रूपये टिकट फालतू लगा दी। वह हत्था बना दिया तो वह भी स्वीकार कर लिया। परमात्मा को चाहने वाली आत्माओं की कमी नहीं है। परन्तु मार्ग सही न मिलने से नरक भोगा। कबीर साहेब इन धार्मिक लोगों का धर्म की आड़ में जुल्म करने का भांडा फोड़ने लगे।

उसके बाद इस भ्रम को तोड़ने के लिए कि जो मगहर में मरता है वह गधा बनता है और काशी में मरने वाला स्वर्ग जाता है। (बन्दी छोड़ कहते थे कि सही विधि से भक्ति करने वाला प्राणी चाहे वह कहीं पर प्राण त्याग दे वह अपने सही स्थान पर जाएगा।) उन नादानों का भ्रम निवार्ण करने के लिए कबीर साहेब ने कहा कि मैं मगहर में मरूँगा और सभी ज्योतिषी वाले देख लेना कि मैं कहाँ जाऊँगा? नरक में जाऊँगा या स्वर्ग से भी ऊपर सतलोक में।

कबीर साहेब ने काशी से मगहर के लिये प्रस्थान किया। बीर सिंह बघेला और बिजली खाँ पठान ये दोनों ही सतगुरु के शिष्य थे। बीर सिंह ने अपनी सेना साथ ले ली कि कबीर साहेब वहाँ पर अपना शरीर छोड़ेंगे। इस शरीर को लेकर हम काशी में हिन्दु रीति से अंतिम संस्कार करेंगे। यदि मुसलमान नहीं मानेंगे तो लड़ाई कर के शव को लायेंगे। सेना भी साथ ले ली। अब इतनी बुद्धि है हमारी। हर रोज शिक्षा दिया करते कि हिन्दु मुसलमान दो नहीं हैं। अंत में फिर वही बुद्धि। उधर से बिजली खाँ पठान को पता चला कि कबीर साहेब यहाँ पर आ रहे हैं। बिजली खाँ पठान ने सतगुरु तथा सर्व आने वाले भक्तों तथा दर्शकों की खाने तथा पीने की सारी व्यवस्था की और कहा कि सेना तुम भी तैयार कर लो। हम अपने पीर कबीर साहेब का यहाँ पर मुसलमान विधि से अंतिम संस्कार करेंगे। कबीर साहेब के मगहर पहुँचने के बाद बिजली खाँ ने कहा कि महाराज जी स्नान करो। कबीर साहेब ने कहा कि बहते पानी में स्नान करूँगा। बिजली खान ने कहा कि सतगुरु देव यहाँ पर साथ में एक आमी नदी है, वह भगवान शिव के श्राप से सूखी पड़ी

*है। उसमे पानी नहीं है। जैसी व्यवस्था दास से हो पाई है पानी का प्रबंध करवाया है। लेकिन संगत बहुत आ गई। नहाने की तो बात बन नहीं पाएगी। पीने का पानी पर्याप्त मात्रा में बाहर से मंगवा रखा है। कबीर साहेब ने कहा कि वह नदी देखें कहाँ पर है? उस नदी पर जा कर साहेब ने हाथ से ऐसे इशारा किया जैसे यातायात (ट्रैफिक) का सिपाही रूकी हुई गाड़ियों को जाने का संकेत करता है। वह आमी नदी पूरी भरकर चल पड़ी। "बोलो सतगुरु देव की जय" ''सत साहेब''। (यह आमी नदी वहाँ पर अभी भी विद्यमान है) सब ने जय-जयकार की।*

*साहेब ने कहा कि एक चदद्र नीचे बिछाओ, एक मैं ऊपर ओढूँगा। (क्योंकि वे तो जानी जान थे) कहने लगे कि ये सेना कैसे ला रखी है तुमने? अब बिजली खाँ पठान और बीर सिंह बघेला आमने-सामने खड़े हैं। उन्होंने तो मुँह लटका लिया और बोले नहीं। वे दूसरे हिन्दु और मुसलमान बिना नाम वाले बोले कि जी हम आपका अंतिम संस्कार अपनी विधि से करेंगे। दूसरे कहते हैं कि हम अपनी विधि से करेंगे। चढा ली बाहें, उठा लिए हथियार तथा कहने लगे कि आ जाओ। कबीर साहेब ने कहा कि नादानों क्या मैंने यही शिक्षा दी थी 120 वर्ष तक। इस मिट्टी का तुम क्या करोगे? चाहे फुंक दो या गाड दो इससे क्या मिलेगा? तुमने क्या शिक्षा ली मेरे से? सुन लो यदि झगड़ा कर लिया तो मेरे से बुरा नहीं होगा। वे जानते थे कि ये कबीर साहेब परम शक्ति युक्त हैं। यदि कुछ कह दिया तो बात बिगड़ जाएगी। शांत हो गये पर मन में यही थी कि शरीर छोड़ने दो, हमने तो यही करना है। वे तो जानी जान थे। उस दिन गृहयुद्ध शुरू हो जाता, सत्यानाश हो जाता, यदि साहेब अपनी कृपा न बख्सते तो। कबीर साहेब ने कहा कि एक काम कर लेना तुम मेरे शरीर को आधा-आधा काट लेना। परन्तु लड़ना मत। ये मेरा अंतिम आदेश सुन लो और सुनो, इसमें जो वस्तु मिले उसको आधा आधा कर लेना। महिना माघ शुक्ल पक्ष तिथि एकादशी वि. स. 1575 (एक हजार पाँच सौ पचहतर) सन् 1518 को कबीर साहेब ने एक चद्दर नीचे बिछाई और एक ऊपर ओढ़ ली। कुछ फूल कबीर साहेब के नीचे वाली चद्दर पर दो इंच मोटाई में बिछा दिये। थोड़ी सी देर में आकाशवाणी हुई कि मैं तो जा रहा हूँ सतलोक में (स्वर्ग से भी ऊपर)। देख लो चद्दर उठा कर इसमें कोई शव नहीं है। जो वस्तु है वे आधी-आधी ले लेना परन्तु लड़ना नहीं। जब चदद्र उठाई तो सुगंधित फूलों का ढेर शव के समान ऊँचा मिला।*

*बीर देव सिंह बघेला और बिजली खाँ पठान एक दूसरे के सीने से लग कर ऐसे रोने लगे जैसे कि बच्चों की माँ मर जाती है। फिर तो वहाँ पर रोना-धोना शुरु हो गया। हिन्दु और मुसलमानों का प्यार सदा के लिए अटूट बन गया। एक दूसरे को सीने से लगा कर हिन्दु और मुसलमान रो रहे हैं। कहने लगे कि हम समझे नहीं। ये तो वास्तव में अल्लाह आए हुए थे। और ऊपर आकाश में प्रकाश का गोला जा रहा था। तो वहाँ मगहर में दोनों धर्मों (हिन्दुओं तथा मुसलमानों) ने एक-एक चद्दर तथा आधे-आधे सुगंधित फूल लेकर सौ फूट के अंतर पर एक-एक यादगार*

*भिन्न-भिन्न बनाई जो आज भी विद्यमान है तथा कुछ फूल लाकर काँशी में जहाँ कबीर साहेब एक चबूतरे(चौरा) पर बैठकर सत्संग किया करते वहाँ काँशी चौरा नाम से यादगार बनाई। अब वहाँ पर बहुत बड़ा आश्रम बना हुआ है। मगहर में दोनों यादगारों के बीच में एक साझला द्वार भी है आपस में कोई भेद-भाव नहीं है। हिन्दु और मुसलमान ऐसे रहते हैं कि जैसे माँ जाए भाई रहा करते हैं। उनसे हमने बात की थी तो उन्होंने कहा कि हमारी आज तक धर्म के नाम पर कोई लडाई नहीं हुई। वैसे कहा सुनी तो घर के घर में हो जाती है। फिर भी हमारी आपस में धर्म के नाम पर लड़ाई नहीं होती है। बिजली खाँ पठान ने दोनों यादगारों के नाम पाँच सौ, पाँच सौ बीघा जमीन दी जिसमें हिन्दु तथा मुसलमान अपने प्रबन्धक कमेटी बनाकर व्यवस्थित किए हैं। यह दास (संत रामपाल दास) सैंकड़ों सेवकों सहित तीन बार इस एतिहासिक धार्मिक स्थल को देखकर आ चुका है। वहाँ जाकर ऐसा लगता है जैसे हमने सच्चाई का खजाना प्राप्त हो गया हो। बोलो सतगुरु देव की जय ''सत साहेब।''*

*कबीर साहेब कहते थे कि 'पूरे गुरु' से पूर्ण मंत्र लेकर आजीवन गुरु मर्यादा में रहते हुए भक्ति करने वाला भक्तात्मा कहीं भी प्राण त्यागे वह अपने ईष्ट धाम में जायेगा। छुड़ानी जाने से ही स्वर्ग प्राप्त होता है, यह बिल्कुल गलत है। छुड़ानी धाम आदरणीय है, पूजनीय नहीं।*

*प्रश्न 14 - कुछ लोग जो भक्ति करते हैं, कुछ बाल कटवा लेते हैं, कुछ लटा रखते हैं। क्या भक्त पुरूष और भक्त स्त्री दोनों को समान अधिकार है आडम्बरों को त्यागने का। मैं ये पूछना चाहती हूँ कि यदि कोई नारी बाल चाहे कटवा ले अथवा बढ़ा ले इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। मेरा मतलब है कि यदि वो लम्बी जटाएँ न रख सके और बाल कटवा कर भक्ति करें तो भक्ति कर्म के फल में कोई अन्तर तो नहीं आएगा।*

*उत्तर - बाल छोटे या बड़े स्त्री या पुरूष के न तो भक्ति बाधक हैं और न ही सहयोगी।*

*प्रश्न 15 - मैं साधारण जीवन की बात नहीं कर रहा। मैं भक्ति मार्ग के बारे में पूछना चाहता हूँ कि मनुष्य योनी प्राप्त करने पर कुछ आत्माएँ पुरूष शरीर प्राप्त करती हैं तो कुछ स्त्री का शरीर प्राप्त करती हैं। भक्ति मार्ग में सारी सुविधाएँ जैसे कि कोई भी ग्रन्थ पढ़कर देखें तो मनुष्य शब्द की जगह 'पुरूष' शब्द का प्रयोग होता है और ये कहा जाता है कि स्त्री की संगत से दूर रहो, स्त्री-पुत्र आदि में मोह न रखो और आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करने का अधिकार भी ज्यादातर उस आत्मा को जल्दी प्राप्त होता है जो नारी शरीर की अपेक्षा नर के शरीर में है। आप बताईये यदि कोई आत्मा भक्ति मार्ग को अपनाती है तो भी ये भेद भाव रहता है या फिर शरीर को असत् मानकर भगवान(कबीर साहेब) उसे केवल आत्मा के रूप में ही देखते हैं। यदि कोई आत्मा इस जन्म में नारी शरीर में है तो उसे भक्ति मार्ग का वो अधिकार है जो उस आत्मा को है जो नर के शरीर में है। यदि नहीं है तो*

भी बता दीजिए। क्योंकि मैं इसी जन्म में सतलोक जाना चाहता हूँ और कोई भी पाप नहीं करना चाहता जो मुझे मृत्युलोक में सुख दे लेकिन सतलोक से वंछित रख दे।

उत्तर - स्त्री और पुरूष में परमात्मा की दृष्टि में कोई अन्तर नहीं है। सत भक्ति करने वाले स्त्री या पुरूष गृहस्थी या ब्रह्मचारी दोनों ही सफल होते हैं। जैसे गरीबदास जी स्वयं बाल-बच्चेदार थे। वे स्वयं भी अमर हुए और साथ में दूसरों के लिए उदाहरण भी बने।

प्रश्न 16 - कुछ लोग कहते हैं कि इस दिन या उस दिन (मंगलवार या कोई भी माना हुआ दिन) बाल नहीं काटने चाहिए, वीरवार को कपड़े नहीं धोने चाहिए या मंगलवार को नहीं नहाना चाहिए। यदि ऐसी कोई और भी बातें हो तो आप मुझे बता दीजिए। मेरा मतलब है कि कबीर पंथ में जो मानने योग्य बातें हों केवल वहीं मानूं और नहीं।

उत्तर - कबीर साहेब की शरण में आने के बाद कोई दिन या मुहूर्त्त बाधक नहीं है।

प्रश्न 17 - यदि कोई व्यक्ति हमें (जो व्यक्ति कबीर पंथ से नाम ले) माता जी या किसी अन्य देवी-देवता का प्रसाद दे तो हमें आदर से लेना चाहिए? और पूजा केवल हम गुरु जी द्वारा बताई ही करें। मेरा मतलब है कि दूसरे देवी-देवताओं की पूजा न करें पर उनके प्रसाद और श्री विग्रह आदि अनादर भी न करें। इसी प्रकार यदि हम किसी अन्य गुरु को जो ब्रह्म तक की या यूं कहें तो श्री विष्णु भगवान की साधना बतातें हो, को प्रणाम करें लेकिन आस्था अपने गुरु जी (संत श्री रामपाल जी) में रखें तो इसका कोई पाप तो नहीं माना जाएगा।

उत्तर - अनादर तो किसी का भी नहीं करना है। जहाँ तक सत्कार का प्रश्न है 'मान लिजिए आप दिल्ली के रेलवे स्टेशन पर खड़े हो और आपने टिकट भी बुक करवा रखी है। आपने किसी व्यक्ति से पूछा कि कलकता जाने वाली ट्रेन कौन-से प्लेटफार्म पर लगती है। उसने इशारा कर दिया कि सामने खड़ी ट्रेन कलकता जा रही है। आप उसके कथन पर विश्वास करके ट्रेन में सवार हुए। काफी सफर तय करने के उपरान्त टिकट चैक करवाया। तब आपको पता चला कि उस नादान ने मुझे श्री नगर वाली ट्रेन में बैठा दिया। यदि वह व्यक्ति आपको फिर कभी मिलें तो आप उसका क्या करोगे? सत्कार या ....।

इसी प्रकार देवी-देवताओं की साधना अविधिपूर्वक होने से गीता में नीचों की पूजा लिखा है(अ. नं. 7 के श्लोक नं. 12 से 23)। इसलिए उस प्रसाद को खाने वाले भी दोषी होते हैं और भक्ति बाधक बन जाता है। यदि कोई हमें जहर दे तो क्या हम उसको स्वीकार करेंगे।

प्रश्न 18 - माया निवृति बहुत कठिन है। मन बुराई में न जाए तो किसी भी तरह मन को भगवान में लगाना चाहिए। यदि हम कबीर साहेब का सत्संग सुनना चाहें या फिर उनके ही गान (टी.वी. पर) तो ये कठिन है। क्योंकि सारे भक्त या

*गुरु या चैनल श्री विष्णु भगवान से आगे बढ़ते ही नहीं या फिर माता जी से आगे। यदि कोई मनुष्य भक्ति भाव को बनाए रखने के लिए श्री कृष्ण का सत्संग या गाना सुनें लेकिन श्रद्धा दिल से कबीर साहेब में रखे तो क्या उसका ये कर्म ब्रह्म पूजा में गिना जाएगा अर्थात् उसके पास से नाम चला जाएगा।*

*उत्तर - मन को भक्ति में लगाने के लिए गुरु कृपा आवश्यक है। ब्रह्म तथा उससे नीचे की पूजाएँ माता या विष्णु, श्री कृष्ण पूजा यह तो प्राइमरी क्लास की शिक्षा जानो। जब बच्चा कॉलेज में हो जाता है तो वह प्राइमरी की पुस्तकें नहीं पढ़ता। प्राइमरी की पुस्तकों में उसकी रूची ही नहीं बनेगी। इसलिए जब आप इस सतमार्ग को समझोगी फिर आप ये प्रश्न नहीं करोगी। आप अन्य संतों का सत्संग टी.वी. पर इस दृष्टि कोण से देख व सुन सकते हो कि ये क्या बता रहे हैं और संत रामपाल दास जी क्या बता रहे हैं? इनमें कितनी भिन्नता है। ऐसे नाम खण्ड नहीं होगा।*

*प्रश्न 19 - ब्रह्मलीन गुरु का अर्थ क्या ये है जो कबीर साहेब के पास सतलोक न जा सका और ब्रह्म (काल) की शरण में हो?*

*उत्तर - ब्रह्मलीन का अर्थ है काल के ही जाल में रह जाना।*

*मैंने एक पुस्तक ''कबीर दोहावली'' पढ़ी। उससे कुछ प्रश्न हैं।*

*प्रश्न 20 - दोहा नं. 218*

गुरु नारायण रूप है, गुरु ज्ञान को घाट।
सतगुरु वचन प्रताप सों, मन के मिटे उचाट।।

*यहाँ पर नारायण का अर्थ क्या है? वैसे तो क्या नारायण काल भगवान को नहीं कहते या विष्णु भगवान को?*

*उत्तर - नारायण का अर्थ प्रभु होता है। तीन लोक के प्रभु ब्रह्मा-विष्णु-महेश ये विभागीय मंत्री हैं। 21 ब्रह्मण्ड का नारायण ब्रह्म है, सात शंख ब्रह्मण्ड का नारायण परब्रह्म है और अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का नारायण कबीर परमेश्वर है। जो 'सच्चा गुरु' जिस नारायण का मार्ग दर्शन करता है वह उसी का स्वरूप समझना चाहिए।*

*प्रश्न 21 - दोहा नं. 678*

राम नाम चीन्हा नहीं, कीना पिंजर बास।
नैन न आवे नींदरौं, अलग न आवे मास।।

*भावार्थ राम नाम के ज्ञान का अमृत पान नहीं किया केवल शरीर को संवारा। ऐसे अज्ञानी का जीवन दुःखदायी होता है। जिनको ब्रह्म ज्ञान प्राप्त हो गया है उसे अज्ञान की निद्रा अपने वश में नहीं कर पाती अर्थात् उसे परम ज्ञान आनन्द प्राप्त होता है।*

*यहाँ पर ब्रह्म ज्ञान का अर्थ काल भगवान का ज्ञान। इसी प्रकार कुछ संतों को ब्रह्मज्ञानी कहा जाता है। उसका मतलब कि वो काल भगवान तक का ही ज्ञान रखते हैं? वैसे इस दोहे में (लाल अक्षरों में जो लिखा है) कबीर साहेब ने तो ब्रह्म शब्द का प्रयोग नहीं किया।*

*उत्तर - इसका उत्तर 20 में देखें।*

*प्रश्न 22 - दोहा नं. 680*

जाके मुख माथा नहीं, नाहीं रूप कुरूप।
पुहुप बास ते पामरा, ऐसा तत्व अनूप।।

*भावार्थ निराकार ब्रह्म का कोई रूप, कोई आकार नहीं है। किन्तु वे सर्वत्र विद्यमान हैं। न तो उनका मुख है न ही ललाट है। न तो वे सुन्दर हैं और न ही वे कुरूप हैं। वह निराकार ब्रह्म पुष्प के सुगन्ध की भांति है।*

*यहां ब्रह्म के बारे में कहा गया है या पूर्ण ब्रह्म के बारे में अर्थात् कबीर साहेब के बारे में। यदि इस दोहे में कबीर साहेब अपने बारे में (पूर्ण ब्रह्म) कह रहे हैं तो निराकार कैसे? वो तो आकार में हैं?*

*उत्तर - कबीर साहेब आकार में हैं। निराकार उनकी शक्ति है, उसके बारे में यहाँ कहा है।*

*प्रश्न 23 - जब हम वापिस सतलोक जाएगें और वहाँ रहेंगे तो उस समय मान लिजिए कि हम आत्माओं को अपने जाल में फंसाने के लिए कोई और काल भगवान जैसी आत्मा आ गई और हमें अज्ञान के कारण विश्वास हो गया कि ये तो बहुत सुख देगा। इसलिए हम फिर किसी के जाल में फँसने लगे तो उस समय क्या कबीर पिता जी हमारी रक्षा करेंगे या फिर पहले की तरह हमारे हाँ कहने पर भेज देंगे? (यदि नहीं भेजेंगे तो पहले तो भेज दिया था)*

*उत्तर - जैसे कि कोई सफर कर रहा है और वह रास्ता बहुत खतरनाक है। रस्ते में बदमाश भी टकराए, बदतमीजियाँ की गई, परेशानियाँ आई। उस समय इंसान यही सोचता है कि आज किसी प्रकार सुरक्षित चला जाऊं। फिर कभी दोबारा इस रास्ते से नहीं आऊँगा। वह फिर दोबारा उस रास्ते न जाकर सही रास्ते ही जायेगा। या यों समझे कि किसी व्यक्ति ने बिजली का तार पकड़ रखा है जो क्रेक था। उसे करंट लगा। क्या अन्य उस तार को पुनः छुयेंगे अर्थात् नहीं छुयेंगे। बाकी के सावधान हो जायेंगे और दूर हो जायेंगे तथा दूसरों को भी बतायेंगे। ठीक इसी प्रकार जो आत्मा काल से निकल जायेगी। वह फिर पुनः ईधर नहीं आयेगी और वहाँ सभी को बताएगी।*

*प्रश्न 24 - नारद जी ने जिन गुरु से नाम लिया वो तो कबीर साहिब का सच्चा नाम देते थे तो नारद जी ने तो ध्रुव जी और प्रहलाद जी को जो नाम मंत्र दिया वो तो मैंने भागवत में पढ़ा। वो तो सच्चा नाम नहीं था। जो नाम आपने फोन पर बता कर भी कहा था कि ये तो कोई मंत्र नहीं। मैंने वो मंत्र तो नहीं लिखा। क्योंकि मुझे लगता है कि मंत्र नहीं लिखना चाहिए। क्या गलत मंत्र बोल या लिख सकते हैं कि ये गलत है।*

*उत्तर - आप अधूरे ज्ञान पर आधारित हो इसलिए मुझ दास द्वारा लिखी पुस्तकें पढिए।*

*प्रश्न 25 - यदि कोई भक्त पहले तो अपने गुरु जी से सतनाम ले और सतनाम*

*देने के बाद उसके गुरु जी शरीर छोड़ दे तो क्या वो अन्य सद्गुरु जी से सार नाम प्राप्त कर सकता है? या फिर दुबारा सतनाम और सारनाम लेना पड़ेगा?*

*उत्तर - जैसे कोई शिक्षा प्राप्त कर रहा है और वह पहले ही यह बातें करने लग जाए कि क्या मैं नौकरी लग जाऊँगा, लग जाऊँगा तो मुझे कोई हटा तो नहीं देगा या फिर मेरी प्रमोशन होगी या नहीं होगी, कहीं प्रमोशन करने वाला अधिकारी रिटायर तो नहीं हो जायेगा? ये व्यर्थ के प्रश्न हैं।*

*प्रश्न 26 - जब किसी के पास से नाम चला जाता है और वो उसे गुरु जी से दुबारा प्राप्त करता है तो भी क्या वो उसी जन्म में सतलोक चला जाता है अथवा एक व्यक्ति अपने जीवन में कितनी बार गलती करने पर दोबारा नाम प्राप्त करने का अधिकारी होता है?*

*उत्तर - जान-बूझ कर की हुई गलती की क्षमा एक बार हो सकती है। अनजानपन में या विशेष परिस्थिति में हुई गलती की क्षमा स्वतः ही हो जाती है। जो हृदय से नहीं की जाती। उससे नाम खण्ड नहीं होता। दोबारा नाम लेकर सत भक्ति करता हुआ इसी जन्म में ही सतलोक जा सकता है।*

*प्रश्न 27 - यदि कोई भक्त जिसने कबीर सोहब का नाम लिया है और वो अपनी आँखे या कोई भी शरीर का भाग दान कर दे तो क्या सतलोक में उसे कोई कठिनाई तो नहीं होगी। जैसे आँख दान करने से देखने में कठिनाई?*

*उत्तर - कोई बाधा नहीं।*

*प्रश्न 28 - पोचा लगाने में ब्रह्म हत्या होती है? हम अपने दैनिक जीवन में इस तरह के कार्य जैसे आग जलाना इत्यादि तो करते ही रहते हैं और नहाते समय कीटाणुओं को मारते ही हैं। तो इससे तो हमें पाप लगता होगा। क्या कबीर साहेब का नाम इस प्रकार की क्रियाओं से हमारे पास से चला जाता है? (सत चाहे कटु हो पर बातईए)*

*उत्तर -*

इच्छा कर मारे नहीं बिन इच्छा मर जावै।
कहै कबीर ता दास को, पाप नहीं लगावै।।

*पोचा लगाते समय जीव हिंसा करने का इरादा नहीं होता, न ही आग जलाने या नहाने में। इसलिए इनका पाप नहीं लगता। जैसे कोई चींटी चल रही है और उसके अन्दर कोई सुई घुसों दे तो पाप है।*

*प्रश्न 29 - क्या हर जन्म में जो काल और शेराँवाली माता होती है वो वही पहले वाली आत्मा होती है अर्थात् काल भगवान और शेराँवाली माता की आत्मा जो पिछले जन्म में भी थी?*

*उत्तर - वही होते हैं।*

*प्रश्न 30 - माता के भक्त अधिकतर काले रंग से परहेज करते हैं। तो क्या कबीर पंथीयों के शिष्यों को भी किसी विशेष ऐसे किसी नियम का पालन करना होता है। एक और बात सिर पर टोपी या कपड़ा स्त्री और पुरूषों को कब-कब*

*रखना चाहिए अर्थात् हर पवित्र लेख पढ़ते समय या सत्संग सुनते समय भी। इसका कोई कारण?*

*उत्तर - ये मूर्खों का नियम है। कबीर परमेश्वर के मार्ग में ऐसा कुछ नहीं है।*

*प्रश्न 31 - स्त्रियों को पुरूषों की अपेक्षा थोड़ा अपवित्र शरीर प्राप्त होता है। तो क्या वो स्त्री की आत्मा पूरा महीना नाम का जाप और किसी पवित्र लेख का या ग्रन्थ का पठन पुरूषों की भांति कर सकती हैं। जब स्त्रीयों को नाम लेना हो तो उनके लिए कोई विशेष दिन है? क्या नाम हर स्त्री पुरूष को प्रतिदिन स्नान करके जपना चाहिए या फिर मन में हर समय जपने का अधिकार है चाहे शरीर पवित्र या अपवित्र। इसी प्रकार कोई ग्रन्थ भी स्नान करके पढ़ना चाहिए या ऐसे भी पढ़ सकते हैं। (अर्थात् स्त्रियाँ मासिक धर्म में नाम का जाप करें या पवित्र ग्रन्थ पढ़े तो क्या वो पाप की भागी बनेगी। क्योंकि उस समय स्त्री शरीर को बहुत अपवित्र माना जाता है। क्योंकि जब मेरी पत्नी ने सरस्वती मंत्र लिया था तो बताया गया था कि स्त्रियाँ मासिक धर्म के दिनों में पवित्र माला को हाथ न लगाएँ। कृपया ये शंका पूरी तरह दूर करें क्योंकि एक स्त्री मासिक धर्म में किसी पवित्र मन्दिर में शायद 'बाबा बालक नाथ' के चली गई थी तो तब से वहाँ स्त्रियों का जाना मना है। इसलिए ये बताएं कि स्त्रियों के लिए विशेष नियम क्या हैं? कहीं ऐसा न हो कि नाम लेकर भी सतलोक न जा सके। ये सभी स्त्रियों के लिए जानना अत्यंत आवश्यक है)*

*उत्तर - यह अनजानों का ही नियम है। कबीर साहेब के मार्ग में सूतक(बच्चे के जन्म के दौरान) और पातक (किसी की मृत्यु के दौरान या स्त्रियों के मासिक धर्म के दौरान) धार्मिक पुस्तकें पढ़ना, दीप-ज्योति जगाना व मंत्र जाप करना बंद नहीं करना होता, प्रतिदिन की तरह ही करते रहना चाहिए। स्नान करना जरूरी है। यदि किन्हीं परिस्थितियों में स्नान नहीं भी कर पाए तो हाथ-पैर-मुख धोकर पवित्र पुस्तकें पढ़ सकते हैं। ज्योति आदि लगा सकते हैं। नाम(मंत्र) जाप के लिए नहाना-धोना विशेष जरूरी नहीं।*

*प्रश्न 32 - गुरु जी (संत श्री रामपाल जी महाराज) 11 वें गुरु हैं शायद तथा कबीर साहेब पहले गुरु हैं दूसरे गुरु गरीबदास। क्या गरीबदास जी ने अगले तीसरे गुरु जी को नाम उपदेश देने का अधिकार स्वयं दिया था या कबीर साहेब ने ही तीसरे गुरु जी को आदेश दिया था। इसी प्रकार क्या तीसरे गुरु जी ने चौथे गुरु जी को नाम उपदेश देने का अधिकार स्वयं दिया था या कबीर साहेब ने। मेरा कहने का अभिप्राय ये है कि कबीर साहेब ने क्या गरीबदास से लेकर राम देवानंद गुरु जी (10 वें गुरु जी) तक सबको खुद ही आकर कहा कि आप नाम दीजिए या फिर ये पहली बार में कह दिया था जब पृथ्वी (मृत्युलोक) पर आये थे कि जिनको उनके गुरु आदेश देंगे वो ही नाम देंगे।*

*उत्तर - यह नाम देने की आज्ञा की परम्परा कबीर साहेब से गरीबदास को गरीबदास से शीतलदास जी को ऐसे ही चलती आ रही है।*

*मेरी गुरु प्रणाली : ---*

1 *बन्दी छोड़ कबीर साहिब जी महाराज (कांशी, उत्तर प्रदेश)*
2 *बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज (छुड़ानी, झज्जर(हरियाणा))*
3 *संत शीतलदास जी महाराज (बरहाना, रोहतक(हरियाणा))*
4 *संत ध्यानदास जी महाराज*
5 *संत रामदास जी महाराज*
6 *संत ब्रह्मानन्द जी महाराज (करौंथा, रोहतक(हरियाणा))*
7 *संत जुगतानन्द जी महाराज*
8 *संत गंगेश्वरानन्द जी महाराज (बाजीदपुर, दिल्ली)*
9 *संत चिदानन्द जी महाराज (गोपालपुर धाम, सोनीपत(हरियाणा))*
10 *संत रामदेवानन्द जी महाराज (तलवंडी भाई, फिरोजपुर(पंजाब))*
11 *संत रामपाल दास महाराज*

*प्रश्न 33 - उत्तर प्रदेश और छुड़ानी धाम में कबीर साहेब ने जिन दो भक्तों को नाम देने का अधिकार दिया क्या उनके कोई गुरु नहीं थे। यदि थे तो उनके गुरु ही उनको आदेश दे देते स्वयं कबीर साहेब को क्यों आना पड़ा। ये बात स्पष्ट कीजिए। क्या ये जरूरी है कि कबीर साहेब जिनको आकर कहें वो ही नाम दें। ये बात मुझे थोड़ी अच्छी तरह समझाये क्योंकि लोग निष्काम भक्ति करके अज्ञान के कारण सतलोक नहीं जा पाते और कबीर साहेब सभी आम लोगों को दर्शन देकर शायद इतना नहीं समझाते। ये मैं इसलिए भी जानना चाहता हूँ कि कुछ गुरु जो कबीर पंथी हैं और जिनको अधिकार भी है अपने गुरु जी से नाम देने का उनको भी कबीर साहेब ने जल्दी दर्शन नहीं दिए। ऐसा मैंने कुछ सुना था। शायद बाद में दे दिये हों दर्शन ये मुझे पता नहीं।*

*उत्तर - जिस समय पृथ्वी पर सत भक्ति मार्ग दर्शक संत नहीं रहते तब कबीर साहेब स्वयं आकर सत भक्ति प्रारम्भ करके चले जाते हैं और जिन संतों को नाम देने का अधिकार नहीं है वे भी नाम देते रहते हैं जो गुमराह कर रहे हैं।*

*प्रश्न 34 - जब कबीर साहेब ने आप (संत श्री रामपाल जी महाराज) को दर्शन दिए, तो क्या कबीर जी ने आपको नाम देने का स्वयं भी आदेश दिया। इस प्रश्न के कारण आप सोच रहे होंगे कि मैं बहुत शंकी हूँ। ऐसी बात नहीं है। मैंने आप का सत्संग सुना टी.वी. पर। वहीं से मुझे सारा ज्ञान प्राप्त हुआ। मुझे तो पहले ये भी नहीं पता था कि कबीर साहेब भगवान हैं। मुझे आज के समय में गुरु जी से ज्यादा श्रद्धा किसी और में नहीं । बस ये डर है कि कबीर जी किसे नाम देने का अधिकारी घोषित करते हैं। जिसे वो स्वयं कहे या जिसे सद्गुरु कहें! (मैं आप से इस प्रश्न के लिए माफी मांगता हूँ।)*

*उत्तर - मुझे(संत रामपाल दास) को नाम देने की आज्ञा मेरे पूज्य गुरुदेव स्वामी रामदेवानन्द जी ने दी। कबीर साहेब हमारे परमेश्वर हैं। वे समय-समय पर मुझ दास को संभालते रहते हैं।*

## ''पूर्ण परमात्मा साधक को भयंकर रोग से मुक्त करके आयु बढ़ा देता है''

### भक्त डा. ओम प्रकाश हुड्डा (S.M.O.) का प्रमाण

*प्रमाण ऋग्वेद मंडल 10 सूक्त 161 मंत्र 1, 2 तथा 5 जिसमें परमेश्वर कहता है कि यदि किसी को प्रत्यक्ष या गुप्त क्षय रोग तपेदिक हो उसे भी ठीक करता हूँ तथा यदि किसी रोगी व्यक्ति की प्राण शक्ति क्षीण हो चुकी हो। जिसकी आयु शेष न रही हो तेरे प्राणों की रक्षा करूं तथा तेरी आयु सौ वर्ष प्रदान कर दूं, सर्व सुख प्रदान करूं। मंत्र 5 में कहा है कि हे पुनर्जीवन प्राप्त प्राणी ! तू सर्व भाव से मेरी शरण ग्रहण कर। यदि पाप कर्म दण्ड के कारण तेरी आँखें भी समाप्त होनी हों तो मैं तुझे पुनर् आजीवन आँखें दान कर दूं। तुझे रोग मुक्त करके सर्व अंग प्रदान करूं तथा तुझे प्राप्त होऊं अर्थात् मिलुं।*

*(1)*

जम जौरा जासे डरें, मिटें कर्म के लेख।
अदली अदल कबीर हैं, कुल के सतगुरु एक।।

*उपरोक्त पंक्तियाँ मेरे जीवन में पूर्ण रूप से सत्य घटित हुई।*

*मैं भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा(S.M.O. - M.B.B.S., M.S.(Eye specalist), 18 A, सरकुलर रोड़ रोहतक में रहता हूँ। मेरा मोबाईल नं. 9813045050 है। मेरा जन्म 12 अप्रैल 1953 को गाँव किलोई जिला-रोहतक में हुआ। मेरी पाँचवी से बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई D.A.V. स्कूल व D.A.V. कॉलेज अमृतसर में हुई। अमृतसर में मेरे बड़े भाई Librarian के पद पर D.A.V. स्कूल में कार्यरत थे। वहाँ के जानकार लोग उन्हें मास्टर जी तथा मुझे प्यार से छोटे मास्टर जी कहते थे। जब मैं छट्टी कक्षा में पढ़ता था तो मुझे एक महात्मा ने जो कि दुरग्याना मन्दिर अमृतसर में सेवक था, ने मेरी हस्तरेखा देखकर बताया कि छोटे मास्टर जी आप डॉक्टर बनोगे तथा तुम्हारी आयु केवल पचास वर्ष है। यह कहते हुए यह भय हुआ कि बच्चे को यह सच्चाई बताकर गलत कर दिया, लेकिन मैंने महात्मा की बातों को एक बच्चे की भांति सुना अनसुना कर दिया। मैं बड़ा होकर डॉक्टर बना तथा मैंने M.B.B.S. तथा M.S. (Eye specalist) भी P.G.I. M.S. रोहतक से की है।*

*ठीक पचासवां वर्ष जब पूरा होना था यानी 10/11 अप्रैल 2003 की रात बारह बजे के करीब उस दिन मैं सपरिवार रोहतक में ही था तो मुझे दोनों हाथों में दर्द तथा सीने में भारीपन शुरु हुआ और हम उपचार के लिए P.G.I. M.S. में चले गए। इससे पहले मुझे न ही ब्लड प्रेशर रहता था और न ही मुझे शुगर की बिमारी थी। मैंने नाम लेने से पहले पच्चीस वर्ष लगातार धूम्रपान भी अवश्य किया था।*

*वहाँ ड्यूटी पर तैनात डॉक्टर को मैंने परिचय दिया कि H.C.M.S.I. (Group A) श्रेणी में मैं एस.एम.ओ. के पद पर तैनात हूँ। परिचय देने के बाद डॉक्टर ने तुरन्त*

उचित निरिक्षण के बाद मेरा ईलाज शुरु कर दिया और Intensive Care Unit में शिफ्ट करने तक मुझे सभी गतिविधियाँ पता रही। लेकिन I.C.U. में शिफ्ट करने के कुछ समय बाद से मुझे कुछ मालूम नहीं कि आगे क्या हुआ ? लगभग डेढ़ दो घण्टे के पश्चात मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मुझे काल के दूत चारों तरफ से घेर कर खडे हैं और मुझे कह रहे हैं कि चलो तुम्हारा समय पूरा हो चुका है, हम तुम्हें लेने आए हैं। मैं उनको कुछ भी नहीं कह पाया था कि तभी पूर्ण परमेश्वर कबीर साहेब मेरे सतगुरु तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज के रूप में मेरे बैड के पास प्रकट हुए तो वे काल के दूत जिनका चेहरा डरावना तथा शरीर डील-डोल था, महाराज जी को देखते ही अदृश्य हो गए।

मेरे सतगुरु देव ने मुझे आर्शीवाद दिया तथा कहा कि कबीर परमेश्वर ने आपकी आयु अपने कोटे से (अपनी शक्ति) से बढ़ा दी है ताकि आप अपनी भक्ति पूरी कर सके और सतलोक जा सकें। मैंने रोकर कहा कि मालिक आप ही स्वयं परमेश्वर हो, आपने इस चोले में अपने आपको छुपा रखा है, परमेश्वर भक्ति भी आप ही करवाने वाले हो। मैं भक्ति करने वाला कौन होता हूँ ? इतना कहकर मेरी आँखें खुल गई और मेरी आँखों में आसुंओं के सिवाए कुछ भी नहीं था। तीन दिन बाद जब I.C.U से मुझे वार्ड में लाया जा रहा था तो मैं उठकर पैदल चलने लगा तो एक डॉक्टर ने भाग कर मुझे पकड़ लिया तथा कहा कि क्या कर रहे हो ? आपने पैदल बिल्कुल नहीं चलना, आपको हार्ट अटैक हुआ है।

स्पेशल वार्ड में शिफ्ट करने के बाद डॉक्टर ने मुझे बताया कि हम हैरान हैं कि 10/11 तारीख की रात को आपकी E.C.G./B.P. इत्यादि रिपोर्ट बता रही थी कि आप बचने वाले नहीं हो, लेकिन सुबह आपकी E.C.G. आदि फिर सामान्य शुरु हो गई।

मैंने 25-12-1999 को तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया था। इससे पहले मैं ब्रह्मा कुमारी, जैनी, राधास्वामी का शिष्य रहा तथा D.A.V. School/Colledge का छात्र होने की वजह से आर्य समाज की अमिट छाप मुझ पर थी। गायत्री मंत्र का जाप कई लाख बार किया होगा। घर में लगभग सैकड़ों फोटों सभी देवी-देवताओं की थी। नामदान के बाद सभी देवी-देवताओं की फोटो जल प्रवाह कर दी तथा सभी प्रकार की आन उपासना बंद कर दी तथा सतगुरु रामपाल जी महाराज के आदेशानुसार पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर(कविर्देव) की भक्ति शुरु कर दी। क्योंकि सतगुरु ने कहा है कि

'एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाए। माली सींचैं मूल को, फले–फूले अघाए।।'

एक कबीर परमेश्वर की भक्ति में आरूढ़ होने से वह भी केवल तत्वदर्शी संत से नाम लेने के बाद लाभ यह हुआ कि संत रामपाल जी महाराज ने अपने कोटे से मेरी उम्र बढ़ा दी। यह बातें मैंने तथा मेरे परिवार के सदस्यों ने P.G.I.M.S. में कार्यरत डॉक्टर तथा दूसरे स्टॉफ के सदस्यों को बताई, लेकिन उनके समझ में एक

*न आई। क्योंकि ये बातें समझ में उसी को आयेंगी जिनका चैनल परमेश्वर ऑन करेंगे, अन्यथा संभव नहीं कि कोई इस ज्ञान को समझ सके।*

*मैंने 25-12-1999 को तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज से नामदान लिया तो मुझे मालूम नहीं था कि यही पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब ज्यों के त्यों अवतार आए हुए हैं। लेकिन जब मेरे साथ उपरोक्त घटना घटित हुई तब मुझे यह विश्वास हो गया कि*

माँसा घटे न तिल बढ़े, विधना लिखे जो लेख। साचा सतगुरु मेट कर ऊपर मारें मेख।

***कबीर परमेश्वर सहशरीर संत रामपाल जी महाराज के रूप में आए हुए हैं जो सच्चे सतगुरु हैं और विधना(भाग्य) के पाप कर्मों रूपी लेख को मिटा कर अपनी शक्ति से नये लेख लिख देते हैं।***

## "भक्तमति सुशीला की आँख ठीक करना"

*इसी प्रकार मेरी धर्मपत्नी श्रीमती शीला हुड्डा को 6-12-2004 को दाईं आँख से दो-दो वस्तुएं नजर आनी शुरु हो गई थी। P.G.I.M.S. रोहतक में सभी टेस्ट M.R.I. तथा M.R.I. Angio graphy इत्यादि करवाने तथा सभी वरिष्ठ डॉक्टरों को दिखाया तथा ईलाज भी किया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। प्राइवेट डॉक्टर ईश्वर सिंह इत्यादि को भी दिखाया परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ। यह सभी हमने सतगुरु से आज्ञा लेने के बाद किया था लेकिन जब दवाईयों से कोई लाभ नहीं हुआ तो हमने सतगुरु से प्रार्थना की कि परमेश्वर आप आयु तक बढ़ा देते हो तो आपके लिए यह क्या कठिन है ? कृप्या आप अपने बच्चों पर यह कृपा भी कर दो। सतगुरुदेव ने कृपा की और सिर पर हाथ रखते ही दाई आँख बिल्कुल सीधी हो गई और दो-दो वस्तु नजर आनी बंद हो गई। जैसे पहले थी बिल्कुल ज्यों की त्यों हो गई। अब इनको पूर्ण परमात्मा पाप कर्मों को जलाकर नष्ट करने वाले भगवान नहीं कहे तो और क्या कहें ? कृप्या पाठक स्वयं पढ़कर विचार कर निर्णय लें और अति शीघ्र आप भी अपनी मान-बड़ाई व शास्त्रविधि रहित साधना को त्याग कर सतलोक आश्रम करौंथा में आकर परम पूज्य सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेकर अपना व अपने परिवार का कल्याण करवाऐं। ''सत साहेब''*

*प्रार्थी*

*भक्त डॉ. ओमप्रकाश हुड्डा।*

## '' तीन ताप को पूर्ण परमात्मा ही समाप्त कर सकता है''

*(2)*

*भक्त राजकुमार ढाका (Ex.Headmaster M.A.B.ED.) का प्रमाण*

*मैं रामकुमार ढाका 'रिटायर हैडमास्टर दिल्ली'(M.A.B.ED.), गाँव सुंडाना, जिला-रोहतक, वर्तमान पता - आजाद नगर, रोहतक(फोन - 01262-297584) में*

*रहता हूँ। सन् 1996 से मेरी पत्नी और दोनों लड़कों को एक बहुत भयंकर बिमारी थी। इस बीमारी से इतने तंग हो गये कि दोनों लड़के कहने लगे कि नौकरी नहीं हो सकती क्योंकि इस बिमारी से गला रूकता था और सांस आना बंद हो जाता था, तभी डाक्टर लेकर आते और नशे का टीका देते, परन्तु रात को ड्यूटी पर होते तब कहां ले जायें, बहुत ही परेशानी हो जाती थी, अफसर भी मुझे बुला लेते थे, मैं उनको बताता तब कहते की ईलाज करवाओ, जब घर पर होते तो डॉ. को रात को दो-दो बार भी आना पड़ता था, क्योंकि कभी किसी घर के सदस्य को तो कभी किसी को। अगर किसी को शक हो तो डबल फाटक पर डॉ. सचदेवा की दुकान है, सचदेवा साहब से पूछ लो कि मास्टर जी के घर पर क्या हाल हो रहा था ?*

*जिसने भी जहाँ पर बताया मैं वहीं पर गया - उत्तर प्रदेश में कराना शामली के पास, उत्तर प्रदेश में खेखड़ा, राजस्थान में बाला जी कई बार, खाटूश्याम जी व कई जगह जन्त्र-मन्त्र वालों के पास, हरियाणा में तो मैंने कोई जगह नहीं छोड़ी, परन्तु कोई फर्क नहीं लगा, करेला के पास खेड़ा कंचनी, बोहतावाला, गोहाना के पास नगर, समचाना, सिकन्दरपुर, खिड़वाली आदि अनेक जगह गया और लगभग तीन लाख रूपये लग गये कोई काम नहीं आये।*

*मैं थक गया और मेरा परिवार बर्बाद हो गया। मेरी पत्नी ने मेरे से कहा कि मेरा जीवन समाप्त होने वाला है तथा भक्त सुभाष पुत्र महेन्द्र पुलिस वाला जिस संत रामपाल की महिमा सुनाता है मुझे उसी संत से नाम दिला दे। पहले मैं किसी बात पर विश्वास नहीं करता था तथा गुरु बनाना तो बहुत ही हेय समझता था। कहा करता था कि तेरा गुरु तो मैं ही हूँ, मैं एम.ए.बी.एड मेरे से ज्यादा कौन गुरु होगा ? परन्तु परिस्थितियों ने मुझे विवश कर दिया तथा मैंने यह भी स्वीकृति अपनी पत्नी को दे दी कि आप नाम ले लो। आप का जीवन शेष नहीं है। क्योंकि उस समय मेरी पत्नी का वजन 50 कि.ग्रा. रह गया था, पहले 80 कि.ग्रा. वजन था। उठने-बैठने से भी रह गई थी, चलना फिरना तो बहुत दूर की बात थी।*

*मैंने कहा मर तो ली, नाम और लेकर देखले, अपने मन की यह और करके देखले, अब मैं तेरे को नहीं रोकूंगा, नाम ले ले, ठीक है, क्योंकि संत रामपाल जी से नाम लेने के लिए कहने दूसरे तीसरे महीने सुभाष हमारा भतीजा आता था, कहता था ताई नाम ले लो नहीं तो मरोगे। मैं कहता था कि कोई डॉ. छोडा नहीं, हम बाला जी आदि सभी तान्त्रिकों के पास सिर मार लिया तो आपका संत क्या ले रहा है ?*

*परन्तु तंग आकर, कहीं बात नहीं बनी तब नाम लेने भेज दी। क्योंकि मैं भी अपने परिवार के आश्रम में जाने के सख्त विरुद्ध था। 16 जनवरी 2003 में नाम लिया और 'गहरी नजर गीता में' नामक पुस्तक साथ लेकर आई। एक महीने में जैसे दीपक में तेल डाल दिया इस प्रकार रोशनी हो गई, हर महीने तीन किलो वजन बढ़ने लगा।*

*तब बड़े लड़के को भी बगैर नाम लिये ही इस माँ के नाम लेने से अच्छी नींद आने लगी, तभी उसने अपनी पत्नी को नाम दिलवाया, फिर मैंने 'गहरी नजर*

गीता में' पुस्तक पढ़ी, तब मैं भी गहराई में गया तो पाया कि ऐसा ज्ञान कभी नहीं पढ़ा व सुना था और मैंने भी अप्रैल 2003 में नाम लिया। आज मेरे घर में सभी बड़े से बच्चे तक ने नाम ले लिया है।

जब वह बिमारी होती थी तब सारा घर कांप उठता था, लड़ाई-झगड़ा, नौकरी में विवाद, डॉ. का आना जाना या मैडीकल में इमरजैंसी में लेकर पहुँचते थे। आज हमारा घर स्वर्ग के समान है और सतलोक जाने की इच्छा है।

एक महीना पहले स्वपन में परमेश्वर कबीर साहेब जी गुड़गाँव सैक्टर 57 में प्लॉट बुक कर गये, जब ड्रा निकला तो वही प्लॉट नंबर मिला जो स्वपन में कबीर परमेश्वर ने बताया था, सुबह समाचार पत्र पढ़ा तो वही प्लॉट नं. अलोट था।

हमारे यहाँ ऐसी बिमारी थी कि कोई भी इतना दुःखी नहीं होगा जो हम थे अब संत रामपाल दास जी महाराज से उपदेश प्राप्त करने के पश्चात् बहुत थोड़े दिनों में हम बहुत सुखी हैं।

मेरे घर पर 'जिन्न'(जिन्द) प्रकट हुआ, उसने कहा मैं आपके आश्रम में जाता हूँ, सब कुछ देखकर आता हूँ, परन्तु मैं शीशों में नहीं जाता जहाँ संत जी बैठ कर सत्संग करते हैं, क्योंकि मैंने सब बातों का पता है, अगर वहाँ जाउंगा तो मेरी पिटाई बनेगी इसलिए मैं वापिस बाहर आ जाता हूँ और तुम कहीं तान्त्रिकों के पास क्या, चाहे बाला जी गये, मैं अंदर जाया ही नहीं करता, बाहर रह जाता हूँ, मेरे को कोई बांधने वाला नहीं है। मेरे साथी डरपोक थे वह भाग गये मैं नहीं जाउंगा, मेरे को पढ़ कर छोड़ रखा है, मैंने तेरे घर व तेरी लड़की के घर की ईंट से ईंट बजानी है। मैं इस प्रकार पढ़कर छोड़ रखा हूँ कि एक के बाद एक सभी के विनाश का नम्बर आयेगा, चाहे कहीं भी भाग लो।

कुछ दिन के बाद वही प्रेत घर में फिर प्रकट हुआ और जोर-जोर से बोलने लगा कहां है तेरा गुरु रामपाल ? कहां है तेरा मालिक कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ? जब भी वह प्रकट होता था मनुष्य की तरह बातचीत करता था। तभी मेरी पत्नी हमारे घर पर बने पूजा स्थल पर चली गई और डण्डौतं प्रणाम किया, तभी जिन्द(प्रेत) की पिटाई आरम्भ हो गयी और कहने लगा क्या पिटाई करते हो, इन दीवारों को अब गिरा दूंगा। उसकी अच्छी पिटाई हुई वो कहने लगा हाय ये तो दीवार नहीं लोहे का जाल है, सरिये हैं। ये मालिक रामपाल जी कहां से आ गये ये तो बरवाला सत्संग करने गये हुए थे(उस दिन संत रामपाल जी महाराज बरवाला जि. हिसार में सत्संग करने गए हुए थे) मैं तो इसलिये आया था कि मालिक यहाँ पर है ही नहीं।

जिन्द ने कहा कि मैं आया था तुम्हारी ईंट से ईंट बजाने परन्तु मेरी ईंट से ईंट बज गई। मेरे को नरक में डालेंगे, मैं चला जाउंगा, मुझे छुड़वा दो। करौंथा आश्रम में संत रामपाल जी बैठे हैं इनको आदमी मत समझना पूर्ण परमात्मा आये हुए हैं। इनको मत छोड़ देना, नहीं तो खता खा जाओगे।

ऐसे ही खेड़ा कचनी वाला पण्डित भी इलाज करता था।

जब मैं खेड़ा कंचनी में गया तो उस पंडित ने बताया कि आपका परिवार एक

*के बाद एक करके खत्म हो जायेगा। मैंने नहीं मानी, परन्तु शाहपुर में ही भाई की लड़कियों की शादी कर रखी है तथा वह पण्डित भी शाहपुर का ही है। फिर पण्डित जी ने हमारे चौधरी को बताया कि रोहतक वाले चौधरी रामकुमार के यहाँ बहुत खतरनाक बिमारी है और सारा परिवार नष्ट हो जायेगा। उनको बुलाकर लाओ। तब हमारे चौधरी साहब ने बटेऊ को मेरे पास भेजा। हमारे बटेऊ जिले सिंह ने बताया और वह साथ लेकर गया। बुलाना तो आसान था परन्तु फिर ईलाज बहुत मुश्किल हो गया। उसके काबू में नहीं आया। मंगल व शनिवार को रात के समय पाँच-पाँच चौकियां आती थी। उन्हें उतारता और साथ में तालाब में डाल देता। यह कार्यक्रम चार साल तक चलता रहा परन्तु बाद में हाथ खड़े कर दिए।*

*मैं बोहतावाला (जीन्द) एक स्याने के पास पहुँचा। उसने कहा कि तेरी बिमारी मैं काट दूंगा। आपकी बिमारी का मुझे पता है। वह हमें कई बार बाला जी भी ले गया, न उस स्याने के काबू में आया और न उसके मन्दिर में। क्योंकि मंगल व शनिवार को चौकियों के आने ने उसको इतना तंग कर दिया कि वह भी हाथ खड़े कर गया, क्योंकि चौकियां जब आती थी तो मेरे पास भी संदेश आ जाता था कि रात 9 से 2 बजे तक आग जला कर, पानी का लोटा लेकर और लाठी लेकर जागते रहना है। यह कार्यक्रम सन् 1996 से 2002 तक चलता रहा। बोतावाले के पास जब चौकी आई तो उसमें एक पर्ची मिली थी बोहतावाले स्याने को कहा था कि बीच से हट जा तेरे को पचास हजार रूपये दे देंगे, नहीं तो तेरी भी खैर नहीं है। उसने डर के कारण मुझे इन्कार कर दिया। मैं दिन में दिल्ली नौकरी करने जाता और रात को पहरा देता। कभी रात को डॉ. को बुला कर लाता। मेरी बहुत ही दुर्दशा थी। मैं ऊपर के काम से तथा सारा परिवार बिमारी से बहुत तंग था। किसी को कहते तो मजाक करते थे, किसी ने भी साथ नहीं दिया। बहुत पैसे (लगभग 3 लाख) खर्च हो गये।*

*मेरी पत्नी चांदकौर को थाईराइड हो गई थी। जनवरी 2003 में डॉ. ओ.पी. गुप्ता ने थाईराईड के लिए तिमारपुर, दिल्ली हस्पताल में दाखिल करवाने के लिए मार्क कर दिया। परन्तु वहाँ न जाकर मैं मैडिकल में डॉ. चुग इसका स्पेशलिस्ट था उनसे ईलाज करवाया, उसने कहा सारी उम्र दवा खानी पड़ेगी, परन्तु अब 2003 में नाम लेने के बाद दवाई बिल्कुल समाप्त हो गई। मैंने डॉ. चुग को भी चैक करवाया, तो हैरान होगये, ये कैसे हुआ, सारी बातें बताई।*

*अब मेरे लड़के व मेरी पत्नी की सभी बिमारियाँ बन्दी छोड़ ने ठीक कर दी।*

*बड़े लड़के का नाम सुरेन्द्र कुमार तथा छोटे लड़के का नाम मनोज कुमार है। दोनों हरियाणा पुलिस में नौकरी करते हैं। जब वे दोनों ही उस जिन्द भूत से ग्रस्त थे व घाल ने भी उन पर कई बार अटैक किया, लेकिन नाम उपदेश ले रखा था। इसलिए उनको परमात्मा कबीर साहिब ने बचा लिया।*

*तत्वदर्शी जगतगुरु संत रामपाल महाराज हमारे लिये ही अवतरित हुऐ हैं क्योंकि जिस परिवार में दो लड़के नौकरी पर दोनों में ही जिन्द हो तो उस घर में क्या होगा। जिस औरत के दोनों लड़कों के साथ ऐसा खिलवाड़ हो और खुद*

*में भी जिन्द हो तो क्या जिन्दगी है ? जो लोग करौंथा आश्रम के बारे में ज्ञान अर्जित नहीं करते वे लोग अंधेरे में हैं। क्योंकि पढ़ने के लिए दिमाग दिया है, पढ़िये और सोचिये कि वास्तविकता क्या है ?*

*हमारा परिवार बर्बाद हो गया था। मेरे बच्चे और मेरी पत्नी जब ठीक हो गई तभी मैंने अपने आपको सतगुरु रामपाल जी के चरणों में समर्पण कर दिया। मेरा कुछ नहीं है। ये तन-मन-धन सभी गुरु जी के चरणों में समर्पित करता हूँ।*

*मेरी लड़की ने व दामाद ने भी नाम ले लिया। आज मेरी बेटी का घर भी स्वर्ग हो गया है। मेरा दामाद शराब पीता था, उसने शराब भी त्याग दी। मेरी लड़की की प्रमोसन, प्लॉट, मकान आदि चन्द दिनों में ही प्राप्त हो गए तथा सबकी मौज हो रही है।*

*सन् 2003 में बन्दी छोड़ गुरु रामपाल जी महाराज ने हमारे पाप कर्मों रूपी सूखे घास के ढेर को सतनाम रूपी अग्नि से जलाकर नष्ट कर दिया। न कोई गंडा, न कोई डोरी, न राख, न ताबिज आदि कुछ नहीं, बस केवल बन्दी छोड के मंत्र(नाम उपदेश) मात्र से सर्व रोग नष्ट हो गए। मंत्र तो मोक्ष प्राप्ति के लिए सभी बन्धनों से छुटकारा पाकर सतलोक ले जाने का है, ये सभी बिमारियां तो रूंगे में कविर्देव की कृपा से ही समाप्त हो जाती हैं। यदि ऐसा न हो तो भक्ति से विश्वास उठ जाता है। अब हम बहुत सुखी हैं। अब चाहे कोई कुछ भी करे, हमारे घर पर कुछ नहीं हो सकता, क्योंकि हम बन्दी छोड़ कबीर साहेब के हंस हैं, उनके चरणों में हैं। मैं भी नहीं मानता था, इन बातों को पाखण्ड कहता था, परन्तु जब एक के बाद एक को डॉ. के पास ले जाता था तथा बिमारी में पैसे भी लगे, तंग भी हुए, तब आँखें खुली वास्तव में ही जाल में फंसा रखा है। इसलिए अपने इस भ्रम को भुला देना कि भूत-प्रेत कुछ नहीं है। मैं कहता हूँ कि बकवास नहीं ये बातें वास्तव में हैं, क्योंकि मरोड़ में मैंने अपने घर को बरबाद कर दिया होता। इसलिए मैं सभी पाठकों से प्रार्थना करता हूँ कि आप भी अपने समस्त दुःखों से छुटकारा पाने व सत्यभक्ति करने के लिए सतलोक आश्रम करौंथा में परम पूज्य संत रामपाल जी महाराज से मुफ्त उपदेश प्राप्त करके अपने मनुष्य जीवन को सफल बनाए।*

*प्रार्थी*
*हैडमास्टर रामकुमार(एम.ए.बी.एड.)*

*सतगुरु रामपाल जी महाराज की ऐसी-ऐसी दर्द भरी लीलाओं को पहले भी समाचार पत्रो में पढ़कर सैकड़ों की संख्या में हमारे पास श्रद्धालु आकर नाम उपदेश लेकर गए हैं। अतः श्रद्धालुओं से प्रार्थना है कि ऐसी दुःखी कहानियों को पढ़कर हर दुःखी जीव सुखी होने के लिए आश्रम में आना चाहेगा, उनसे हमारी करबद्ध प्रार्थना है कि कृप्या आने से पहले फोन पर सम्पर्क करके नाम उपदेश लेने के नियमों के बारे में जानकारी अवश्य ले लें। क्योंकि गुरु मर्यादा के बिना आपको कोई भी लाभ नहीं होगा। हमें पता है कि ऐसे-ऐसे समाचार पत्रों में दुःखी कहानी*

*पढ़कर बहुत संख्या में श्रद्धालु नाम उपदेश लेने के लिए सतलोक आश्रम में आयेंगे, जिनको गुरु मर्यादा (गुरु मंत्र लेने के नियम) की जानकारी होना अति आवश्यक है। कबीर साहेब कहते हैं कि - सौ वर्ष गुरु की सेवा, एक दिन आन उपासी। वो अपराधी आत्मा, पड़े काल की फांसी।।*

*नोट - सतगुरु रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश लेने की कोई फीस नहीं है। कुछ असामाजिक व्यक्तियों ने यह भ्रम उत्पन्न करने का असफल प्रयत्न किया था कि महाराज जी नाम उपदेश देने की फीस/पैसे लेते हैं, जो ऐसा कुछ नहीं है। नाम उपदेश के समय दो छोटी पुस्तकें तथा एक फोटो भी मुफ्त देते हैं।*

*संत रामपाल जी सर्व के हितकारी हैं तथा कहते हैं कि हमारा मार्ग अहिंसा का है। अज्ञान से हमारी लड़ाई शास्त्रों द्वारा ही चलेगी। हम एक कुल पिता की संतान हैं। आज कोई हिन्दू है तो अगले जन्म में मुस्लमान भी हो सकता है, सिख भी हो सकता है, इसलिए -*

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा।
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।
हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, आपस में सब भाई–भाई।
आर्य जैनी और बिश्नोई, एक प्रभु के बच्चे सोई।।
कबीरा खड़ा बाजार में सबकी माँगे खैर।
ना काहूँ से दोस्ती ना काहूँ से बैर।।

*-- बन्दी छोड़ भक्ति मुक्ति ट्रस्ट*

❑❑❑

# "भटकों को मार्ग विषय"

## "भक्त समाज प्रभु की वास्तविक भक्ति से कोसों दूर"

*सतलोक आश्रम करौंथा, जिला-रोहतक, हरियाणा में कविर्देव (कबीर परमेश्वर) के प्रकट दिवस के उपलक्ष्य में चल रहे पाँच दिवसीय (18 से 22 जून तक) सत्संग समारोह में भक्त बसंत सिंह सैनी ने अपनी कहानी सुनाई जो कृप्या निम्न पढ़ें :-*

## "प्रभु प्यासे भक्त बसंत सिंह सैनी को मार्ग मिलना"

*मैं बसंत सिंह सैनी गाँव गांधरा जिला-रोहतक हरियाणा का रहने वाला हूँ तथा पुराना पता म.नं. एस 161 पाण्डव नगर, नजदीक मदर डेयरी, यमुनापार, दिल्ली-92 में रहता था। हमारे परिवार पर मानों दुःखों का पहाड़ टूटा हुआ था। फिर भी परमात्मा को पाने की चाहत व दुःखों की निवर्ति के लिए संतों व महंतों के पास आते जाते रहते थे। परन्तु कहीं भी दुःखों का निवारण नहीं हुआ। आखिरकार एक जाने-माने संत श्री आसाराम बापू से मिले। उस समय बापू जी की संगत दिल्ली में लगभग एक हजार थी। जिसके कारण बहुत नजदीक से मिलने का मौका मिला। हमने अपने दुःख व परमात्मा पाने की जिज्ञासा उनके सामने रखी। उन्होंने हमें 7 मंत्र (ॐ गुरु, हरि ॐ, ॐ ऐं नमः, ॐ नमः शिवाय, ॐ नमो भगवते वासुदेवाय, ह्रीं रामाय नमः व गायत्री मंत्र इत्यादि) बताए। जिनमें से एक छांटने के लिए कहा गया और एक 'सोहं' मंत्र जो स्वांस के द्वारा 'सो' अंदर व 'हं' बाहर निकाल कर जाप के लिए कहा गया। एकादशी व पूर्णिमा का व्रत, सोमवार का व्रत व अष्टमी का व्रत करने को कहा, ज्यादा से ज्यादा त्रिबंध प्राणायाम व सिद्धासन में बैठकर ध्यान लगाना व अनुष्ठान करना बताया। हमने मंत्र लिया तथा अपने दुःख उनके सामने रोए तथा बताया कि हमारे ताऊ जी जो चालीस वर्ष पहले मर गए थे वह बहुत बड़ा प्रेत बना हुआ है। उसने हमारे दो भाईयों को मार दिया, आठ-दस भैंसों को मार दिया, पाँच-छः गायों को मार दिया, पशुओं का कोई भी बच्चा जीवित नहीं रहता। घर के सभी सदस्य बिमार रहते हैं। दुःख के कारण बेहाल हैं तथा किसी भी काम धंधे को नहीं चलने देता। अब कह रहा है कि आपके पिता जी को लेकर जाऊंगा। हमने बापू जी से प्रार्थना की कि हमें बचाओ। परन्तु छः महीने बाद वह प्रेत हमारे पिताजी को भी ले गया। बापू जी ने कहा कि जो हुआ वह तो होना ही था, पशु आदि व धन की हानि तथा शारीरिक बिमारी तो पाप का भोग है जो जीव के प्रारब्ध में लिखा होता है, वह तो भोगना ही पड़ता है। आप भक्ति करो। हम परमात्मा प्राप्ति के लिए लगे रहे। बापू जी के समझाने के बाद हम परमात्मा प्राप्ति के लिए पूरी श्रद्धा से लग गये तथा मैंने (बसंत दास) सबसे पहले श्री आसाराम बापू आश्रम दिल्ली में चालीस दिन का अनुष्ठान महन्त नरेन्द्र ब्रह्मचारी की सलाह से किया। इसके बाद चालीस दिन के छः*

अनुष्ठान आसाराम बापू आश्रम पंचेड़ रतलाम, मध्यप्रदेश में महन्त काका जी की देखरेख में किए। उसके बाद दो अनुष्ठान आसाराम आश्रम साबरमती अहमदाबाद गुजरात के मौन मन्दिर में किए। जहाँ पर श्री आसाराम बापू जी से अच्छी तरह बात करने का मौका मिला। तब मैंने बापू जी से पूछा कि बापू जी जिस परमात्मा को पाने के लिए मैं तथा सारा भक्त समाज लगा हुआ है वह परमात्मा कौन है ? कैसा है ? तथा कहां रहता है ? बताने की कृप्या करें।

यह सुनकर बापू जी ने कहा कि आप लगे रहो सब पता चल जायेगा और बताया कि गीता जी के एक अध्याय का पाठ प्रतिदिन करना है और कभी मेरे दर्शनों की इच्छा हो तो एक क्रिया बताता हूँ कि तीन दिन तक एक कमरे में बंद हो जाओ। कमरे में बंद होने से पहले दिन खाना पीना छोड़ दो ताकि शाम तक लैटरिंग व बाथरूम से निवर्ति हो जाये। उसके तीन दिन तक कुछ भी खाना पीना नहीं है, न बाहर निकलना है। कमरे में रहो, त्राटक करो। घर जाकर मैंने यह तीन बार किया, परन्तु बापू के दर्शन नहीं हुए। अनुष्ठान के समय जीवन मृत्यु से जूझ कर बीमारी का सामना करना पड़ा। परन्तु फिर भी परमात्मा पाने के लिए लगा रहा।

सितम्बर 2000 में संत रामपाल दास जी महाराज का सत्संग काठमण्डी रोहतक में सुना, जिन्होंने तत्वज्ञान के आधार पर गीता जी को समझाया उसके बाद गीता जी का पाठ करने से मन में आने लगा कि गीता जी में भगवान क्या कह रहे हैं और बापू जी क्या बता रहे हैं। कहीं सचमुच हम भगवान के विरुद्ध तो साधना नहीं कर रहे हैं। संत रामपाल जी के द्वारा बताए गीता जी के अनुवाद को समझा तो अंतरात्मा रोने लगी तथा बापू जी से मिलकर यह सब शंकाऐं पूछनी चाही। मैं बापू जी के पास गीता लेकर गया तथा गीता जी को दिखाकर सब शंकाऐं पूछी। परन्तु बापू जी ने किसी भी शंका का समाधान नहीं किया। मैंने बापू जी से कहा कि बापू जी आपको परमात्मा के बारे में नहीं पता तो आप भक्त समाज को अपने पास क्यों उलझा रहे हो, इस पर बाबू जी मेरी तरफ घूर कर बोले कि तू क्या जाने भक्ति के विषय में। मैं उठकर रोता हुआ अपने घर आ गया।

परमात्मा की प्राप्ति न होने से तथा उलझे हुए जीवन को देखते हुए तथा हठ रूपी अनुष्ठान व व्रतों के करने से शरीर काफी कमजोर हो गया और मृत्यु नजदीक दिखाई देने लगी। फिर अन्य संतों (राधास्वामी पंथ, धन-धन सतगुरु, श्री सतपाल जी महाराज, श्री बालयोगेश्वर जी महाराज, दिव्य ज्योति, ब्रह्मकुमारी, निरंकारी मिशन, जय गुरुदेव मथुरा वाले आदि) के पास भटका, परन्तु जो निर्णायक ज्ञान संत रामपाल जी महाराज ने बताया वह उपरोक्त किसी भी संत व पंथ के पास नहीं है। मैं पश्चाताप करने लगा कि इस समय शायद पृथ्वी पर कोई भी संत ऐसा नहीं है जिसको परमात्मा प्राप्ति हुई है और जो यह बता सके कि वह परमात्मा कौन है ? कैसा है ? और कहां रहता है ? यह विचार कर मैं फूट फूट कर रातों रोता रहा, संतों से विश्वास उठ गया। मन में आने लगा कि जब श्री आसाराम जी जैसे सुप्रसिद्ध संत ही शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण कर तथा करवा रहे हैं

तो किस संत पर विश्वास किया जाए। संत रामपाल जी ज्ञान तो श्रेष्ठ बता रहे हैं परन्तु इनके पास जन समूह कुछ भी नहीं है। ये पूर्ण संत कैसे हो सकते हैं ? यह शंका मन में आई। कुछ दिनों के बाद संत रामपाल जी महाराज का एक शिष्य हमारे गाँव का मिला तथा मेरी कहानी सुनकर उसने मुझे फिर से परमात्मा स्वरूप पूर्ण संत रामपाल जी महाराज के सत्संग में दोबारा लाकर बैठा दिया। मैंने एक घंटे का सत्संग सुना और सत्संग के बाद रोता हुआ महाराज जी से मिला। महाराज जी ने मुझे सीने से लगाकर कहा कि जिस संत के पास आप जाते हो वे शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण कर तथा करवा रहे हैं। जैसा यह सब वे पहले ही जानते थे कि मुझे क्या चाहिए और मेरी शंकाओं का समाधान संत रामपाल जी महाराज ने अपने चरणों में बैठाकर इस तरह से किया।

तत्वदर्शी संत रामपाल जी महाराज ने बताया कि पवित्र गीता जी अध्याय 9 मंत्र 25 में पित्तर पूजना अर्थात् श्राद्ध निकालना मना किया है। अन्य देवी-देवताओं की पूजा करने वालों को मन्द बुद्धि वाले लिखा है(गीता अध्याय 7 मन्त्र 12 से 15 तथा 20 से 23 तक)। परन्तु श्री आसाराम जी ''श्राद्ध महिमा'' नामक पुस्तक में श्राद्ध निकालने की श्रेष्ठ विधि बताते हैं। संत श्री आसाराम जी के साबरमति अहमदाबाद आश्रम से प्रकाशित पत्रिका ऋषि प्रसाद अंक-135 मार्च 2004 में लिखा है कि भूत पूजने वाले तथा पित्तरों को पूजने वाले तथा अन्य देवी देवताओं को पूजने वाले क्या बनेंगे, पढिए पत्रिका के अगले अंक में ....। अगले अंक की पत्रिका ऋषि प्रसाद अंक 136 अप्रैल 2004 पृष्ठ 19 में लिखा था कि भूत पूजने वाले भूत लोकों को प्राप्त होंगे तथा पित्तर पूजने वाले पित्तर लोकों को प्राप्त होंगे तथा श्री कृष्ण के पूजारी भगवान श्री कृष्ण जी के बैकुण्ठ लोक को प्राप्त होंगे।

विचारें - श्री आसाराम जी द्वारा प्रकाशित 'श्राद्ध महिमा' नामक पुस्तक में पित्तर पूजने की अच्छी विधि भी लिखी है।

कृप्या सोचें - कोई व्यक्ति यह भी कह रहा हो कि कूएँ में गिरने वाले मृत्यु को प्राप्त होते हैं। फिर स्वयं ही कूएँ में गिरने का परामर्श भी कर रहा है तथा कह रहा है कि कूएँ में गिरने की अच्छी विधि बताता हूँ कि दोनों कदम उठा कर एक दम छलांग लगाऐं। यह कूएँ में गिर कर मरने की श्रेष्ठ विधि है। जो ऐसा नहीं करता वह दोषी है।

क्या वह व्यक्ति नेक है ? यह भूमिका श्री आसाराम जी संत कर रहे हैं कि एक तरफ तो कह रहे हैं कि पित्तर व भूत पूजने वाले भूत व पित्तर बनकर भूतलोक व पित्तरलोक में जायेंगे, जहाँ पर वे भूखे प्यासे रहते हैं। फिर उनको श्राद्धों द्वारा तृप्त किया जाता है। एक और विचारणीय विषय है कि जब अपने माता-पिता जीवित थे तो वे प्रतिदिन कम से कम दो बार भोजन करते थे। अब मृत्यु के पश्चात् वे श्री गीता जी विरुद्ध साधना करके दुःखदाई भूत व पित्तर जूनी को प्राप्त कर चुके हैं। अब एक दिन के श्राद्ध से वे कैसे तृप्त हो सकते हैं। 364 दिन क्या खाऐंगे ? जिसके लिए संत आसाराम जैसे गुरुजन दोषी हैं जो भोली-भाली आत्माओं को गुमराह कर रहे हैं। शास्त्र ज्ञान से अपरिचित संत ही इस जीव को शास्त्र विधि रहित साधना

करवा कर दुःखदाई योनियों में डलवाते हैं।

श्री आसाराम जी श्री शिवजी की उपासना का मन्त्र (ॐ नमो शिवाय) व श्री विष्णु जी का मन्त्र (ॐ नमो भगवते वासुदेवाय) बताते हैं। इसी के अतिरिक्त हरि ॐ, ॐ गुरु आदि नामों में से कोई एक मंत्र अपनी इच्छा अनुसार चुन लेने को कहते हैं तथा सोहं को दो हिस्से करके स्वांस द्वारा स्मरण करना आदि मन्त्र देते हैं जो किसी शास्त्र में प्रमाण नहीं है।

विचार करें - कोई रोगी जिसके पेट में दर्द हो किसी वैद्य के पास ईलाज के लिए प्रार्थना करे। वैद्य उसके आगे छः गोलियां डाल कर कहे की तेरी इच्छा हो, इनमें से एक उठा ले। क्या वह वैद्य हो सकता है ?

पवित्र गीता जी अध्याय 8 मन्त्र 13 में कहा है कि :-

ओम् इति एकाक्षरम् ब्रह्म, व्याहरन् माम् अनुस्मरन्, यः प्रयाति त्यजन् देहम् सः याति परमाम् गतिम् ।। 13।।

इसका शब्दार्थ है कि गीता बोलने वाला ब्रह्म अर्थात् काल कह रहा है कि (माम् ब्रह्म) मुझ ब्रह्म का तो (इति) यह एक (ओम् एकाक्षरम्) ओम् एक अक्षर है (व्याहरन्) उच्चारण करके (अनुस्मरन्) स्मरण करने का (यः) जो साधक (त्यजन् देहम्) शरीर त्यागने तक अर्थात् अन्तिम स्वांस तक (प्रयाति) स्मरण साधना करता है (सः) वह साधक ही मेरे वाली (परमाम् गतिम्) परमगति को (याति) प्राप्त होता है।

भावार्थ है कि श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत् प्रवेश करके ब्रह्म अर्थात् हजार भुजा वाला ज्योति निरंजन काल कह रहा है कि मुझ ब्रह्म की साधना केवल एक ओम् (ॐ) नाम से मृत्यु पर्यन्त करने वाले साधक को मुझ से मिलने वाला लाभ प्राप्त होता है, अन्य कोई मन्त्र मेरी भक्ति का नहीं है तथा अपनी गति को भी गीता अध्याय 7 मन्त्र 18 में अनुत्तमाम् अर्थात् अति घटिया बताया है। इसी का प्रमाण गीता अध्याय 9 मन्त्र 20 से 25 में कहा है कि जो तीनों वेदों(ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद) में वर्णित विधि द्वारा मेरी साधना करते हैं तथा अन्य देवताओं की पूजा करते हैं उनकी जन्म-मृत्यु तथा स्वर्ग-नरक बना रहता है तथा पित्तर पूजने वाले (श्राद्ध करने वाले) पित्तर बनकर पित्तरों को प्राप्त होते हैं। भूत पूजने वाले (तेरहवीं, सतरहवीं, बर्षी, अस्थियां उठा कर गंगा आदि में क्रिया करवा कर प्रवाह करवाना, पिण्ड भरवाना आदि भूत पूजा है) भूत बन कर भूतलोक में चले जायेंगे, फिर पृथ्वी पर भी भटकते रहेंगे। यह पूजा अविधि पूर्वक अज्ञान पूवर्क मन माना आचरण है। इसलिए व्यर्थ है। प्रमाण गीता अध्याय 16 मन्त्र 23-24 । विशेष : यहाँ चौथे अथर्ववेद का विवरण इसलिए नहीं है कि इसमें पूजा विधि कम तथा सृष्टी रचना अधिक है। इसलिए गीता अध्याय 18 मन्त्र 62 में कहा है कि उस परमात्मा की शरण में जा जिससे तेरी पूर्ण मुक्ति होगी तथा परम शान्ति तथा शाश्वत् स्थान अर्थात् सत्यलोक को प्राप्त होगा तथा गीता अध्याय 15 मंत्र 4 में कहा है कि तत्वदर्शी संत मिलने पर उसके बताए अनुसार शास्त्र विधि अनुसार साधना करनी चाहिए। फिर उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात्

*साधक का कभी जन्म-मृत्यु नहीं होता अर्थात् अनादि मोक्ष प्राप्त हो जाता है।(गीता बोलने वाला काल अर्थात् क्षर पुरुष-ब्रह्म कह रहा है कि) मैं भी उसी आदि पुरुष परमेश्वर की शरण में हूँ।*

*संत रामपाल महाराज जी ने बताया कि अन्य सर्व संत कहते हैं कि पाप का भोग तो प्रारब्ध में लिखा होने के कारण जीव को भोगना ही पड़ता है। भक्ति करते रहना चाहिए, आने वाला दूसरा जीवन सुखमय हो जायेगा।*

*कृप्या विचार करें - किसी के पैर में कांटा लगा हो जिस कारण से उसे बहुत पीड़ा हो रही हो। उस कांटे के कष्ट के निवारण के लिए किसी से प्रार्थना करे तो उतर मिलें कि कांटा तो लगा रहने दे, जूता पहन ले, भविष्य में कांटा नहीं लगेगा। क्या वह व्यक्ति ठीक सलाह दे रहा है ? क्योंकि कांटा लगे पैर में जूता पहना ही नहीं जा सकता। पहले कांटा निकले फिर इस डर से जूता पहनेगा कि कहीं दोबारा कांटा न लग जाए। ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा के पूर्ण संत की शरण में आने से पाप रूपी कांटे का कष्ट समाप्त होता है। फिर साधक पूर्ण प्रभु की शास्त्र विधि अनुसार साधना रूपी जूता इस डर से पहनेगा कि कहीं फिर से कोई पाप रूपी कांटा कष्ट दायक न हो जाए।*

*श्री आसाराम जी ने पवित्र गीता जी के अनुवाद में अर्थों का अनर्थ किया है। गीता अध्याय 7 मन्त्र 18 व 24 में अनुत्तमाम् का अर्थ श्री आसाराम जी ने अति उत्तम किया है तथा व्रज का अर्थ आना किया है। जबकि अनुत्तम का अर्थ अति घटिया होता है तथा व्रज का अर्थ जाना होता है। तत्वज्ञान के अभाव से तथा ज्ञान हीन गुरुओं के कारण ही सर्व भक्त समाज शास्त्र विधि रहित साधना करके मनुष्य जीवन व्यर्थ कर रहा है (पवित्र गीता अध्याय 16 मन्त्र 23-24)। सर्व पवित्र धर्मों की पवित्रात्माऐं तत्व ज्ञान से अपरिचित हैं। जिस कारण नकली गुरुओं, सन्तों, महन्तों तथा ऋषियों का दाव लगा हुआ है। जिस समय पवित्र भक्त समाज आध्यात्मिक तत्वज्ञान से परिचित हो जाएगा उस समय इन नकली सन्तों, गुरुओं व आचार्यों को छुपने का स्थान नहीं मिलेगा।*

*उपरोक्त सच्चाई को आँखों देखकर मैं तथा अन्य परिवार के सदस्य संत रामपाल महाराज जी के चरणों में लगे हैं। पूरे परिवार में कोई बिमारी नहीं रही और जो भूत कभी परिवार के किसी सदस्य को मार देते थे, किसी पशु को मार देते थे, काम धंधे को नहीं चलने देते थे वे घर से ही नहीं गाँव से भी भाग गये हैं तथा दूसरे रिश्तेदारों के घर चले गए हैं, जो अब भी श्री आसाराम जी के पूजारी हैं। वहाँ जाकर भूत कहते हैं कि उनके बसंत आदि के घर तो परमात्मा का निवास हो गया है, उनको परमात्मा स्वरूप पूर्ण संत मिल गये हैं, हम उनके पास नहीं जा सकते। संत रामपाल जी से उपदेश के पश्चात् हम पूरी तरह से स्वस्थ व सुखी जीवन जी रहे हैं। हमारे परिवार व रिश्तेदारों के लगभग दो सौ सदस्यों ने संत रामपाल जी महाराज का उपदेश प्राप्त कर लिया है जो पहले श्री आसाराम जी महाराज के शिष्य थे। संत रामपाल जी के द्वारा बताए तत्वज्ञान को समझ कर लगभग दस हजार श्री आसाराम जी के शिष्य भी सतगुरु रामपाल जी महाराज की*

*शरण में आ चुके हैं। वे भी मेरे की तरह पश्चाताप कर रहे हैं। मेरी भक्त समाज से प्रार्थना है कि जिनको भी परमात्मा पाने की तड़फ है, तलाश है, उनसे प्रार्थना है कि वे परमात्मा स्वरूप पूर्ण संत रामपाल जी महाराज के चरणों में आकर अपने जीवन को सुखी बनाए तथा परमात्मा को प्राप्त करें।*

*भक्त बसंत दास*

## "अद्भुत करिश्मा"

*पूजनीय गुरुदेव जी दण्डवत प्रणाम,*

*मैं अपने परिवार की खुशी आदरपूर्वक सूचित करना चाहता हूँ कि जनवरी 2000 के आरम्भ में आपका प्रवचन/सत्संग ताजपुर गाँव देहली में श्री मुरारी भक्त के निवास पर चल रहा था तो एक अन्य भक्त की बेटी ने मेरी पत्नी श्रीमति बिमला देवी (छावला) से कहा कि चाची जी पड़ोस के गाँव में जो सत्संग चल रहा है यदि आप उस महाराज से नाम ले लो तो आपका असाध्य रोग (रीढ़ की हड्डी में एक इंच का फासला) दूर हो सकता है। तो मेरी पत्नी ने उस लड़की से कहा कि आल इंडिया मैडीकल इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च सेंटर ऑफ साईंस दिल्ली में जिसका ढाई वर्ष ईलाज चलकर असफल हो चुका हो तो उस एक नाम या शब्द में कौन-सी शक्ति है जो मेरा असाध्य रोग ठीक हो जायेगा? काफी देर तक दोनों की बहस चलती रही, अन्त में धीरे चलकर उस सत्संग में जाने का निर्णय लिया गया। परम पूज्य संत रामपाल जी महाराज के प्रवचन/अमृतवाणी सुनकर अधूरी छूटी हुई भक्ति का तार पुनः बन्दी छोड़ से जुड़ गया और ढाई वर्ष के ईलाज से फायदा न पाकर केवल नाम के सुमरन से पाँच दिन के अंदर ही असाध्य रोग ठीक हो गया। इससे पूर्व डॉक्टरों ने उनको बैठने व खड़ा होने की सख्त मनाही की थी जो आज भी ट्रीटमैंट स्लीप पर लिखा है तथा वह एक इंच के फासले के एक्स-रे भी मौजूद हैं। सबसे बड़ी समस्या मेरी पत्नी को यह थी कि उनसे बैठ कर पाखाना नहीं किया जाता था और हाथ धोने के समय तो दस-पंद्रह मिनट रोना पड़ता था क्योंकि ज्यादा झुकने पर ज्यादा दर्द होता था। अब वह परम पूजनीय सतगुरु रामपाल जी महाराज जी के आर्शीवाद से 50 किलो के गट्ठर/वजन अपने आप उठा सकती है और पूर्ण स्वस्थ है। मेरी सर्व पाठकों से प्रार्थना है कि परमेश्वर तुल्य संत रामपाल जी महाराज जो कविर्देव (कबीर परमेश्वर) जी के पूर्ण कृपा पात्र हैं, से शीघ्रातिशीघ्र मुफ्त नाम प्राप्त करके सपरिवार कल्याण करवाऐं तथा पूर्ण मोक्ष तथा सतलोक (शाश्वतम् स्थानम्) प्राप्त करें।*

*आपका सेवक भक्त नथूराम,*
*गाँव छावला, दिल्ली,*
*दूरभाष 20913936*

## "अनहोनी की परमेश्वर ने"

*मैं भक्त सुरेन्द्र दास गाँव गांधरा, त. सांपला, जिला-रोहतक का निवासी हूँ। मेरी आयु 31 वर्ष है तथा बचपन से ही परमात्मा की खोज में लगा हुआ था तथा मनमुखी पूजा (मन्दिरों में जाना, व्रत आदि करना, श्राद्ध निकालना आदि) भी करता था। परन्तु शारीरिक कष्ट व मानसिक अशान्ति लगातार बनी हुई थी। फिर भी परमात्मा में विश्वास तथा परमात्मा पाने की तड़फ बरकरार थी। यही तड़फ मुझे सन् 1995 में संत आसाराम बापू के पास ले गई। मैंने उनसे नाम उपदेश लिया व जैसा भक्ति मार्ग बापू जी ने बताया डट कर साधना की। परन्तु न तो कोई शारीरिक कष्ट दूर हुआ और न ही कोई आध्यात्मिक उपलब्धि हुई, अपितु कष्ट बढ़ता ही चला गया। मैं आसाराम बापू के बताए अनुसार साधना करता था। जैसे 250 ग्राम दूध सुबह पीता था और 250 ग्राम दूध शाम को पीता था और मेरे मंत्र में जितने अक्षर थे उतने लाख मंत्र जाप करना और समाधी लगाना। चालीस दिन की यह क्रिया थी, जो कि यह एक अनुष्ठान होता था। ऐसे-ऐसे मैंने चौदह अनुष्ठान किए।*

*एक बार मैंने बापूजी के सत्संग में सुना कि सात दिन तक निराहार रहकर मंत्र जाप करने, समाधी लगाने तथा प्राणायाम करने से ईश्वर प्राप्ति होगी। फिर मैंने इन वचनों को सत्य मान कर ऐसा ही किया। परन्तु परमात्मा प्राप्ति की बजाए भूखा रहने के कारण मृत्यु के निकट पहुँच गया तथा प्राणायाम करने से दिमागी संतुलन बिगड़ गया और मैं पागल-सा हो गया।*

*उसी दौरान मेरे ऊपर सतगुरु पूर्ण संत रामपाल जी महाराज की कृपा दृष्टि हुई तथा मुझे सितम्बर 2000 में पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज से नाम उपदेश प्राप्त हुआ। उपदेश मिलते ही मुझे ऐसा लगा जैसे किसी ने दीपक में घी डाल दिया हो तथा मेरा जीवन शांत व्यवस्थित रहने लगा।*

*पूर्ण संत पाप कर्मों को समाप्त कर सकता है इसका प्रमाण मेरे जीवन में स्पष्ट रूप से तब घटित हुआ जब मैं मई 2004 में औरंगाबाद महाराष्ट्र में संत रामपाल जी महाराज के सतसंग के लिए टैंट की सेवा करते हुए 25 फुट ऊपर से नीचे पथरीली जमीन पर गिर गया। यहाँ काल को कुछ और ही मंजूर था तथा मेरी रीढ़ की हड्डी टूट गई और मेरे शरीर के नीचे के हिस्से में अधर्ग मार गया। उसी समय मैंने अपने सतगुरु देव जी संत रामपाल जी महाराज को याद किया। मेरे गुरुदेव की दया से उसी समय दोनों पैर ठीक काम करने लग गए।*

गरीब, काल डरै करतार से, जै जै जगदीश।
जौरा जौरी झाड़ती, पग रज डारै शीश।।

*उसके बाद मुझे औरंगाबाद के निजी हस्पताल (पटवर्धन हॉस्पीटल) में ले जाया गया। वहाँ पर डॉ. डी.जी. पटवर्धन ने मेरे शरीर की जाँच की तथा मेरी रीढ़ की हड्डी के एक्स-रे लिए। रिपोर्ट से पता चला कि रीढ़ की हड्डी टूटी हुई है। रिपोर्ट देखकर डॉ. बहुत हैरान होकर कहने लगा कि आपकी रीढ़ की हड्डी टूट गई है*

*और उसका एक टूकड़ा टूट कर अलग हो गया है। डॉ. बार-बार मेरे पैरों को हाथ लगाकर देखता रहा और कहा कि आप पर परमात्मा की विशेष कृपा है कि आपके पाँव ठीक काम कर रहे हैं। क्योंकि इस रिपोर्ट के अनुसार आपको अधर्ग होना जरूरी था। वहाँ उस हॉस्पीटल में मैं तीन दिन तक दाखिल रहा। उसके बाद मैं छूट्टी लेकर वापिस अपने घर हरियाणा आ गया। यहाँ रोहतक में मैंने अपना ईलाज हड्डियों के प्रसिद्ध डॉ. चड्ढा से करवाया। डॉ. चड्डा भी मेरी रिपोर्ट देखकर हैरान रह गया तथा कहा कि आप चल-फिर कैसे रहे हो। आपको तो रिपोर्ट के अनुसार अधर्ग होना चाहिए था। डॉ. चड्डा ने फिर से रंगीन एक्स-रे करवाया तथा कहा कि इसका ईलाज संभव नहीं है तथा ऑप्रेशन के द्वारा इसको जिस स्थिति में है वहीं रोका जा सकता है, ताकि हड्डी और न टूट सके। उसने हड्डियों को ताकत देने के लिए इंजेक्शन शुरु किए और तीन महीने में पूरे इंजेक्शन लग गए। फिर उसने कहा कि ऑप्रेशन जरूर करवाना पड़ेगा, नहीं तो बाकी बची हुई हड्डी भी टूट सकती है और कहा कि ऑप्रेशन का खर्च दो लाख रूपये आयेगा। फिर उसी समय डॉ. ने बताया कि रिपोर्ट के अनुसार आपको तीन महीने के अंदर मृत्यु को प्राप्त हो जाना था। आज आप परमात्मा की कृपा से ही जीवित हो। ऑप्रेशन का खर्च दो लाख रूपये देने में मैं असमर्थ था, इसलिए मैं दूसरे डॉ. के पास ईलाज के लिए गया। वह भी मेरी रिपोर्ट देखकर आश्चर्य में पड़ गया और कहा कि यदि ऑप्रेशन में देर हो गई तो हड्डी और भी टूट सकती है। उसने भी बताया कि रिपोर्ट के अनुसार आपको अधर्ग होना चाहिए था, आप चल-फिर कैसे रहे हो ?*

*आखिर हारकर मैंने अपने गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज के चरणों में प्रार्थना की। तब मेरे पूज्य गुरुदेव ने मुझपर दया की और सिर पर हाथ रखकर कहा 'बेटा आप बिल्कुल ठीक हो जाओगे, यदि आज परमेश्वर कबीर साहेब जी की शरण में नहीं होते तो आपको भुगत कर मरना था। आपकी आयु शेष नहीं थी। आप एक बार फिर डॉ. को दिखा लो'। मैंने गुरु जी के आदेशानुसार अगले ही दिन डॉ. को दिखाया, जिसने मेरा एक्स-रे किया और एक्स-रे देखकर डॉक्टर आश्चर्य चकित रह गया और बोला 'जो हड्डी टूट कर अलग हो गई थी, वह अपने आप ऊपर को उठकर कैसे जुड़ गई। डॉक्टर जी ने बताया कि इस हड्डी की ऐसी स्थिति थी कि जैसे कोई गाड़ी बहुत ज्यादा ढलान वाली चढ़ाई में चढ़ रही हो। उसके इंजन में खराबी हो जाऐं, वह वापिस ही आ सकती है या प्रथम गियर में डाल कर पत्थर आदि पहियों के पीछे लगाकर वहीं रोकी जा सकती है, आगे को नहीं चढ़ सकती। आपकी हड्डी ऐसे ऊपर को चढ़ कर जुड़ गई जो डॉक्टरी इतिहास से बाहर की बात है। इससे मुझे भी महसूस होता है कि कोई शक्ति है जो असम्भव को सम्भव कर सकती है। यह तो ऑप्रेशन से भी नहीं हो सकता था। आप्रेशन करके इसमें कोई पदार्थ भरकर वह गैप भरा जा सकता था। फिर भी यदि आप कोई वजन उठाने का कार्य करते तो फिर से हड्डी खिसक कर आप चारपाई पर भुगत कर मरते। डॉक्टर के समझ में भी नहीं आ रहा था। मैंने कहा कि पूर्णब्रह्म*

*कबीर साहेब के स्वरूप मेरे पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज ने मेरे पाप कर्म काटकर तथा मेरी मृत्यु को टालकर अपने कोटे से मुझे नई जिंदगी दी है। परमेश्वर कबीर साहेब की वाणी है -*

जो मेरी भक्ति पीछोड़ी होई, तो हमरा नाम न लेवे कोई।

*अब मैं बिल्कुल स्वस्थ हूँ तथा सतगुरु के चरणों में आत्म कल्याण हेतु निःस्वार्थ सेवा कर रहा हूँ। 50 कि.ग्रा. वजन अपने आप ही उठा कर चलता हूँ। हमारे गुरुदेव का वास्तविक उद्देश्य तो भक्ति करवाकर जीव को विकार रहित करवा कर अपने परम धाम सतलोक में ले जाना है, यहाँ के छोटे-मोटे सुख तो हमारे गुरुदेव अपने खजाने से दे देते हैं, ताकि जीव भक्ति मार्ग में लगा रहे। अतः सर्व समाज से प्रार्थना है कि हमारे गुरुदेव के चरणों में आकर सत्यभक्ति करें तथा सांसारिक सुखों के साथ-साथ आत्म कल्याण का मार्ग भी प्राप्त करें। सत् साहिब!!*

*भक्त सुरेन्द्र दास*
*फोन - 9812151088*

## "प्रभु ने सुनी गरीबों की"

*मैं कर्मवीर पुत्र श्री घासीराम पुत्र श्री छोटूराम, गाँव भराण, जिला-रोहतक का स्थाई निवासी हूँ। सबसे पहले मैंने व पूरे परिवार ने सन् 1986 में निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज का नाम लिया। उस समय मैं बहनों को चूडियां पहनाने का कार्य करता था। आर्थिक स्थिति अच्छी थी। धीरे-धीरे स्थिति बिगड़ती चली गई। फिर कुछ दिनों के बाद मेरी पत्नी के शरीर में तरह-तरह की बिमारियां घर कर गई। उसको बवासीर की बीमारी व पित की थैली में पथरी थी। डॉक्टर ने ऑपरेशन में लागत बीस हजार रूपये की बताई। मुझ दास के घर में उस समय बीस हजार दानें भी नहीं थे और मुझ दास को भी दमे की बीमारी थी। मेरी पत्नी तथा मैं अपने कष्टों को याद करके दुःखी मन से चर्चा करते हुए एक ऑटो में बैठकर बस अड्डा जा रहे थे कि पैसा तो है नहीं अब ऑपरेशन कैसे होगा ? हम तो मर ही जायेंगे। उसी ऑटो में एक बहन बैठी हुई थी। उसने हमारी सारी बात पूछी और कहा कि आप करौंथा चले जाओ। वहाँ एक महाराज जी हैं और बीमारियों की दवाई मुफ्त देते हैं। मेरी पत्नी भक्तमति मेवा देवी 27-7-2003 को सतलोक आश्रम करौंथा में गई तथा बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज को अपनी सारी बीमारी व घर की हालत बताई। सतगुरु देव ने बहुत प्यार से सभी बातें सुनी तथा कहा कि बेटी यहाँ कोई औषधी आदि नहीं दी जाती, केवल आत्म कल्याण का मार्ग समझाया जाता है तथा भक्ति करने की विधि पवित्र वेदों व पवित्र गीता जी के आधार पर शास्त्रानुकूल बताई जाती है। पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी की कृपा से केवल मंत्र जाप के करने मात्र से ही सर्व कष्ट दूर हो जाते हैं तथा मूल लाभ तो जन्म-मृत्यु से पूर्ण रूप से जीव का छूटकारा करवाने का है, समाज सुधार व अन्य सुख तो रूंगे में अर्थात् स्वयं ही हो जाते हैं। रामनाम की दवाई देकर मेरे सारे*

*परिवार को कृतार्थ किया। अब हम प्रेम पूर्वक जिन्दगी जी रहे हैं। सर्व बिमारियां केवल नाम स्मरण से व गुरुदेव के आशीर्वाद मात्र से समाप्त हो गई। हम बन्दी छोड़ से अरदास करते हैं कि दाता जैसा सुखी जीवन हमें दिया है वैसा ही सबको बख्सें।*

*भक्त कर्मवीर दास पुत्र श्री घासीराम,*
*गाँव भराण, त. महम, जिला-रोहतक।*

## "भगवान हो तो ऐसा"

*मैं भक्त महाबीर सिंह पुत्र श्री केहर सिंह, गाँव-ढराणा जिला-झज्जर(हरियाणा) निवासी हूँ। पहले मैं शिव का कट्टर भक्त था। मेरे लीवर और गुर्दे के अंदर पीप पड़ गई थी और मेरे को मेरा भाई भक्त महेन्द्र सिंह मैडिकल में ईलाज करवाने के लिए ले गया, उससे पहले भी काफी पैसा लग गया था। लेकिन कोई आराम नहीं हुआ। मैडीकल के अंदर अल्ट्रासाऊंड के बाद तीन ऑपरेशन बोल दिए। मैं घबरा गया। मैंने ऑपरेशन करवाने से इंकार कर दिया। खाना भी नहीं खाया जाता था। हालत बिल्कुल नाजुक हो चुकी थी। मेरा बड़ा भाई महेन्द्र कहा करता कि आप संत रामपाल जी से उपदेश ले लो, वे पूर्ण परमात्मा के अवतार आए हैं। कबीर परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म हैं। मैं कहता था कि शिवजी भगवान के सामने तेरे कबीर जुलाहे (धाणक) की क्या औकात है। कबीर तो एक कवि था, वह भगवान नहीं हो सकता। मेरे बड़े भाई महेन्द्र सिंह पुत्र श्री केहर सिंह का परिवार भी बिल्कुल उजड़ा हुआ था। संत रामपाल जी महाराज की शरण में जाने से वे पूर्ण सुखी हैं। उन्होंने सर्व पूर्व वाली पूजाऐं त्याग रखी हैं। वे फिर भी बहुत सुखी हैं। मैं भी मानता था, परन्तु फिर भी मैं अपने भगवान शिवजी से अधिक किसी को नहीं मानता था। मेरा बड़ा भाई महेन्द्र मुझे कहता था महाबीर यही भूल सबको लगी है। पूर्णब्रह्म कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही हैं। इनकी शक्ति के सामने ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म तथा परब्रह्म तो बहुत न्यून शक्ति युक्त हैं। जैसे देश के प्रधान मंत्री व राष्ट्रपति के सामने प्रान्त के मंत्री की शक्ति होती है, इतना अंतर परमेश्वर कबीर जी(राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री जानों) तथा शिव जी (एक विभागीय मंत्री जानों) की शक्ति में है। अब आप स्वयं ही विचार करें कि 'कहाँ ठांठां (कविर्देव/कबीर परमेश्वर) कहां म्यां-म्यां (भगवान शिव जी) अर्थात् खागड़ की तुलना में बकरा। संत रामपाल जी महाराज ने सर्व सद् ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया है तथा भक्ति शक्ति से स्व अनुभव से भी सही पाया है, तब अपनी जे.ई. की नौकरी त्यागकर भक्ति मैदान में कूदे हैं। आज सर्व संतों व महंतों तथा आचार्यों का पिछोड़ कर रख दिया है। सर्व पंथों व महर्षि दयानन्द जैसे को भी उन्हीं के लेखों से फेल कर दिया। समाचार पत्रों में भी खुल्लम-खुला सर्व को ललकारा है। कोई नहीं बोलता। आर्य समाज के कुछ नादानों ने विरोध किया था, मुँह की खानी पड़ी। क्योंकि महाराज रामपाल जी प्रमाणों सहित बात करते हैं। अन्य केवल निराधार दंत कथाओं के आधार पर ही मार्ग दर्शन कर रहे हैं। सत्य के*

*सामने असत्य नहीं टिक सकती।*

*बड़े भाई महेन्द्र की उपरोक्त बातें सुनकर मन में आता था कि लड़ पडूं, परन्तु बड़ा होने के नाते नहीं बोलता था। कोई और कह देता कि 'कहां ठांठां (कबीर परमेश्वर) कहां म्यां म्यां(भगवान शिव जी) तो मैं (महाबीर) अवश्य लड़ाई कर देता। परन्तु अब पता चला कि सचमुच कबीर जी पूर्ण परमेश्वर ही हैं। मरता क्या नहीं करता ? उस दिन मैंने अपने भाई महेन्द्र से कहा कि मेरी जान बचा ले। मेरे भाई महेन्द्र ने कहा कि करौंथा आश्रम में चल तेरी जान वहीं बचेगी। मुझे ऑप्रेशन थियेटर में ले जाने के लिए ट्राली में लिटा दिया था तथा ऑप्रेशन वाले कपड़े पहना दिए थे। मैं उठकर चल पड़ा और कपड़े उतार कर अपने कपड़े पहन कर अपने भाई महेन्द्र से कहा कि मैं नाम ले लूंगा। हम गाड़ी करके मैडिकल रोहतक से सीधे बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज की शरण में आए। नाम उपदेश लिया, उसी समय आश्रम में मैंने भोजन पाया। मैं फिर मैडीकल में गया और जाँच करवाई। डॉक्टर आश्चर्य में पड़ गए। और मेरे कोई तकलीफ नहीं पाई। मैं स्वस्थ हो गया। मेरा आश्रम में कोई खर्च नहीं हुआ। नाम तथा मंत्र जाप की पुस्तिका मुफ्त प्राप्त हुई। मेरा सारा परिवार अन्य देवी-देवताओं की पूजा पाठ किया करता, परन्तु उपदेश लेने के बाद सर्व त्याग दी, पहले से अधिक सुखी व स्वस्थ हो गए। बन्दी छोड़ पूर्ण परमात्मा सतगुरु रामपाल जी महाराज का दिन-रात गुणगान करते हैं।*

*संत रामपाल जी महाराज का मुख्य उद्देश्य तो नाम उपदेश देकर भक्ति करवाके काल के जाल से मुक्त करवाना है। समाज सुधार व अन्य सुख तो रूंगे में अर्थात् स्वयं ही हो जाते हैं। ''सत साहेब''*

*भक्त महाबीर*

## "लुटे पिटों को सहारा"

*मैं भक्त जीयाराम (राजू) पुत्र श्री गणेशी राम, गाँव-ढ़राणा निवासी हूँ। मेरे और मेरी पत्नी को असाध्य रोग था, कोई ओपरा-पराया कहता था। डॉक्टरों ने टी.बी. बताई। हमने डॉक्टरों से भी काफी ईलाज करवाया और देवी-देवताओं की बहुत पूजा की और यू.पी., हरियाणा, राजस्थान में बालाजी आदि भी ईलाज के लिए गए, काफी पैसा लग गया। दस-बारह वर्ष तक ऐसे ही भटकते रहे। हमने कम-से-कम दो लाख रूपये लगा दिऐं होंगे, लेकिन कोई आराम नहीं हुआ। हम बहुत तंग हो गए। मैं बहुत निर्धन हो गया, 50 रूपये कमाता और 100 रूपये खर्च हो जाते। कई बार आत्म हत्या करने की सोची। हवन भी करवाया। हवन करते समय पंडित डर गया और पंडित ने बताया कि इसके अंदर बहुत बड़ा जिन्द है। पंडित ने कहा कि मैं फिर से हवन करूंगा और फिर बताउंगा। भक्त महेन्द्र पुत्र श्री केहर सिंह(जो मेरे गाँव के हैं) ने संत रामपाल जी महाराज से नाम ले रखा था। मुझे कई बार कहता था कि जीयाराम कहीं घूमले और ठगों के पास लुट ले, संत रामपाल जी महाराज बिना कष्ट निवारण नहीं हो सकता, भक्त महेन्द्र कहता था कि मैं भी सर्व भटक*

*कर तथा लुट कर संत रामपाल जी महाराज के आशीर्वाद से व उनके द्वारा दिए नाम से उजड़ कर बसा हूँ। मैं भक्त महेन्द्र से कहता था कि करौंथा वाला आश्रम तो अभी बना है। मैं तो बहुत बड़े-बड़े मन्दिरों में जा चुका हूँ। परन्तु मैं तंग आने के बाद भक्त महेन्द्र से मिला। हमने भक्त महेन्द्र के साथ जाकर अगले दिन सतगुरु रामपाल जी महाराज से मुफ्त नाम उपदेश लिया और उपदेश लेने के बाद हम बिल्कुल स्वस्थ हो गए। हमें नाम उपदेश लिए सन् 2005 में लगभग दो वर्ष हो गये हैं। अब हमारा पूरा परिवार स्वस्थ है। हम रात-दिन पूर्ण परमात्मा बन्दी छोड़ सतगुरु रामपाल जी महाराज का गुणगान करते हैं।*

*संत रामपाल जी महाराज का मुख्य उद्देश्य तो नाम उपदेश देकर भक्ति करवाके काल के जाल से मुक्त करवाना है। समाज सुधार व अन्य सुख तो रूंगे में अर्थात् स्वयं ही हो जाते हैं। ''सत साहेब''*

*भक्त जियाराम*

## "संत हो तो ऐसा"

*मैं शशी प्रभा प्रधानाचार्या(प्रिंसिपल) राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय डिगाना जिला जीन्द में कार्यरत हूँ। मैं अपने घर के लड़ाई-झगड़े, मानसिक तनाव के कारण लगभग 35 वर्ष से परेशान थी। पति मारता भी था। सारा वेतन छीन लेता था तथा जितना उससे परेशान किया जाता वह करता था। 32 किल्ले जमीन का मालिक होते हुए भी हमारे को सदा कुतों की तरह रोटी देता था। मैंने उसके तथा अपनी सभी रिश्तेदारों से मदद माँगी। मैंने समाज में रहने वाले पंचायती आदमियों से भी मदद माँगी। मेरा किसी ने भी साथ नहीं दिया। यह विचार करके कि संत बिगड़े कार्यों को संवार दिया करते हैं, मैंने आनन्दपुर (बीना) मध्यप्रदेश वाले को गुरु बनाया। लेकिन घर में वही क्लेश। लड़कियां परमात्मा की दया से अपने दम पर पढ़ाई। अब शादी नहीं हो पा रही थी। बाप ने रिश्ता ढूंढना बंद कर दिया। अब इसी उलझन के कारण मैं बाला जी गई। बगड़ (राजस्थान), धौली धार हिमाचल प्रदेश गई। पीर फकीर, गुरुद्वारे का सहारा लिया। घर में जब अकेली होती थी तब रोती थी कि धरती पर परमात्मा है ही नहीं, जुल्म और नाइन्साफी सहन करती-करती मेरी हालत पागलों की सी हो गई थी।*

*फिर एक दिन यह दुःखी आत्मा उस परमात्मा के दरबार तक पहुँची जो दुःख निवारण करता है। मेरे पड़ौस में पाठ हुआ। मेरी पड़ौसिन मुझे प्रसाद देने के लिए मेरे घर बुलाने आई। जाने के बाद बातचीत हुई। पाठ के बारे में बताया कि यह पाठ परमात्मा की सच्ची वाणी है, जिससे दुःख कटते हैं। परन्तु यह पाठ केवल संत रामपाल जी की आज्ञा अनुसार करवाने से ही लाभ होता है। अन्य किसी से पाठ करवाने से कोई लाभ नहीं होता। जैसे राजा परिक्षीत को कथा सुनाने के समय किसी भी ऋषि ने पाठ (कथा) करने की हिम्मत नहीं की। क्योंकि वे अनअधिकारी थे तथा सातवें दिन परिणाम मिलना था। इसलिए स्वर्ग से ऋषि सुखदेव आए,*

*उन्होंने राजा परिक्षीत को नाम देकर (शिष्य बनाकर) सात दिन तक कथा (पाठ) की। तब राजा परिक्षीत को कुछ राहत मिली। वर्तमान में कोई भी वास्तविक ज्ञान व सत्य साधना से परिचित नहीं है। इसलिए कोई भी पाठ कर देता है। जिससे साधक को कोई लाभ नहीं होता। वह बहन जिससे मेरी चर्चा हुई, संत रामपाल जी महाराज के विचार सुना करती थी, अशिक्षित होते हुए शास्त्रों का गूढ़ रहस्य संत जी से सुना हुआ सुनाया। मैं प्रधान आचार्या (प्रिंसिपल) होते हुए भी हैरान थी। ऐसा लगा परमात्मा मेरा हाथ पकड़ने जा रहे हैं। बहन ने बताया हमारे गुरु जी दुःखों का निवारण करते हैं। मैंने अपने को व्यक्त किया कि आप मुझे अपने गुरु जी के दर्शन करवा सकते हो। मालिक की दया से अगले दिन मैं गुरु रामपाल महाराज जी को साधारण-सी कुर्सी पर बैठा पाया, मैं नहीं जानती थी कि संत क्या होते है, उनकी महिमा क्या होती है। जो जितना उच्चा होता है, वह उतना ही साधारण दिखता है। हमारा स्थान तो धरती से भी नीचे है। हम परमात्मा की महिमा को क्या समझें। मेरे गुरु जी ने मेरी व्यथा सुनी और कहा कि आप नाम उपदेश ले लो, सब ठीक हो जायेगा। अगले दिन मुझे उपदेश दिया। एक महीने के अंदर-अंदर लड़की का रिश्ता आया और फिर शादी हुई। मुझे ऐसा लगा कि कुछ अनहोनी सी हो रही है। वही पति जो रिश्ता भी नहीं कर रहा था, आज शादी कर रहा है। फिर कुछ समय बाद मेरी बड़ी लड़की के पेट में रिसौली हो गई। बच्चा अभी था नहीं फिर चिन्ता बनी। मैंने अपने लड़के को कहा कि तुमने देखा कि जब हम फिल्म देखते हैं तो इधर से परमात्मा की प्रार्थना की जाती है और उधर से किसी व्यक्ति का ऑप्रेशन चल रहा हो तो वह ठीक हो जाता है। वह मेरी बात से सहमत हो गया और मैं ताजपुर(दिल्ली) सतगुरु के सत्संग में सेवा में चली गई। वहाँ से मैं लड़की के पास अस्पताल में गई। ऑप्रेशन ठीक हुआ। जो शंका कैंसर की हुई वही भी ठीक हुई। फिर लड़की गर्भवती हुई। इतने में जमाई के साथ एक ट्रेक्टर मोटर साईकिल की दुर्घटना का समाचार मिल गया। मुझे तो मेरे पूज्य गुरुदेव जी के अतिरिक्त कुछ नहीं सूझता, मालिक की जितनी महिमा गाऊं थोड़ी है। इस जिव्हा से जितना मैं अपने गुरु जी की महिमा लोगों को सुनाऊं थोड़ी है। डेढ़ महीने के अंदर ठीक होकर जमाई घर आ गया। दुनियां क्या समझे कि मेरी प्रार्थना परमात्मा सुनता है।*

*जिस दिन से मैंने यह उपदेश लिया मैंने उन नकली संतों की फोटो अपने आंगन में डालकर स्वाह कर दी। उस दिन से मेरी यह जीवन की गाड़ी पटरी पर चढ़ी। 23 सितम्बर 2003 को मैंने अपनी जागती आँखों से 4-5 बजे को एक भयानक आकृति देखी। इतनी भयंकर आकृति का व्यक्ति था कि यदि नाम न ले रखा होता तो मेरा दिल फट जाता। परन्तु मुझे उस समय तो भय नहीं लगा। लेकिन यह एहसास हो गया था कि यह यमदूत है। अगले दिन मैंने अपने गुरु जी को बताया, जिन्होंने यह स्पष्ट किया कि मेरे उक्त दिन को सांस पूरे हो गए थे। अब मैं अपने परमात्मा स्वरूप गुरु जी की दया से ही जी रही हूँ। उन्हीं की कृपा से छोटी लड़की की शादी एक इन्जिनियर लड़के से पिछले वर्ष हुई। दो तीन बार मेरी नौकरी जाने*

*की भी आशंका हुई। लेकिन फिर मेरे परमात्मा ने मुझे संभाला, मुझे दो पदोन्नति दी। संत रामपाल जी महाराज कहते हैं कि राजा भी प्रभु का ही बच्चा होता है। उसमें भी प्रभु की शक्ति काम करती हे। परमेश्वर ही अपने साधक के लिए राजा में प्रेरणा करके सर्व फेर बदल करवा देता है। करता हुआ राजा दिखाई देता है, परन्तु करवाता परमात्मा ही है। कोई मेरे गुरु रामपाल महाराज जी का आसरा लेकर देखो , लेने वालों के इसी तरह से कांटे निकलेंगे, जैसे मेरे निकले हैं। परमात्मा सचमुच बेसहारों को सहारा देते हैं। आत्मा की पुकार सुनते हैं। मेरे साथ इन चन्द वर्षों में जो हुआ उसे केवल परमात्मा ही कर सकता हैं मेरे गुरु जी की महिमा वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं। यह स्वयं ही कबीर साहिब के अवतार हैं। जो परमात्मा का दीदार चाहता है वह करौंथा आना ना भूलें। मुझ छोटे से जीव को आपने कैसे उभारा ? आपकी मैं कृतज्ञ हूँ, किन शब्दों में आपकी महिमा गाऊं ? इन्हीं शब्दों को पाठक अपने हृदय में उतार लो और लाभ उठाओ।*

*बहुत तुच्छ प्राणी*
*भक्तमति शशी*

## "अपने भक्त को धर्मराज के दरबार से छुड़वाना"

*मैं भक्त ओमप्रकाश सुपुत्र श्री मातादीन, नजफगढ़, दिल्ली का निवासी हूँ। मुझे परम पूज्य संत रामपाल जी महाराज से नाम लिए डेढ़ वर्ष हो गया है। मेरी नजफगढ़ में हलवाई की दुकान है। 19 मई 2005 को रात के 9:30 बजे मुझे दुकान पर पेट में बहुत ज्यादा दर्द हुआ। दर्द के कारण मेरी हालत बिल्कुल खराब हो गई थी। मैं गुरु जी का नाम जपते-जपते घर पहुँचा। घर में घुसते ही सामने गुरु जी की तस्वीर के सामने दण्डवत प्रणाम किया। मैं दण्डवत प्रणाम करके खड़ा हुआ तो मुझे पेट का दर्द महसूस नहीं हुआ। फिर मैं चारपाई पर लेट गया। चारपाई पर लेटते ही मैं बेहोश हो गया। मेरे चारों तरफ यम के दूत चक्कर लगाने लगे और मुझे डराने लगे। मैं डर के मारे बेहोश हो गया। तब यम के दूतों ने मेरे ऊपर सफेद चादर डाली और मेरे को उठा कर यमराज के दरबार में ले गये। यमराज के दरबार में मैंने देखा कि वहाँ पर लाईन लगी हुई थी। जब मेरा नम्बर आया तो यमराज ने कहा कि इसको तालाब में फैंक दो। मैंने तालाब की तरफ देखा तो मुझे तालाब में मगरमच्छ ही मगरमच्छ दिखाई दिए। मैं मगरमच्छों को देखकर डर गया। तब मैंने अपने परम पूज्य गुरुदेव संत रामपाल जी महाराज को याद किया, उस समय धर्मराज के दूत मुझे तालाब में फैंकने के लिए तैयार हो गये। मैंने गुरु जी को पुकारा कि - ''हे गुरु जी बचाओ''। तब मैंने देखा कि मेरे गुरु जी कबीर साहेब के रूप में आए और मुझे तालाब में गिरने से पहले ही बाहर निकाल लिया। यमराज ने कबीर साहेब के चरणों में गिरकर डण्डौतं प्रणाम किया। फिर गुरु जी अपने रूप में आ गए और मुझसे कहने लगे कि अब तू किस लिए डर रहा है, अब मैं तेरे साथ हूँ। तब मेरा डर दूर हो गया। धर्मराज ने गुरु जी से बहस की कि आप इसको बार-बार*

*क्यों बचाते हो। यह तो मेरा भोजन है। आप ने इसको पहले भी दो बार मरते मरते बचाया है। 'पहली बार तो स्कूटर और जीप की आमने-सामने की टक्कर होने पर भी मुझे खरोंच तक नहीं आई थी। और दूसरी बार मोटर साईकिल स्लिप होने के बाद मैं चलते ट्रक के नीचे जा गिरा। गुरुदेव जी ने मुझे उस ट्रक के नीचे से बचाया।'*

*तब गुरुदेव ने धर्मराज को कहा - 'इसने मेरी पिछले जन्म की भक्ति की हुई थी, इसलिए मैंने इसे बचाया। फिर धर्मराज ने कहा अब कि बार आपने क्यों बचाया, जबकि मैंने इसका नाम तुड़वा रखा था। फिर गुरु जी ने कहा कि इसका नाम आपने तुड़वाया था, इसने अपनी मर्जी से नहीं तोड़ा। इसलिए मैंने बचाया, यह मेरी भक्ति करता है।' तब काल ने कहा कि मैं देखता हूँ कि आप इसे कब तक बचाते हो। फिर गुरु जी ने कहा कि मैं पल-पल इसके साथ हूँ, तुम इसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।*

*फिर सतगुरुदेव ने धर्मराज को कहा कि अबकि बार इसको किसी प्रकार का कष्ट पहुँचाया तो जैसे तू लोगों को सताता है, उससे बुरा हाल तेरा करूंगा।*

*उसके बाद सतगुरुदेव जी मुझे धर्मराज के दरबार से नीचे लेकर आए और मुझसे कहा कि तू जल्दी से जल्दी अपने घर वालों को बता दे कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ और मुझको घर ले चलो। दो डॉक्टर तो मना कर चुके थे कि हमारे बस की बात नहीं है। मेरे घर वाले मुझे हस्पताल (मैडीकल) में लेकर जा रहे थे। मैंने घरवालों से कहा कि मुझे जल्दी से जल्दी घर ले चलो, मैं बिल्कुल ठीक हूँ। जो मेरे साथ थे, वे एकदम आश्चर्य में पड़ गए कि ये तो मर गया था। इसको होश कैसे आ गया ? ये ऐसी बातें कैसे कर रहा है ? फिर मेरे घर वाले रास्ते में से वापिस घर की तरफ आने लगे तो मुझे सतगुरुदेव कमल के फूल पर बैठे हुए दिखाई दिए। कभी तो गुरु जी के रूप में और कभी कबीर साहेब के रूप में दिखाई दे रहे हैं और मेरी तरफ हाथ हिलाते हुए जाते दिखाई दिए। मैं फिर जोर-जोर से रोने लगा कि मेरे गुरु जी गए, मेरे गुरु जी गए। हमारे घर वाले फिर घबरा गए कि यह ऐसे कैसे कर रहा है। फिर मैडीकल की तरफ जाने लगे। तब गुरु जी ने आवाज लगाई कि भक्त तू यह क्या कर रहा है, मैंने तो तेरे को कहा है कि घर चला जा जल्दी से जल्दी। फिर मैंने अपने घर वालों से कहा कि मैं बिल्कुल ठीक हूँ, मुझे मेरे गुरु जी दिखाई दिए थे। तब हमारे घर वाले मेरे को घर लेकर गए और घरवाले एकदम आश्चर्य में पड़ गए कि यह तो मर गया था, यह जिन्दा कैसे हुआ ? मैंने अपने घरवालों को अपने साथ बीती सारी घटना बताई कि मेरे साथ ऐसे-ऐसे हुआ और मेरे सतगुरुदेव जी मुझे घर छोड़कर चले गए।*

*भक्त ओमप्रकाश दास*
*RZ-15, B Block, गली नं. 2, मकसूदा बाद कॉलोनी, नजफगढ़, नई दिल्ली।*

❑❑❑

# "सृष्टी रचना"

*प्रभु प्रेमी आत्माऐं प्रथम बार निम्न सृष्टी की रचना को पढेंगे तो ऐसे लगेगा जैसे दन्त कथा हो, परन्तु सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के प्रमाणों को पढ़कर दाँतों तले उँगली दबाऐंगे कि यह वास्तविक अमृत ज्ञान कहाँ छुपा था? कृप्या धैर्य के साथ पढ़ते रहिए तथा इस अमृत ज्ञान को सुरक्षित रखिए। आप की एक सौ एक पीढ़ी तक काम आएगा। पवित्रात्माऐं कृप्या सत्यनारायण(अविनाशी प्रभु सतपुरुष) द्वारा रची सृष्टी रचना का वास्तविक ज्ञान पढ़ें।*

*1. पूर्ण ब्रह्म :- इस सृष्टी रचना में सतपुरुष-सतलोक का स्वामी(प्रभु), अलख पुरुष-अलख लोक का स्वामी(प्रभु), अगम पुरुष-अगम लोक का स्वामी(प्रभु) तथा अनामी पुरुष-अनामी लोक का स्वामी(प्रभु) तो एक ही पूर्ण ब्रह्म है, अविनाशी प्रभु है जो भिन्न-२ रूप धारण करके अपने चारों लोकों में रहता है। जिसके अन्तर्गत असंख्य ब्रह्मण्ड आते हैं।*

*2. परब्रह्म :- यह केवल सात संख ब्रह्मण्ड का स्वामी(प्रभु) है। यह अक्षर पुरुष भी कहलाता है। परन्तु यह तथा इसके ब्रह्मण्ड भी वास्तव में अविनाशी नहीं है।*

*3. ब्रह्म :- यह केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी(प्रभु) है। इसे क्षर पुरुष, ज्योति निरंजन, काल आदि उपमा से जाना जाता है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्मण्ड नाशवान हैं।*

*5. ब्रह्मा :- ब्रह्मा इसी ब्रह्म का ज्येष्ठ पुत्र है, विष्णु मध्य वाला पुत्र है तथा शिव अंतिम तीसरा पुत्र है। ये तीनों ब्रह्म के पुत्र केवल एक ब्रह्मण्ड में एक विभाग(गुण) के स्वामी(प्रभु) हैं तथा नाशवान हैं। विस्तृत विवरण के लिए कृप्या पढ़ें निम्न लिखित सृष्टी रचना :-*

*{कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ने अपने द्वारा रची सृष्टी का ज्ञान स्वयं ही बताया है जो निम्नलिखित है}*

*सर्व प्रथम केवल एक स्थान 'अनामी(अनामय) लोक' था। पूर्ण परमात्मा उस अनामी लोक में अकेला रहता था। उस परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। सभी आत्माऐं उस पूर्ण धनी के शरीर में समाई हुई थी। इसी कविर्देव का उपमात्मक (पदवी का) नाम अनामी पुरुष है(पुरुष का अर्थ प्रभु होता है। प्रभु ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया है, इसलिए मानव का नाम भी पुरुष ही पड़ा है।) अनामी पुरूष के एक रोम कूप का प्रकाश संख सूर्यों की रोशनी से भी अधिक है।*

*विशेष :- जैसे किसी देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी का शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा पद का उपमात्मक (पदवी का) नाम प्रधानमंत्री होता है। कई बार प्रधानमंत्री जी अपने पास कई विभाग भी रख लेते हैं। तब जिस भी विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करते हैं तो उस समय उसी पद को लिखते हैं। जैसे गृहमंत्रालय के हस्ताक्षर करेगें तो अपने को गृह मंत्री लिखेगें। वहाँ उसी व्यक्ति के हस्ताक्षर की शक्ति कम होती है। इसी प्रकार कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की रोशनी*

# परमेश्वर कबीर साहेब के असंख्य ब्रह्मण्डों का लघु चित्र

अनामी लोक : इस लोक में आत्मा और परमात्मा एक रुप होकर कबीर साहेब ही अनामी रूप में है। जैसे मिट्टी के ढले (छोटे-छोटे टुकड़े) हो जाते हैं। फिर वर्षा होने पर एक पृथ्वी बन जाती है, अलग अस्तित्व नहीं रहता।

अगम लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अगम पुरुष रूप में रहते हैं।

अलख लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अलख पुरुष रूप में रहते हैं।

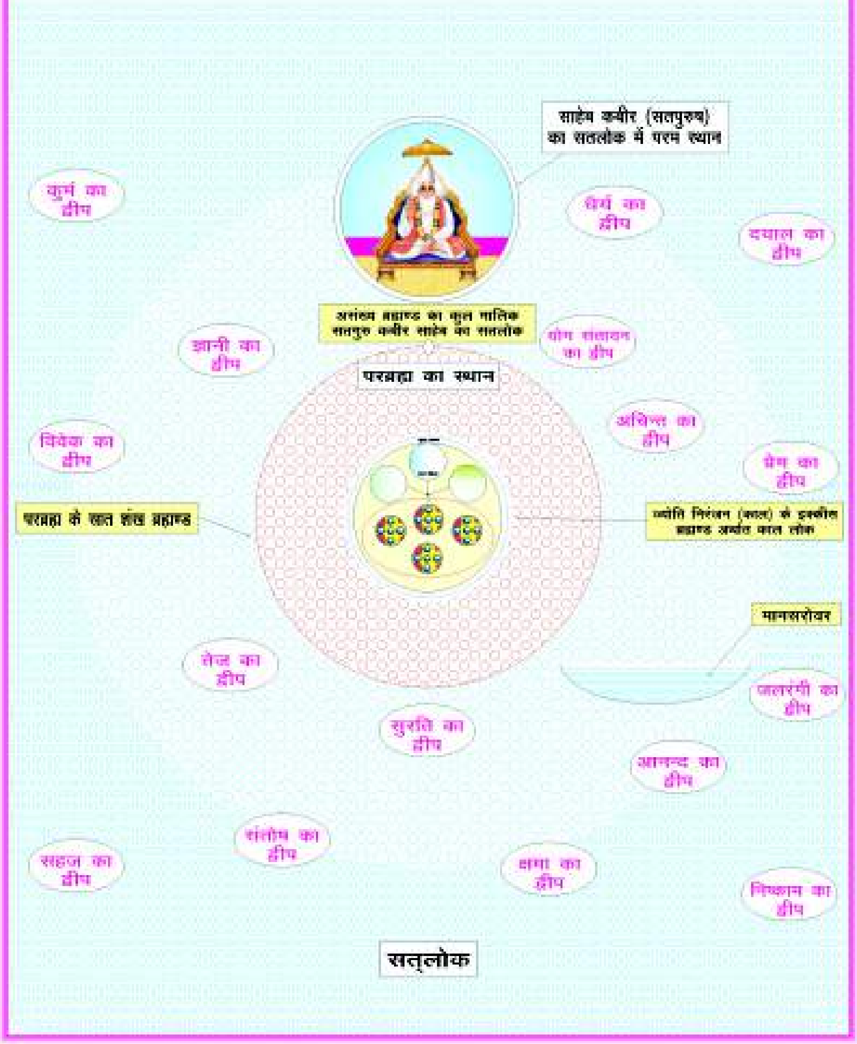

में अंतर होता जाता है।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने नीचे के तीन और लोकों (अगमलोक, अलख लोक, सतलोक) की रचना शब्द(वचन) से की। यही पूर्णब्रह्म परमात्मा कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ही अगम लोक में प्रकट हुआ तथा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अगम लोक का भी स्वामी है तथा वहाँ इनका उपमात्मक (पदवी का) नाम अगम पुरुष अर्थात् अगम प्रभु है। इसी प्रभु का मानव सदृश शरीर बहुत तेजोमय है जिसके एक रोम कूप की रोशनी खरब सूर्य की रोशनी से भी अधिक है।

यह पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अलख लोक में प्रकट हुआ तथा स्वयं ही अलख लोक का भी स्वामी है तथा उपमात्मक (पदवी का) नाम अलख पुरुष भी इसी परमेश्वर का है तथा इस पूर्ण प्रभु का मानव सदृश शरीर तेजोमय(स्वर्ज्योति) है। एक रोम कूप की रोशनी अरब सूर्यों के प्रकाश से भी ज्यादा है।

यह पूर्ण प्रभु सतलोक में प्रकट हुआ तथा सतलोक का भी अधिपति यही है। इसलिए इसी का उपमात्मक (पदवी का) नाम सतपुरुष(अविनाशी प्रभु)है। इसी का नाम अकालमूर्ति - शब्द स्वरूपी राम - पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। इसी सतपुरुष कविर्देव (कबीर प्रभु) का मानव सदृश शरीर तेजोमय है। जिसके एक रोमकूप का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है।

इस कविर्देव (कबीर प्रभु) ने सतपुरुष रूप में प्रकट होकर सतलोक में विराजमान होकर प्रथम सतलोक में अन्य रचना की।

एक शब्द (वचन) से सोलह द्वीपों की रचना की। फिर सोलह शब्दों से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति की। एक मानसरोवर की रचना की जिसमें अमृत भरा। सोलह पुत्रों के नाम हैं :-(1) ''कूर्म'', (2)''ज्ञानी'', (3) ''विवेक'', (4) ''तेज'', (5) ''सहज'', (6) ''सन्तोष'', (7)''सुरति'', (8) ''आनन्द'', (9) ''क्षमा'', (10) ''निष्काम'', (11) 'जलरंगी' (12)''अचिन्त'', (13) ''प्रेम'', (14) ''दयाल'', (15) ''धैर्य'' (16) ''योग संतायन'' अर्थात् ''योगजीत''।

सतपुरुष कविर्देव ने अपने पुत्र अचिन्त को सत्यलोक की अन्य रचना का भार सौंपा तथा शक्ति प्रदान की। अचिन्त ने अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की शब्द से उत्पत्ति की तथा कहा कि मेरी मदद करना। अक्षर पुरुष स्नान करने मानसरोवर पर गया, वहाँ आनन्द आया तथा सो गया। लम्बे समय तक बाहर नहीं आया। तब अचिन्त की प्रार्थना पर अक्षर पुरुष को नींद से जगाने के लिए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने उसी मानसरोवर से कुछ अमृत जल लेकर एक अण्डा बनाया तथा उस अण्डे में एक आत्मा को प्रवेश की तथा अण्डे को मानसरोवर के अमृत जल में छोड़ा। अण्डे की गड़गड़ाहट से अक्षर पुरुष की निंद्रा भंग हुई। उसने अण्डे को क्रोध से देखा तो अण्डे के दो भाग हो गए। उसमें से ज्योति निरंजन (क्षर पुरुष) निकला जो आगे चलकर 'काल' कहलाया। वास्तव में इसका नाम ''कैल'' है। तब सतपुरुष (कविर्देव) ने आकाशवाणी की कि आप दोनों अचिंत के द्वीप में रहो। आज्ञा पाकर अक्षर पुरुष तथा क्षर पुरुष(कैल) दोनों अचिंत के द्वीप में रहने लगे (बच्चों की नालायकी उन्हीं को दिखाई कि कहीं फिर प्रभुता की तड़फ न बन जाए,

*क्योंकि समर्थ बिन कार्य सफल नहीं होता) फिर पूर्ण धनी कविर्देव ने सर्व रचना स्वयं की। अपनी शब्द शक्ति से एक राजेश्वरी (राष्ट्री) शक्ति उत्पन्न की, जिससे सर्व ब्रह्मण्डों को स्थापित किया। इसी को पराशक्ति परानन्दनी भी कहते हैं। सर्व आत्माओं को अपने ही अन्दर से अपनी वचन शक्ति से अपने मानव शरीर सदृश उत्पन्न किया। प्रत्येक हंस आत्मा का परमात्मा जैसा ही शरीर रचा जिसका तेज 16(सोलह) सूर्यों जैसा मानव सदृश ही है। परन्तु परमेश्वर के शरीर के एक रोम कूप का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी ज्यादा है। बहुत समय उपरान्त क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने सोचा कि हम तीनों (अचिन्त - अक्षर पुरुष - क्षर पुरुष) एक द्वीप में रह रहे हैं तथा अन्य एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। मैं भी साधना करके अलग द्वीप प्राप्त करूँगा। उसने ऐसा विचार करके एक पैर पर खड़ा होकर सत्तर (70) युग तक तप किया।*

## "आत्माऐं काल के जाल में कैसे फंसी ?"

*विशेष :- जब ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप कर रहा था हम सभी आत्माऐं, जो आज ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्मण्डों में रहते हैं इसकी साधना पर आसक्त हो गए तथा आत्मा से इसे चाहने लगे। अपने सुखदाई प्रभु से विमुख हो गए। हम पतिव्रता पद से गिर गए। पूर्ण प्रभु के बार-बार सावधान करने पर भी हमारी आसक्ति क्षर पुरुष से नहीं हटी।* {यही प्रभाव आज भी हमारे अन्दर विद्यमान है। जैसे नौजवान बच्चे फिल्म स्टारों(अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों) की बनावटी अदाओं तथा अपने रोजगार उद्देश्य से कर रहे भूमिका पर अति आसक्त हो जाते हैं, रोकने से नहीं रूकते। यदि कोई अभिनेता या अभिनेत्री निकटवर्ती शहर में आ जाए तो देखें उन नादान बच्चों की भीड़ केवल दर्शन करने के लिए बहु संख्या में एकत्रित हो जाती हैं। 'लेना एक न देने दो' रोजी रोटी अभिनेता कमा रहे हैं, नौजवान बच्चे लुट रहे हैं। माता–पिता कितना ही समझाऐं किन्तु बच्चे नहीं मानते। कहीं न कहीं, कभी न कभी, लुक–छिप कर जाते ही रहते हैं।}

*पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) ने क्षर पुरुष से पूछा कि बोलो क्या चाहते हो? उसने कहा कि पिता जी यह स्थान मेरे लिए कम है, मुझे अलग से द्वीप प्रदान करने की कृपा करें। हक्का कबीर (सत् कबीर) ने उसे 21(इक्कीस) ब्रह्मण्ड प्रदान कर दिए। कुछ समय उपरान्त ज्योति निरंजन ने सोचा इस में कुछ रचना करनी चाहिए। खाली ब्रह्मण्ड(प्लाट) किस काम के। यह विचार कर 70 युग तप करके पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर प्रभु) से रचना सामग्री की याचना की। सतपुरुष ने उसे तीन गुण तथा पाँच तत्व प्रदान कर दिए, जिससे ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने अपने ब्रह्मण्डों में कुछ रचना की। फिर सोचा कि इसमें जीव भी होने चाहिए, अकेले का दिल नहीं लगता। यह विचार करके 64(चौसठ) युग तक फिर तप किया। पूर्ण परमात्मा कविर् देव के पूछने पर बताया कि मुझे कुछ आत्मा दे दो, मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। तब सतपुरुष कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि ब्रह्म तेरे तप के प्रतिफल में मैं तुझे और ब्रह्मण्ड दे सकता हूँ, परन्तु मेरी आत्माओं को किसी भी जप-तप साधना के फल रूप में नहीं दे सकता। हाँ, यदि कोई स्वेच्छा*

# एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र

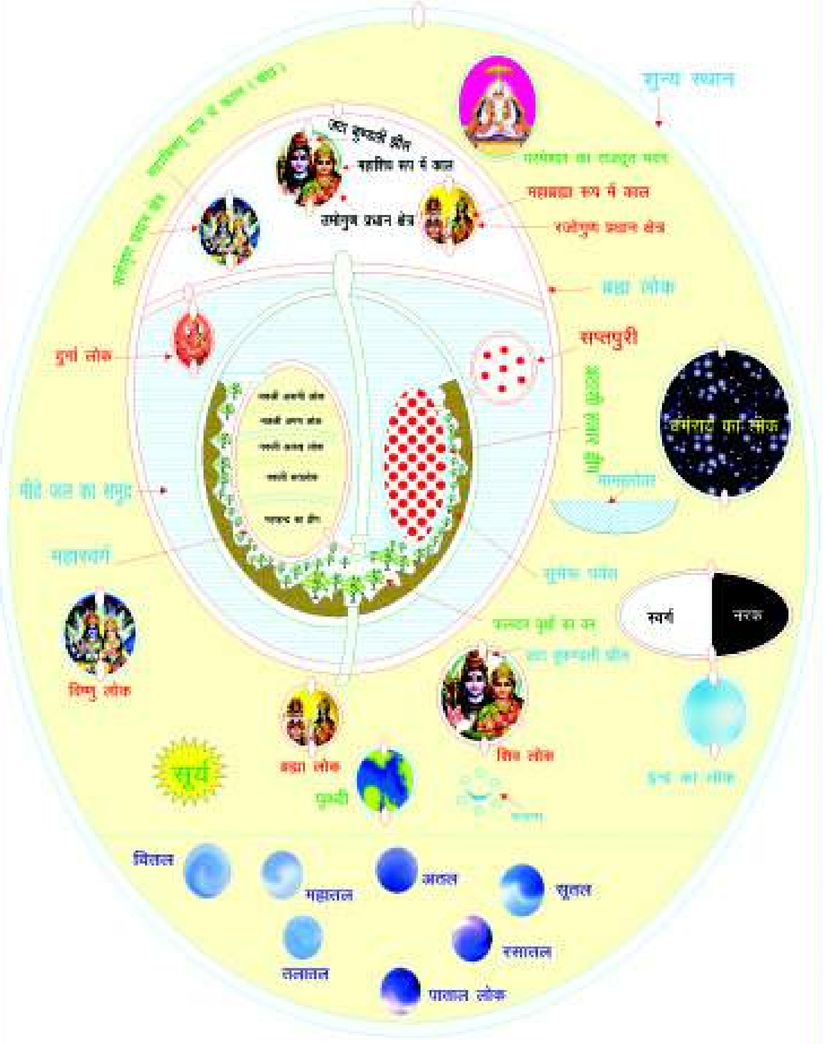

# ब्रह्म लोक का लघु चित्र

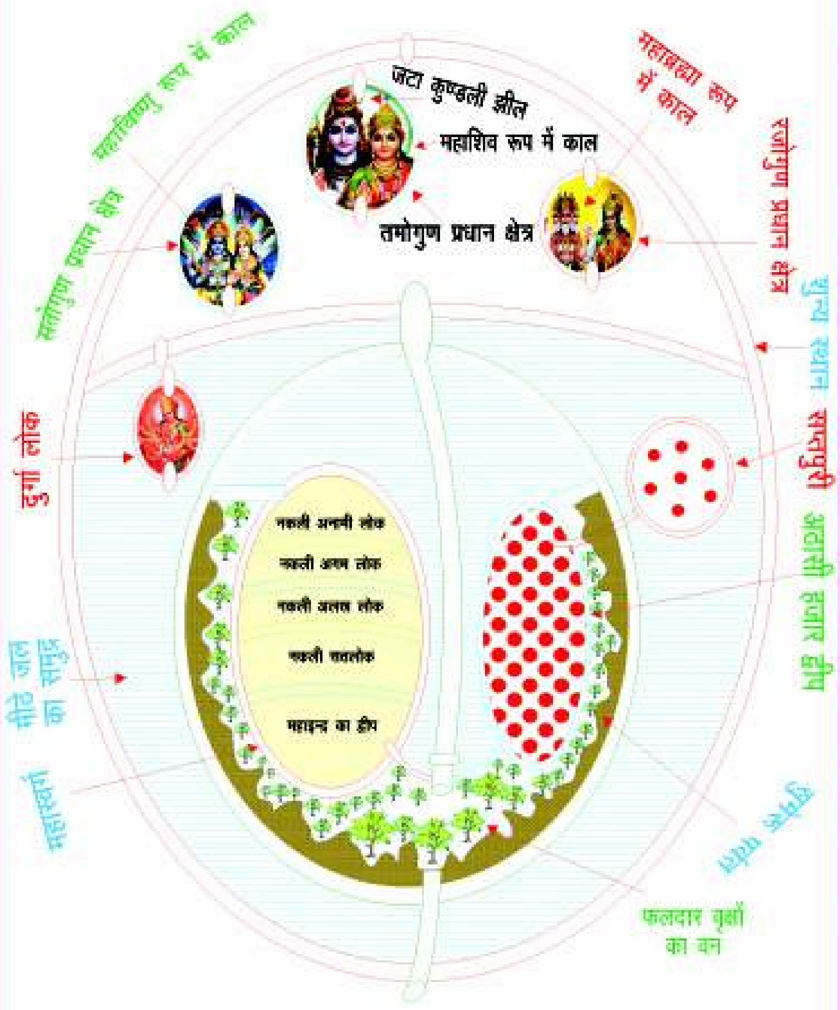

*से तेरे साथ जाना चाहे तो वह जा सकता है। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुन कर ज्योति निरंजन हमारे पास आया। हम सभी हंस आत्मा पहले से ही उस पर आसक्त थे। हम उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गए। ज्योति निंरजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्मण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार के रमणीय स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सभी हंसों ने जो आज 21 ब्रह्मण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं यदि पिता जी आज्ञा दें तब क्षर पुरुष पूर्ण ब्रह्म महान् कविर्(समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकृति देने वाले को आज्ञा दूंगा। क्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष/कविरमितौजा दोनों हम सभी हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंस आत्मा ब्रह्म के साथ जाना चाहता है हाथ ऊपर करके स्वीकृति दे। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं हुई। किसी ने स्वीकृति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात् एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल(ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्मण्डों में फंसी हैं) हम सभी आत्माओं ने स्वीकृति दे दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकृति दी है मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूंगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्मण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्मण्ड सतलोक में ही थे।*

*तत् पश्चात पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को लड़की का रूप दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा सर्व आत्माओं को (जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी) उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया - प्रकृति देवी, दुर्गा) पड़ा तथा कहा कि पुत्री मैंने तेरे को शब्द शक्ति प्रदान कर दी है जितने जीव ब्रह्म कहे आप उत्पन्न कर देना। अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकृति को क्षर पुरुष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन को वचन शक्ति प्रदान की है, आप जितने जीव चाहोगे प्रकृति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कह कर सहजदास वापिस अपने द्वीप में आ गया।*

*युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकृति देवी के साथ अभद्र गति विधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा शुरु मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह योग महापाप का कारण बनेगा। परन्तु ज्योति निरंजन ने प्रकृति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री(भग) प्रकृति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी। उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देख सुक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्णब्रह्म कविर् देव से*

*अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कविर्देव(कविर् देव) अपने पुत्र योग संतायन अर्थात् जोगजीत का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा कि ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे जन्म-मृत्यु होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरुष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्मण्ड सहित निष्कासित किया जाता है। इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्मण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह संख कोस (एक कोस लगभग 3 कि. मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।*

*विशेष विवरण - अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।*

*1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरुष, अकालपुरुष, शब्द स्वरूपी राम, परम अक्षर ब्रह्म/पुरुष आदि। पूर्णब्रह्म असंख्य ब्रह्मण्डों का स्वामी है तथा वास्तव में अविनाशी है।*

*2. परब्रह्म जिसे अक्षर पुरुष भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात शंख ब्रह्मण्डों का स्वामी है।*

*3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरुष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है, जो केवल इक्कीस ब्रह्मण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सृष्टी के एक ब्रह्मण्ड का परिचय दिया जाएगा, जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे - ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।*

*ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद - एक ब्रह्मण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म(क्षर पुरुष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकृति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है। उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है वह एक ब्रह्मण्ड में केवल तीन लोकों (पृथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकीय ब्रह्मा कहा है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकीय ब्रह्मा कहा है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा है।*

## "श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी की उत्पत्ति"

*अब काल(ब्रह्म) ने कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाडेगा? प्रकृति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो, क्योंकि उसी पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आप की (ब्रह्म की) अण्डे से उत्पत्ति हुई तथा बाद में मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ, मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी आप कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूंगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी मिल गई, मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मनमानी करूंगा। यह कह कर प्रकृति*

*के साथ जबरदस्ती शादी की तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त - ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त - विष्णु जी तथा तमगुण युक्त - शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। जवान होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करवा देता है, फिर युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इक्कठे करवा कर प्रकृति (दुर्गा) के द्वारा इन तीनों की शादी करवा कर एक ब्रह्मण्ड में तीन लोकों (स्वर्ग लोक, पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) में एक-एक विभाग के मंत्री (प्रभु) नियुक्त कर देता है जैसे श्री ब्रह्मा जी को रजोगुण विभाग का तथा विष्णु जी को सत्तोगुण विभाग का तथा श्री शिव शंकर जी को तमोगुण विभाग का तथा स्वयं गुप्त(महाब्रह्मा - महाविष्णु - महाशिव) रूप से मुख्य मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्मण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना की है। उसी में तीन गुप्त स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म(काल) स्वयं महाब्रह्मा(मुख्यमंत्री) रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस स्थान पर उत्पन्न होता है वह स्वतः ही रजोगुणी बन जाता है। दूसरा स्थान सतोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरुष स्वयं महाविष्णु रूप बना कर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रख कर जो पुत्र उत्पन्न करता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सतोगुण युक्त होता है तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम शिव रख देते हैं तथा तमोगुण युक्त कर देते हैं। (प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7, 9 पृष्ठ नं. 100 से, अनुवाद कर्ता श्री हुनमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रैस गोरख पुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद्देवीमहापुराण तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्ता हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) फिर इन्हीं को धोखे में रख कर अपने खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति(एक-दूसरे को मोह-ममता में रख कर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा संहार(क्योंकि काल पुरुष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकाल कर खाना होता है उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में एक तप्तशिला है जो स्वतः गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिंघला कर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) श्री शिव जी द्वारा करवाता है। जैसे किसी मकान में तीन कमरे बने हों। एक कमरे में अश्लील चित्र लगे हों। उस कमरे में जाते ही मन में वैसे ही मलिन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कमरे में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार, प्रभु का चिन्तन ही बना रहता है। तीसरे कमरे में देश भक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म(काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना की हुई है।*

## ''तीनों गुण क्या हैं ? प्रमाण सहित''

*''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म(काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''*

*प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पृष्ठ सं. 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।*

*दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पृष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव(मृत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ ? अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सृष्टी-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।*

*उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाश मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42 :-*

*ब्रह्मा - अहम् ईश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः, के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा(42)।*

*हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकृति तथा सनातनी देवी हो।(42)*

*पृष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदांबिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)*

*अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मृत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?*

*श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)*

*हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।*

## "ब्रह्म (काल) की अव्यक्त रहने की प्रतिज्ञा"

*तीनों पुत्रों की उत्पत्ति के पश्चात् ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकृति) से कहा कि भविष्य में मैं किसी को अपने वास्तविक रूप में दर्शन नहीं दूंगा। जिस कारण से मैं अव्यक्त माना जाऊँगा। दुर्गा से कहा कि आप मेरा भेद किसी को मत देना। मैं गुप्त रहूँगा। दुर्गा ने पूछा कि क्या आप अपने पुत्रों को भी दर्शन नहीं दोगे ? ब्रह्म ने कहा मैं अपने पुत्रों को तथा अन्य को किसी भी साधना से दर्शन नहीं दूंगा, यह मेरा अटल नियम रहेगा। दुर्गा ने कहा यह तो आपका उत्तम नियम नहीं है जो आप अपनी संतान से भी छुपे रहोगे। तब काल ने कहा दुर्गा मेरी विवशता है। मुझे एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करने का शाप लगा है। यदि मेरे पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को पता लग गया तो ये उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्य नहीं करेंगे। इसलिए यह मेरा अनुत्तम नियम सदा रहेगा। जब ये तीनों कुछ बड़े हो जाऐं तो इन्हें अचेत कर देना। मेरे विषय में नहीं बताना, नहीं तो मैं तुझे भी दण्ड दूंगा। दुर्गा इस डर के मारे वास्तविकता नहीं बताती। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में कहा है कि यह बुद्धिहीन जन समुदाय मुझ अव्यक्त को मनुष्य रूप में आया हुआ अर्थात् कृष्ण मानते हैं।*

(अबुद्धयः) बुद्धि हीन (मम्) मेरे अनुत्तम अर्थात् घटिया (अव्ययम्) अविनाशी (परम् भावम्) विशेष भाव को (अजानन्तः) न जानते हुए (माम् अव्यक्तम्) मुझ अव्यक्त को (व्यक्तिम्) मनुष्य रूप में (आपन्नम) आया (मन्यन्ते) मानते हैं अर्थात् मैं कृष्ण नहीं हूँ।

*गीता अध्याय 11 श्लोक 47 तथा 48 में कहा है कि यह मेरा वास्तविक काल रूप है। इसके दर्शन अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति न वेदों में वर्णित विधि से, न जप से, न तप से तथा न किसी क्रिया से हो सकती है।*

*जब तीनों बच्चे युवा हो गए तब माता भवानी(प्रकृति, अष्टंगी) ने कहा कि तुम सागर मन्थन करो। प्रथम बार सागर मन्थन किया तो (ज्योति निरंजन ने अपने श्वांसों द्वारा चार वेद उत्पन्न किए। उनको गुप्त वाणी द्वारा आज्ञा दी कि सागर में निवास करो) चारों वेद निकले वह ब्रह्मा ने लिए। वस्तु लेकर तीनों बच्चे माता के पास आए तब माता ने कहा कि चारों वेदों को ब्रह्मा रखें।*

*दूसरी बार सागर मन्थन किया तो तीन कन्याऐं मिली। माता ने तीनों को बांट दिया। भगवान ब्रह्मा को सावित्री, भगवान विष्णु को लक्ष्मी, भगवान शंकर को पार्वती पत्नी रूप में दी। तीनों ने भोग विलास किया, सुर तथा असुर दोनों पैदा हुए।*

*{जब तीसरी बार सागर मन्थन किया तो चौदह रत्न ब्रह्मा को तथा अमृत विष्णु को व देवताओं को, मद्य(शराब) असुरों को तथा विष परमार्थ शिव ने अपने कंठ में ठहराया। यह तो बहुत बाद की बात है।} जब ब्रह्मा वेद पढ़ने लगा तो पता चला कि कोई सर्व ब्रह्मण्डों की रचना करने वाला कुल का मालिक पुरूष(प्रभु) और है। तब ब्रह्मा जी ने विष्णु जी व शंकर जी से बताया कि वेदों में वर्णन है कि सृजनहार कोई और प्रभु है परन्तु वेद कहते हैं कि भेद हम भी नहीं जानते, उसके लिए संकेत है कि किसी तत्वदर्शी संत से पूछो। तब ब्रह्मा माता के पास आया और सब वृतांत कह सुनाया। माता कहा करती थी कि मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं है। मैं ही कर्ता हूँ। मैं ही*

***सर्वशक्तिमान हूँ परन्तु ब्रह्मा ने कहा कि वेद ईश्वर कृत हैं यह झूठ नहीं हो सकते। दुर्गा ने कहा कि तेरा पिता तुझे दर्शन नहीं देगा, उसने कसम खाई है। तब ब्रह्मा ने कहा माता जी अब आप की बात पर अविश्वास हो गया है। मैं उस पुरूष(प्रभु) का पता लगाकर ही रहूँगा। दुर्गा ने कहा कि यदि वह तुझे दर्शन नहीं देगा तो तुम क्या करोगे? ब्रह्मा ने कहा कि मैं आपको शक्ल नहीं दिखाऊँगा। दूसरी तरफ ज्योति निरंजन ने कसम खाई है कि मैं किसी को दर्शन नहीं दूंगा अर्थात् 21 ब्रह्मण्ड में कभी भी अपने वास्तविक काल रूप में आकार में नहीं आऊँगा।***

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 24

अव्यक्तम्, व्यक्तिम्, आपन्नम्, मन्यन्ते, माम्, अबुद्धयः।
परम्, भावम्, अजानन्तः, मम, अव्ययम्, अनुत्तमम्।।24।।

अनुवाद : (अबुद्धयः) बुद्धिहीन लोग (मम) मेरे (अनुतमम्) अश्रेष्ठ (अव्ययम्) अटल (परम्) परम (भावम्) भावको (अजानन्तः) न जानते हुए (अव्यक्तम्) अदृश्यमान (माम्) मुझ कालको (व्यक्तिम्) आकार में कृष्ण अवतार (आपन्नम्) प्राप्त हुआ (मन्यन्ते) मानते हैं।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 25

न, अहम्, प्रकाशः, सर्वस्य, योगमायासमावृतः।
मूढः, अयम्, न, अभिजानाति, लोकः, माम्, अजम्, अव्ययम्।

अनुवाद : (अहम्) मैं (योगमाया समावृतः) योगमायासे छिपा हुआ (सर्वस्य) सबके (प्रकाशः) प्रत्यक्ष (न) नहीं होता अर्थात् अदृश्य रहता हूँ इसलिये (अजम्) जन्म न लेने वाले (अव्ययम्) अविनाशी अटल भावको (अयम्) यह (मूढः) अज्ञानी (लोकः) जनसमुदाय संसार (माम्) मुझे (न) नहीं (अभिजानाति) जानता अर्थात् मुझको अवतार रूप में आया समझता है। क्योंकि ब्रह्म अपनी शब्द शक्ति से अपने नाना रूप बना लेता है, यह दुर्गा का पति है इसलिए इस मंत्र में कह रहा है कि मैं श्री कृष्ण आदि की तरह दुर्गा से जन्म नहीं लेता।

## "ब्रह्मा का अपने पिता(काल) की प्राप्ति के लिए प्रयत्न"

***तब माया ने ब्रह्मा जी से कहा कि अलख निंरजन तुम्हारा पिता है परन्तु वह तुम्हें दर्शन नहीं देगा। ब्रह्मा ने कहा कि मैं दर्शन करके ही लौटूंगा। माता ने पूछा कि यदि तुझे दर्शन नहीं हुए तो क्या करेगा ? मैं आपके समक्ष नहीं आऊंगा। यह कह कर ब्रह्मा जी व्याकुल होकर उत्तर दिशा की तरफ चल दिया जहाँ अन्धेरा ही अन्धेरा है। वहाँ ब्रह्मा ने चार युग तक ध्यान लगाया परन्तु कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई। काल ने आकाशवाणी की कि दुर्गा सृष्टी रचना क्यों नहीं की ? भवानी ने कहा कि आप का ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा जिद्द करके आप की तलाश में गया है। ब्रह्म(काल) ने कहा उसे वापिस बुला लो। मैं उसे दर्शन नहीं दूँगा। ब्रह्मा के बिना सब कार्य असम्भव है। तब दुर्गा(प्रकृति) ने अपनी शब्द शक्ति से गायत्री नाम की लड़की उत्पन्न की तथा उसे ब्रह्मा को लौटा लाने को कहा। गायत्री ब्रह्मा जी के पास गई परंतु ब्रह्मा जी समाधि लगाए हुए थे उन्हें कोई आभास ही नहीं था कि कोई आया है। तब आदि कुमारी (प्रकृति) ने गायत्री को ध्यान द्वारा बताया कि इस के चरण स्पर्श कर। तब गायत्री ने ऐसा ही किया। ब्रह्मा जी का ध्यान भंग हुआ तो क्रोध वश बोले कि कौन पापिन है जिसने मेरा ध्यान भंग किया है। मैं तुझे शाप दूंगा। गायत्री कहने लगी कि मेरा दोष***

*नहीं है पहले मेरी बात सुनो तब शाप देना। मेरे को माता ने तुम्हें लौटा लाने को कहा है क्योंकि आपके बिना जीव उत्पत्ति नहीं हो सकती। ब्रह्मा ने कहा कि मैं कैसे जाऊँ? पिता जी के दर्शन हुए नहीं, ऐसे जाऊँ तो मेरा मजाक होगा। यदि आप माता जी के समक्ष यह कह दें कि ब्रह्मा ने पिता(ज्योति निरंजन) के दर्शन हुए हैं, मैंने अपनी आँखो से देखा है तो मैं आपके साथ चलूं। तब गायत्री ने कहा कि आप मेरे साथ भोग(सैक्स) करोगे तो मैं आपकी झूठी साक्षी(गवाही) भरूंगी। तब ब्रह्मा ने सोचा कि पिता के दर्शन हुए नहीं, वैसे जाऊँ तो माता के सामने शर्म लगेगी और चारा नहीं दिखाई दिया, फिर गायत्री से रति क्रिया (संभोग) की।*

*तब गायत्री ने कहा कि क्यों न एक गवाह और तैयार किया जाए। ब्रह्मा ने कहा बहुत ही अच्छा है। तब गायत्री ने शब्द शक्ति से एक लड़की (पुहपवति नाम की) पैदा की तथा उससे दोनों ने कहा कि आप गवाही देना कि ब्रह्मा ने पिता के दर्शन किए हैं। तब पुहपवति ने कहा कि मैं क्यों झूठी गवाही दूँ ? हाँ, यदि ब्रह्मा मेरे से रति क्रिया(भोग) करे तो गवाही दे सकती हूँ। गायत्री ने ब्रह्मा को समझाया(उकसाया) कि और कोई चारा नहीं है तब ब्रह्मा ने पुहपवति से संभोग किया तो तीनों मिलकर आदि माया(प्रकृति) के पास आए। दोनों देवियों ने उपरोक्त शर्त इसलिए रखी थी कि कहीं ब्रह्मा माता के सामने हमारी झूठी गवाही को बता देगा तो माता हमें शाप दे देगी। इसलिए उसे भी दोषी बना लिया।*

(यहाँ महाराज गरीबदास जी कहते हैं कि – ''दास गरीब यह चूक धुरों धुर'')

## "माता(दुर्गा) द्वारा ब्रह्मा को शाप देना"

*तब माता ने ब्रह्मा से पूछा कि पिता के दर्शन पाये? तब तीनों ने कहा कि हाँ, हमने अपनी आँखों से देखा है। फिर भवानी (प्रकृति) को संशय हुआ कि मुझे तो ब्रह्म ने कहा था कि मैं किसी को दर्शन नहीं दूंगा, परन्तु ये कहते हैं कि दर्शन हुए हैं। तब अष्टंगी ने ध्यान लगाया और काल/ज्योति निरंजन से पूछा कि यह क्या कहानी है? ज्योति निरंजन जी ने कहा कि ये तीनों झूठ बोल रहे हैं। तब माता ने कहा तुम झूठ बोल रहे हो। आकाशवाणी हुई है कि इन्हें कोई दर्शन नहीं हुए। यह बात सुनकर ब्रह्मा ने कहा कि माता जी मैं कसम खाकर पिता की तलाश करने गया था। परन्तु पिता (ब्रह्म) के दर्शन हुए नहीं। आप के पास आने में शर्म लग रही थी। इसलिए हमने झूठ बोल दिया। तब माता (दुर्गा) ने कहा कि अब मैं तुम्हें शाप देती हूँ।*

*<u>ब्रह्मा को शाप</u> : -- तेरी पूजा जग में नहीं होगी। आगे तेरे वंशज होंगे वे बहुत पाखण्ड करेंगे। झूठी बात बना कर जग को ठगेंगे। ऊपर से तो कर्म काण्ड करते दिखाई देंगे अन्दर से विकार करेंगे। कथा पुराणों को पढ़कर सुनाया करेंगे, स्वयं को ज्ञान नहीं होगा कि सद्ग्रन्थों में वास्तविकता क्या है, फिर भी मान वश तथा धन प्राप्ति वश गुरु बन कर अनुयाइयों को लोकवेद (शास्त्र विरुद्ध दंत कथा) सुनाया करेंगे। देवी-देवों की पूजा करके तथा करवाके, दूसरों की निन्दा करके कष्ट पर कष्ट उठायेंगे। जो उनके अनुयाई होंगे उनको परमार्थ नहीं बताएंगे। दक्षिणा के लिए जगत को गुमराह करते रहेंगे। अपने आपको सबसे अच्छा मानेंगे, दूसरों को नीचा समझेंगे। जब माता के मुख से यह सुना तो ब्रह्मा मुर्छित होकर जमीन पर गिर गया। बहुत*

*समय उपरान्त होश में आया।*

*<u>गायत्री को शाप</u> : -- तेरे कई सांड पति होंगे। तू मृतलोक में गाय बनेगी।*

*<u>पुहपवति को शाप</u> : -- तेरी जगह गंदगी में होगी। तेरे फूलों को कोई पूजा में नहीं लाएगा। इस झूठी गवाही के कारण तुझे यह नरक भोगना होगा। तेरा नाम केवड़ा केतकी होगा। (हरियाणा में कुसोंधी कहते हैं। यह गंदगी(कुरड़ियों) वाली जगह पर होती है।)*

*इस प्रकार तीनों को शाप देकर माता भवानी बहुत पछताई। {इस प्रकार पहले तो जीव बिना सोचे मन(काल निरंजन) के प्रभाव से गलत कार्य कर देता है परन्तु जब आत्मा(सतपुरूष अंश) के प्रभाव से उसे ज्ञान होता है तो पीछे पछताना पड़ता है। जिस प्रकार माता-पिता अपने बच्चों को छोटी सी गलती के कारण ताड़ते हैं (क्रोधवश होकर) परन्तु बाद में बहुत पछताते हैं। यही प्रक्रिया मन(काल-निंरजन) के प्रभाव से सर्व जीवों में क्रियावान हो रही है।} हाँ, यहाँ एक बात यह जरूर है कि निरंजन (काल-ब्रह्म) ने भी अपना कानून बना रखा है कि यदि कोई जीव किसी दुर्बल जीव को सताएगा तो उसे उसका बदला देना पड़ेगा। जब आदि भवानी(प्रकृति, अष्टंगी) ने ब्रह्मा, गायत्री व पुहपवति को शाप दिया तो अलख निंरजन(ब्रह्म-काल) ने कहा कि हे भवानी(प्रकृति, अष्टंगी) यह आपने अच्छा नहीं किया। अब मैं (निरंजन) आपको शाप देता हूँ कि द्वापर युग में तेरे भी पाँच पति होंगे। (द्रोपदी ही आदिमाया का अवतार हुई है।) जब यह आकाश वाणी सुनी तो आदि माया ने कहा कि हे ज्योति निंरजन(काल) मैं तेरे वश पड़ी हूँ जो चाहे सो कर ले।*

## "विष्णु का अपने पिता(काल) की प्राप्ति के लिए प्रस्थान व माता का आर्शीवाद पाना"

*इसके बाद विष्णु से प्रकृति ने कहा कि पुत्र तू भी अपने पिता का पता लगा ले। तब विष्णु पिता जी(काल-ब्रह्म) का पता करते-करते पाताल लोक में चले गए, जहाँ शेषनाग था। उसने विष्णु को अपनी सीमा में प्रविष्ट होते देख कर क्रोधित हो कर जहर भरा फुंकारा मारा। उसके विष के प्रभाव से विष्णु जी का रंग सांवला हो गया, जैसे स्प्रे पेंट हो जाता है। तब विष्णु ने चाहा कि इस नाग को मजा चखाना चाहिए। तब ज्योति निरंजन(काल) ने देखा कि अब विष्णु को शांत करना चाहिए। तब आकाशवाणी हुई कि विष्णु अब तू अपनी माता जी के पास जा और सत्य-सत्य सारा विवरण बता देना तथा जो कष्ट आपको शेषनाग से हुआ है, इसका प्रतिशोध द्वापर युग में लेना। द्वापर युग में आप(विष्णु) तो कृष्ण अवतार धारण करोगे और कालीदह में कालिन्द्री नामक नाग, शेष नाग का अवतार होगा।*

ऊँच होई के नीच बतावै, ताकर ओएल(बदला) मोही सों पावै।
जो जीव देई पीर पुनी काँहु , हम पुनि ओएल दिवावें ताहूँ।।

*तब विष्णु जी माता जी के पास आए तथा सत्य-सत्य कह दिया कि मुझे पिता के दर्शन नहीं हुए। इस बात से माता(प्रकृति) बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि पुत्र तू सत्यवादी है। अब मैं अपनी शक्ति से आपको तेरे पिता से मिलाती हूँ तथा तेरे मन का संशय खत्म करती हूँ।*

# एक ब्रह्माण्ड का लघु चित्र

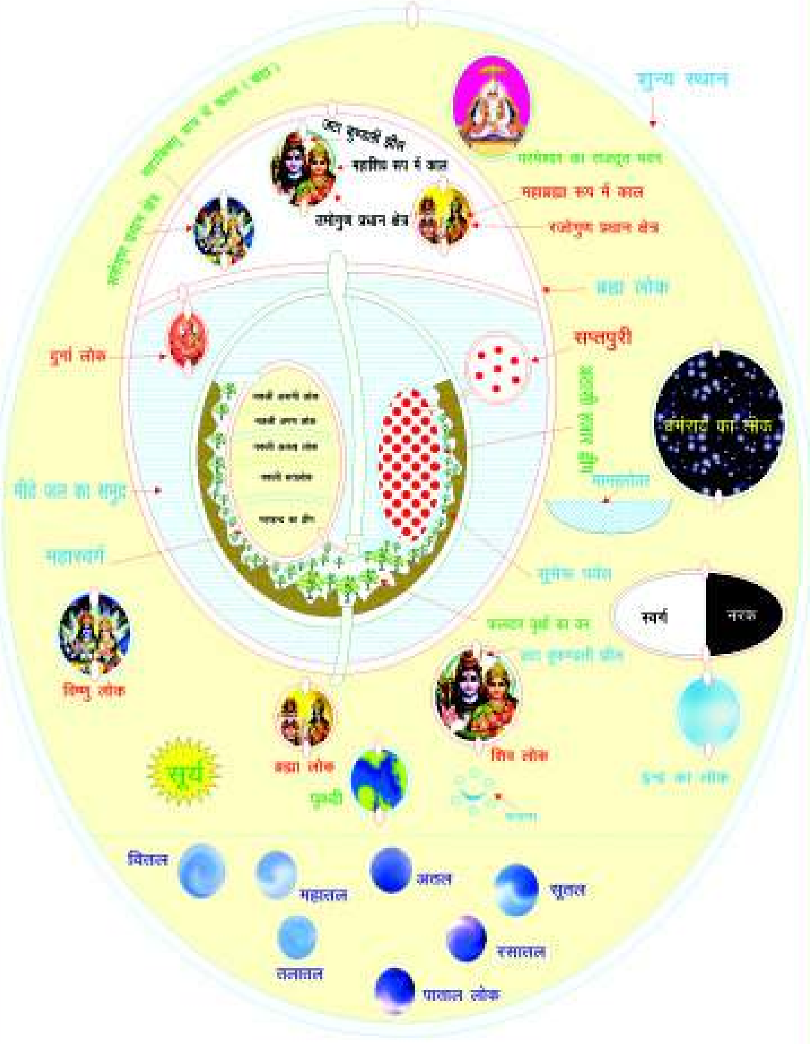

# ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्माण्ड) का लघु चित्र

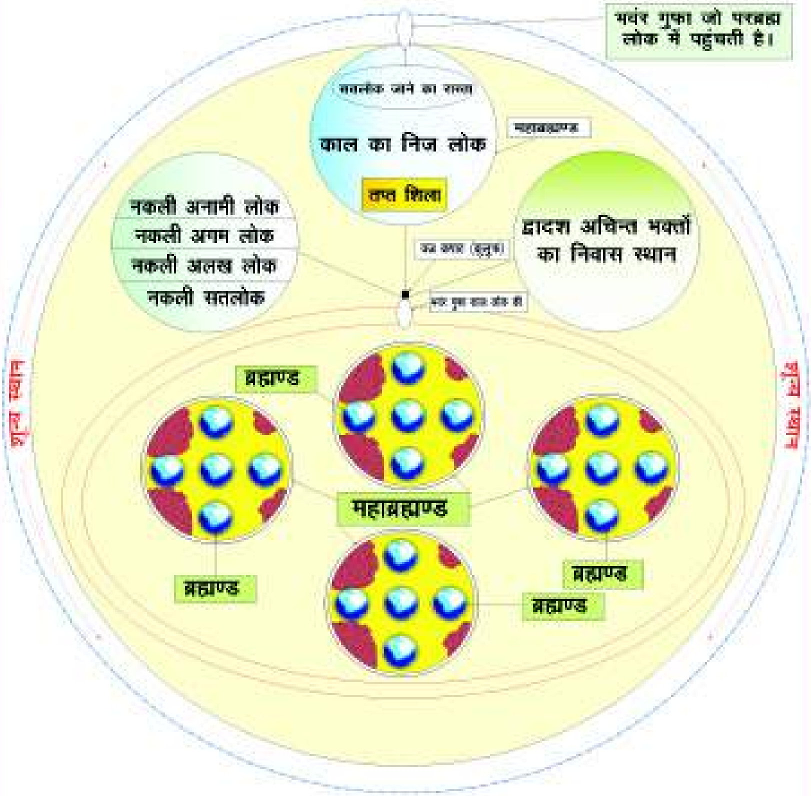

कबीर देख पुत्र तोहि पिता भीटाऊँ, तौरे मन का धोखा मिटाऊँ।
मन स्वरूप कर्ता कह जानों, मन ते दूजा और न मानो।
स्वर्ग पाताल दौर मन केरा, मन अस्थीर मन अहै अनेरा।
निंरकार मन ही को कहिए, मन की आस निश दिन रहिए।
देख हूँ पलटि सुन्य मह ज्योति, जहाँ पर झिलमिल झालर होती।।

*इस प्रकार माता(अष्टंगी, प्रकृति) ने विष्णु से कहा कि मन ही जग का कर्ता है, यही ज्योति निरंजन है। ध्यान में जो एक हजार ज्योतियाँ नजर आती हैं वही उसका रूप है। जो शंख, घण्टा आदि का बाजा सुना, यह महास्वर्ग में निरंजन का ही बज रहा है। तब माता(अष्टंगी, प्रकृति) ने कहा कि हे पुत्र तुम सब देवों के सरताज हो और तेरी हर कामना व कार्य मैं पूर्ण करूंगी। तेरी पूजा सर्व जग में होगी। आपने मुझे सच-सच बताया है। काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड़ों के प्राणियों की विशेष आदत है कि अपनी व्यर्थ महिमा बनाता है। जैसे दुर्गा जी श्री विष्णु जी को कह रही है कि तेरी पूजा जग में होगी। मैंने तुझे तेरे पिता के दर्शन करा दिए। दुर्गा ने केवल प्रकाश दिखा कर श्री विष्णु जी को बहका दिया। श्री विष्णु जी भी प्रभु की यही स्थिति अपने अनुयाईयों को समझाने लगे कि परमात्मा का केवल प्रकाश दिखाई देता है। परमात्मा निराकार है। इसके बाद आदि भवानी रूद्र(महेश जी) के पास गई तथा कहा कि तेरे दोनों भाइयों को तो जो देना था वह प्रदान कर दिया है अब आप माँगो जो माँगना है। तब महेश ने कहा कि हे जननी ! कृपा मुझे ऐसा वर दो कि मैं अमर (मृत्युंजय) हो जाऊँ। तब माता ने कहा कि यह मैं नहीं कर सकती। हाँ युक्ति बता सकती हूँ, जिससे तेरी आयु सबसे लम्बी बनी रहेगी। विधि योग समाधि है (इसलिए महादेव जी ज्यादातर समाधि में ही रहते हैं)। तीनों पुत्रों को विभाग बांट दिए : --*

*भगवान ब्रह्मा जी को काल लोक में लख चौरासी के चोले(शरीर) रचने(बनाने) का अर्थात् रजोगुण प्रभावित करके संतान उत्पत्ति के लिए विवश करके जीव उत्पत्ति कराने का विभाग प्रदान किया।*

*भगवान विष्णु जी को इन जीवों के पालन पोषण (कर्मानुसार) करने, तथा मोह-ममता उत्पन्न करके स्थिति बनाए रखने का विभाग दिया।*

*भगवान शिव शंकर(महादेव) को संहार करने का विभाग प्रदान किया।*

*क्योंकि इनके पिता निरंजन को एक लाख मानव शरीर धारी जीव प्रतिदिन खाने पड़ते हैं।*

*उपरोक्त विवरण एक ब्रह्मण्ड में ब्रह्म(काल) की रचना का है। ऐसे-ऐसे क्षर पुरुष (काल) के इक्कीस ब्रह्मण्ड हैं।*

*परन्तु क्षर पुरूष (काल) स्वयं व्यक्त अर्थात् वास्तविक शरीर रूप में सबके सामने नहीं आता। उसी को प्राप्त करने के लिए तीनों देवों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी, शिव जी) के वेदों में वर्णित विधि से भरसक प्रयत्न करने पर भी ब्रह्म(काल) के दर्शन नहीं हुए। बाद में ऋषियों ने वेदों को पढ़ा। उसमें लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि' (पवित्र यजुर्वेद अ. 1 मंत्र 15) परमेश्वर सशरीर है तथा पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूर् असि'।*

*इस मंत्र में दो बार वेद गवाही दे रहा है कि सर्वव्यापक, सर्वपालन कर्ता सतपुरुष सशरीर है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 8 में कहा है कि (कविर् मनिषी) जिस परमेश्वर की सर्व प्राणियों को चाह है, वह कविर् अर्थात् कबीर है। उसका शरीर बिना नाड़ी (अस्नाविरम्) का है, (शुक्रम्) वीर्य से बनी पाँच तत्व से बनी भौतिक (अकायम्) काया रहित है। वह सर्व का मालिक सर्वोपरि सत्यलोक में विराजमान है, उस परमेश्वर का तेजपुंज का (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित शरीर है जो शब्द रूप अर्थात् अविनाशी है। वही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है जो सर्व ब्रह्मण्डों की रचना करने वाला (व्यदधाता) सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार (स्वयम्भूः) स्वयं प्रकट होने वाला (अर्थान्) वास्तव में (शाश्वत्) अविनाशी है (गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी प्रमाण है।) वेदों में ओ३म् नाम के सुमरण का प्रमाण है जो केवल ब्रह्म साधना है। इस उद्देश्य से ओ३म् नाम के जाप को पूर्ण ब्रह्म का मान कर ऋषियों ने भी हजारों वर्ष हठयोग (समाधी लगा कर) करके प्रभु प्राप्ति की चेष्टा की, परन्तु प्रभु दर्शन नहीं हुए, सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। उन्हीं खिलौनों से खेल कर ऋषि भी जन्म-मृत्यु के चक्र में ही रह गए तथा अपने अनुभव के शास्त्रों में परमात्मा को निराकार लिख दिया। ब्रह्म(काल) ने कसम खाई है कि मैं अपने वास्तविक रूप में किसी को दर्शन नहीं दूँगा। मुझे अव्यक्त जाना करेंगे(अव्यक्त का भावार्थ है कि कोई आकार में है परन्तु व्यक्तिगत रूप से स्थूल रूप में दर्शन नहीं देता। जैसे आकाश में बादल छा जाने पर दिन के समय सूर्य अदृश हो जाता है। वह दृश्यमान नहीं है, परन्तु वास्तव में बादलों के पार ज्यों का त्यों है, इसे अव्यक्त कहते हैं।)। (प्रमाण के लिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25, अध्याय 11 श्लोक 48 तथा 32)*

*पवित्र गीता जी बोलने वाला ब्रह्म(काल) श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके कह रहा है कि अर्जुन मैं बढ़ा हुआ काल हूँ और सर्व को खाने के लिए आया हूँ। यह मेरा वास्तविक रूप है, इसको तेरे अतिरिक्त न तो कोई पहले देख सका तथा न कोई आगे देख सकता है अर्थात् वेदों में वर्णित यज्ञ-जप-तप तथा ओ३म् नाम आदि की विधि से मेरे इस वास्तविक स्वरूप के दर्शन नहीं हो सकते। मैं कृष्ण नहीं हूँ, ये मूर्ख लोग कृष्ण रूप में मुझ अव्यक्त को व्यक्त (मनुष्य रूप) मान रहे हैं। क्योंकि ये मेरे घटिया नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी वास्तविक इस काल रूप में सबके सामने नहीं आता। विचार करें :- अपने छुपे रहने वाले विधान को स्वयं अश्रेष्ठ(अनुत्तम) क्यों कह रहे हैं?*

*यदि पिता अपनी सन्तान को भी दर्शन नहीं देता तो उसमें कोई त्रुटि है जिस कारण से छुपा है तथा सुविधाएं भी प्रदान कर रहा है। काल(ब्रह्म) को शापवश एक लाख प्राणियों का आहार करना पड़ता है तथा 25 प्रतिशत प्रतिदिन जो ज्यादा उत्पन्न होते हैं उन्हें ठिकाने लगाने के लिए तथा कर्म भोग का दण्ड देने के लिए चौरासी लाख योनियों की रचना की हुई है। यदि सबके सामने बैठ कर किसी की पुत्री, किसी की पत्नी, किसी के पुत्र, माता-पिता को खाए तो सर्व को ब्रह्म से नफरत हो जाए तथा जब भी कभी पूर्ण परमात्मा कविरग्नि(कबीर परमेश्वर) स्वयं आए या अपना कोई संदेशवाहक(दूत) भेंजे तो सर्व प्राणी सत्यभक्ति करके काल*

*के जाल से निकल जाएं। इसलिए धोखा देकर रखता है तथा पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 18,24,25 में अपनी साधना से होने वाली मुक्ति (गति) को भी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ कहा है तथा अपने विधान(नियम)को भी (अनुत्तम) अश्रेष्ठ कहा है। (कृप्या देखें एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र पृष्ठ नं. 96)*

*प्रत्येक ब्रह्मण्ड में बने ब्रह्मलोक में एक महास्वर्ग बनाया है। महास्वर्ग में एक स्थान पर नकली सतलोक - नकली अलख लोक - नकली अगम लोक तथा नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखा देने के लिए प्रकृति (दुर्गा - आदि माया) द्वारा करवा रखी है। एक ब्रह्मण्ड में अन्य लोकों की भी रचना है, जैसे श्री ब्रह्मा जी का लोक, श्री विष्णु जी का लोक, श्री शिव जी का लोक। जहाँ पर बैठकर तीनों प्रभु नीचे के तीन लोकों (स्वर्गलोक अर्थात् इन्द्र का लोक - पृथ्वी लोक तथा पाताल लोक) पर एक - एक विभाग के मालिक बन कर प्रभुता करते हैं तथा अपने पिता काल के खाने के लिए प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्यभार संभालते हैं। तीनों प्रभुओं की भी जन्म व मृत्यु होती है। तब काल इन्हें भी खाता है। इसी ब्रह्मण्ड {इसे अण्ड भी कहते हैं क्योंकि ब्रह्मण्ड की बनावट अण्डाकार है, इसे पिण्ड भी कहते हैं क्योंकि शरीर(पिण्ड) में एक ब्रह्मण्ड की रचना कमलों में टी. वी. की तरह देखी जाती है} में एक मानसरोवर तथा धर्मराय (न्यायधीश) का भी लोक है तथा एक गुप्त स्थान पर पूर्ण परमात्मा अन्य रूप धारण करके रहता है जैसे प्रत्येक देश का राजदूत भवन होता है। वहाँ पर कोई नहीं जा सकता। वहाँ पर वे आत्माऐं रहती हैं जिनकी सत्यलोक की भक्ति अधूरी रहती है। जब भक्ति युग आता है तो उस समय इन पुण्यात्माओं को पृथ्वी पर मानव शरीर प्राप्त होता है तथा ये शीघ्र ही सत भक्ति पर लग जाते हैं तथा पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर जाते हैं। उस स्थान पर रहने वाले हंस आत्माओं की निजी भक्ति कमाई खर्च नहीं होती। परमात्मा के भण्डार से सर्व सुविधाऐं उपलब्ध होती हैं। ब्रह्म(काल) के उपासकों की भक्ति कमाई स्वर्ग-महा स्वर्ग में समाप्त हो जाती है क्योंकि इस काल लोक(ब्रह्म लोक) तथा परब्रह्म लोक में प्राणियों को अपना किया ही मिलता है। (कृपा देखें एक ब्रह्मण्ड का व ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड का लघु चित्र पृष्ठ 96 व 93)*

*क्षर पुरुष (ब्रह्म) ने अपने 20 ब्रह्मण्डों को चार महाब्रह्मण्डों में विभाजित किया है। एक महाब्रह्मण्ड में पाँच ब्रह्मण्डों का समूह बनाया है तथा चारों ओर से अण्डाकार गोलाई(परिधि) में रोका है तथा चारों महा ब्रह्मण्डों को भी फिर अण्डाकार गोलाई(परिधि) में रोका है। इक्कीसवें ब्रह्मण्ड की रचना एक महाब्रह्मण्ड जितना स्थान लेकर की है। इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में प्रवेश होते ही तीन रास्ते बनाए हैं। इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में भी बांई तरफ नकली सतलोक, नकली अलख लोक, नकली अगम लोक, नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखे में रखने के लिए आदि माया (दुर्गा) से करवाई है तथा दांई तरफ बारह सर्व श्रेष्ठ ब्रह्म साधकों (भक्तों) को रखता है। फिर प्रत्येक युग में उन्हें अपने संदेश वाहक बनाकर पृथ्वी पर भेजता है, जो शास्त्र विधि रहित साधना व ज्ञान बताते हैं तथा स्वयं भी भक्तिहीन हो जाते हैं तथा अनुयाइयों को भी काल जाल में फंसा जाते हैं। फिर*

*वे गुरु जी तथा अनुयाई दोनों ही नरक में जाते हैं। फिर सामने एक ताला(कुलुफ) लगा रखा है। वह रास्ता काल(ब्रह्म) के निज लोक में जाता है। जहाँ पर यह ब्रह्म(काल) अपने वास्तविक मानव सदृश काल रूप में रहता है। इसी स्थान पर एक पत्थर की टुकड़ी तवे(चपाती पकाने की लोहे की गोल प्लेट सी होती है) जैसी स्वतः गर्म रहती है। जिस पर एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को भूनकर उनमें से गंदगी निकालता है। उस समय सर्व प्राणी बहुत पीड़ा महसूस करते हैं तथा हाहाकार मच जाती है। फिर कुछ समय उपरान्त वे बेहोश हो जाते हैं। जीव मरता नहीं। फिर धर्मराय के लोक में जाकर कर्माधार से अन्य जन्म प्राप्त करते हैं तथा जन्म-मृत्यु का चक्कर बना रहता है। उपरोक्त सामने लगा ताला ब्रह्म(काल) केवल अपने आहार वाले प्राणियों के लिए कुछ क्षण के लिए खोलता है। पूर्ण परमात्मा के सत्यनाम व सारनाम से यह ताला स्वयं खुल जाता है। ऐसे काल का जाल पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर साहेब) ने स्वयं ही अपने निजी भक्त धर्मदास जी को समझाया।*

## "परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों की स्थापना"

*कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने आगे बताया है कि परब्रह्म(अक्षर पुरुष) ने अपने कार्य में गफलत की क्योंकि यह मानसरोवर में सो गया तथा जब परमेश्वर (मैंनें अर्थात् कबीर साहेब ने) उस सरोवर में अण्डा छोड़ा तो अक्षर पुरुष (परब्रह्म) ने उसे क्रोध से देखा। इन दोनों अपराधों के कारण इसे भी सात संख ब्रह्मण्ड़ों सहित सतलोक से बाहर कर दिया। दूसरा कारण अक्षर पुरुष (परब्रह्म) अपने साथी ब्रह्म(क्षर पुरुष) की विदाई में व्याकुल होकर परमपिता कविर्देव(कबीर परमेश्वर) की याद भूलकर उसी को याद करने लगा तथा सोचा कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तो बहुत आनन्द मना रहा होगा, मैं पीछे रह गया तथा अन्य आत्माऐं जो परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्मण्डों में जन्म-मृत्यु का कर्मदण्ड भोग रही हैं, उन हंस आत्माओं की विदाई की याद में खो गई जो ब्रह्म(काल) के साथ इक्कीस ब्रह्मण्डों में फंसी हैं तथा पूर्ण परमात्मा, सुखदाई कविर्देव की याद भुला दी। परमेश्वर कविर् देव के बार-बार समझाने पर भी आस्था कम नहीं हुई। परब्रह्म(अक्षर पुरुष) ने सोचा कि मैं भी अलग स्थान प्राप्त करूं तो अच्छा रहे। यह सोच कर राज्य प्राप्ति की इच्छा से सारनाम का जाप प्रारम्भ कर दिया। इसी प्रकार अन्य आत्माओं ने(जो परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों में फंसी हैं) सोचा कि वे जो ब्रह्म के साथ आत्माऐं गई हैं वे तो वहाँ मौज-मस्ती मनाऐंगे, हम पीछे रह गये। परब्रह्म के मन में यह धारणा बनी कि क्षर पुरुष अलग होकर बहुत सुखी होगा। यह विचार कर अन्तरात्मा से भिन्न स्थान प्राप्ति की ठान ली। परब्रह्म(अक्षर पुरुष) ने हठ योग नहीं किया, परन्तु सारनाम का जाप केवल अलग राज्य प्राप्ति के लिए विशेष कसक के साथ करता रहा। अलग स्थान प्राप्त करने के लिए पागलों की तरह विचरने लगा, खाना-पीना भी त्याग दिया। अन्य आत्माऐं उसके वैराग्य पर आसक्त होकर उसे चाहने लगी। पूर्ण प्रभु के पूछने पर परब्रह्म ने अलग स्थान माँगा तथा कुछ हंसात्माओं के लिए भी याचना की। तब कविर्देव ने कहा कि जो आत्मा आपके साथ स्वेच्छा से जाना चाहें उन्हें*

*भेज देता हूँ। पूर्ण प्रभु ने पूछा कि कौन हंस आत्मा परब्रह्म के साथ जाना चाहता है, सहमति व्यक्त करे। बहुत समय उपरान्त एक हंस ने स्वीकृति दी, फिर देखा-देखी उन सर्व आत्माओं ने भी सहमति व्यक्त कर दी। सर्व प्रथम स्वीकृति देने वाले हंस को स्त्री रूप बनाया, उसका नाम ईश्वरी माया(प्रकृति सुरति) रखा तथा अन्य आत्माओं को उस ईश्वरी माया में प्रवेश करके अचिन्त द्वारा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) के पास भेजा। (पतिव्रता पद से गिरने की सजा पाई।) कई युगों तक दोनों सात संख ब्रह्मण्डों में रहे, परन्तु परब्रह्म ने दुर्व्यवहार नहीं किया। ईश्वरी माया की स्वेच्छा से अंगीकार किया तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (योनि) बनाई। ईश्वरी देवी की सहमति से संतान उत्पन्न की। इस लिए परब्रह्म के लोक (सात संख ब्रह्मण्डों) में प्राणियों को तप्तशिला का कष्ट नहीं है तथा वहाँ पशु-पक्षी भी ब्रह्म लोक के देवों से अच्छे चरित्र युक्त हैं। आयु भी बहुत लम्बी है, परन्तु जन्म - मृत्यु कर्माधार पर कर्मदण्ड तथा परिश्रम करके ही उदर पूर्ति होती है। स्वर्ग तथा नरक भी ऐसे ही बने हैं। परब्रह्म(अक्षर पुरुष) को सात संख ब्रह्मण्ड उसके सारनाम की इच्छा रूपी भक्ति की कमाई के प्रतिफल में प्रदान किये तथा सत्यलोक से भिन्न स्थान पर गोलाकार परिधि में बन्द करके सात संख ब्रह्मण्डों सहित अक्षर ब्रह्म व ईश्वरी माया को निष्कासित कर दिया।*

*पूर्ण ब्रह्म(सतपुरुष) असंख्य ब्रह्मण्डों जो सत्यलोक आदि में हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्डों तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों का भी प्रभु (मालिक) है अर्थात् परमेश्वर कविर्देव कुल का मालिक है। (कृप्या देखें असंख्य ब्रह्मण्डों का चित्र पृष्ठ नं. 92 पर)*

*श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी आदि के चार-चार भुजाएं तथा 16 कलाएं हैं तथा प्रकृति देवी(दुर्गा) की आठ भुजाएं हैं तथा 64 कलाएं हैं। ब्रह्म(क्षर पुरुष) की एक हजार भुजाएं हैं तथा एक हजार कलाएं है तथा इक्कीस ब्रह्मण्ड़ों का प्रभु है। परब्रह्म(अक्षर पुरुष) की दस हजार भुजाएं हैं तथा दस हजार कला हैं तथा सात संख ब्रह्मण्डों का प्रभु है। पूर्ण ब्रह्म(परम अक्षर पुरुष अर्थात् सतपुरुष) की असंख्य भुजाएं तथा असंख्य कलाएं हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्मण्ड व परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्डों सहित असंख्य ब्रह्मण्डों का प्रभु है। प्रत्येक प्रभु अपनी सर्व भुजाओं को समेट कर केवल दो भुजाएं रख सकते हैं तथा जब चाहें सर्व भुजाओं को भी प्रकट कर सकते हैं। पूर्ण परमात्मा परब्रह्म के प्रत्येक ब्रह्मण्ड में भी अलग स्थान बनाकर अन्य रूप में गुप्त रहता है। यूं समझो जैसे एक घूमने वाला कैमरा बाहर लगा देते हैं तथा अन्दर टी.वी.(टेलीविजन) रख देते हैं। टी.वी. पर बाहर का सर्व दृश्य नजर आता है तथा दूसरा टी.वी. बाहर रख कर अन्दर का कैमरा स्थाई करके रख दिया जाए, उसमें केवल अन्दर बैठे प्रबन्धक का चित्र दिखाई देता है। जिससे सर्व कर्मचारी सावधान रहते हैं।*

*इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा अपने सतलोक में बैठ कर सर्व को नियंत्रित किए हुए हैं तथा प्रत्येक ब्रह्मण्ड में भी सतगुरु कविर्देव विद्यमान रहते हैं जैसे सूर्य दूर होते हुए भी अपना प्रभाव अन्य लोकों में बनाए हुए है।*

## "पवित्र अथर्ववेद में सृष्टी रचना का प्रमाण"

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 1 :–

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्त्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।। 1।।

ब्रह्म–ज–ज्ञानम्–प्रथमम्–पुरस्त्तात्–विसिमतः–सुरुचः–वेनः–आवः–सः–बुध्न्याः –उपमा–अस्य–विष्ठाः–सतः–च–योनिम्–असतः–च–वि वः

अनुवाद :– (प्रथमम्) प्राचीन अर्थात् सनातन (ब्रह्म) परमात्मा ने (ज) प्रकट होकर (ज्ञानम्) अपनी सूझ–बूझ से (पुरस्त्तात्) शिखर में अर्थात् सतलोक आदि को (सुरुचः) स्वप्रकाशित (विसिमतः) सीमा रहित (वेनः) जुलाहे ने ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर (आवः) सुरक्षित किया (च) तथा (सः) उसी (बुध्न्याः) मूल मालिक ने (योनिम्) मूलस्थान सत्यलोक के (उपमा) सदृश अर्थात् मिलते जुलते (अस्य) यह (सतः) अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म के लोक (च) तथा (असतः) क्षर पुरुष के लोक आदि (वि वः) आवास स्थान भिन्न (विष्ठाः) स्थापित किए।

***भावार्थ :- पवित्र वेदों को बोलने वाला ब्रह्म(काल) कह रहा है कि सनातन परमेश्वर ने स्वयं अनामय(अनामी) लोक से सत्यलोक में प्रकट होकर अपनी सूझ-बूझ से कपड़े की तरह रचना करके ऊपर के सतलोक आदि को सीमा रहित स्वप्रकाशित अजर - अमर अर्थात् अविनाशी ठहराए तथा नीचे के परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्मण्ड व इनमें छोटी-से छोटी रचना भी उसी परमात्मा ने अस्थाई की है।***

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 2 :–

इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।
तस्मा एतं सुरुचं ह्वारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे।।2।।

इयम्–पित्र्या–राष्ट्रि–एतु–अग्रे–प्रथमाय–जनुषे–भुवनेष्ठाः–तस्मा–एतम्–सुरुचम् – हवारमह्यम्–धर्मम्–श्रीणान्तु–प्रथमाय–धास्यवे

अनुवाद :– (इयम्) इसी (पित्र्या) जगतपिता परमेश्वर ने (एतु) इस (अग्रे) सर्वोत्तम् (प्रथमाय) सर्व से पहली माया परानन्दनी (राष्ट्रि) राजेश्वरी शक्ति अर्थात् पराशक्ति जिसे आकर्षण शक्ति भी कहते हैं, को (जनुषे) उत्पन्न करके (भुवनेष्ठाः) लोक स्थापना की (तस्मा) उसी परमेश्वर ने (सुरुचम्) स्वेच्छा से (एतम्) इस (प्रथमाय) पराशक्ति के द्वारा (ह्वारमह्यम्) एक दूसरे के वियोग को रोकने अर्थात् आकर्षण शक्ति के (श्रीणान्तु) कभी समाप्त न होने वाले (धर्मम्) स्वभाव से (धास्यवे) धारण करके ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर रोके हुए है।

***भावार्थ :- जगतपिता परमेश्वर ने अपनी शब्द शक्ति से राष्ट्री अर्थात् सबसे पहली माया राजेश्वरी उत्पन्न की तथा उसी पराशक्ति के द्वारा एक-दूसरे को आकर्षण शक्ति से रोकने वाले कभी न समाप्त होने वाले गुण से उपरोक्त सर्व ब्रह्मण्डों को स्थापित किया है।***

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 3 :–

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति।

ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ।।3।।

प्र—यः—जज्ञे—विद्वानस्य—बन्धुः—विश्वा—देवानाम्—जनिमा—विवक्ति—ब्रह्मः—ब्रह्मणः— उज्जभार—मध्यात्—निचैः—उच्चैः—स्वधा—अभिः—प्रतस्थौ

अनुवाद :— (प्र) सर्व प्रथम (देवानाम्) देवताओं व ब्रह्मण्डों की (जज्ञे) उत्पति के ज्ञान को (विद्वानस्य) जिज्ञासु भक्त का (यः) जो (बन्धुः) वास्तविक साथी अर्थात् पूर्ण परमात्मा ही अपने निज सेवक को (जनिमा) अपने द्वारा सृजन किए हुए को (विवक्ति) स्वयं ही ठीक—ठीक विस्तार पूर्वक बताता है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा ने (मध्यात्) अपने मध्य से अर्थात् शब्द शक्ति से (ब्रह्मः) ब्रह्म—क्षर पुरूष अर्थात् काल को (उज्जभार) उत्पन्न करके (विश्वा) सारे संसार को अर्थात् सर्व लोकों को (उच्चैः) ऊपर सत्यलोक आदि (निचैः) नीचे परब्रह्म व ब्रह्म के सर्व ब्रह्मण्ड (स्वधा) अपनी धारण करने वाली (अभिः) आकर्षण शक्ति से (प्र तस्थौ) दोनों को अच्छी प्रकार स्थित किया।

***भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा अपने द्वारा रची सृष्टी का ज्ञान तथा सर्व आत्माओं की उत्पत्ति का ज्ञान अपने निजी दास को स्वयं ही सही बताता है कि पूर्ण परमात्मा ने अपने मध्य अर्थात् अपने शरीर से अपनी शब्द शक्ति के द्वारा ब्रह्म(क्षर पुरुष-काल) की उत्पत्ति की तथा सर्व ब्रह्मण्डों को ऊपर सतलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक आदि तथा नीचे परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्मण्डों को अपनी धारण करने वाली आकर्षण शक्ति से ठहराया हुआ है।***

***जैसे पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने अपने निजी सेवक अर्थात् सखा श्री धर्मदास जी, आदरणीय गरीबदास जी आदि को अपने द्वारा रची सृष्टी का ज्ञान स्वयं ही बताया। उपरोक्त वेद मंत्र भी यही समर्थन कर रहा है।***

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 4

स हि दिवः स पृथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत्।
महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सद्म पार्थिवं च रजः।।4।।

हि—दिवः—स—पृथिव्या—ऋतस्था—मही—क्षेमम्—रोदसी—अकस्भायत्—महान्—मही—अस्कभायद्—विजातः—धाम्—सदम्—पार्थिवम्—च—रजः

अनुवाद — (स)उसी सर्वशक्तिमान परमात्मा ने (हि) निःसंदेह (दिवः) ऊपर के चारों दिव्य लोक जैसे सत्य लोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी अर्थात् अकह लोक अर्थात् दिव्य गुणों युक्त लोकों को (ऋतस्था) सत्य स्थिर अर्थात् अजर—अमर रूप से स्थिर किए (स) उन्हीं के समान (पृथिव्या) नीचे के सर्व लोक परब्रह्म के सात संख तथा ब्रह्म—काल के इक्कीस ब्रह्मण्ड (मही) पृथ्वी तत्व से (क्षेमम्) सुरक्षा के साथ (अस्कभायत्) ठहराया (रोदसी) आकाश तत्व तथा पृथ्वी तत्व दोनों से ऊपर नीचे के ब्रह्माण्डों को{जैसे आकाश एक सुक्ष्म तत्व है, आकाश का गुण शब्द है, पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के लोक शब्द रूप रचे जो तेजपुंज के बनाए हैं तथा नीचे के परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के सप्त संख ब्रह्मण्ड तथा ब्रह्म—क्षर पुरूष के इक्कीस ब्रह्मण्डों को पृथ्वी तत्व से अस्थाई रचा} (महान्) पूर्ण परमात्मा ने (पार्थिवम्) पृथ्वी वाले (वि) भिन्न—भिन्न (धाम्) लोक (च) और (सदम्) आवास स्थान (मही) पृथ्वी तत्व से (रजः) प्रत्येक ब्रह्मण्ड में छोटे—छोटे लोकों की (जातः) रचना करके (अस्कभायत्) स्थिर किया।

***भावार्थ :- ऊपर के चारों लोक सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक, यह तो अजर-अमर स्थाई अर्थात् अविनाशी रचे हैं तथा नीचे के ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोकों को अस्थाई रचना करके तथा अन्य छोटे-छोटे लोक भी उसी परमेश्वर ने रच कर स्थिर किए।***

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 5

स बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोभ्यग्रं ब्ृहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट्।
अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः।।5।।

स—बुध्न्यात्—आष्ट्र—जनुषेः—अभि—अग्रम्—बृहस्पतिः—देवता—तस्य—सम्राट—अहः— यत्—शुक्रम्—ज्योतिषः—जनिष्ट—अथ—द्युमन्तः—वि—वसन्तु—विप्राः

अनुवाद :— (सः) उसी (बुध्न्यात्) मूल मालिक से (अभि—अग्रम्) सर्व प्रथम स्थान पर (आष्ट्र) अष्टँगी माया—दुर्गा अर्थात् प्रकृति देवी (जनुषेः) उत्पन्न हुई (तस्य) इसका भी मालिक यही (सम्राट) राजाधिराज (बृहस्पतिः) जगतगुरु (देवता) परमेश्वर है। (यत्) जिस से (अहः) सबका वियोग हुआ (अथ) इसके बाद (ज्योतिषः) ज्योति रूप निरंजन अर्थात् काल के (शुक्रम्) वीर्य अर्थात् बीज शक्ति से (जनिष्ट) दुर्गा के उदर से उत्पन्न होकर (विप्राः) भक्त आत्माएं (वि) अलग से (द्युमन्तः) मनुष्य लोक तथा स्वर्ग लोक में ज्योति निरंजन के आदेश से दुर्गा ने कहा (वसन्तु) निवास करो, अर्थात् वे निवास करने लगी।

***भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के चारों लोकों में से जो नीचे से सबसे प्रथम अर्थात् सत्यलोक में आष्ट्रा अर्थात् अष्टंगी(प्रकृति देवी-दुर्गा) की उत्पत्ति की। यही राजाधिराज, जगतगुरु, पूर्ण परमेश्वर(सतपुरुष) है जिससे सबका वियोग हुआ है। फिर सर्व प्राणी ज्योति निरंजन(काल) के (वीर्य) बीज से दुर्गा (आष्ट्रा) के गर्भ द्वारा उत्पन्न होकर स्वर्ग लोक व पृथ्वी लोक पर निवास करने लगे।***

*काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 6*

नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम।
एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु।।6।।

नूनम्—तत्—अस्य—काव्यः—महः—देवस्य—पूर्व्यस्य—धाम—हिनोति—पूर्वे—विषिते—एष— जज्ञे—बहुभिः—साकम्—इत्था—अर्धे—ससन्—नु।

अनुवाद — (नूनम्) निसंदेह (तत्) वह पूर्ण परमेश्वर ही (अस्य) इस (काव्यः) भक्त आत्मा जो पूर्ण परमेश्वर की भक्ति विधिवत करता है को वापिस (महः) सर्वशक्तिमान (देवस्य) परमेश्वर के (पूर्व्यस्य) पहले के (धाम) लोक में अर्थात् सत्यलोक में (हिनोति) भेजता है।

(पूर्वे) पहले वाले (विषिते) विशेष चाहे हुए (एष) इस परमेश्वर को व (जज्ञे) सृष्टी उत्पति के ज्ञान को जान कर (बहुभिः) बहुत आनन्द (साकम्) के साथ (अर्धे) आधा (ससन्) सोता हुआ (इत्था) विधिवत् इस प्रकार (नु) स्तुति करता है।

***भावार्थ :- वही पूर्ण परमेश्वर सत्य साधना करने वाले साधक को उसी पहले वाले स्थान (सत्यलोक) में ले जाता है, जहाँ से बिछुड़ कर आए थे। वहाँ उस वास्तविक सुखदाई प्रभु को प्राप्त करके खुशी से आत्म विभोर होकर मस्ती से स्तुति करता है कि हे परमात्मा असंख्य जन्मों के भूले-भटकों को वास्तविक ठिकाना मिल गया। इसी का प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16 में भी है।***

***आदरणीय गरीबदास जी को इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) स्वयं सत्यभक्ति प्रदान करके सत्यलोक लेकर गए थे, तब अपनी अमृतवाणी में आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने कहा:-***

गरीब, अजब नगर में ले गए, हमकुँ सतगुरु आन। झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

योथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बृहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः—अथर्वाणम्—पित्तरम्—देवबन्धुम्—बृहस्पतिम्—नमसा—अव—च—गच्छात्— त्वम्— विश्वेषाम्—जनिता—यथा—सः—कविर्देवः—न—दभायत्—स्वधावान्

अनुवाद :— (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बृहस्पतिम्) जगतगुरु (च) तथा (नमसा) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को (अव) सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्मण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः कविर्–देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

***भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।***

***जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, काल(ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्मण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव सर्व मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।***

## "पवित्र ऋग्वेद में सृष्टी रचना का प्रमाण"

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 1

सहस्रशीर्षा पुरूषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतों वृत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।1।।

सहस्रशिर्षा—पुरूषः—सहस्राक्षः—सहस्रपात्—स—भूमिम्—विश्वतः—वृत्वा—अत्यातिष्ठत् —दशंगुलम्।

अनुवाद :— (पुरूषः) विराट रूप काल भगवान अर्थात् क्षर पुरूष (सहस्रशिर्षा) हजार सिरों वाला (सहस्राक्षः) हजार आँखों वाला (सहस्रपात्) हजार पैरों वाला (स) वह काल

(भूमिम्) पृथ्वी वाले इक्कीस ब्रह्मण्डों को (विश्वतः) सब ओर से (दशंगुलम्) दसों अंगुलियों से अर्थात् पूर्ण रूप से काबू किए हुए (वृत्वा) गोलाकार घेरे में घेर कर (अत्यातिष्ठत्) इस से बढ़कर अर्थात् अपने काल लोक में सबसे न्यारा भी इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में ठहरा है अर्थात् रहता है।

***भावार्थ :- इस मंत्र में विराट (काल-ब्रह्म) का वर्णन है। (गीता अध्याय 10-11 में भी इसी काल-ब्रह्म का ऐसा ही वर्णन है)***

***जिसके हजारों हाथ, पैर, हजारों आँखे, कान आदि हैं वह विराट रूप काल प्रभु अपने आधीन सर्व प्राणियों को पूर्ण काबू करके अर्थात् 20 ब्रह्मण्डों को गोलाकार परिधि में रोककर स्वयं इनसे ऊपर (अलग) इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में बैठा है।***

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 2

पुरूष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

पुरूष—एव—इदम्—सर्वम्—यत्—भूतम्—यत्—च—भाव्यम्—उत—अमृतत्वस्य—इशानः—यत्—अन्नेन—अतिरोहति

अनुवाद :— (एव) इसी प्रकार कुछ सही तौर पर (पुरूष) भगवान है वह अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म है (च) और (इदम्) यह (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ है (यत्) जो (भाव्यम्) भविष्य में होगा (सर्वम्) सब (यत्) प्रयत्न से अर्थात् मेहनत द्वारा (अन्नेन) अन्न से (अतिरोहति) विकसित होता है। यह अक्षर पुरूष भी (उत) सन्देह युक्त (अमृतत्वस्य) मोक्ष का (इशानः) स्वामी है। अर्थात् भगवान तो अक्षर पुरूष भी कुछ सही है परन्तु पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है।

***भावार्थ :- इस मंत्र में परब्रह्म (अक्षर पुरुष) का विवरण है जो कुछ भगवान वाले लक्षणों से युक्त है, परन्तु इसकी भक्ति से भी पूर्ण मोक्ष नहीं है, इसलिए इसे संदेहयुक्त मुक्ति दाता कहा है। इसे कुछ प्रभु के गुणों युक्त इसलिए कहा है कि यह काल की तरह तप्तशिला पर भून कर नहीं खाता। परन्तु इस लोक में भी प्राणियों को परिश्रम करके कर्माधार पर ही फल प्राप्त होता है तथा अन्न से ही सर्व प्राणियों के शरीर विकसित होते हैं, जन्म तथा मृत्यु का समय भले ही काल(क्षर पुरुष) से अधिक है, परन्तु फिर भी उत्पत्ति प्रलय तथा चौरासी लाख योनियों में यातना बनी रहती है।***

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 3

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः।
पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

एतावान्—अस्य—महिमा—अतः—ज्यायान्—च—पुरूषः—पादः—अस्य—विश्वा—भूतानि—त्रि—पाद्—अस्य—अमृतम्—दिवि

अनुवाद :— (अस्य) इस अक्षर पुरूष की तो (एतावान्) इतनी ही (महिमा) प्रभुता है। (च) तथा (पुरूषः) वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर तो (अतः) इससे भी (ज्यायान्) बड़ा है (विश्वा) समस्त (भूतानि) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष तथा इनके लोकों में तथा सत्यलोक तथा इन लोकों में जितने भी प्राणी हैं (अस्य) इस पूर्ण परमात्मा निःअक्षर पुरूष

का (पादः) एक पैर है अर्थात् एक अंश मात्र है। (अस्य) इस परमेश्वर के (त्रि) तीन (दिवि) दिव्य लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक (अमृतम्) अविनाशी (पाद्) दूसरा पैर है अर्थात् जो भी सर्व ब्रह्मण्डों में उत्पन्न है वह सत्यपुरूष पूर्ण परमात्मा का ही अंश या अंग है।

***भावार्थ :- इस ऊपर के मंत्र 2 में वर्णित अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की तो इतनी ही महिमा है तथा वह पूर्ण पुरुष कविर्देव तो इससे भी बड़ा है अर्थात् सर्वशक्तिमान है तथा सर्व ब्रह्मण्ड उसी के अंश मात्र पर ठहरे हैं। इस मंत्र में तीन लोकों का वर्णन इसलिए है क्योंकि चौथा अनामी(अनामय) लोक अन्य रचना से पहले का है। {इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास साहेब जी कहते हैं कि :- गरीब, जाके अर्ध रूम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।।***

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार। सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सृजनहार।।

***इसी का प्रमाण आदरणीय दादू साहेब जी कह रहे हैं कि :-***

जिन मोकुं निज नाम दिया, सोई सतगुरु हमार। दादू दूसरा कोए नहीं, कबीर सृजनहार।।

***इसी का प्रमाण आदरणीय नानक साहेब जी देते हैं कि :-***

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर कून करतार। हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

***(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब, पृष्ठ नं. 721, महला 1, राग तिलंग)***

***कून करतार का अर्थ होता है सर्व का रचनहार, हक्का कबीर का अर्थ है सत् कबीर, करीम का अर्थ दयालु, परवरदिगार का अर्थ परमात्मा है।}***

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 4

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्व ङ्व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।4।।

त्रि—पाद—ऊर्ध्वः—उदैत्—पुरूषः—पादः—अस्य—इह—अभवत्—पूनः—ततः—विश्वङ्— व्यक्रामत्—सः—अशनानशने—अभि

अनुवाद :— (पुरूषः) यह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् अविनाशी परमात्मा (ऊर्ध्वः) ऊपर (त्रि) तीन लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक रूप (पाद) पैर अर्थात् ऊपर के हिस्से में (उदैत्) प्रकट होता है अर्थात् विराजमान है (अस्य) इसी परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म का (पादः) एक पैर अर्थात् एक हिस्सा जगत रूप (पुनर्) फिर (इह) यहाँ (अभवत्) प्रकट होता है (ततः) इसलिए (सः) वह अविनाशी पूर्ण परमात्मा (अशनानशने) खाने वाले काल अर्थात् क्षर पुरूष व न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष के भी (अभि)ऊपर (विश्वङ्)सर्वत्र (व्यक्रामत्)व्याप्त है अर्थात् कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है।

***भावार्थ :- यही सर्व सृष्टी रचन हार प्रभु अपनी रचना के ऊपर के हिस्से में तीनों स्थानों (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) में तीन रूप में स्वयं प्रकट होता है अर्थात् स्वयं ही विराजमान है। यहाँ अनामी लोक का वर्णन इसलिए नहीं किया क्योंकि अनामी लोक में कोई रचना नहीं है। फिर कहा है कि उसी परमात्मा के सत्यलोक से बिछुड़ कर नीचे के ब्रह्म व परब्रह्म के लोक उत्पन्न होते हैं और वह पूर्ण परमात्मा खाने वाले ब्रह्म अर्थात् काल से (क्योंकि ब्रह्म-काल विराट शाप वश***

***एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को खाता है) तथा न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष से (परब्रह्म प्राणियों को खाता नहीं, परन्तु जन्म-मृत्यु, कर्मदण्ड ज्यों का त्यों बना रहता है) भी ऊपर सर्वत्र व्याप्त है अर्थात् इस पूर्ण परमात्मा की प्रभुता सर्व के ऊपर है, कबीर परमेश्वर ही कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है जैसे सूर्य अपने प्रकाश को सर्व के ऊपर फैला कर प्रभावित करता है, ऐसे पूर्ण परमात्मा ने अपनी शक्ति रूपी रेंज(क्षमता) को सर्व ब्रह्मण्डों को नियन्त्रित रखने के लिए मोबाइल फोन की रेंज(क्षमता) की तरह छोड़ा हुआ है। जिससे सर्वब्रह्मण्डों को एक स्थान पर बैठ कर नियन्त्रित रखता है।***

***इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास जी महाराज दे रहे हैं(अमृतवाणी राग कल्याण)***

तीन चरण चिन्तामणी साहेब, शेष बदन पर छाए।
माता, पिता, कुलन न बन्धु, ना किन्हें जननी जाये।।

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 5

तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरूषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।5।।

तस्मात्—विराट्—अजायत—विराजः—अधि—पुरूषः—स—जातः—अत्यरिच्यत—पश्चात् —भूमिम्—अथः—पुरः।

अनुवाद :— (तस्मात्) उसके पश्चात् उस परमेश्वर सत्यपुरूष की शब्द शक्ति से (विराट्) विराट अर्थात् ब्रह्म, जिसे क्षर पुरुष व काल भी कहते हैं (अजायत) उत्पन्न हुआ है (पश्चात्) इसके बाद (विराजः) विराट पुरूष अर्थात् काल भगवान से (अधि) बड़े (पुरूषः) परमेश्वर ने (भूमिम्) पृथ्वी वाले लोक काल ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोक (अत्यरिच्यत) अच्छी तरह रचा (अथः) फिर (पुरः) अन्य छोटे—छोटे लोक (स) उस पूर्ण परमेश्वर ने ही (जातः) उत्पन्न किया अर्थात् स्थापित किया।

***भावार्थ :- उपरोक्त मंत्र 4 में वर्णित तीन लोकों (अगमलोक, अलख लोक तथा सतलोक) की रचना के पश्चात पूर्ण परमात्मा ने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) की उत्पत्ति की अर्थात् उसी सर्व शक्तिमान परमात्मा पूर्ण ब्रह्म कविर्देव(कबीर प्रभु) से ही विराट अर्थात् ब्रह्म(काल) की उत्पत्ति हुई तथा उसी ने छोटे-बड़े सर्व लोकों की रचना की। वह पूर्णब्रह्म इस विराट भगवान अर्थात् ब्रह्म से भी बड़ा है अर्थात् इसका भी मालिक है।***

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 15

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरूषं पशुम्।।15।।

सप्त—अस्य—आसन्—परिधयः—त्रिसप्त—समिधः—कृताः—देवा—यत्—यज्ञम्—तन्वानाः— अबध्नन्—पुरूषम्—पशुम्।

अनुवाद :— (सप्त) सात संख ब्रह्मण्ड तो परब्रह्म के तथा (त्रिसप्त) इक्कीस ब्रह्मण्ड काल ब्रह्म के (समिधः) कर्मदण्ड दुःख रूपी आग से दुःखी (कृताः) करने वाले (परिधयः) गोलाकार घेरा रूप सीमा में (आसन्) विद्यमान हैं (यत्) जो (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा की (यज्ञम्) विधिवत् धार्मिक कर्म अर्थात् पूजा करता है (पशुम्) बलि के पशु रूपी काल के जाल

में कर्म बन्धन में बंधे (देवा) भक्तात्माओं को (तन्वानाः) काल के द्वारा रचे अर्थात् फैलाये पाप कर्म बंधन जाल से (अबध्नन्) बन्धन रहित करता है अर्थात् बन्दी छुड़ाने वाला बन्दी छोड़ है।

***भावार्थ :- सात संख ब्रह्मण्ड परब्रह्म के तथा इक्कीस ब्रह्मण्ड ब्रह्म के हैं जिन में गोलाकार सीमा में बंद पाप कर्मों की आग में जल रहे प्राणियों को वास्तविक पूजा विधि बता कर सही उपासना करवाता है जिस कारण से बलि दिए जाने वाले पशु की तरह जन्म-मृत्यु के काल (ब्रह्म) के खाने के लिए तप्त शिला के कष्ट से पीड़ित भक्तात्माओं को काल के कर्म बन्धन के फैलाए जाल को तोड़कर बन्धन रहित करता है अर्थात् बंध छुड़वाने वाला बन्दी छोड़ है। इसी का प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में है कि*** *कविरंघारिसि(कविर्) कबिर परमेश्वर (अंघ) पाप का (अरि) शत्रु (असि) है अर्थात् पाप विनाशक कबीर है। बम्भारिसि (बम्भारि) बन्धन का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर (असि) है।*

मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।16।।

यज्ञेन–यज्ञम्–अ–यजन्त–देवाः–तानि–धर्माणि–प्रथमानि– आसन्–ते–ह–नाकम्– महिमानः– सचन्त– यत्र–पूर्वे–साध्याः–सन्ति देवाः।

अनुवाद :– जो (देवाः) निर्विकार देव स्वरूप भक्तात्माएं (अयज्ञम्) अधूरी गलत धार्मिक पूजा के स्थान पर (यज्ञेन) सत्य भक्ति धार्मिक कर्म के आधार पर (यजन्त) पूजा करते हैं (तानि) वे (धर्माणि) धार्मिक शक्ति सम्पन्न (प्रथमानि) मुख्य अर्थात् उत्तम (आसन्) हैं (ते ह) वे ही वास्तव में (महिमानः) महान भक्ति शक्ति युक्त होकर (साध्याः) सफल भक्त जन (नाकम्) पूर्ण सुखदायक परमेश्वर को (सचन्त) भक्ति निमित कारण अर्थात् सत्भक्ति की कमाई से प्राप्त होते हैं, वे वहाँ चले जाते हैं। (यत्र) जहाँ पर (पूर्वे) पहले वाली सृष्टी के (देवाः) पापरहित देव स्वरूप भक्त आत्माएं (सन्ति) रहती हैं।

***भावार्थ :- जो निर्विकार देव स्वरूप भक्त आत्माएं शास्त्र विधि रहित पूजा को त्याग कर शास्त्रानुकूल साधना करते हैं वे भक्ति की कमाई से धनी होकर काल के ऋण से मुक्त होकर अपनी सत्य भक्ति की कमाई के कारण उस सर्व सुखदाई परमात्मा को प्राप्त करते हैं अर्थात् सत्यलोक में चले जाते हैं जहाँ पर सर्व प्रथम रची सृष्टी के देव स्वरूप अर्थात् पाप रहित हंस आत्माएं रहती हैं।***

***जैसे कुछ आत्माएं तो काल (ब्रह्म) के जाल में फंस कर यहाँ आ गई, कुछ परब्रह्म के साथ सात संख ब्रह्मण्डों में आ गई, फिर भी असंख्य आत्माएं जिनका विश्वास पूर्ण परमात्मा में अटल रहा, जो पतिव्रता पद से नहीं गिरी वे वहीं रह गई, इसलिए यहाँ वही वर्णन पवित्र वेदों ने भी सत्य बताया है। इससे सिद्ध हुआ कि तीन प्रभु हैं ब्रह्म - परब्रह्म - पूर्णब्रह्म। इन्हीं को 1. ब्रह्म - ईश - क्षर पुरुष 2. परब्रह्म - अक्षर पुरुष - अक्षर ब्रह्म तथा 3. पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म - परमेश्वर - सतपुरुष आदि पर्यायवाची शब्दों से जाना जाता है।***

***यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17 से 20 में स्पष्ट है कि पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है तथा***

*अपना निर्मल ज्ञान अर्थात् तत्वज्ञान (कविर्गीर्भिः) कबीर वाणी के द्वारा अपने अनुयाइयों को बोल-बोल कर वर्णन करता है। वह कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ब्रह्म(क्षर पुरुष) के धाम तथा परब्रह्म(अक्षर पुरुष) के धाम से भिन्न जो पूर्ण ब्रह्म(परम अक्षर पुरुष) का तीसरा ऋतधाम(सतलोक) है, उसमें आकार में विराजमान है तथा सतलोक से चौथा अनामी लोक है, उसमें भी यही कविर्देव(कबीर परमेश्वर) अनामी पुरुष रूप में मनुष्य सदृश आकार में विराजमान है।*

## ''पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में सृष्टी रचना का प्रमाण''

*पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण तीसरा स्कन्द (गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी जी, पृष्ठ नं. 114 से)*

*पृष्ठ नं. 114 से 118 तक विवरण है कि कितने ही आचार्य भवानी को सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करने वाली बताते हैं। वह प्रकृति कहलाती है तथा ब्रह्म के साथ अभेद सम्बन्ध है जैसे पत्नी को अर्धांगनी भी कहते हैं अर्थात् दुर्गा ब्रह्म(काल) की पत्नी है। एक ब्रह्मण्ड की सृष्टी रचना के विषय में राजा श्री परीक्षित के पूछने पर श्री व्यास जी ने बताया कि मैंने श्री नारद जी से पूछा था कि हे देवर्षे ! इस ब्रह्मण्ड की रचना कैसे हुई? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में श्री नारद जी ने कहा कि मैंने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से पूछा था कि हे पिता श्री इस ब्रह्मण्ड की रचना आपने की या श्री विष्णु जी इसके रचयिता हैं या शिव जी ने रचा है? सच-सच बताने की कृपा करें। तब मेरे पूज्य पिता श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि बेटा नारद, मैंने अपने आपको कमल के फूल पर बैठा पाया था, मुझे नहीं मालूम इस अगाध जल में मैं कहाँ से उत्पन्न हो गया। एक हजार वर्ष तक पृथ्वी का अन्वेषण करता रहा, कहीं जल का ओर-छोर नहीं पाया। फिर आकाशवाणी हुई कि तप करो। एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर सृष्टी करने की आकाशवाणी हुई। इतने में मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस आए, उनके भय से मैं कमल का डण्ठल पकड़ कर नीचे उतरा। वहाँ भगवान विष्णु जी शेष शैय्या पर अचेत पड़े थे। उनमें से एक स्त्री(प्रेतवत प्रविष्ट दुर्गा) निकली। वह आकाश में आभूषण पहने दिखाई देने लगी। तब भगवान विष्णु होश में आए। अब मैं तथा विष्णु जी दो थे। इतने में भगवान शंकर भी आ गए। देवी ने हमें विमान में बैठाया तथा ब्रह्म लोक में ले गई। वहाँ एक ब्रह्मा, एक विष्णु तथा एक शिव और देखा(यह ब्रह्म ही तीन रूप बना कर ऊपर लीला कर रहा है, देखें एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र पृष्ठ 93 पर) फिर एक देवी देखी,उसे देख कर विष्णु जी ने विवेक पूर्वक निम्न वर्णन किया(ब्रह्म काल ने भगवान विष्णु को चेतना प्रदान कर दी, उसको अपने बाल्यकाल की याद आई तब बचपन की कहानी सुनाई)।*

*पृष्ठ नं. 119-120 पर भगवान विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से कहा कि यह तीनों की माता है, यही जगत् जननी प्रकृति देवी है। मैंने इस देवी को तब देखा था जब मैं छोटा सा बालक था, यह मुझे पालने में झुला रही थी।*

*तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 123 पर श्री विष्णु जी ने श्री दुर्गा जी की स्तुति करते हुए*

*कहा - तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हीं से उद्भासित हो रहा है, मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर हम सभी तुम्हारी कृपा से ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) और तिरोभाव (मृत्यु) हुआ करता है अर्थात् हम तीनों देव नाशवान हैं, केवल तुम ही नित्य(अविनाशी) हो, जगत जननी हो, प्रकृति देवी हो।*

*भगवान शंकर बोले - देवी यदि महाभाग विष्णु तुम्हीं से प्रकट (उत्पन्न) हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्हीं हो।*

*विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी नाशवान हैं। मृत्युंजय (अजर-अमर) व सर्वेश्वर नहीं हैं तथा दुर्गा (प्रकृति) के पुत्र हैं तथा ब्रह्म (काल-सदाशिव) इनका पिता है।*

*तीसरा स्कंद पृष्ठ नं. 125 पर ब्रह्मा जी के पूछने पर कि हे माता! वेदों में जो ब्रह्म कहा है वह आप ही हैं या कोई अन्य प्रभु है ? इसके उत्तर में यहाँ तो दुर्गा कह रही है कि मैं तथा ब्रह्म एक ही हैं। फिर इसी स्कंद के पृष्ठ नं. 129 पर कहा है कि अब मेरा कार्य सिद्ध करने के लिए विमान पर बैठ कर तुम लोग शीघ्र पधारो (जाओ)। कोई कठिन कार्य उपस्थित होने पर जब तुम मुझे याद करोगे, तब मैं सामने आ जाऊँगी। देवताओं मेरा (दुर्गा का) तथा ब्रह्म का ध्यान तुम्हें सदा करते रहना चाहिए। हम दोनों का स्मरण करते रहोगे तो तुम्हारे कार्य सिद्ध होने में तनिक भी संदेह नहीं है।*

*उपरोक्त व्याख्या से स्वसिद्ध है कि दुर्गा (प्रकृति) तथा ब्रह्म(काल) ही तीनों देवताओं के माता-पिता हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु व शिव जी नाशवान हैं व पूर्ण शक्ति युक्त नहीं हैं।*

*तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) की शादी दुर्गा(प्रकृति देवी) ने की। पृष्ठ नं. 128-129 पर, तीसरे स्कंद में।*

*गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 12*

ये, च, एव, सात्विकाः, भावाः, राजसाः, तामसाः, च, ये,
मतः, एव, इति, तान्, विद्धि, न, तु, अहम्, तेषु, ते, मयि ।।

अनुवाद : (च) और (एव) भी (ये) जो (सात्विकाः) सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति (भावाः) भाव हैं और (ये) जो (राजसाः) रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति (च) तथा (तामसाः) तमोगुण शिव से संहार हैं (तान्) उन सबको तू (मतः,एव) मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं (इति) ऐसा (विद्धि) जान (तु) परन्तु वास्तवमें (तेषु) उनमें (अहम्) मैं और (ते) वे (मयि) मुझमें (न) नहीं हैं।

## ''पवित्र शिव महापुराण में सृष्टी रचना का प्रमाण''

***इसी का प्रमाण पवित्र श्री शिव पुराण गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, इसके अध्याय 6 रूद्र संहिता, पृष्ठ नं. 100 पर कहा है कि जो मूर्ति रहित परब्रह्म है, उसी की मूर्ति भगवान सदाशिव है। इनके शरीर से एक शक्ति निकली, वह शक्ति अम्बिका, प्रकृति (दुर्गा), त्रिदेव जननी(श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को उत्पन्न करने वाली माता) कहलाई। जिसकी आठ भुजाऐं हैं। वे जो सदाशिव हैं, उन्हें शिव, शंभू और महेश्वर भी कहते हैं। (पृष्ठ***

*नं. 101 पर) वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक क्षेत्र का निर्माण किया। फिर दोनों ने पति-पत्नी का व्यवहार किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा(पृष्ठ नं. 102)।*

*फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 7 पृष्ठ नं. 103 पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरी उत्पत्ति भी भगवान सदाशिव (ब्रह्म-काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) के संयोग से अर्थात् पति-पत्नी के व्यवहार से ही हुई। फिर मुझे बेहोश कर दिया।*

*फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 9 पृष्ठ नं. 110 पर कहा है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र इन तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल-ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं।*

*यहाँ पर चार सिद्ध हुए अर्थात् सदाशिव (काल-ब्रह्म) व प्रकृति (दुर्गा) से ही उत्पन्न हुए हैं। तीन भगवान श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की माता जी श्री दुर्गा जी तथा पिता जी श्री ज्योति निरंजन (ब्रह्म) है। यही तीनों प्रभु रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी हैं।*

## ''पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी में सृष्टी रचना का प्रमाण''

***इसी का प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 तक है। ब्रह्म (काल) कह रहा है कि प्रकृति (दुर्गा) तो मेरी पत्नी है, मैं ब्रह्म(काल) इसका पति हूँ। हम दोनों के संयोग से सर्व प्राणियों सहित तीनों गुणों (रजगुण - ब्रह्मा जी, सतगुण - विष्णु जी, तमगुण - शिवजी) की उत्पत्ति हुई है। मैं (ब्रह्म) सर्व प्राणियों का पिता हूँ तथा प्रकृति (दुर्गा) इनकी माता है। मैं इसके उदर में बीज स्थापना करता हूँ जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है।***

***यही प्रमाण अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16, 17 में भी है।***

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित्।।

अनुवाद : (ऊर्ध्वमूलम्) ऊपर को पूर्ण परमात्मा आदि पुरुष परमेश्वर रूपी जड़ वाला (अधःशाखम्) नीचे को शाखा वाला (अव्ययम्) अविनाशी (अश्वत्थम्) विस्तारित वृक्ष है, घोड़े जैसा मजबूत (यस्य) जिसके (छन्दांसि) छोटे–छोटे हिस्से या टहनियाँ (पर्णानि) पत्ते हैं (प्राहुः) कहे हैं (तम्) उस संसाररूप वृक्षको (यः) जो (वेद) इस प्रकार जानता है (सः) वह (वेदवित्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्वदर्शी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसृताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवृद्धाः,
विषयप्रवालाः, अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके।।

अनुवाद : (तस्य) उस वृक्षकी (अधः) नीचे (च) और (ऊर्ध्वम्) ऊपर (गुणप्रवृद्धाः) तीनों गुणों ब्रह्मा–रजगुण, विष्णु–सतगुण, शिव–तमगुण रूपी (प्रसृता) फैली हुई (विषयप्रवालाः) विकार– काम क्रोध, मोह, लोभ अहंकार रूपी कोपल (शाखाः) डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव (कर्मानुबन्धीनि) जीवको कर्मोमें बाँधने की (अपि) भी (मूलानि) जड़ें मुख्य कारण हैं (च) तथा (मनुष्यलोके) मनुष्यलोक – स्वर्ग,–नरक लोक पृथ्वी लोक में (अधः) नीचे – नरक, चौरासी

ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ संसार रूपी वृक्ष का चित्र

लाख जूनियों में (ऊर्ध्वम्) ऊपर स्वर्ग लोक आदि में (अनुसन्तानि) व्यवस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असंगशस्त्रेण, दृढेन, छित्वा।।

अनुवाद : (अस्य) इस रचना का (न) नहीं (आदिः) शुरूवात (च) तथा (न) नहीं (अन्तः) अन्त है (न) नहीं (तथा) वैसा (रूपम्) स्वरूप (उपलभ्यते) पाया जाता है (च) तथा (इह) यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी (न) नहीं है (सम्प्रतिष्ठा) क्योंकि सर्वब्रह्मण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति है का मुझे भी ज्ञान नहीं है (एनम्) इस (सुविरूढमूलम्) अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला (अश्वत्थम्) मजबूत स्वरूपवाले (असंड्गशस्त्रेण) पूर्ण ज्ञान रूपी (दृढेन्) दृढ़ शास्त्रसे सूक्षम वेद अर्थात् तत्वज्ञान के द्वारा जानकर (छित्वा) काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक अर्थात् क्षण भंगुर जानकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म तथा परब्रह्म से भी आगे पूर्णब्रह्म की तलाश करनी चाहिए।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः, पदम्, तत्, परिमार्गितयम्, यस्मिन्, गताः, न, निवर्तन्ति, भूयः,
तम्, एव्, च, आद्यम्, पुरुषम्, प्रपद्ये, यतः, प्रवृतिः, प्रसृता, पुराणी।।

अनुवाद : जब तत्वदर्शी संत मिल जाए (ततः) इसके पश्चात् (तत्) उस परमात्मा के (पदम्) पद स्थान अर्थात् सतलोक को (परिमार्गितव्यम्) भली भाँति खोजना चाहिए (यस्मिन्) जिसमें (गताः) गए हुए साधक (भूयः) फिर (न, निवर्तन्ति) लौटकर संसार में नहीं आते (च) और (यतः) जिस परमात्मा-परम अक्षर ब्रह्म से (पुराणी) आदि (प्रवृतिः) रचना-सृष्टी (प्रसृता) उत्पन्न हुई है (तम्) अज्ञात (आद्यम्) आदि यम अर्थात् मैं काल निरंजन (पुरुषम्) पूर्ण परमात्मा की (एव) ही (प्रपद्ये) मैं शरण में हूँ।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 16

द्वौ, इमौ, पुरुषौ, लोके, क्षरः, च, अक्षरः, एव, च,
क्षरः, सर्वाणि, भूतानि, कूटस्थः, अक्षरः, उच्यते।।

अनुवाद : (लोके) इस संसारमें (द्वौ) दो प्रकारके (क्षरः) नाशवान् (च) और (अक्षरः) अविनाशी (पुरुषौ) भगवान हैं (एव) इसी प्रकार (इमौ) इन दोनों प्रभुओं के लोकों में (सर्वाणि) सम्पूर्ण (भूतानि) प्राणियों के शरीर तो (क्षरः) नाशवान् (च) और (कूटस्थः) जीवात्मा (अक्षरः) अविनाशी (उच्यते) कहा जाता है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 17

उत्तमः, पुरुषः, तु, अन्यः, परमात्मा, इति, उदाहृतः,
यः, लोकत्रयम् आविश्य, बिभर्ति, अव्ययः, ईश्वरः।।

अनुवाद : (उत्तमः) उत्तम (पुरुषः) प्रभु (तु) तो (अन्यः) अन्य ही है (यः) जो (लोकत्रयम्) तीनों लोकों में (आविश्य) प्रवेश करके (बिभर्ति) सबका धारण पोषण करता है एवं (अव्ययः) अविनाशी (ईश्वरः)समर्थ प्रभु (परमात्मा) परमात्मा (इति) इस प्रकार (उदाहृतः) कहा गया है।

***भावार्थ - उपरोक्त श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में***

*यह प्रमाणित हुआ कि उल्टे लटके हुए संसार रूपी वृक्ष की मूल अर्थात् जड़ तो परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म है जिससे पूर्ण वृक्ष का पालन होता है तथा वृक्ष का जो हिस्सा पृथ्वी के बाहर जमीन के साथ दिखाई देता है वह तना होता है उसे अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म जानों। उस तने से ऊपर चल कर अन्य मोटी डार निकलती है उनमें से एक डार को ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष जानों तथा उसी डार से अन्य तीन शाखाएं निकलती हैं उन्हें ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जानों तथा शाखाओं से आगे पत्ते रूप में सांसारिक प्राणी जानों। उपरोक्त गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट है कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) तथा इन दोनों के लोकों में जितने प्राणी हैं उनके स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी है अर्थात् उपरोक्त दोनों प्रभु व इनके अन्तर्गत प्राणी नाशवान हैं। भले ही अक्षर पुरुष(परब्रह्म) को अविनाशी कहा है परन्तु वास्तव में अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य है। वह तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका पालन-पोषण करता है। उपरोक्त विवरण में तीन प्रभुओं का भिन्न-भिन्न विवरण दिया है।*

## "पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुर्आन शरीफ में सृष्टी रचना का प्रमाण"

***इसी का प्रमाण पवित्र बाईबल में तथा पवित्र कुर्आन शरीफ में भी है।***

***कुर्आन शरीफ में पवित्र बाईबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाणित किया है कि कौन तथा कैसा है सृष्टी रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है।***

***पवित्र बाईबल(उत्पत्ति ग्रन्थ पृष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)***

छटवां दिन :– प्राणी और मनुष्य :

अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टी की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं, (माँस खाना नहीं कहा है।)

सातवां दिन :– विश्राम का दिन :

परमेश्वर ने छः दिन में सर्व सृष्टी की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

***पवित्र बाईबल ने सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मानव सदृश शरीर में है, जिसने छः दिन में सर्व सृष्टी की रचना की तथा फिर विश्राम किया।***

***पवित्र कुर्आन शरीफ(सुरत फुर्कानि 25, आयत नं. 52, 58, 59)***

आयत 52 :– फला तुतिअल् – काफिरन् व जहिद्हुम बिही जिहादन् कबीरा(कबीरन्) ।52।

इसका भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी का खुदा (प्रभु) कह रहा है कि हे पैगम्बर ! आप काफिरों (जो एक प्रभु की भक्ति त्याग कर अन्य देवी–देवताओं तथा मूर्ति आदि की पूजा करते हैं) का कहा मत मानना, क्योंकि वे लोग कबीर को पूर्ण परमात्मा नहीं मानते। आप मेरे द्वारा दिए इस कुर्आन के ज्ञान के आधार पर अटल रहना कि कबीर ही पूर्ण प्रभु है

तथा कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना(लड़ना नहीं) अर्थात् अडिग रहना।

आयत 58 :– व तवक्कल् अलल् – हरूिल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही व कफा बिही बिजुनूबि अिबादिही खबीरा(कबीरा) ।58।

***भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी जिसे अपना प्रभु मानते हैं वह अल्लाह (प्रभु) किसी और पूर्ण प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है कि ऐ पैगम्बर उस कबीर परमात्मा पर विश्वास रख जो तुझे जिंदा महात्मा के रूप में आकर मिला था। वह कभी मरने वाला नहीं है अर्थात् वास्तव में अविनाशी है। तारीफ के साथ उसकी पाकी(पवित्र महिमा) का गुणगान किए जा, वह कबीर अल्लाह(कविर्देव) पूजा के योग्य है तथा अपने उपासकों के सर्व पापों को विनाश करने वाला है।***

आयत 59 :– अल्ल्जी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि अर्रह्मानु फस्अल् बिही खबीरन्(कबीरन्) ।59।।

***भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद को कुर्आन शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि वह कबीर प्रभु वही है जिसने जमीन तथा आसमान के बीच में जो भी विद्यमान है सर्व सृष्टी की रचना छः दिन में की तथा सातवें दिन ऊपर अपने सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान हो(बैठ) गया।***

***उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी तथा वास्तविक ज्ञान तो किसी तत्वदर्शी संत(बाखबर) से पूछो, मैं नहीं जानता।***

***उपरोक्त दोनों पवित्र धर्मों(ईसाई तथा मुसलमान) के पवित्र शास्त्रों ने भी मिल-जुल कर प्रमाणित कर दिया कि सर्व सृष्टी रचनहार, सर्व पाप विनाशक, सर्व शक्तिमान, अविनाशी परमात्मा मानव सदृश शरीर में आकार में है तथा सत्यलोक में रहता है। उसका नाम कबीर है, उसी को अल्लाहु अकबिरू भी कहते हैं।***

***आदरणीय धर्मदास जी ने पूज्य कबीर प्रभु से पूछा कि हे सर्वशक्तिमान ! आज तक यह तत्वज्ञान किसी ने नहीं बताया, वेदों के मर्मज्ञ ज्ञानियों ने भी नहीं बताया। इससे सिद्ध है कि चारों पवित्र वेद तथा चारों पवित्र कतेब(कुर्आन शरीफ आदि) झूठे हैं। पूर्ण परमात्मा ने कहा :-***

कबीर, बेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहिं।

***भावार्थ है कि चारों पवित्र वेद (ऋग्वेद - अथर्ववेद - यजुर्वेद - सामवेद) तथा पवित्र चारों कतेब (कुर्आन शरीफ - जबूर - तौरात - इंजिल) गलत नहीं हैं। परन्तु जो इनको नहीं समझ पाए वे नादान हैं।***

## "पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर् देव) जी की अमृतवाणी में सृष्टी रचना"

***विशेष :- निम्न अमृतवाणी सन् 1403 से {जब पूज्य कविर्देव(कबीर परमेश्वर) लीला में शरीर में पाँच वर्ष के हुए} सन् 1518 {जब कविर्देव(कबीर परमेश्वर) मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए} के बीच में लगभग 600 वर्ष पूर्व परम पूज्य कबीर परमेश्वर(कविर्देव) जी द्वारा अपने निजी सेवक (दास भक्त) आदरणीय धर्मदास साहेब जी को सुनाई थी तथा धनी धर्मदास साहेब जी ने लिपिबद्ध की थी। परन्तु उस समय के पवित्र हिन्दुओं तथा पवित्र मुसलमानों के नादान गुरुओं***

***(नीम-हकीमों) ने कहा कि यह धाणक(जुलाहा) कबीर झूठा है। किसी भी सद् ग्रन्थ में श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के माता-पिता का नाम नहीं है। न ही पवित्र वेदों व पवित्र कुर्आन शरीफ आदि में कबीर परमेश्वर का प्रमाण है तथा परमात्मा को निराकार लिखा है। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। भोली आत्माओं ने उन विचक्षणों(चतुर) गुरुओं पर विश्वास कर लिया कि सचमुच यह कबीर धाणक तो अशिक्षित है तथा गुरु जी शिक्षित हैं, सत्य कह रहे होंगे। आज वही सच्चाई प्रकाश में आ रही है तथा अपने सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थ साक्षी हैं। इससे सिद्ध है कि पूर्ण परमेश्वर, सर्व सृष्टी रचनहार, कुल करतार तथा सर्वज्ञ कविर्देव(कबीर परमेश्वर) ही है जो काशी(बनारस) में कमल के फूल पर प्रकट हुए तथा 120 वर्ष तक वास्तविक तेजोमय शरीर के ऊपर मानव सदृश शरीर हल्के तेज का बना कर रहे तथा अपने द्वारा रची सृष्टी का ठीक-ठीक (वास्तविक तत्व) ज्ञान देकर सशरीर सतलोक चले गए। कृपा प्रेमी पाठक पढ़ें निम्न अमृतवाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा उच्चारित :-***

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवोंका भरम नशाओ।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवनकी उत्पति भाई।।
कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि रामका का भेद न जाना।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछेसे माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।
पेट से देवी करी पुकारा। साहब मेरा करो उबारा।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।
सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह संख कोस दूरी पर आई।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।
धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।
धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।

तीन देव सो उनको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
काल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुणका यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

***उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने निजी सेवक श्री धर्मदास साहेब जी को कह रहे हैं कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण सृष्टी रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची सृष्टी की कथा सुनाता हूँ। बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं। अब मैं बताता हूँ तीनों भगवानों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी माता जी तो अष्टंगी(दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म, काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल(ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़)की, तब दुर्गा(प्रकृति) ने इसके पेट में शरण ली। मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्मण्ड समेत 16 संख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन (धर्मराय) ने प्रकृति देवी(दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग से तीनों गुणों(श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों(रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा?***

## “आदरणीय गरीबदास साहेब जी की अमृतवाणी में सृष्टी रचना का प्रमाण”

### आदि रमैणी(सद् ग्रन्थ पृष्ठ नं. 690 से 692 तक)

आदि रमैंणी अदली सारा। जा दिन होते धुंधुंकारा।।1।।
सत्त पुरुष कीन्हा प्रकाशा। होते तखत कबीर खवासा ।।2।।
मन मोहिनी सिरजी माया। सतपुरुष एक ख्याल बनाया।।3।।
धर्मराय सिरजे दरबानी। चौसठ जुगतप सेवा ठांनी।।4।।
पुरुष पृथिवी जाकूं दीन्ही। राज करो देवा आधीनी।।5।।
ब्रह्मण्ड इकीस राज तुम्ह दीन्हा। मन की इच्छा सब जुग लीन्हा।।6।।
माया मूल रूप एक छाजा। मोहि लिये जिनहूँ धर्मराजा।।7।।

धर्म का मन चंचल चित धार्‌या। मन माया का रूप बिचारा।।8।।
चंचल चेरी चपल चिरागा। या के परसे सरबस जागा।।9।।
धर्मराय कीया मन का भागी। विषय वासना संग से जागी।।10।।
आदि पुरुष अदली अनरागी। धर्मराय दिया दिल सें त्यागी।।11।।
पुरुष लोक सें दीया ढहाही। अगम दीप चलि आये भाई।।12।।
सहज दास जिस दीप रहंता। कारण कौंन कौंन कुल पंथा।।13।।
धर्मराय बोले दरबानी। सुनो सहज दास ब्रह्मज्ञानी।।14।।
चौसठ जुग हम सेवा कीन्ही। पुरुष पृथिवी हम कूं दीन्ही।।15।।
चंचल रूप भया मन बौरा। मनमोहिनी ठगिया भौंरा।।16।।
सतपुरुष के ना मन भाये। पुरुष लोक से हम चलि आये।।17।।
अगर दीप सुनत बडभागी। सहज दास मेटो मन पागी।।18।।
बोले सहजदास दिल दानी। हम तो चाकर सत सहदानी।।19।।
सतपुरुष सें अरज गुजारूं। जब तुम्हारा बिवाण उतारूं।।20।।
सहज दास को कीया पीयाना। सत्यलोक लीया प्रवाना।।21।।
सतपुरुष साहिब सरबंगी। अविगत अदली अचल अभंगी।।22।।
धर्मराय तुम्हरा दरबानी। अगर दीप चलि गये प्रानी।।23।।
कौंन हुकम करी अरज अवाजा। कहां पठावौ उस धर्मराजा।।24।।
भई अवाज अदली एक साचा। विषय लोक जा तीन्यूं बाचा।।25।।
सहज विमाँन चले अधिकाई। छिन में अगर दीप चलि आई।।26।।
हमतो अरज करी अनरागी। तुम्ह विषय लोक जावो बडभागी।।27।।
धर्मराय के चले विमाना। मानसरोवर आये प्राना।।28।
मानसरोवर रहन न पाये। दरै कबीरा थांना लाये।।29।।
बंकनाल की विषमी बाटी। तहां कबीरा रोकी घाटी।।30।।
इन पाँचों मिलि जगत बंधाना। लख चौरासी जीव संताना।।31।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया। धर्मराय का राज पठाया।।32।।
यौह खोखा पुर झूठी बाजी। भिसति बैकुण्ठ दगासी साजी।।33।।
कृतिम जीव भुलांनें भाई। निज घर की तो खबरि न पाई।।34।।
सवा लाख उजपें नित हंसा। एक लाख विनशें नित अंसा।।35।।
उपति खपति याह प्रलय फेरी। हर्ष शोक जौंरा जम जेरी।।36।।
पाँचों तत्त्व हैं प्रलय माँही। सत्त्वगुण रजगुण तमगुण झांई।।37।।
आठों अंग मिली है माया। पिण्ड ब्रह्मण्ड सकल भरमाया।।38।।
या में सुरति शब्द की डोरी। पिण्ड ब्रह्मण्ड लगी है खोरी।।39।।
श्वासा पारस मन गह राखो। खोल्हि कपाट अमीरस चाखो।।40।।
सुनाऊं हंस शब्द सुन दासा। अगम दीप है अग है बासा।।41।।
भवसागर जम दण्ड जमाना। धर्मराय का है तलबांना।।42।।
पाँचों ऊपर पद की नगरी। बाट बिहंगम बंकी डगरी।।43।।
हमरा धर्मराय सों दावा। भवसागर में जीव भरमावा।।44।।

हम तो कहैं अगम की बानी। जहाँ अविगत अदली आप बिनानी।।45।।
बंदी छोड हमारा नामं। अजर अमर है अस्थीर ठामं।।46।।
जुगन जुगन हम कहते आये। जम जौंरा सें हंस छुटाये।।47।।
जो कोई मानें शब्द हमारा। भवसागर नहीं भरमें धारा।।48।।
या में सुरति शब्द का लेखा। तन अंदर मन कहो कीन्ही देखा।।49।।
दास गरीब अगम की बानी। खोजा हंसा शब्द सहदानी।।50।।

***उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि यहाँ पहले केवल अंधकार था तथा पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी सत्यलोक में तख्त(सिंहासन) पर विराजमान थे। हम वहाँ चाकर थे। परमात्मा ने ज्योति निरंजन को उत्पन्न किया। फिर उसके तप के प्रतिफल में इक्कीस ब्रह्मण्ड प्रदान किए। फिर माया (प्रकृति) की उत्पत्ति की। युवा दुर्गा के रूप पर मोहित होकर ज्योति निरंजन (ब्रह्म) ने दुर्गा(प्रकृति) से बलात्कार करने की चेष्टा की। ब्रह्म को उसकी सजा मिली। उसे सत्यलोक से निकाल दिया तथा शाप लगा कि एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का प्रतिदिन आहार करेगा, सवा लाख उत्पन्न करेगा। यहाँ सर्व प्राणी जन्म-मृत्यु का कष्ट उठा रहे हैं। यदि कोई पूर्ण परमात्मा का वास्तविक शब्द (सच्चानाम जाप मंत्र) हमारे से प्राप्त करेगा, उसको काल की बंद से छुड़वा देंगे। हमारा बन्दी छोड़ नाम है। आदरणीय गरीबदास जी अपने गुरु व प्रभु कबीर परमात्मा के आधार पर कह रहे हैं कि सच्चे मंत्र अर्थात् सत्यनाम व सारशब्द की प्राप्ति कर लो, पूर्ण मोक्ष हो जायेगा। नहीं तो नकली नाम दाता संतों व महन्तों की मीठी-मीठी बातों में फंस कर शास्त्र विधि रहित साधना करके काल जाल में रह जाओगे। फिर कष्ट पर कष्ट उठाओगे।***

।।गरीबदास जी महाराज की वाणी।।
(सत ग्रन्थ साहिब पृष्ठ नं. 690 से सहाभार)

माया आदि निरंजन भाई, अपने जाऐ आपै खाई।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर चेला, ऊँ सोहं का है खेला।।
सिखर सुन्न में धर्म अन्यायी, जिन शक्ति डायन महल पठाई।।
लाख ग्रास नित उठ दूती, माया आदि तख्त की कुती।।
सवा लाख घड़िये नित भांडे, हंसा उतपति परलय डांडे।
ये तीनों चेला बटपारी, सिरजे पुरुषा सिरजी नारी।।
खोखापुर में जीव भुलाये, स्वपना बहिस्त वैकुंठ बनाये।
यो हरहट का कुआ लोई, या गल बंध्या है सब कोई।।
कीड़ी कुजंर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा।
अरब अलील इन्द्र हैं भाई, हरहट डोरी बंधे सब आई।।
शेष महेश गणेश्वर ताहिं, हरहट डोरी बंधे सब आहिं।
शुक्रादिक ब्रह्मादिक देवा, हरहट डोरी बंधे सब खेवा।।
कोटिक कर्ता फिरता देख्या, हरहट डोरी कहूँ सुन लेखा।
चतुर्भुजी भगवान कहावैं, हरहट डोरी बंधे सब आवैं।।
यो है खोखापुर का कुआ, या में पड़ा सो निश्चय मुवा।

योह हरहट का कुआँ लोई, या गल बंध्या है सब कोई।
कीड़ी कुंजर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा।।

**काल लोक में जन्म-मरण रूपी हरहट (चक्र)**

*ज्योति निरंजन(कालबली) के वश होकर के ये तीनों देवता (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिव) अपनी महिमा दिखाकर जीवों को स्वर्ग नरक तथा भवसागर में (लख चौरासी योनियों में) भटकाते रहते हैं। ज्योति निरंजन अपनी माया से नागिनी की तरह जीवों को पैदा करते हैं और फिर मार देते हैं। जिस प्रकार नागिनी अपनी कुण्डली बनाती है तथा उसमें अण्डे देती है और फिर उन अण्डों पर अपना फन मारती है। जिससे अण्डा फूट जाता है और उसमें से बच्चा निकल जाता है। उसको नागिनी खा जाती है। फन मारते समय कई अण्डे फूट जाते हैं क्योंकि नागिनी के काफी अण्डे होते हैं। जो अण्डे फूटते हैं उनमें से बच्चे निकलते हैं यदि कोई बच्चा कुण्डली से बाहर निकल जाता है तो वह बच्चा बच जाता है नहीं तो कुण्डली में वह (नागिनी) छोड़ती नहीं। जितने बच्चे उस कुण्डली के अन्दर होते हैं उन सबको खा जाती है।*

माया काली नागिनी, अपने जाये खात। कुण्डली में छोड़ै नहीं, सौ बातों की बात।।

*इसी प्रकार यह कालबली का जाल है। निरंजन तक की भक्ति पूरे संत से नाम लेकर करेगें तो भी इस निरंजन की कुण्डली(इक्कीस ब्रह्मण्डों) से बाहर नहीं निकल सकते। स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि माया शेराँवाली भी निरंजन की कुण्डली में है। ये बेचारे अवतार धार कर आते हैं और जन्म-मृत्यु का चक्कर काटते रहते हैं। इसलिए विचार करें सोहं जाप जो कि ध्रुव व प्रहलाद व शुकदेव ऋषि ने जपा, वह भी पार नहीं हुए। काल लोक में ही रहे तथा 'ऊँ नमः भगवते वासुदेवाय' मन्त्र जाप करने वाले भक्त भी कृष्ण तक की भक्ति कर रहे हैं, वे भी चौरासी लाख योनियों के चक्कर काटने से नहीं बच सकते। यह परम पूज्य कबीर साहिब जी व आदरणीय गरीबदास साहेब जी महाराज की वाणी प्रत्यक्ष प्रमाण देती हैं।*

अनन्त कोटि अवतार हैं, माया के गोविन्द। कर्ता हो हो अवतरे, बहुर पड़े जग फंध।।

*सतपुरुष कबीर जी की भक्ति से ही जीव मुक्त हो सकता है।*

*जब तक जीव सतलोक में वापिस नहीं चला जाएगा तब तक काल लोक में इसी तरह कर्म करेगा और की हुई नाम व दान धर्म की कमाई स्वर्ग रूपी होटलों में खाकर वापिस चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर में कष्ट उठाने वाले कर्म आधार से काल लोक में चक्कर काटता रहेगा। माया(दुर्गा) से उत्पन्न हो कर करोड़ों गोबिन्द (ब्रह्मा-विष्णु-शिव) मर चुके हैं। भगवान का अवतार बन कर आये थे। फिर कर्म बन्धन में बन्ध कर कर्मों को भोग कर चौरासी लाख योनियों में चले गए। जैसे भगवान विष्णु जी को देवर्षि नारद का शाप लगा। वे श्री रामचन्द्र रूप में अयोध्या में आए। फिर श्री राम जी रूप में बाली का वध किया था। उस कर्म का दण्ड भोगने के लिए श्री कृष्ण जी का जन्म हुआ। फिर बाली वाली आत्मा शिकारी बना तथा अपना प्रतिशोध लिया। श्री कृष्ण जी के पैर में विषाक्त तीर मार कर वध किया। महाराज गरीबदास जी अपनी वाणी में कहते हैं :*

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, और धर्मराय कहिये।
इन पाँचों मिल परपंच बनाया, वाणी हमरी लहिये।।
इन पाँचों मिल जीव अटकाये, जुगन–जुगन हम आन छुटाये।

बन्दी छोड़ हमारा नामं, अजर अमर है अस्थिर ठामं।।
पीर पैगम्बर कुतुब औलिया, सुर नर मुनिजन ज्ञानी।
येता को तो राह न पाया, जम के बंधे प्राणी।।
धर्मराय की धूमा–धामी, जम पर जंग चलाऊँ।
जोरा को तो जान न दूगां, बांध अदल घर ल्याऊँ।।
काल अकाल दोहूँ को मोसूं, महाकाल सिर मूंडू।
मैं तो तख्त हजूरी हुकमी, चोर खोज कूं ढूंढू।।
मूला माया मग में बैठी, हंसा चुन–चुन खाई।
ज्योति स्वरूपी भया निरंजन, मैं ही कर्ता भाई।।
संहस अठासी दीप मुनीश्वर, बंधे मुला डोरी।
ऐत्यां में जम का तलबाना, चलिए पुरुष कीशोरी।।
मूला का तो माथा दागूं, सतकी मोहर करूंगा।
पुरुष दीप कूं हंस चलाऊँ, दरा न रोकन दूंगा।।
हम तो बन्दी छोड़ कहावां, धर्मराय है चकवै।
सतलोक की सकल सुनावां, वाणी हमरी अखवै।।
नौ लख पटट्न ऊपर खेलूं, साहदरे कूं रोकूं।
द्वादस कोटि कटक सब काटूं, हंस पठाऊँ मोखूं।।
चौदह भुवन गमन है मेरा, जल थल में सरबंगी।
खालिक खलक खलक में खालिक, अविगत अचल अभंगी।।
अगर अलील चक्र है मेरा, जित से हम चल आए।
पाँचों पर प्रवाना मेरा, बंधि छुटावन धाये।।
जहाँ ओंकार निरंजन नाहीं, ब्रह्मा विष्णु वेद नहीं जाहीं।
जहाँ करता नहीं जान भगवाना, काया माया पिण्ड न प्राणा।।
पाँच तत्व तीनों गुण नाहीं, जोरा काल दीप नहीं जाहीं।
अमर करूं सतलोक पठाँऊ, तातैं बन्दी छोड़ कहाऊँ।।

***कबीर परमेश्वर(कविर्देव) की महिमा जताते हुए आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि हमारे प्रभु कविर् (कविर्देव) बन्दी छोड़ हैं। बन्दी छोड़ का भावार्थ है काल की कारागार से छुटवाने वाला, हम पापों के कारण काल के बंदी हैं। पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब पाप का विनाश कर देते हैं। पापों का विनाश न ब्रह्म, न परब्रह्म, न ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी कर सकते हैं। केवल जैसा कर्म है, उसका वैसा ही फल दे देते हैं। इसीलिए यजुर्वेद अध्याय 5 के मन्त्र 32 में लिखा है 'कविरंघारिरसि' कविर्देव पापों का शत्रु है, 'बम्भारिरसि' बन्धनों का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ है।***

***इन पाँचों(ब्रह्मा-विष्णु-शिव-माया और धर्मराय) से ऊपर सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) है। जो सतलोक का मालिक है। शेष सर्व परब्रह्म-ब्रह्म तथा ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी व आदि माया नाशवान परमात्मा हैं। महाप्रलय में ये सब तथा इनके लोक समाप्त हो जाएंगे। आम जीव से कई हजार गुणा ज्यादा लम्बी इनकी उम्र है।***

***परन्तु जो समय निर्धारित है वह एक दिन पूरा अवश्य होगा। आदरणीय गरीबदास जी महाराज कहते हैं :***

शिव ब्रह्मा का राज, इन्द्र गिनती कहां। चार मुक्ति वैकुंण्ठ समझ, येता लह्या।।
संख जुगन की जुनी, उम्र बड़ धाारिया। जा जननी कुर्बान, सु कागज पारिया।।
येती उम्र बुलंद मरैगा अंत रे। सतगुरु लगे न कान, न भैंटे संत रे।।

***चाहे संख युग की लम्बी उम्र भी क्यों न हो वह एक दिन समाप्त जरूर होगी। यदि सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब के नुमाँयदे पूर्ण संत(गुरु) जो तीन नाम का मंत्र (जिसमें एक ओ३म + तत् + सत् सांकेतिक हैं) देता है तथा उसे पूर्ण संत द्वारा नाम दान करने का आदेश है, उससे उपदेश लेकर नाम की कमाई करेंगे तो हम सतलोक के अधिकारी हंस हो सकते हैं। सत्य साधना बिना बहुत लम्बी उम्र कोई काम नहीं आएगी क्योंकि निरंजन लोक में दुःख ही दुःख है।***

कबीर, जीवना तो थोड़ा ही भला, जै सत सुमरन होय।
लाख वर्ष का जीवना, लेखै धरै ना कोय।।

***कबीर साहिब अपनी(पूर्णब्रह्म की) जानकारी स्वयं बताते हैं कि इन परमात्माओं से ऊपर असंख्य भुजा का परमात्मा सतपुरुष है जो सत्यलोक(सच्च खण्ड, सतधाम) में रहता है तथा उसके अन्तर्गत सर्वलोक [ब्रह्म(काल) के 21 ब्रह्मण्ड व ब्रह्मा, विष्णु, शिव शक्ति के लोक तथा परब्रह्म के सात संख ब्रह्मण्ड व अन्य सर्व ब्रह्मण्ड] आते हैं और वहाँ पर सत्यनाम-सारनाम के जाप द्वारा जाया जाएगा जो पूरे गुरु से प्राप्त होता है। सच्चखण्ड (सतलोक) में जो आत्मा चली जाती है उसका पुनर्जन्म नहीं होता। सतपुरुष(पूर्णब्रह्म) कबीर साहेब (कविर्देव) ही अन्य लोकों में स्वयं ही भिन्न-भिन्न नामों से विराजमान है। जैसे अलख लोक में अलख पुरुष, अगम लोक में अगम पुरुष तथा अकह लोक में अनामी पुरुष रूप में विराजमान है। ये तो उपमात्मक नाम हैं, परन्तु वास्तविक नाम उस पूर्ण पुरुष का कविर्देव(भाषा भिन्न होकर कबीर साहेब) है।***

## "आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में सृष्टी रचना का संकेत"

***श्री नानक साहेब जी की अमृतवाणी, महला 1, राग बिलावलु, अंश 1 (गु.ग्र. पृ. 839)***

आपे सचु कीआ कर जोड़ि। अंडज फोड़ि जोडि विछोड़।।
धरती आकाश कीए बैसण कउ थाउ। राति दिनंतु कीए भउ–भाउ।।
जिन कीए करि वेखणहारा।(3)
त्रितीआ ब्रह्मा–बिसनु–महेसा। देवी देव उपाए वेसा।।(4)
पउण पाणी अगनी बिसराउ। ताही निरंजन साचो नाउ।।
तिसु महि मनुआ रहिआ लिव लाई। प्रणवति नानकु कालु न खाई।।(10)

***उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि सच्चे परमात्मा (सतपुरुष) ने स्वयं ही अपने हाथों से सर्व सृष्टी की रचना की है। उसी ने अण्डा बनाया फिर फोड़ा तथा उसमें से ज्योति निरंजन निकला। उसी पूर्ण परमात्मा ने सर्व प्राणियों के रहने के लिए धरती, आकाश, पवन, पानी आदि पाँच तत्व रचे। अपने द्वारा***

***रची सृष्टी का स्वयं ही साक्षी है। दूसरा कोई सही जानकारी नहीं दे सकता। फिर अण्डे के फूटने से निकले निरंजन के बाद तीनों श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की उत्पत्ति हुई तथा अन्य देवी-देवता उत्पन्न हुए तथा अनगिनत जीवों की उत्पत्ति हुई। उसके बाद अन्य देवों के जीवन चरित्र तथा अन्य ऋषियों के अनुभव के छः शास्त्र तथा अठारह पुराण बन गए। पूर्ण परमात्मा के सच्चे नाम (सत्यनाम) की साधना अनन्य मन से करने से तथा गुरु मर्यादा में रहने वाले (प्रणवति) को श्री नानक जी कह रहे हैं कि काल नहीं खाता।***

***राग मारु(अंश) अमृतवाणी महला 1(गु.ग्र.पृ. 1037)***

सुनहु ब्रह्मा, बिसनु, महेसु उपाए। सुने वरते जुग सबाए।।
इसु पद बिचारे सो जनु पुरा। तिस मिलिए भरमु चुकाइदा।।(3)
साम वेदु, रुगु जुजरु अथरबणु। ब्रहमें मुख माइआ है त्रैगुण।।
ता की कीमत कहि न सकै। को तिउ बोले जिउ बुलाईदा।।(9)

***उपरोक्त अमृतवाणी का सारांश है कि जो संत पूर्ण सृष्टी रचना सुना देगा तथा बताएगा कि अण्डे के दो भाग होकर कौन निकला, जिसने फिर ब्रह्मलोक की सुन्न में अर्थात् गुप्त स्थान पर ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी की उत्पत्ति की तथा वह परमात्मा कौन है जिसने ब्रह्म(काल) के मुख से चारों वेदों (पवित्र ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) को उच्चारण करवाया, वह पूर्ण परमात्मा जैसा चाहे वैसे ही प्रत्येक प्राणी को बुलवाता है। इस सर्व ज्ञान को पूर्ण बताने वाला सन्त मिल जाए तो उसके पास जाइए तथा जो सभी शंकाओं का पूर्ण निवारण करता है, वही पूर्ण सन्त अर्थात् तत्वदर्शी है।***

***श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ 929 अमृत वाणी श्री नानक साहेब जी की राग रामकली महला 1 दखणी ओअंकार***

ओअंकारि ब्रह्मा उतपति। ओअंकारू कीआ जिनि चित। ओअंकारि सैल जुग भए। ओअंकारि बेद निरमए। ओअंकारि सबदि उधरे। ओअंकारि गुरुमुखि तरे। ओनम अखर सुणहू बीचारु। ओनम अखरु त्रिभवण सारु।

***उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि ओंकार अर्थात् ज्योति निरंजन(काल) से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई। कई युगों मस्ती मार कर ओंकार (ब्रह्म) ने वेदों की उत्पत्ति की जो ब्रह्मा जी को प्राप्त हुए। तीन लोक की भक्ति का केवल एक ओ३म् मंत्र ही वास्तव में जाप करने का है। इस ओ३म् शब्द को पूरे संत से उपदेश लेकर उद्धार होता है।***

***विशेष :– श्री नानक साहेब जी ने तीनों मंत्रों (ओ३म् + तत् + सत्) का स्थान - स्थान पर रहस्यात्मक विवरण दिया है। उसको केवल पूर्ण संत (तत्वदर्शी संत) ही समझ सकता है तथा तीनों मंत्रों के जाप को उपदेशी को समझाया जाता है।***

(पृ. 1038) उत्तम सतिगुरु पुरुष निराले, सबदि रते हरि रस मतवाले।
रिधि, बुधि, सिधि, गिआन गुरु ते पाइए, पूरे भाग मिलाईदा।।(15)
सतिगुरु ते पाए बीचारा, सुन समाधि सचे घरबारा।

नानक निरमल नादु सबद धुनि, सचु रामैं नामि समाइदा(17)।।5।।17।।

***उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि वास्तविक ज्ञान देने वाले सतगुरु तो निराले ही हैं, वे केवल नाम जाप को जपते हैं, अन्य हठयोग साधना नहीं बताते। यदि आप को धन दौलत, पद, बुद्धि या भक्ति शक्ति भी चाहिए तो वह भक्ति मार्ग का ज्ञान पूर्ण संत ही पूरा प्रदान करेगा, ऐसा पूर्ण संत बड़े भाग्य से ही मिलता है। वही पूर्ण संत विवरण बताएगा कि ऊपर सुन्न (आकाश) में अपना वास्तविक घर (सत्यलोक) परमेश्वर ने रच रखा है।***

***उसमें एक वास्तविक सार नाम की धुन (आवाज) हो रही है। उस आनन्द में अविनाशी परमेश्वर के सार शब्द से समाया जाता है अर्थात् उस वास्तविक सुखदाई स्थान में वास हो सकता है, अन्य नामों तथा अधूरे गुरुओं से नहीं हो सकता।***

***आंशिक अमृतवाणी महला पहला(श्री गु. ग्र. पृ. 359-360)***

सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप त्यागी वादं।(1)
सिंडी सबद सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरै नादं।(2)
हरि कीरति रह रासि हमारी गुरु मुख पंथ अतीत (3)
सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरण अनेकं।
कह नानक सुणि भरथरी जोगी पारब्रह्म लिव एकं।(4)

***उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि हे भरथरी योगी जी आप की साधना भगवान शिव तक है, उससे आप को शिव नगरी (लोक) में स्थान मिला है और शरीर में जो सिंगी शब्द आदि हो रहा है वह इन्हीं कमलों का है तथा टेलीविजन की तरह प्रत्येक देव के लोक से शरीर में सुनाई दे रहा है।***

***हम तो एक परमात्मा परब्रह्म अर्थात् अन्य किसी और एक परमात्मा में लौ (अनन्य मन से लग्न) लगाते हैं।***

***हम ऊपरी दिखावा (भस्म लगाना, हाथ में दंडा रखना) नहीं करते। मैं तो सर्व प्राणियों को एक पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) की सन्तान समझता हूँ। सर्व उसी शक्ति से चलायमान हैं। हमारी मुद्रा तो सच्चा नाम जाप गुरु से प्राप्त करके करना है तथा क्षमा करना हमारा बाणा(वेशभूषा) है। मैं तो पूर्ण परमात्मा का उपासक हूँ तथा पूर्ण सतगुरु का भक्ति मार्ग इससे भिन्न है।***

***अमृत वाणी राग आसा महला 1 (श्री गु. ग्र. पृ. 420)***

।।आसा महला 1।। जिनी नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई। मूलु छोड़ि डाली लगे किआ पावहि छाई।।1।। साहिबु मेरा एकु है अवरु नहीं भाई। किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई।।3।। गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए। नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए।।8।।18।।

***उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि जो पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम भूल कर अन्य भगवानों के नामों के जाप में भ्रम रहे हैं वे तो ऐसा कर रहे हैं कि मूल (पूर्ण परमात्मा) को छोड़ कर डालियों (तीनों गुण रूप रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिवजी) की सिंचाई (पूजा) कर रहे हैं।***

*उस साधना से कोई सुख नहीं हो सकता अर्थात् पौधा सूख जाएगा तो छाया में नहीं बैठ पाओगे। भावार्थ है कि शास्त्र विधि रहित साधना करने से व्यर्थ प्रयत्न है। कोई लाभ नहीं। इसी का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी है। उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने के लिए मनमुखी (मनमानी) साधना त्याग कर पूर्ण गुरुदेव को समर्पण करने से तथा सच्चे नाम के जाप से ही मोक्ष संभव है, नहीं तो मृत्यु के उपरांत नरक जाएगा।*

*(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 843-844)*

।।बिलावलु महला 1।। मैं मन चाहु घणा साचि विगासी राम। मोही प्रेम पिरे प्रभु अबिनासी राम।। अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ। किरपालु सदा दइआलु दाता जीआ अंदरि तूं जीऐ। मैं आधारु तेरा तू खसमू मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ। साचि सूचा सदा नानक गुरसबदि झगरु निबेरओ।।4।।2।।

*उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि अविनाशी पूर्ण परमात्मा नाथों का भी नाथ है अर्थात् देवों का भी देव है(सर्व प्रभुओं श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा ब्रह्म व परब्रह्म पर भी नाथ है अर्थात् स्वामी है) मैं तो सच्चे नाम को हृदय में समा चुका हूँ। हे परमात्मा ! सर्व प्राणी का जीवन आधार भी आप ही हो। मैं आपके आश्रित हूँ आप मेरे मालिक हो। आपने ही गुरु रूप में आकर सत्यभक्ति का निर्णायक ज्ञान देकर सर्व झगड़ा निपटा दिया अर्थात् सर्व शंका का समाधान कर दिया।*

*(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 721, राग तिलंग महला 1)*

यक अर्ज गुफतम् पेश तो दर कून करतार।
हक्का कबीर करीम तू बेअब परवरदिगार।
नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पाखाक।

*उपरोक्त अमृतवाणी में स्पष्ट कर दिया कि हे सत्कबीर(हक्का कबीर) आप (कून करतार) सर्व सृष्टी के रचन हार हो, आप ही निर्विकार (परवरदिगार) सर्व के पालन कर्ता दयालु प्रभु हो, मैं आपके दासों का भी दास हूँ।*

*(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 24, राग सीरी महला 1)*

तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहा आस ऐहो आधार।
नानक नीच कहै बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।

*उपरोक्त अमृतवाणी में प्रमाण किया है कि जो काशी में धाणक (जुलाहा) है यही (करतार) कुल का सृजनहार है। अति आधीन होकर श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मैं सत कह रहा हूँ कि यह धाणक ही पूर्ण ब्रह्म(सतपुरुष) है।*

*विशेष :- उपरोक्त प्रमाणों के सांकेतिक ज्ञान से प्रमाणित हुआ सृष्टी रचना कैसे हुई? अब पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिए।*

## ''अन्य संतों द्वारा सृष्टी रचना की दन्त कथा''

*अन्य संतों द्वारा जो सृष्टी रचना का ज्ञान बताया है वह कैसा है?*

*पवित्र पुस्तक जीवन चरित्र परम संत बाबा जयमल सिंह जी महाराज'' पृष्ठ नं. 102-103 से ''सृष्टी की रचना''(सावन कृपाल पब्लिकेशन, दिल्ली)*

''पहले सतपुरुष निराकार था, फिर इजहार(आकार) में आया तो ऊपर के तीन निर्मल मण्डल (सतलोक अलखलोक अगमलोक) बन गया तथा प्रकाश तथा मण्डलों का नाद (धुनि) बन गया।''

***पवित्र पुस्तक सारवचन(नसर) प्रकाश राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग आगरा, ''सृष्टी की रचना'' पृष्ठ 81,***

''प्रथम धूंधूकार था। उसमें पुरुष सुन्न समाध में थे। जब कुछ रचना नहीं हुई थी। फिर जब मौज हुई तब शब्द प्रकट हुआ और उससे सब रचना हुई, पहले सतलोक और फिर सतपुरुष की कला से तीन लोक और सब विस्तार हुआ।''

***यह ज्ञान तो ऐसा है जैसे एक समय कोई बच्चा नौकरी लगने के लिए साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए गया। अधिकारी ने पूछा कि आप ने महाभारत पढ़ा है। लड़के ने उत्तर दिया कि उंगलियों पर रट रखा है। अधिकारी ने प्रश्न किया कि पाँचों पाण्डवों के नाम बताओ। लड़के ने उत्तर दिया कि एक भीम था, एक उसका बड़ा भाई था, एक उससे छोटा था, एक और था तथा एक का नाम मैं भूल गया। उपरोक्त सृष्टी रचना का ज्ञान तो ऐसा है।***

***सतपुरुष व सतलोक की महिमा बताने वाले व पाँच नाम(औंकार - ज्योति निरंजन - ररंकार - सोहं - सत्यनाम) देने वाले व तीन नाम (अकाल मूर्ति - सतपुरुष - शब्द स्वरूपी राम) देने वाले संतों द्वारा रची पुस्तकों से कुछ निष्कर्ष :-***

***संतमत प्रकाश भाग 3 पृष्ठ 76 पर लिखा है कि ''सच्चखण्ड या सतनाम चौथा लोक है'', यहाँ पर 'सतनाम' को स्थान कहा है। फिर इस पवित्र पुस्तक के पृष्ठ नं. 79 पर लिखा है कि ''एक राम दशरथ का बेटा, दूसरा राम 'मन', तीसरा राम 'ब्रह्म', चौथा राम 'सतनाम', यह असली राम है।'' फिर पवित्र पुस्तक संतमत प्रकाश पहला भाग पृष्ठ नं. 17 पर लिखा है कि ''वह सतलोक है, उसी को सतनाम कहा जाता है।'' पवित्र पुस्तक 'सार वचन नसर यानि वार्तिक' पृष्ठ नं. 3 पर लिखा है कि ''अब समझना चाहिए कि राधा स्वामी पद सबसे उच्चा मुकाम है कि जिसको संतों ने सतलोक और सच्चखण्ड और सार शब्द और सत शब्द और सतनाम और सतपुरुष करके ब्यान किया है।'' पवित्र पुस्तक सार वचन(नसर) आगरा से प्रकाशित पृष्ठ नं. 4 पर भी उपरोक्त ज्यों का त्यों वर्णन है। पवित्र पुस्तक 'सच्चखण्ड की सड़क' पृष्ठ नं. 226 ''संतों का देश सच्चखण्ड या सतलोक है, उसी को सतनाम- सतशब्द-सारशब्द कहा जाता है।''***

***विशेष :- उपरोक्त व्याख्या ऐसी लगी जैसे किसी ने जीवन में न तो शहर देखा, न कार देखी और न पैट्रोल देखा है, न ड्राईवर का ज्ञान हो कि ड्राईवर किसे कहते हैं और वह व्यक्ति अन्य साथियों से कहे कि मैं शहर में जाता हूँ, कार में बैठ कर आनंद मनाता हूँ। फिर साथियों ने पूछा कि कार कैसी है, पैट्रोल कैसा है और ड्राईवर कैसा है, शहर कैसा है? उस गुरु जी ने उत्तर दिया कि शहर कहो चाहे कार एक ही बात है, शहर भी कार ही है, पैट्रोल भी कार को ही कहते हैं, ड्राईवर भी कार को ही कहते हैं, सड़क भी कार को ही कहते हैं।***

***आओ विचार करें - सतपुरुष तो पूर्ण परमात्मा है, सतनाम वह दो मंत्र का नाम है***

*जिसमें एक ओ३म् + तत् सांकेतिक है तथा इसके बाद सारनाम साधक को पूर्ण गुरु द्वारा दिया जाता है। यह सतनाम तथा सारनाम दोनों नाम हैं। सतलोक वह स्थान है जहाँ सतपुरुष रहता है। पुण्यात्माएं स्वयं निर्णय करें सत्य तथा असत्य का।*

❑❑❑

**Note : For circulation amongst like minded person only**